



रचनात्मक मूल्यांकन हेतु शिक्षक संदर्शिका

हिंदी (पाठ्यक्रम- अ)

हिंदी (पाठ्यक्रम- ब)

कक्षा - नौवीं



केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

शिक्षा केन्द्र, 2 - समुदाय केन्द्र, प्रीत विहार, नई दिल्ली- 1100092

कक्षा नौवीं के हिंदी पाठ्यक्रम हेतु रचनात्मक मूल्यांकन के लिए शिक्षक संदर्शिका

मूल्य :

प्रथम संस्करण : 2010 केमाशिबो, भारत

प्रतियाँ :

कॉपीराइट : केमाशिबो, भारत

प्रकाशक : सचिव, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, 2, सामुदायिक केन्द्र, शिक्षा केन्द्र, दिल्ली- 110092

अक्षर संयोजन तथा विन्यास : मल्टी ग्राफिक्स, 5748/81, रैगर पुरा, करोल बाग, नई दिल्ली- 110005 फोन : 25783846

मुद्रक :

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक '[सम्पूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में,

व्यक्ति की गरिमा और [राष्ट्र की एकता
और अखण्डता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई० को एतद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977) से "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से), "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

51 क. मूल कर्तव्य - भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

- (क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;
- (ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;
- (ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;
- (घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;
- (ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हों, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;
- (च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परीक्षण करे;
- (छ) प्राकृतिक पर्यावरण की जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी, और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;
- (ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;
- (झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;
- (ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई उंचाइयों को छू ले।

THE CONSTITUTION OF INDIA

PREAMBLE

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a **SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC** and to secure to all its citizens :

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity; and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the ² [unity and integrity of the Nation];

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty-sixth day of November, 1949, do **HEREBY TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.**

1. Subs. by the Constitution (Forty-Second Amendment) Act. 1976, sec. 2, for "Sovereign Democratic Republic (w.e.f. 3.1.1977)
2. Subs. by the Constitution (Forty-Second Amendment) Act. 1976, sec. 2, for "unity of the Nation (w.e.f. 3.1.1977)

THE CONSTITUTION OF INDIA

Chapter IV A

Fundamental Duties

ARTICLE 51A

Fundamental Duties - It shall be the duty of every citizen of India-

- (a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;
- (b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;
- (c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;
- (d) to defend the country and render national service when called upon to do so;
- (e) To promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities; to renounce practices derogatory to the dignity of women;
- (f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;
- (g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers, wild life and to have compassion for living creatures;
- (h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;
- (i) to safeguard public property and to abjure violence;
- (j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement.

विषय सूची

हिन्दी पाठ्यक्रम - अ

पुस्तक क्षितिज भाग- 1		
अध्याय		पृष्ठ संख्या
1	प्रेमचंद-दो बैलों की कथा	7
2	राहुल सांकृत्यायन-ल्हासा की ओर	13
3	श्यामचरण दुबे-उपभोक्तावाद की संस्कृति	19
4	जाबिर हुसैन-साँवले सपनों की याद	27
5	चपला देवी-नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया	33
6	हरिशंकर परसाई-प्रेमचंद के फटे जूते	39
7	महादेवी वर्मा-मेरे बचपन के दिन	45
8	हजारी प्रसाद द्विवेदी-एक कुत्ता और एक मैना	51
काव्य खंड		
9	कबीर-साखियाँ एवं सबद	57
10	ललहृद-वाख	63
11	रसखान-सवैये	71
12	माखनलाल चतुर्वेदी-कैदी और कोकिला	77
13	सुमित्रानंदन पंत-ग्राम श्री	83
14	केदारनाथ अग्रवाल-चंद्र गहना से लौटती बेर	91
15	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना-मेघ आए	99
16	चंद्रकांत देवताले-यमराज की दिशा	107
17	राजेश जोशी-बच्चे काम पर जा रहे हैं	113
कृतिका		
18	इस जल प्रलय में-फणीश्वरनाथ रेणु	121
19	मेरे संग की औरतें-मृदुला गर्ग	129
20	रीढ़ की हड्डी-जगदीश चन्द्र माथुर	135
21	माटी वाली-विद्या सागर नौटियाल	141
22	किस तरह आखिरकार मैं हिन्दी में आया-शमशेर बहादुर सिंह	149
23	रचनात्मक मूल्यांकन व्याकरण	155
24.	निबंध लेखन	175
25.	पत्र लेखन	181

विषय सूची

हिन्दी पाठ्यक्रम - ब

पुस्तक स्पर्श (गद्य)		
अध्याय		पृष्ठ संख्या
1	धूल	197
2	दुख का अधिकार	203
3	एवरेस्ट मेरी शिखर यात्रा	209
4	तुम कब जाओगे अतिथि	217
5	वैज्ञानिक चेतना के वाहक	225
6	कीचड़ का काव्य	233
7	धर्म की आड़	241
8	शुक्रतारे के समान	249
पुस्तक स्पर्श (पद्य)		
9	रैदास के पद	257
10	रहीम	263
11	आदमी नामा	269
12	एक फूल की चाह	277
13	गीत-अगीत	285
14	अग्निपथ	293
15	नए इलाके में, खुशबू रचते हैं हाथ	301
पुस्तक संचयन		
16	गिल्लू	309
17	स्मृति	317
18	कल्लू कुम्हार की उनाकोटी	323
19	मेरा छोटा सा निजी पुस्तकालय	331
20	हामिद खां	339
21	दिए जल उठे	347
22	रचनात्मक मूल्यांकन व्याकरण	355

आभार

सलाहकार : केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

- श्री विनीत जोशी, अध्यक्ष, केमाशिबो
- श्रीमती चित्रलेखा गुरुमूर्ति, निदेशक, (शैक्षणिक), केमाशिबो
- डाक्टर साधना पराशर, प्रमुख, नवप्रवर्तन एवं शोध, केमाशिबो

अनुवीक्षण एवं संपादकीय समिति

- श्री पी. मणि, शिक्षा अधिकारी, केमाशिबो
- श्री अल हिलाल अहमद, सहायक शिक्षा अधिकारी

सामग्री निर्माण समूह

हिंदी (पाठ्यक्रम - अ)

- श्रीमती किरण गुप्ता, सेवानिवृत्त अध्यापिका, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
- श्री नीलकंठ, राजकीय बरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय नं. 1, पालम गाँव, दिल्ली
- श्रीमती कमला मदान, उप-प्रधानाचार्या, केन्द्रीय विद्यालय संख्या- 2, दिल्ली कैंट, दिल्ली
- डाक्टर (श्रीमती) रेखासिंह, वीर चन्द्र सिंह गडवाली, सर्वोदय बाल विद्यालय साकेत, दिल्ली

हिंदी (पाठ्यक्रम - ब)

- श्रीमती बबीता सिंह, विभागाध्यक्ष, के आर मंगलम वर्ल्ड स्कूल, ग्रेटर कैलाश, दिल्ली
- सुश्री संज्ञा, वेद व्यास डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, विकास पुरी, दिल्ली
- श्रीमती नीलम रानी, भारतीय विद्या भवन विद्यालय, कस्तूरबा गाँधी मार्ग, दिल्ली
- श्री अंशुमन ऋषि, कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार, दिल्ली



प्रस्तावना

विद्यालयी शिक्षा आज रूपांतरण के जिस दौर से गुज़र रही है, उसके केन्द्र में है मूल्यांकन तथा इसके अध्यापन-अधिगम की प्रक्रिया से अन्तर्संबंध के प्रति एक नया दृष्टिकोण। आज सभी इस तथ्य को मानते हैं कि जो कुछ भी पढ़ाया जाता है, जैसे पढ़ाया जाता है, अधिगम की प्रक्रिया यह सभी मूल्यांकन की प्रक्रिया से प्रभावित होते हैं। शोध कर्ता, शिक्षाविदों तथा शिक्षा जगत से जुड़े व्यक्तियों में यह एक सामान्य धारणा है कि मूल्यांकन कई बार सीखने के प्रतिफल को बढ़ाने के बजाय बढ़ने से रोक देता है। अध्यापन-अधिगम की प्रक्रिया में यदि हम शिक्षण के विकल्पों और अधिगम की गतिविधियों के अभ्यास को केवल परीक्षा की पूर्व तैयारी मानते हैं, तो हम निश्चित रूप से अपने शिक्षार्थियों के प्रति असफल होने का जोखिम अवश्य उठा रहे होते हैं। मूल्यांकन के लिए काम करते समय एक बड़ा दोष यह पाया जाता है कि शिक्षार्थी का प्रयास होता है कि वह पास होने के लिए न्यूनतम अनिवार्य कार्यों पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करे।

आज हमारे समक्ष पारम्परिक परीक्षा प्रणाली और मूल्यांकन को बदलने की चुनौती उभर कर आई है। माध्यमिक स्तर पर सतत एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति को अपने सभी विद्यालयों में लागू करते हुए सीबीएसई ने यह स्पष्ट संदेश दिया है कि मूल्यांकन करते समय विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखा जाना चाहिए। अधिगम एक सतत प्रक्रिया है इसलिए मूल्यांकन भी सतत होना चाहिए। मूल्यांकन अध्यापन एवं अधिगम की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है इसलिए सीसीई (स.स.मू.) में मूलरूप से विद्यार्थी के ज्ञान की परीक्षा के स्थान पर उसके अधिगम की प्रक्रिया को मूल्यांकन के लिए चुना गया है।

इस तरह की संकल्पना ने रचनात्मक मूल्यांकन की भूमिका को और भी अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। यहाँ यह भी बताना आवश्यक है कि कई विद्यालय पहले से ही सतत एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति को अपनाए हुए हैं, इन विद्यालयों ने कक्षा 1 से 8 तक रचनात्मक मूल्यांकन प्रक्रिया को कई वर्षों से क्रियान्वित किया हुआ है। परन्तु उन्होंने इस आकलन को अधिकतर 'परीक्षण' के रूप में प्रयुक्त किया हुआ है, ज्ञान समृद्धि के लिए नहीं। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि वे रचनात्मक मूल्यांकन की मूल अवधारणा को स्पष्ट रूप से नहीं समझ सके हैं। इसी कारण संबंधित व्यक्ति रचनात्मक मूल्यांकन के उपकरणों और प्रक्रिया को, जो प्रकृति से संकलित मूल्यांकन जैसे ही है, संकलित मूल्यांकन समझने की भूल कर बैठते हैं और इसीलिए विद्यार्थियों को कई बार संकलित मूल्यांकन के अनुसार मूल्यांकित करते हैं। जब कि महत्व इस बात का है कि ज्ञान प्राप्ति की इस मूल्यांकन प्रक्रिया में विद्यार्थी ने क्या जानकारी ग्रहण की तथा अधिगम की यह प्रक्रिया उसके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का किस प्रकार मूल्यांकन करने में सहायता करती है।

यह हमें रचनात्मक मूल्यांकन को सशक्त बनाने की आवश्यकता की ओर ले आता है क्योंकि हमारा समग्र उद्देश्य रचनात्मक मूल्यांकन द्वारा एकत्रित सूचनाओं के आधार पर अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में सुधार लाकर अधिगम को सुविधाजनक बनाना है।

इस प्रकार रचनात्मक मूल्यांकन शिक्षण प्रक्रिया का वह अभिन्न अंग है जो विद्यार्थियों की सहभागिता पर बल देता है। विद्यार्थियों को अपने अधिगम के मूल्यांकन के साथ-साथ अपने सहपाठियों के अधिगम के मूल्यांकन में भी सम्मिलित होना चाहिए तथा उसके लिए संसाधन होने का कार्य भी करना चाहिए। यह शिक्षक द्वारा मूल्यांकन के साथ-साथ स्वमूल्यांकन व सहपाठीय मूल्यांकन की भूमिका को प्रकाश में ले आता है। शोध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि जब विद्यार्थी सहभागिता करते हैं और स्वयं अपने काम के स्वामित्व को संभालते हैं तो अधिगम के प्रति उनकी जिज्ञासा और बढ़ जाती है। रचनात्मक मूल्यांकन का सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह अधिगम को एक सुखद अनुभूति बना देता है क्योंकि विद्यार्थी की सहभागिता उसकी सीखने की ललक को ही नहीं बढ़ाती अपितु अनजाने में मूल्यांकन की विधियों को भी प्रभावित करती है।

संकलित मूल्यांकन सार्वजनिक जीवन में उपलब्धियों की एक पहचान बनाता है और हम सभी संकलित मूल्यांकन के उपकरणों एवं प्रक्रिया से पूरी तरह से परिचित हैं। फिर भी कुछ अध्यापकों के लिए प्रभावशाली रचनात्मक मूल्यांकन के उपकरण तैयार करना एक कठिन चुनौती है। वे इसे कक्षा शिक्षण के अनुसार व्यवस्थित करने में भी कठिनाई अनुभव करते हैं।

रचनात्मक मूल्यांकन की संकल्पना को स्पष्ट करने के लिए अध्यापकों के लिए कुछ उदाहरण प्रदत्त कार्य के रूप में प्रदान किए जा रहे हैं। बोर्ड ने कक्षा नवीं व दसवीं के लिए सभी मुख्य विषयों में रचनात्मक मूल्यांकन पर पुस्तिकाओं की एक शृंखला प्रकाशित की है। यह आशा की जाती है कि अध्यापक और विद्यार्थी इन प्रकाशनों का पूरा-पूरा लाभ उठाएँगे। इन प्रकाशनों में छपी सामग्री को सावधानी पूर्वक पढ़कर अध्यापक इन प्रदत्त कार्यों का कक्षा में उपयोग कर न केवल अपनी शिक्षण योग्यता को बढ़ाएँगे बल्कि इनके आधार पर स्वयं सामग्री तैयार करके पाठ्यक्रम को संप्रेषणीय करके और मूल्यवान बनाएँगे। कुछ व्यावहारिक दिशा निर्देशों को इन पुस्तिकाओं की पाठ्य सामग्री में इस प्रकार संकलित किया गया है जिससे विद्यालय और अध्यापक बोर्ड द्वारा निर्धारित सतत एवं समग्र मूल्यांकन प्रणाली के अन्तर्गत रचनात्मक मूल्यांकन का सही उपयोग कर पाने में सक्षम हो जाएँगे। इस सामग्री को तैयार करने में जिन अध्यापकों का योगदान रहा बोर्ड उन सभी के प्रयासों की सराहना करता है। मैं शिक्षाधिकारी श्री पी.मणि व श्री अल हिलाल अहमद, सहायक शिक्षा अधिकारी की सराहना करता हूँ कि उन्होंने इस संकल्पना को ठोस रूप प्रदान करने में समन्वयकर्ता की भूमिका निभाते हुए इस सामग्री को तैयार करवाया जिससे ये पुस्तिकाएँ छपकर सामने आ सकीं।

मैं पूर्ण हृदय से आशा करता हूँ कि इस बहुमूल्य सामग्री की उपलब्धि से अध्यापक पूरी ईमानदारी के साथ सीसीई योजना के अन्तर्गत बोर्ड से जुड़े सभी विद्यालयों में इसे लागू करने में समर्थ होंगे। पुस्तिकाओं की बेहतरी के लिए आपके सुझावों का स्वागत है।

(विनीत जोशी)

अध्यक्ष

निरंतर और व्यापक मूल्यांकन

शिक्षा का लक्ष्य बच्चों को समाज के लिए उत्तरदायी, उत्पादक और उपयोगी सदस्य बनने की क्षमता प्रदान करना है। विद्यालय में छात्रों के लिए सीखने के अनुभवों और सृजित अवसरों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के माध्यम से निर्मित की जाती हैं। कक्षाकक्ष में छात्र अपने अनुभवों का विश्लेषण और मूल्यांकन करने, शंकाएँ अभिव्यक्त करने, प्रश्न करने, खोजबीन करने और स्वतंत्र रूप से सीखने का कार्य कर सकेंगे। साथ ही साथ शिक्षा का लक्ष्य समाज की वर्तमान आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को दर्शाना और इसके चिरस्थायी मूल्यों और मानवीय आदर्शों को प्रदर्शित करना है। किसी भी समय और स्थान पर इन्हें व्यापक और चिरस्थायी मानवीय आकांक्षाओं और मूल्यों का समकालीन और संदर्भित कथन कहा जा सकता है।

छात्रों की समझ, शैक्षिक लक्ष्य, ज्ञान की प्रकृति और विद्यालय की प्रकृति एक सामाजिक संस्थान के रूप में हमें कक्षा में होने वाले अभ्यासों को सिद्धांतों को तय करने में सहायता दे सकते हैं। इस प्रकार संकल्पनात्मक विकास की प्रक्रिया निर्धारित संदर्भों को गहराई तक ले जाने, समृद्ध बनाने तथा अर्थ के नए आयामों को अर्जित करने की निरंतर प्रक्रिया है। इसी के साथ इससे प्राकृतिक और सामाजिक दुनिया के उन सिद्धांतों का विकास होता है जिनके विषय में बच्चे जानते हैं, इसमें अन्य व्यक्तियों के साथ उनके संबंध शामिल हैं, जो उन्हें यह समझाते हैं कि चीजें ऐसी क्यों हैं, जैसी दिखाई देती है और इसके कारण तथा प्रभाव के बीच क्या संबंध है। इस प्रकार मनोवृत्तियाँ, भावनाएँ और मूल्य बोधात्मक विकास का अविभाज्य हिस्सा हैं और ये भाषा, मानसिक प्रस्तुतीकरण, संकल्पनाओं और तार्किकता के विकास के साथ जुड़े हैं। जैसे जैसे बच्चों की उच्च अवबोधात्मक क्षमताओं का विकास होता है उनका अपनी मान्यताओं से और अधिक परिचय हो जाता है तथा वे अपने सीखने की प्रक्रिया का विनियमन करने में सक्षम होते हैं।

अधिगम की विशेषताएँ

- सभी बच्चे सीखने के लिए प्राकृतिक रूप से प्रेरित होते हैं और वे सीखने में सक्षम होते हैं।
- अमूर्त सोच, परावर्तन (प्रतिक्रिया) और कार्य के लिए समझ और क्षमता का विकास अधिगम की प्रक्रिया के सबसे अधिक महत्वपूर्ण पक्ष हैं।
- बच्चे कई तरीकों से सीखते हैं - अनुभव द्वारा, चीजों को बनाने और सीखने के जरिए, प्रयोगों से, पढ़ने से, चर्चा से, पूछकर, सुनकर, सोचकर और परावर्तन (प्रतिक्रिया) और वे बोलकर या लिखकर स्वयं को

अभिव्यक्त (व्यक्तिगत रूप व सामूहिक रूप से भी) करते हुए भी सीखते हैं – ये अलग अलग या अन्य के साथ मिलकर की जा सकती हैं। उन्हें अपने विकास के दौर में इन सभी प्रकारों के अवसरों की आवश्यकता होती है।

- जब तक बच्चा बोधात्मक रूप से तैयार नहीं है उससे पहले कुछ भी सिखाने से वास्तविक अधिगम नहीं होता है। बच्चे अनेक तथ्यों को “याद” रख सकते हैं किन्तु वे उन्हें समझ नहीं सकते या वे अपने आस पास की दुनिया के साथ इनका संबंध स्थापित नहीं कर सकते हैं।
- अधिगम की प्रक्रिया विद्यालय के अंदर और विद्यालय के बाहर भी होती है। यदि इन दोनों क्षेत्रों में आपस में अंतःक्रिया होती है तो अधिगम की प्रक्रिया में समृद्धि आती है। कला और कार्य से अधिगम की समग्र प्रक्रिया के अवसर मिलते हैं जो सूक्ष्म सौन्दर्य बोध तत्वों से समृद्ध होते हैं। यह अनुभव केवल प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा ही सीखकर जीवन में समेकित किए जा सकते हैं।
- अधिगम इस प्रकार की रफ्तार से समन्वित होना चाहिए कि इससे सीखने वाले छात्र संकल्पनाओं से स्वयं को जोड़ सकें और वे परीक्षा के बाद इन्हें भूल जाने तक ही याद रखने के बजाए उसे गहराई से समझ सकें। इसी के साथ सीखने की प्रक्रिया में विविधता और चुनौती होनी चाहिए, और इन्हें रोचक तथा बाँधे रखने वाला होना चाहिए। इसमें ऊब का होना एक ऐसा संकेत है कि यह कार्य बच्चे के लिए यांत्रिक रूप से दोहराने वाला है और बोधात्मक रूप से इसका महत्व कम है।
- अधिगम की प्रक्रिया मध्यस्थता के साथ या इसके बिना हो सकती है। दूसरे मामले में सामाजिक संदर्भ और अंतःक्रियाएँ, विशेष रूप से जो सक्षम हैं, उन छात्रों को बोधात्मक स्तरों से ऊपर कार्य करने के मार्ग प्रदान करती हैं।

पाठ्यचर्या में मूल्यांकन का स्थान

पाठ्यक्रम वास्तव में समग्र लक्ष्यों, पाठ्यचर्या, सामग्रियों, विधियों और मूल्यांकन से मिलकर बना एक समग्र अध्यापन – अधिगम कार्यक्रम है। संक्षेप में, यह ज्ञान और क्षमताओं की रूपरेखा प्रदान करता है, जिसे एक विशेष स्तर पर उपयुक्त माना जाता है। मूल्यांकन से न केवल छात्रों की प्रगति और उपलब्धि को मापा जा सकता है बल्कि इससे अध्यापन सामग्रियों और विधियों की प्रभावशीलता को भी मापा जा सकता है, जिनका उपयोग अध्यापन में किया गया हो। अतः मूल्यांकन को प्रभावी आपूर्ति और अध्यापन – अधिगम प्रक्रिया में आगे सुधार के दोहरे प्रयोजन के साथ पाठ्यक्रम के घटक के रूप में देखा जाना चाहिए।

यदि मूल्यांकन को उचित रूप से समझा जाए तो इसे सीखने की अवधि के लिए निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए अध्यापकों

द्वारा इस्तेमाल किए जाने और छात्रों द्वारा सीखने के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। जब सीखने के अभ्यास के अंत के रूप में मूल्यांकन को देखा जाता है तो अध्यापक और छात्र दोनों इस अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया के बाहर दिखाई देते हैं, और मूल्यांकन पाठ्यचर्या के लिए मोटे तौर पर असंगत और असंबद्ध हो जाता है। पुनः यह अवधारणा छात्रों के लिए मूल्यांकन के साथ चिंता और तनाव को जोड़ती है। इसके विपरीत, यदि मूल्यांकन को अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में एक अविभाज्य भाग के रूप में देखा जाता है तो यह अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया दोनों के लिए एक निरंतर प्रक्रिया बन जाती है। जब मूल्यांकन को अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में शामिल कर दिया जाता है तो छात्र टेस्ट तथा परीक्षा को डर के साथ नहीं लेते। इससे सीखने की प्रक्रिया का निदान, उपचार और वृद्धि की जा सकेगी।

विद्यालयों में मूल्यांकन के विस्तार को छात्रों के व्यक्तित्व विकास के लगभग सभी क्षेत्रों में ले जाया जा सकता है। इसमें शैक्षिक और सह शैक्षिक क्षेत्र शामिल होने चाहिए अर्थात् इसे समग्र प्रकृति का होना चाहिए। यह शिक्षा के लक्ष्यों के अनुरूप है। मूल्यांकन एक निरंतर प्रक्रिया है और इससे छात्रों की क्षमताओं और कमियों को बार बार प्रकट किया जा सकता है, ताकि छात्रों को अपनी समझ को बढ़ाने और स्वयं में सुधार लाने के बेहतर अवसर मिल सकें। इसमें अध्यापकों को भी अपनी अध्यापन कार्यनीतियों के संशोधन के लिए प्रतिपुष्टि मिलती है।

बच्चे के अधिगम के मूल्यांकन का संपूर्ण चित्र पाने के लिए छात्र का मूल्यांकन निम्नलिखित क्षमताओं पर आधारित होना चाहिए -

- वह विभिन्न विषय क्षेत्रों से संबंधित वांछित कौशल सीख सके और अर्जित कर सके।
- विभिन्न विषय क्षेत्रों में आवश्यक मापन सहित उपलब्धि के स्तर को अर्जित कर सके।
- बच्चे के व्यक्तिगत कौशलों, रुचियों, मनोवृत्तियों और प्रेरणा का विकास किया जा सके।
- एक स्वस्थ और उत्पादक जीवन को समझ सके और अपना सके।
- समय के साथ बच्चे के सीखने, व्यवहार और प्रगति में आने वाले बदलावों की निगरानी की जा सके।
- विद्यालय के अंदर और बाहर विभिन्न परिस्थितियों और अवसरों पर प्रतिक्रिया कर सके।
- विभिन्न प्रकार के परिवेशों, परिस्थितियों और स्थितियों में सीखी गई बातों का उपयोग कर सके।
- स्वतंत्र, सहयोगात्मक और सौहार्द पूर्ण रूप से कार्य कर सके।

- विश्लेषण और मूल्यांकन कर सके।
- सामाजिक और पर्यावरण संबंधी मुद्दों से अवगत हो सके।
- सामाजिक और पर्यावरण संबंधी परियोजनाओं और कारणों में हिस्सा ले सके।
- सीखी गई बातों को लंबे समय तक याद रख सके।

इस प्रकार मूल्यांकन एक उपयोगी, वांछित और समर्थकारी प्रक्रिया है। इसे साकार करने के लिए व्यक्ति को निम्नलिखित प्राचल ध्यान में रखने चाहिए -

निम्नलिखित की आवश्यकता -

- छात्र का मूल्यांकन
- छात्र की अधिगम प्रक्रिया और विषयों तथा पाठ्यक्रम से बाहर की सीमाओं में की गई प्रगति के बारे में सूचना जमा करने के अनेक तरीकों का उपयोग।
- सूचना को निरंतर जमा करना और इसका अभिलेखन।
- प्रत्येक छात्र की प्रतिक्रिया और सीखने के तरीके तथा ऐसा करने में लगने वाले समय को महत्व देना।
- निरंतर आधार पर इसकी रिपोर्ट बनाना तथा प्रत्येक छात्र की प्रतिक्रिया पर संवेदनशील होना।
- फीडबैक (प्रतिपुष्टि) प्रदान करना जिससे सकारात्मक कार्य किया जा सके और छात्र को बेहतर निष्पादन में सहायता मिले।

मूल्यांकन की प्रक्रिया में निम्नलिखित बातों को न करने की सावधानी रखने की आवश्यकता है :

- छात्रों को धीमा, कमजोर, बुद्धिमान आदि श्रेणी में बाँटना।
- उनके बीच तुलना करना।
- नकारात्मक वक्तव्य देना।

निरंतर और व्यापक मूल्यांकन

निरंतर और व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) का अर्थ छात्रों के विद्यालय आधारित मूल्यांकन की प्रणाली से है, जिसमें छात्रों के विकास के सभी पक्ष शामिल हैं। यह एक बच्चे की विकास प्रक्रिया है, जिसमें दोहरे उद्देश्यों पर बल दिया जाता है। ये उद्देश्य एक ओर मूल्यांकन में निरंतरता और व्यापक रूप से सीखने के मूल्यांकन पर तथा दूसरी ओर व्यवहार के परिणामों पर आधारित हैं।

यहां “निरंतरता” का अर्थ इस पर बल देना है कि छात्रों की “वृद्धि और विकास” के अभिज्ञात पक्षों का मूल्यांकन एक बार के कार्यक्रम के बजाए एक निरंतर प्रक्रिया है, जिसे संपूर्ण अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में निर्मित किया गया है और यह शैक्षिक सत्र की पूरी अवधि में फैली हुई है। इसका अर्थ है मूल्यांकन की नियमितता, अधिगम अंतरालों का निदान, सुधारात्मक उपायों का उपयोग, स्वयं मूल्यांकन के लिए अध्यापकों और छात्रों के साक्ष्य का फीडबैक।

दूसरा पद “व्यापक” का अर्थ है शैक्षिक और सह शैक्षिक पक्षों को शामिल करते हुए छात्र की वृद्धि और विकास को परखने की योजना। चूंकि क्षमताएँ, मनोवृत्तियाँ और सोच अपने आप को लिखित शब्दों के अलावा अन्य रूपों में प्रकट करती है, इसलिए यह पद अनेक साधनों और तकनीकों के अनुप्रयोग को संदर्भित करता है (परीक्षणकारी और गैर परीक्षणकारी दोनों) और यह सीखने के क्षेत्रों में छात्र के विकास के मूल्यांकन पर लक्षित है जैसे:

- ज्ञान
- समझ / व्याख्या
- अनुप्रयोग
- विश्लेषण
- मूल्यांकन
- सृजनात्मकता

सीसीई के उद्देश्य हैं :

- बोधात्मक, मनोप्रेरक और भावात्मक कौशलों के विकास में सहायता।
- सीखने की प्रक्रिया पर बल देना और याद रखने पर बल नहीं देना।

- मूल्यांकन को अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया का अविभाज्य हिस्सा बनाना।
- नियमित निदान के आधार पर उपचारात्मक अनुदेशों के बाद छात्रों की उपलब्धि और अध्यापन-अधिगम कार्यनीतियों के सुधार के लिए मूल्यांकन का उपयोग करना।
- मूल्यांकन को निष्पादन के वांछित स्तर बनाए रखने के लिए गुणवत्ता नियंत्रण युक्ति के रूप में इस्तेमाल करना।
- सामाजिक उपयोगिता, वांछनीयता या एक कार्यक्रम की प्रभावशीलता का निर्धारण करना और छात्र, सीखने की प्रक्रिया और सीखने के परिवेश के बारे में उपयुक्त निर्णय लेना।
- अध्यापन और अधिगम प्रक्रिया को छात्र केन्द्रित कार्यकलाप बनाना। सीसीई की विशेषताएँ हैं :

सीसीई की विशेषताएँ हैं :

- सीसीई के “निरंतर” पक्ष में मूल्यांकन के “निरंतरता” और “आवधिकता” पक्षों का ध्यान रखा जाता है।
- निरंतरता का अर्थ मूल्यांकन की अनेक तकनीकों का अनौपचारिक रूप से उपयोग करते हुए छात्रों का मूल्यांकन अनुदेशों के आरंभ में (नियोजन मूल्यांकन) और अनुदेशात्मक प्रक्रिया के दौरान मूल्यांकन (निर्माणकारी मूल्यांकन) करना है।
- आवधिकता का अर्थ इकाई / कार्य अवधि (सारांश) के अंत में बार बार निष्पादन का मूल्यांकन करना है।
- सीसीई के “व्यापक” घटक में बच्चे के व्यक्तित्व के समग्र विकास का मूल्यांकन करने का ध्यान रखा जाता है। इसमें छात्र की वृद्धि के शैक्षिक और सह शैक्षिक पक्षों का मूल्यांकन शामिल है।
- शैक्षिक पक्षों में पाठ्यक्रम के क्षेत्र या विषय विशिष्ट क्षेत्र शामिल हैं, जबकि सह शैक्षिक पक्षों में जीवन कौशल, सह पाठ्यक्रमेतर कार्यकलाप, मनोवृत्ति और मान्यताएँ शामिल हैं।
- शैक्षिक क्षेत्रों का मूल्यांकन निरंतर और आवधिक रूप से मूल्यांकन की अनेक तकनीकों का औपचारिक तथा अनौपचारिक उपयोग करते हुए किया जाता है। नैदानिक मूल्यांकन इकाई / कार्य अवधि परीक्षा के अंत में दिया जाता है। कुछ इकाइयों में खराब निष्पादन के कारणों का निदान करने के लिए नैदानिक परीक्षणों का उपयोग किया जाता है। इनका अनुवर्तन उपयुक्त हस्तक्षेपों और इसके बाद पुनः परीक्षा द्वारा किया जाता है।

- सह शैक्षिक क्षेत्रों का मूल्यांकन अभिज्ञात मानदण्डों से आधार पर अनेक तकनीकों का उपयोग करते हुए किया जाता है, जबकि जीवन कौशलों में मूल्यांकन का कार्य मूल्यांकन के संकेतकों और जाँचसूचियों के आधार पर किया जाता है।

स्रोत : परीक्षा सुधार, एनसीईआरटी

सीसीई के कार्य हैं :

- यह अध्यापक को प्रभावी अध्यापन कार्यनीतियां बनाने में सहायता देते हैं।
- निरंतर मूल्यांकन से छात्र की प्रगति (विशिष्ट शैक्षिक और सह शैक्षिक क्षेत्रों के संदर्भ सहित क्षमता और उपलब्धि) सीमा और स्तर के नियमित मूल्यांकन में सहायता मिलती है।
- निरंतर मूल्यांकन से कमियों का निदान किया जा सकता है और अध्यापक छात्र की क्षमताओं, कमियों और जरूरतों को इससे सुनिश्चित कर सकते हैं। इससे अध्यापकों को तत्काल फीडबैक मिलता है, जो यह निर्णय ले सकते हैं कि एक विशेष इकाई या संकल्पना पूरी कक्षा को दोबारा पढ़ाने की जरूरत है या कुछ ही छात्रों को उपचारात्मक अनुदेश की आवश्यकता है।
- निरंतर मूल्यांकन द्वारा बच्चे अपनी क्षमताओं और कमियों जान सकते हैं। इससे बच्चे को अपने अध्ययन का वास्तविक स्वयं मूल्यांकन करने में सहायता मिलती है। इससे बच्चों को पढ़ाई की अच्छी आदतें विकसित करने, गलतियों को सुधारने और अपने कार्यकलापों को वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर निर्देशित करने की प्रेरणा मिलती है। यह अनुदेश के उन क्षेत्रों का निर्धारण करने में छात्र की सहायता करता है, जिस पर और अधिक बल देने की आवश्यकता है।
- निरंतर और व्यापक मूल्यांकन मनोवृत्ति और रुचि के क्षेत्रों को अभिज्ञात कराता है। यह मनोवृत्तियों और मूल्य प्रणालियों में बदलावों को अभिज्ञात करने में सहायता देता है।
- यह भविष्य में विषयों, पाठ्यक्रमों और कैरियर के विषय में निर्णय लेने में सहायता देता है।
- इससे शैक्षिक और सह शैक्षिक क्षेत्रों में छात्रों की प्रगति पर सूचना / रिपोर्ट मिलती है और इस प्रकार छात्रों की भावी सफलताओं का अनुमान लगाने में मदद मिलती है।

निरंतर मूल्यांकन से समय समय पर बच्चे की उपलब्धि, अध्यापकों और माता-पिता में जागरूकता लाने में मदद मिलती है। वे उपलब्धि में आने वाली गिरावट के संभावित कारणों पर विचार कर सकते हैं और अनुदेश के उपचारात्मक उपाय कर सकते हैं कि कहाँ अधिक बल देने की आवश्यकता है। कई बार कुछ व्यक्तिगत कारणों से, पारिवारिक समस्याओं

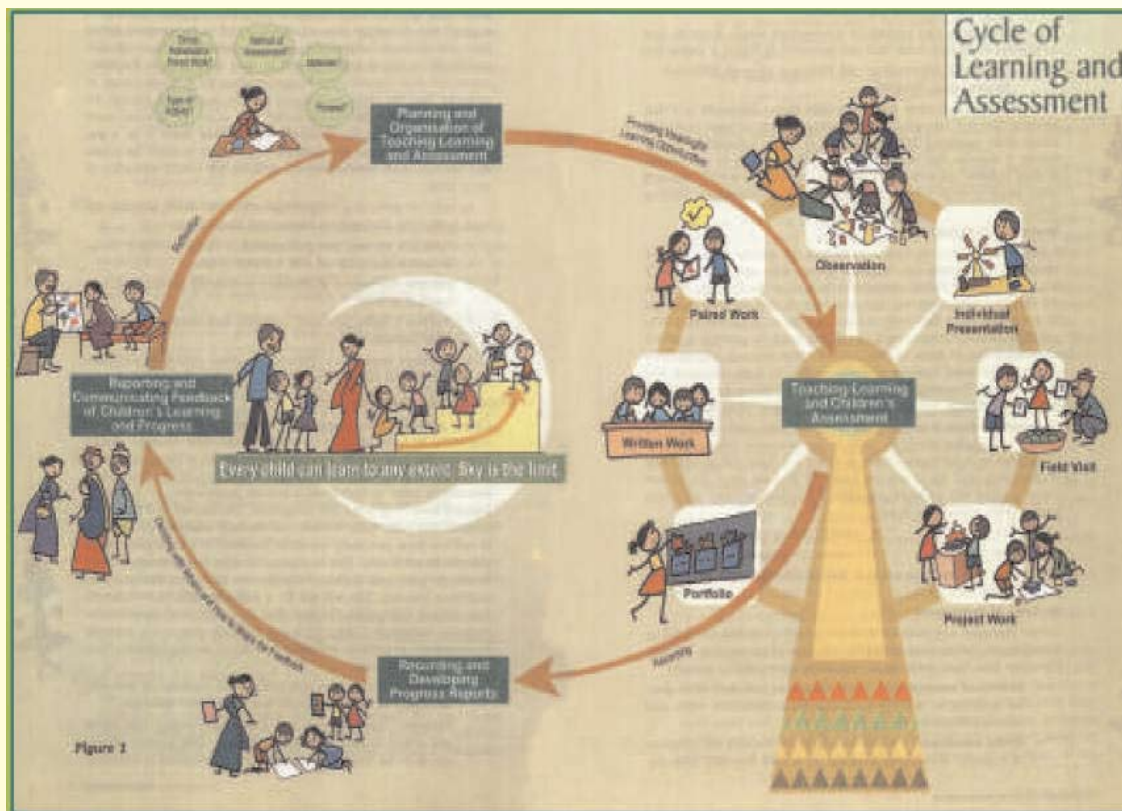
या समायोजन की समस्याओं से बच्चे अपनी पढ़ाई की उपेक्षा करते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप उनकी उपलब्धि में अचानक गिरावट आती है। यदि अध्यापक, छात्र और माता पिता उपलब्धि में इस अचानक आई गिरावट के बारे में जान नहीं पाएँगे और बच्चे द्वारा लंबी अवधि तक पढ़ाई की उपेक्षा जारी रहेगी तो इसके परिणाम स्वरूप उपलब्धि में कमी आएगी और बच्चे के सीखने की प्रक्रिया में स्थायी कमी आएगी।

सीसीई का प्रमुख बल छात्रों की निरंतर वृद्धि पर है, जिसमें बौद्धिक, भावनात्मक, शारीरिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास सुनिश्चित किया जाए और इसलिए यह केवल छात्र की शैक्षिक उपलब्धि के मूल्यांकन तक सीमित नहीं होगा। इसमें छात्र को प्रेरित करने के साधनों के रूप में मूल्यांकन का इस्तेमाल किया जाता है ताकि कक्षाकक्ष में सीखने में सुधार लाने के लिए फीडबैक और अनुवर्तन कार्य की व्यवस्था की जा सके तथा छात्र की रूपरेखा का एक व्यापक चित्र प्रस्तुत किया जा सके।

इसी के आधार पर विद्यालय आधारित निरंतर और व्यापक मूल्यांकन की संकल्पना का उद्भव हुआ है।

शैक्षिक और सह शैक्षिक मूल्यांकन

निरंतर और व्यापक मूल्यांकन के लिए शैक्षिक और सह शैक्षिक दोनों ही क्षेत्रों में चितम अन्यता देने की आवश्यकता है इस समग्र मूल्यांकन में प्रत्येक छात्र के लिए एक जारी, परिवर्तनशील और व्याख्यात्मक रूपरेखा तैयार



करने की आवश्यकता है, जो ईमानदार, प्रोत्साहनकारी और विवेकशील हो। जबकि अध्यापक प्रतिदिन सुधारात्मक कार्यनीतियों को प्रदर्शित, योजनाबद्ध और कार्यान्वित करते हैं, छात्र की धारित और उच्चारित करने की क्षमता वह है जो एक समय के दौरान सीखी जाती है, इसे भी आवधिक मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। ये मूल्यांकन अनेक रूपों में किए जा सकते हैं, किन्तु इन सभी को जहाँ तक संभव हो व्यापक और असतत होना चाहिए। साप्ताहिक, पाक्षिक या तिमाही समीक्षाएँ (सीखने के क्षेत्र पर निर्भर करते हुए) जो खुले तौर पर किसी अन्य छात्र के साथ एक छात्र की तुलना नहीं करती और सकारात्मक हैं तथा आम तौर पर रचनात्मक अनुभवों की सिफारिश बच्चों के बीच न केवल सीखने और धारित करने की क्षमता बढ़ाने हेतु, बल्कि उनमें कौशल विकसित करने के लिए भी की जाती है।

अध्याय २

विद्यालय आधारित निरंतर और व्यापक मूल्यांकन

पिछले दशक में सार्वजनिक या बोर्ड की परीक्षाओं को तनावरहित बनाकर छात्रों के भार को कम करने के प्रति निरंतर प्रयास किए गए हैं। छात्रों और विद्यालयों में अधिक से अधिक अंक पाने और इस प्रकार अधिक प्रतिस्पर्धा की तगड़ी दौड़ बनी हुई है।

सीबीएसई द्वारा अंकों के स्थान पर ग्रेड लाने का कदम सही दिशा में उठाया गया है। विद्यालयों को कार्य करने योग्य विद्यालय आधारित निरंतर और व्यापक योजना के सृजन द्वारा सशक्त बनाकर प्रतिमान स्थापित किया गया है।

विद्यालय आधारित निरंतर और व्यापक मूल्यांकन प्रणाली की स्थापना की जानी चाहिए ताकि :

- बच्चों पर दबाव कम किया जा सके।
- मूल्यांकन को व्यापक तथा नियमित बनाया जा सके।
- रचनात्मक अध्यापन के लिए अध्यापक को स्थान दिया जा सके।
- निदान और सुधार के साधन प्रदान किए जा सकें।
- छात्रों को अधिक कौशल प्रदान किए जा सकें।

सीसीई आधारित विद्यालय के लक्ष्य :

- अवसर तत्व और विषयपरकता को हटाना (जहाँ तक संभव हो) याद रखने की क्षमता पर से बल हटाना, शैक्षिक और सह शैक्षिक पक्षों को शामिल करते हुए छात्र के विकास के पक्षों का व्यापक मूल्यांकन करने को प्रोत्साहन देना।
- निरंतर मूल्यांकन की प्रक्रिया समग्र अध्यापन - अधिगम प्रक्रिया के एक अविभाज्य अंतर्निर्मित पक्ष के रूप में अनुदेशात्मक समय के कुल दौर में फैला हुआ निरंतर मूल्यांकन है।
- अध्यापकों, छात्रों, माता पिता और समाज द्वारा प्रभावी उपयोग के लिए परिणामों की कार्यात्मक और सार्थक घोषणा।

- परीक्षा परिणामों के उपयोग न केवल छात्र की उपलब्धियों और प्रवीणताओं के स्तरों के मूल्यांकन के लिए हैं बल्कि उसके निदान और उपचारात्मक / समृद्धीकरण कार्यक्रमों के माध्यम से उसके सुधार के लिए मुख्य रूप से हैं।
- अन्य अनेक संबद्ध प्रयोजनों की प्राप्ति के लिए परीक्षाओं के आयोजन की प्रक्रिया में सुधार।
- अनुदेशात्मक सामग्रियों और विधि में सहवर्ती परिवर्तन आरंभ करना।
- माध्यमिक स्तर के आगे सेमेस्टर (सत्र) प्रणाली आरंभ करना।
- छात्रों के निष्पादन और प्रवीणता के निर्धारण तथा घोषणा में अंकों के स्थान पर ग्रेडों का उपयोग करना।

उपरोक्त लक्ष्य विद्यालयों में बाह्य परीक्षा और मूल्यांकन दोनों के लिए संगत हैं।

शिक्षा के लक्ष्य पर स्थिति शोधपत्र – एनसीएफ 2005-एनसीईआरटी

इसकी विशेषताएँ

विद्यालय आधारित मूल्यांकन

- पारंपरिक प्रणाली की तुलना में व्यापक, अधिक व्याख्यात्मक और निरंतर है।
- इसका लक्ष्य प्राथमिक रूप से छात्रों को व्यवस्थित अधिगम और विकास में सहायता देना है।
- इसमें भविष्य के जिम्मेदार नागरिकों के रूप में छात्रों की जरूरतों की देखभाल की जाती है।
- यह अधिक पारदर्शी, भविष्य निर्मात्री है और इसमें छात्रों, अध्यापकों और माता पिता के बीच जुड़ाव की अधिक संभावना मिलती है।

विद्यालय आधारित मूल्यांकन से अध्यापकों को अपने छात्रों के बारे में निम्नलिखित बातें जानने का अवसर मिलता है :

- उन्होंने क्या सीखा?
- उन्होंने कैसे सीखा?
- मिलजुलकर सीखने के उद्देश्यों की प्राप्ति में उनके सामने किस प्रकार की कठिनाइयाँ / सीमाएँ आती हैं?

- बच्चे क्या सोचते हैं?
- बच्चे क्या महसूस करते हैं?
- उनकी रुचियाँ और झुकाव क्या हैं?

अब केन्द्र गहराई से सीखने के परिवेश की ओर प्रतिस्थापित हो गया है। अब शिक्षा शास्त्र में और “नियंत्रण” से “समृद्धिकरण” विद्यालयों के “सशक्तीकरण” की क्षमताओं में प्रतिमान विस्थापन है।

पारंपरिक विद्यालय	विद्यालय का समृद्धिकरण	विद्यालय का सशक्तीकरण
? अध्यापक केन्द्रित ? विषय और कक्षाएं ? छात्रों को छांटना और उनकी रैंकिंग क्षमता : याददाश्त प्रतिस्पर्द्धा	? छात्र केन्द्रित ? स्वयं निर्देशित ? निरंतर मूल्यांकन क्षमता : ? समीक्षात्मक सोच ? सहयोगात्मक ? रचनात्मक	? अनुभव केन्द्रित ? आभासी प्रमाणिकता ? बहु साक्षरता क्षमता : ? जोखिम उठाना ? नैतिकता ? अंतःक्रियात्मक

मूल्यांकन के चार प्रतिमान हैं

(1) अधिगम का मूल्यांकन

सबसे अधिक सामान्य रूप से मूल्यांकन को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अन्य व्यक्ति के ज्ञान, मनोवृत्ति या कौशलों का वर्णन या मात्रा ज्ञात करने का प्रयास करता है। अध्यापक के निर्देश देने की क्षमता सर्वोपरि है और छात्र इन परिस्थितियों में मूल्यांकन की प्रक्रिया की रूपरेखा या कार्यान्वयन में बहुत कम शामिल होता है – II

- सारांश
- अध्यापक द्वारा निर्णय कि अधिगम की रूपरेखा

- अध्यापक द्वारा साक्ष्य संग्रह
- अध्यापक द्वारा निर्णय कि मूल्यांकन में क्या सीखा गया है (और क्या नहीं)?

(2) अधिगम के लिए मूल्यांकन

अधिगम के लिए मूल्यांकन में छात्र की स्वायत्तता के बढ़े हुए स्तर शामिल हैं, किन्तु इसमें अध्यापक का मार्गदर्शन और सहयोग अपेक्षित है। अधिगम के लिए मूल्यांकन कुछ ऐसा है जिसे “निर्माणात्मक मूल्यांकन ” के रूप में देखा जाता है और इसे सूचित करने के अध्यापन के रूप में देखा जा सकता है। इसमें छात्रों को उपयोगी सलाह देने पर अधिक बल दिया जाता है और अंक तथा ग्रेडिंग देने पर कम दिया जाता है –

- अध्यापक द्वारा अधिगम की रूपरेखा
- छात्र को प्रतिपुष्टि सहित अध्यापक द्वारा मूल्यांकन की रूपरेखा
- अध्यापक यह परखता है कि क्या सीखा गया है (छात्र इसकी अंतर्दृष्टि विकसित करता है कि क्या नहीं सीखा गया)

(3) अधिगम के रूप में मूल्यांकन

“अधिगम के रूप में मूल्यांकन ” संभवतया नैदानिक मूल्यांकन के साथ सबसे अधिक जुड़ा हुआ है और इसे सूचित अधिगम पर बल सहित निर्मित किया जा सकता है। अधिगम के रूप में मूल्यांकन से स्वयं मूल्यांकन और अभिजात मूल्यांकन के अवसर पैदा होते हैं। छात्र अपने अधिगम और अन्य लोगों के अधिगम के बारे में गुणवत्तापूर्ण सूचना उत्पन्न करने के लिए अधिक दायित्व लेते हैं –

- अध्यापक और छात्र सह निर्मित अधिगम
- अध्यापक और छात्र सह निर्मित मूल्यांकन
- अध्यापक और छात्र सह निर्मित अधिगम प्रगति मानचित्र

अधिगम कार्यकलापों के रूप में मूल्यांकन तथा अधिगम के लिए मूल्यांकन को अध्यापन तथा अधिगम में गहराई से जोड़ा जाना चाहिए और यह प्रतिपुष्टि की पुनरावृत्ति का स्रोत होना चाहिए, जिससे छात्र समायोजन, पुनःविचार और पुनः अधिगम कर सकें।

(4) अधिगम में मूल्यांकन

अधिगम में मूल्यांकन अध्यापन तथा अधिगम के केन्द्र में प्रश्न रखता है। यह अध्यापन को “सही उत्तर” पर केन्द्रित न करके “एक उपयोगी प्रश्न” पर केन्द्रित करता है। पूछताछ के जरिए छात्र उन प्रक्रियाओं में लिप्त होते हैं जो उनके अधिगम के बारे में प्रतिपुष्टि देते हैं, जो अनेक स्रोतों और कार्यकलापों से आते हैं। यह अन्य अधिगम कार्यक्रमों के निर्माण, पूछताछ की दिशा तथा अन्य प्रश्नों को जन्म देने में योगदान देता है -

- अधिगम के केन्द्र में छात्र
- छात्र अधिगम की निगरानी, मूल्यांकन और प्रतिक्रिया देते हैं
- छात्र (स्वयं और अन्य के लिए) अधिगम का प्रदर्शन आरंभ करते हैं
- अध्यापक एक प्रशिक्षक और मार्गदर्शक के रूप में

अध्यापकों और छात्रों को प्रत्येक मूल्यांकन कार्यनीति का प्रयोजन समझने की आवश्यकता होती है, ताकि छात्र छात्रों और अध्यापकों द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे समग्र मूल्यांकन ‘पैकेज’ को शुद्धतापूर्वक ग्रहण करते हैं, गहराई से अधिगम और समझ को उत्पन्न करने के लिए सार्थक अधिगम सूचना का उपयोग करते हैं।

मूल्यांकन का प्रयोजन

- यह सुनिश्चित करने के लिए कि अध्ययन के विभिन्न विषयों में बीते समय में बच्चे के अंदर क्या अधिगम, परिवर्तन और प्रगति हुई है और बच्चे के व्यक्तित्व के अन्य पक्ष।
- यह पता लगाना कि प्रत्येक छात्र की जरूरतें और अधिगम शैली क्या हैं?
- एक अध्यापन-अधिगम योजना संकल्पित करना जो वैयक्तिक जरूरतों और अधिगम शैलियों के लिए प्रतिक्रियाशील हो।
- मूल्यवर्धन द्वारा अध्यापन-अधिगम सामग्रियों का सुधार।
- प्रत्येक छात्र को अपनी रुचियों, मनोवृत्तियों, क्षमताओं और कमियों के बारे में पता लगाने में सहायता करना ताकि छात्र प्रभावी अधिगम कार्यनीतियाँ विकसित कर सकें।
- पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को पाने की सीमा का मापन करना।

- अध्यापन – अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता को बढ़ाना।
- प्रत्येक छात्र की प्रगति को अभिलेखित करना और माता पिता तथा अन्य हितधारकों को इसका सम्प्रेषण करना।
- अध्यापक और छात्र के बीच वार्तालाप कायम रखना और साथ ही माता पिता को प्रणाली के समग्र सुधार के लिए एक संयोगात्मक प्रयास के रूप में जोड़े रखना।
- अभिजात और स्वयं मूल्यांकन के जरिए प्रक्रिया में छात्रों को शामिल करना।

मूल्यांकन में विभिन्न चरण

परीक्षा मूल्यांकन नहीं है, यह केवल मूल्यांकन का एक साधन है। जैसा कि हमने ऊपर देखा है, मूल्यांकन वास्तव में अध्यापन अधिगम प्रक्रिया का अविभाज्य हिस्सा है और इसलिए इसे पृथक्करण के अंतिम चरण के रूप में नहीं देखा जा सकता है। मूल्यांकन का समग्र लक्ष्य अध्यापन – अधिगम प्रक्रिया में सुधार की जानकारी जमा करना है। इसलिए इसके विशिष्ट अलग अलग चरण हैं।

चरण-1 अध्यापन और अधिगम की प्रभावशीलता की सीमा के साक्ष्य और इसके विषय में जानकारी जमा करना

हम अनेक साधनों का इस्तेमाल करते हुए कई तरीकों से जानकारी जमा करते हैं। पर्यवेक्षण, वार्तालाप और चर्चा, कार्य परियोजनाएँ, विभिन्न प्रकार के रीक्षण आदि कुछ विधियाँ और सधन हैं जन्हें हम सूचनाज माक रनेके लिए इस्तेमाल करते हैं।

चरण 2 सूचना का अभिलेखन

जमा की गई जानकारी को व्यवस्थित रूप से अभिलेखित करने की आवश्यकता होती है, क्योंकि यह न केवल समृद्ध निवेशों से बनी है, जिनका उपयोग अध्यापन और अधिगम को सुधारने में किया जाता है बल्कि इसमें निष्कर्ष को समर्थन देने के लिए साक्ष्य भी हैं, जो छात्रों द्वारा की गई प्रगति के बारे में हमें मिलते हैं। अभिलेखन को प्रभावी बनाने के लिए हमें विभिन्न अभिलेखन युक्तियों का उपयोग करना होता है जैसे छात्र संबंधी जानकारी, जातिवृत्तीय अभिलेख, प्रकरण अध्ययन, रिपोर्ट पुस्तिकाएँ आदि। यह अनिवार्य है कि सूचना गुणात्मक और मात्रात्मक संदर्भों में पूरी तरह विचार के बाद तथा अध्यापक के उद्देश्य पर्यवेक्षण सहित दर्ज की गई है। यह भी अनिवार्य है कि अध्यापक की रिपोर्ट के समर्थन के लिए साक्ष्य के रूप में छात्र के कार्य के नमूने रखे जाएँ। अच्छे अभिलेखन और रिपोर्टिंग का सबसे अधिक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि इसमें एक समय अवधि के दौरान विभिन्न प्रक्षेत्रों में छात्र की प्रगति दर्शाई जाती है।

चरण 3 जमा की गई सूचना का विश्लेषण और रिपोर्टिंग

दर्ज की गई सूचना वह मूल्यवान प्रतिपुष्टि बनाती है कि जिसे अध्यापक, छात्र और माता पिता अधिगम की प्रक्रिया में उन्नति के लिए उपयोग कर सकते हैं। इसके लिए जमा की गई सूचना का आवधिक विश्लेषण किया जाना चाहिए, ताकि अध्यापक बच्चे की अधिगम प्रक्रिया और प्रगति के विषय में निष्कर्ष निकाल सके। उक्त विश्लेषण और ग्रेडिंग वास्तव क्षमताओं में सीखने के परिवेश में छात्रों की प्रगति का मानचित्रण हैं। विश्लेषण और समीक्षा से भी प्रत्येक बच्चे की शक्तियों के बारे में स्पष्ट विवरण मिलते हैं और आगे सुधार के पक्षों की जानकारी मिलती है। इस रिपोर्ट की जानकारी छात्रों और उनके माता पिता को भी दी जानी चाहिए ताकि वे सीखने की प्रक्रिया में सुधार के लिए अनिवार्य चरण उठाने में अध्यापक के साथ सहयोग कर सकें। यह अनिवार्य है कि बच्चे को अन्य बच्चों की तुलना में स्वयं अपने साथ प्रतिस्पर्द्धा का बढ़ावा दिया जाए। छात्रों को अपने सीखने के परिवेश के मूल्यांकन में शामिल करने के लिए उनके सीखने पर एक प्रमुख घटक उन्हें विवरणात्मक प्रतिपुष्टि देना है। अनुसंधान से प्रदर्शित होता है कि विवरणात्मक प्रतिपुष्टि छात्रों के सीखने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की सबसे अधिक प्रभावी अनुदेशात्मक कार्यनीति है। विवरणात्मक प्रतिपुष्टि से छात्रों को यह समझ मिलती है कि वे क्या अच्छा कर रहे हैं, वे कक्षाकक्ष के अधिगम और अगले चरण तक पहुँचने पर विशिष्ट निवेश के साथ जुड़ते हैं।

चरण 4 सुधार के लिए सूचना का उपयोग

मूल्यांकन के परिणाम स्वरूप सुधार होना चाहिए। इस प्रतिमान में छात्र, अध्यापक और माता पिता सभी भागीदार हैं, यह अध्यापक है जिसे अधिगम को बढ़ाने के लिए प्रत्येक छात्र पर सूचना के विश्लेषण का उपयोग की पहल करनी होती है। इससे प्रतिक्रियात्मक अभ्यास की माँग होती है। कुछ प्रश्न जो अध्यापक अपने आप से पूछ सकता है, वे हैं :

1. क्या सभी छात्र कक्षा के कार्यकलापों में शामिल हैं?
2. क्या ऐसे छात्र हैं जिन्हें अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया की गति और प्रवाह के साथ आगे बढ़ने में समस्या आती है?
3. उनकी समस्याएँ क्या हैं और मैं उनकी सहायता कैसे कर सकता हूँ?
4. क्या मेरी अध्यापन कार्य नीति में ऐसी कोई बात है जिसे कक्षाकक्ष को बेहतर बनाने के लिए संशोधित किया जा सकता है? मुझे इसके बारे में क्या करना चाहिए?
5. क्या ऐसे छात्र हैं जिन्हें सामग्रियों और विधियों से प्रेरणा नहीं मिलती और इसलिए वे जल्दी ही इसकी प्रेरणा को खो देते हैं? मुझे उनकी विशेष जरूरतों के लिए क्या करना चाहिए?

6. क्या ऐसे कोई पाठ / अध्याय / इकाइयाँ हैं जो अनेक छात्रों के सामने कठिनाई प्रस्तुत करते हैं? मुझे पाठ्यचर्या के इन हिस्सों के लिए किस प्रकार मूल्यवर्धन करना चाहिए?
7. क्या मैंने संग्रह और विश्लेषित की गई सूचना से कुछ सामान्य त्रुटियों, गलतियों और संकल्पनात्मक स्पष्टता के दृष्टांतों को अभिज्ञात किया है? मुझे इनके सुधार पर प्रभावी कार्यक्रम के विषय में कैसे आगे बढ़ना चाहिए?
8. क्या मेरा कक्षाकक्ष समय प्रबंधन प्रभावी है? ऐसे कौन से परिवर्तन हैं, जिन्हें आरंभ करते हुए छात्रों और अधिगम को अधिक उन्मुख बनाया जा सकता है?
9. क्या मुझे विद्यालय प्रबंधन, अपने सहकर्मियों, माता-पिता और समुदाय से पर्याप्त समर्थन मिल रहा है? मैं अपने छात्रों के लाभ के लिए इन सभी हितधारकों को और अधिक सक्रिय रूप से किस प्रकार शामिल कर सकता हूँ?
10. व्यावसायिक विकास की मेरी अपनी जरूरतें क्या हैं? मैं उन्हें निरंतर आधार पर कैसे पूरा कर सकता हूँ।

ये प्रतिक्रियात्मक प्रश्न अध्यापक को अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति तथा अपनी व्यावसायिक दक्षता को निरंतर बढ़ाने के लिए कार्यक्रम के संशोधन और परिष्करण में सहायता करेंगे।

अब तक यह सुस्थापित हो चुका है कि अधिगम एक निरंतर प्रक्रिया है और इसमें औपचारिक, अनौपचारिक तथा गैर – औपचारिक माध्यम शामिल हैं। यह भी व्यापक रूप से मान लिया गया है कि बच्चे अपने ज्ञान के निर्माण द्वारा सीखते हैं और इस प्रकार एक सीखने की प्रक्रिया बनती है जो बच्चे के अंदर चलती है न कि बाहर। रचनात्मकता के इस प्रतिमान में अध्यापक अधिगम के विभिन्न चरणों का महत्व समझने के लिए बाध्य हैं अर्थात् आरंभिक चरण जहाँ छात्र का मौजूदा ज्ञान प्रवेश स्तर के रूप में देखा जाता है, दूसरा चरण, जहाँ नए ज्ञान को समझा जाता है और मौजूदा ज्ञान के अंदर समायोजित किया जाता है तथा तीसरा चरण जहाँ संरचित ज्ञान को “समग्र” रूप में छात्र द्वारा वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में लागू किया जाता है, ताकि वह दुनिया और स्वयं को समझ सकें और निष्कर्ष निकाल सकें, समस्या सुलझा सकें, निर्णय ले सकें आदि। तीसरे चरण पर ज्ञान के निर्माण में यह स्वतः छात्र के मौजूदा ज्ञान का रूप धारण कर लेता है और सीखने की प्रक्रिया आगे चलती है तथा इस प्रकार यह एक चक्रीय प्रक्रिया है।

मूल्यांकन का मुख्य प्रयोजन अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता को बढ़ावा है और इसलिए इसे अधिगम के प्रत्येक चरण के साथ उपयुक्त रूप से समेकित किया जाता है। चूँकि अधिगम एक निरंतर प्रक्रिया है अतः मूल्यांकन भी निरंतर होना चाहिए। अन्यथा छात्र यह नहीं जान सकेगा/ सकेगी कि वह सही दिशा में जा रहा / रही है, वे कौन से चरण हैं जिस पर उसे कठिनाइयों का अनुभव हुआ, वे नए निवेश और कार्यनीतियाँ कौन सी हैं, जिनकी आवश्यकता ज्ञान के

निर्माण की प्रक्रिया को सफलतापूर्वक आगे ले जाने में होती है और अध्यापक की ओर से इस प्रकार की सहायता अपेक्षित है।

इसी प्रकार अध्यापक को यह भी जानना चाहिए कि प्रत्येक छात्र में एक विशेष समय बिन्दु पर अधिगम का कौन सा चरण है, वे कौन से परिवर्तन हैं जिन्हें प्रत्येक छात्र को प्रभावी रूप से सीखने में सक्षम बनाने के लिए अध्यापन कार्यनीतियों में किया जाना चाहिए और आगे कौन सी सहायता दी जा सकती है। उदाहरण के लिए जब बच्चा पहली कक्षा में विद्यालय आता है तो संभव है कि उसके पहले बच्चा किसी औपचारिक विद्यालय में न गया हो। इसका यह अर्थ नहीं है कि बच्चे को इसका कोई पूर्व ज्ञान नहीं है, क्योंकि अधिगम, जैसा कि पहले बताया गया है औपचारिक तथा गैर औपचारिक माध्यमों से भी करना संभव है। अतः यह अध्यापक का कर्तव्य है कि वह किसी विशेष संकल्पना या कौशल के साथ काम करते हुए बच्चे के पूर्व ज्ञान को पहचाने। यह केवल तभी होता है जब अध्यापक प्रत्येक छात्र के ज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया में शामिल हो।

शिक्षार्थी के पूर्व ज्ञान को सुनिश्चित करने के लिए अध्यापक को कई उपकरणों और तकनीकों जिसमें प्रश्न भी शामिल हैं, को अपनाना पड़ता है। इसी प्रकार अधिगम प्रक्रिया के दौरान तथा वास्तविक जीवन में ज्ञान के अनुप्रयोग के अनुवर्ती चरण में अध्यापक को शिक्षार्थी का निरंतर मूल्यांकन करना पड़ता है ताकि अनुकूलन, समांगीकरण और विस्तारण की प्रक्रिया को सरल बनाया जा सके।

उक्त से यह स्पष्ट है कि मूल्यांकन जो कि मूलतः रचनात्मक होता है, को अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए। परिभाषित: रचनात्मक मूल्यांकन आनंद खोजने की वह प्रक्रिया है जिससे शिक्षार्थी संकल्पनाओं और कौशलों का निर्माण कर सके और इस प्रकार यह प्रक्रिया केंद्रित है न कि उत्पाद केंद्रित। जब मूल्यांकन को ज्ञान-सृजन प्रक्रिया से अलग किया जाता है यह एक प्रभावी अधिगम-उन्नयन पद्धति नहीं रह जाती। अतः अध्यापक, प्राध्यापक, छात्र और अन्य हितधारकों को इस संदर्शिका को मूल्यांकन तक सीमित रखने के बजाए समग्र अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया के व्यापक परिदृश्य को ध्यान में रखकर पढ़ा जाए, यद्यपि संदर्शिका रचनात्मक मूल्यांकन पर आधारित है।

इस बात को समझा जाए कि सभी प्रभावी मूल्यांकन रचनात्मक होते हैं। तथापि, रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकनों में सूक्ष्म अंतर है और ये समग्र की बजाए प्रक्रियात्मक होते हैं। हम निःसंदेह यह कह सकते हैं रचनात्मक मूल्यांकन के व्यापक ढाँचे में रचनात्मक मूल्यांकन का बड़ा उप-भाग और योगात्मक मूल्यांकनों का छोटा उप-भाग होता है। यहाँ तक कि जब योगात्मक मूल्यांकन से एकत्र की गई जानकारी का उपयोग अध्यापन-विद्या सामग्री तथा मूल्यांकन उपकरणों में सुधार के लिए किया जाता है तो योगात्मक मूल्यांकन का रचनात्मक ढंग से उपयोग किया जा सकता है। जब मूल्यांकन मुख्यतः रचनात्मक होता है तो शिक्षार्थी अधिगम में रुचि लेता है और उन्हें अवांछित तनाव महसूस नहीं होता। दूसरी ओर जब हम केवल वार्षिक अथवा आवधिक योगात्मक परीक्षा अथवा परीक्षाओं को महत्व देते हैं, जैसा कि अभी तक कई स्कूलों में हो रहा है, तो इस प्रणाली से निम्नवत परिस्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं :

- कल परीक्षा की समय तालिका घोषित हुई। जब मैंने घर जाकर अपनी माँ को समय तालिका दिखाई तो वह बहुत उत्साहित हो गई। उन्होंने मुझे इस संबंध में बहुत सारे निर्देश दिए कि क्या करना है और क्या नहीं करना है। टी. वी. और दोस्तों के साथ बातचीत बंद कर दी गई थी। अचानक से पूरे घर को परीक्षा के डर ने जकड़ लिया था। जब मेरे पिताजी ऑफिस से आए वह भी उस जोरदार चर्चा में शामिल हो गए जो तैयारी, मेहनत, अंक और खराब प्रदर्शन के भयंकर परिणामों के बारे में थी। मैं कल रात सो नहीं पाई।

– श्रुति

- जब मैंने उत्तर लिखना शुरू किया मेरे दिमाग में कुछ नहीं आया। उत्तर-पुस्तिका में मुझे मेरे पिता का चेहरा दिखाई दिया। वह मुझसे कह रहे थे कि मुझे मेरी बड़ी बहन से अच्छा करके दिखाना है जिसे वह 'असफल' कहते थे। इस मूर्च्छा जैसी स्थिति में मुझे मेरा दादाजी की आवाज़ भी सुनाई दी जो कह रहे थे कि यदि मैंने अच्छा प्रदर्शन नहीं किया तो उनके सपने टूट जाएँगे। यही नहीं, उन सभी ने कहा कि यह मेरे जीवन की नींव है।

– दीपक

- जब से परीक्षा की समय तालिका घोषित हुई है मैं बहुत तनाव में हूँ। यदि बोर्ड के परिणाम आशानुरूप नहीं हुए तो मेरे प्रदर्शन का मूल्यांकन कर मुझे अगले सत्र में जूनियर कक्षाएँ दे दी जाएँगी। मैं बहुत परेशान और चिंतित हूँ। मुझे कुछ अतिरिक्त कक्षाएँ लेनी चाहिए और कमजोर छात्रों को कई आदर्श प्रश्न-पत्रों का अभ्यास करवाना चाहिए ताकि उन्हें भी महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर अच्छी तरह से याद हो जाएँ। मुझे प्रयास करना है कि किसी भी तरह से उन्हें अच्छे अंक मिल जाएँ अन्यथा मुझे निरंतर इसका स्मरण कराया जाएगा।

– कविता, शिक्षिका

क्या हम इस तरह की बातों से परिचित नहीं हैं? शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को भय, चिंता, तनाव, असुरक्षा और परिहास से मुक्त करना और उनका ज्ञानवर्धन करना है। लेकिन पिछले कई वर्षों में हमने भौतिक लाभों के लिए इस उत्कृष्ट प्रक्रिया को एक साधारण प्रक्रिया में बदल दिया है। जब अंक प्राप्त करना, दाखिला लेना, नौकरी पाना और धन कमाना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बन जाता है तो इससे प्रतिस्पर्धा उत्पन्न होती है और परिणामतः बच्चों पर अत्यधिक दबाव हो जाता है। यदि हम प्रत्येक बच्चे के लिए अधिगम को एक रुचिपूर्ण अनुभव बनाना चाहते हैं तो परीक्षा की पारंपरिक प्रणाली को बदलने की चुनौती को हमें शीर्ष प्राथमिकता देनी होगी।

सोच : हम परीक्षा उन्मुख शिक्षा प्रणाली के इतने आदी हो चुके हैं कि इसके विकल्प खोजने के प्रयास पर संदेह और अविश्वास किया जाता है। परीक्षा – उन्मुख शिक्षा से एक सुपरिभाषित नमूना निर्मित हो गया है जिसकी मुख्य विशेषताएँ निम्नवत् हो सकती हैं –

- अधिगम का उद्देश्य परीक्षा में बैठना होता है जो अक्सर शैक्षणिक सत्र के अंत में होती है।
- अध्यापक और छात्रों के अनुसार मूल्यांकन अधिगम के पश्चात होता है अर्थात् पहले बच्चे सीखते हैं और फिर उनकी परीक्षा ली जाती है।
- चूंकि औपचारिक परीक्षा निर्धारित पाठ्यक्रम पर आधारित होती है, जिससे अध्यापन और अधिगम पाठ्य पुस्तक आधारित हो जाता है जिसमें अध्यापक का कार्य केवल पाठ्यपुस्तक में दी गई जानकारी देना होता है।
- अधिगम जानकारी एकत्र करने और उसे दोहराने के समान हो जाता है और इसमें व्यक्तिगत चिंतन, मौलिकता और सृजनात्मकता के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता।
- चूंकि परीक्षाएँ बाद में होती हैं, अध्यापक और छात्र आरंभ में आराम से रहते हैं और बाद में बहुत ज्यादा चिंतित हो जाते हैं।
- तनाव से छात्र घबरा जाते हैं और उन्हें परीक्षा अच्छी नहीं लगती (हालाँकि उन्हें यह तनाव और चिंता समाप्त करने का अंतिम अवरोध लगता है।)
- इस परिदृश्य में अध्यापक अनिवार्यतः अध्यापन-अधिगम की प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित नहीं करते क्योंकि परीक्षा में छात्र के प्रदर्शन के रूप में केवल अंतिम उत्पाद का ही मूल्यांकन किया जाना है।
- छात्र अक्सर अंतिम क्षण तक अधिगम को स्थगित कर देते हैं। एक ओर अधिगम नियमित नहीं रहता और दूसरी ओर एक सीमित अवधि में अधिगम करने हेतु अत्यधिक सामग्री एकत्र होने के कारण यह अवास्तविक रूप से निरुत्साहित करने वाला हो जाता है।
- जो छात्र कम अवधि में रट्टा मारने में सिद्धहस्त होते हैं वे अच्छा प्रदर्शन करते हैं और जिनमें यह क्षमता नहीं होती वे खराब प्रदर्शन करते हैं।

उक्त विशेषताओं के साथ-साथ अन्य जिन पर अक्सर चर्चा होती है और जिनके बारे में सभी हितधारक अच्छे से जानते हैं, से ऐसी सोच बनी है जो निम्नवत विश्वासों से उत्पन्न होती है -

- यदि परीक्षा नहीं होगी तो अध्यापक पढ़ाएँगे नहीं और छात्र सीखेंगे नहीं।
- परीक्षा-प्रणाली अध्यापकों के लिए सुविधाजनक है क्योंकि अधिकांशतः उन्हें पाठ्यपुस्तकें पढ़ानी होती हैं और छात्रों को निकट भविष्य में होनी वाली परीक्षाओं के लिए तैयार करना होता है।

- यदि अध्यापकों को नियमित और व्यापक मूल्यांकन करना हो तो उन्हें अधिक कार्य करना पड़ेगा। अतः यथास्थिति बनाए रखना अधिक सुविधाजनक है।
- यदि मूल्यांकन को केवल शैक्षिक विषयों तक ही सीमित रखा जाता है तो यह उससे कहीं अधिक सरल हो जाएगा जब इसमें छात्र के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को शामिल किया जाए।
- जब मूल्यांकन सबसे आखिर में किया जाता है तो अध्यापकों को अपनी पद्धतियों को देखने की और बेहतर अधिगम के लिए इनकी समीक्षा करने की आवश्यकता नहीं होती। इसका अर्थ यह भी है कि सामग्री और विधियों हेतु किसी मूल्य संवर्धन की आवश्यकता नहीं है।
- **बदलता हुआ परिदृश्य :** अब सोच को बदलना होगा क्योंकि विश्वभर में बच्चों को अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया का केंद्र माना जाता है। मूल्यांकन में सामाजिक - सांस्कृतिक और आर्थिक पृष्ठभूमि, अधिगम उपायों, शैलियों और अभिरुचियों के संदर्भ में **व्यक्तिगत अंतर** को भी शामिल किया जाना चाहिए। 'एक बात सभी के लिए सही है' इस विश्वास को तोड़ना होगा और साथ ही अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया को व्यक्तिगत रूप देने की आवश्यकता है जिसमें प्रत्येक छात्र को अपने तरीके से ही सीखने में सहायता मिले, इस बात के लिए नियमित सुधार किया जाता है। इसका अर्थ है कि मूल्यांकन और अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया साथ-साथ चलनी चाहिए जिसमें अध्यापक और छात्रों को समृद्ध ज्ञान प्राप्त हो ताकि प्रक्रिया की प्रभाविता को निरंतर बढ़ाया जा सके। ऐसा निम्न प्रकार से किया जा सकता है :-
- यदि मूल्यांकन को अध्यापन-अधिगम के साथ एकीकृत कर दिया जाए।
- यदि अध्यापक सामग्री, विधियों और शिक्षार्थियों की क्षमताओं और कमियों को सुनिश्चित करने हेतु मूल्यांकन करें।
- यदि अध्यापक अपने अध्यापन और प्रत्येक छात्र के अधिगम में सुधार हेतु मूल्यांकन करें।
- यदि शिक्षार्थी अपनी अधिगम शैली और तरीकों का प्रेक्षण करें और इसका उपयोग अपने अधिगम में सुधार के लिए करें।

शैक्षिक मूल्यांकन

शिक्षार्थी के ज्ञान, समझ, अनुप्रयोग, मूल्यांकन, विश्लेषण के संबंध में वांछित व्यवहार और विषयों में सृजनात्मकता तथा अनजानी परिस्थितियों में इसका उपयोग करने की क्षमता शैक्षिक क्षेत्र के कुछ उद्देश्य है।

अध्यापन अधिगम प्रक्रिया में सुधार हेतु मूल्यांकन रचनात्मक और योगात्मक दोनों ही प्रकार का होना चाहिए।

रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन

रचनात्मक मूल्यांकन का उपयोग अध्यापक द्वारा भयरहित और सहयोगी वातावरण में छात्र के प्रगति के नियमित प्रबोध के लिए किया जाता है। इसमें नियमित और व्याख्यात्मक प्रतिपुष्टि छात्रों को अपने प्रदर्शन पर नजर डालने के लिए एक अवसर देने, सलाह लेकर इसमें सुधार करना शामिल है। इससे छात्रों को स्वयं का अथवा सहपाठियों के मूल्यांकन की रूपरेखा मूल्यांकन का अनिवार्य अंग है। यदि इसका प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाए तो यह बच्चे के स्वाभिमान को बढ़ाकर और अध्यापक के बोझ को कम कर छात्र के प्रदर्शन में अत्यधिक सुधार करता है।

रचनात्मक मूल्यांकन की विशेषताएँ

- यह नैदानिक और उपचारात्मक होता है।
- प्रभावी प्रतिपुष्टि प्रदान करता है।
- छात्रों की अधिगम में सक्रिय भागीदारी हेतु मंच प्रदान करता है।
- मूल्यांकन के परिणामों को देखने के लिए अध्यापकों के अध्यापन को अनुकूल बनाने में सहायता करता है।
- अभिप्रेरणा और छात्रों के स्वाभिमान जिनका कि अधिगम पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है पर मूल्यांकन के गंभीर प्रभाव का पता लगाता है।
- छात्रों को अपना मूल्यांकन करने की सक्षमता की आवश्यकता को पहचानने में सहायता करता है और बताता है कि इसमें कैसे सुधार करना है।
- यह समझने में कि क्या सिखाया गया है, छात्रों के पूर्व ज्ञान और अनुभव का निर्माण करता है।
- यह निर्णय करने कि कैसे और क्या पढ़ाना है, के लिए विविध अधिगम शैलियों को शामिल करता है।
- छात्रों को उस मानदंड को समझने के लिए प्रोत्साहित करता है जिसका उनके कार्य के संबंध में निर्णय लेने के लिए उपयोग किया जाएगा।
- छात्रों को प्रतिपुष्टि के पश्चात अपने कार्य को सुधारने का अवसर देता है।

- छात्रों की अपने सहपाठियों की सहायता करने और उनसे सहायता की अपेक्षा रखने में सहयोग करता है।

अतः अध्यापन पद्धतियों और अधिगम कार्यकलापों में समुचित संशोधन के संबंध में निर्णय लेने हेतु अध्यापकों और शिक्षार्थियों दोनों को निरंतर प्रतिपुष्टि देने हेतु निर्देश पाठ्यक्रम में रचनात्मक मूल्यांकन किया जाता है।

- '..... अक्सर इसका तात्पर्य इतना ही है कि मूल्यांकन कई बार किया जाता है और इसकी आयोजना अध्यापन के समय ही की जाती है' (ब्लैक एंड विलियम, 1999)
- '..... प्रतिपुष्टि प्रदान करता है जिससे छात्रों में (अधिगम) अंतर को पहचानने और इसे दूर करने में सहायता मिलती है यह आगे की ओर देखता है' (हारलेन, 1998)
- '..... इसमें प्रतिपुष्टि और स्व-निगरानी दोनों शामिल है' (सैडलर, 1989)
- '..... अनिवार्यतः इसका उपयोग अध्यापन और अधिगम प्रक्रिया की प्रतिपुष्टि के लिए किया जाता है' (टून्सटल और गिप्स, 1996)

अधिगम के पाठ्यक्रम के समाप्त होने पर **योगात्मक मूल्यांकन** किया जाता है। इसमें यह मापा जाता है अथवा आंका जाता है कि छात्र ने पाठ्यक्रम से कितना सीखा है। सामान्यतया यह एक ग्रेडेड टेस्ट है अर्थात् इसका अंकन ग्रेडों के पैमाने अथवा समुच्चय के अनुसार किया जाता है। मुख्यतया योगात्मक प्रकृति के मूल्यांकन से बच्चे की वृद्धि और विकास का वैध मापन करना संभव नहीं होगा। इसकी सबसे अच्छी बात यह है कि यह एक निर्धारित समय में उपलब्धि के स्तर को प्रमाणित करता है। पेपर-पेंसिल परीक्षण से मुख्यतया एक बार मूल्यांकन किया जा सकता है और बच्चे की वृद्धि के बारे में निर्णय हेतु विशिष्ट रूप से इन पर निर्भर रहना न केवल अनुचित अपितु अवैज्ञानिक भी है। केवल शैक्षिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए परीक्षा के अंकों पर अधिक बल देने से बच्चे यह मान लेते हैं कि मूल्यांकन अधिगम से भिन्न है और परिणामतः 'सीखो और भूलो' विकृति उत्पन्न हो जाती है। हानिकारक प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करने के अलावा योगात्मक मूल्यांकन प्रणाली पर अधिक बल देने से शिक्षार्थियों में काफी तनाव और चिंता उत्पन्न हो जाती है।

योगात्मक मूल्यांकन की विशेषताएँ

- अधिगम का मूल्यांकन
- सामान्यतया अध्याय अथवा सत्र के अंत में यह जानने के लिए किया जाता है कि छात्रों ने क्या सीखा है और क्या नहीं।

- छात्र के कार्य का मूल्यांकन करने के लिए योगात्मक मूल्यांकन सबसे पारंपरिक तरीका है।

योगात्मक मूल्यांकन

- ‘अच्छा योगात्मक मूल्यांकन – परीक्षण और अन्य ग्रेडेड मूल्यांकन निश्चित तौर पर विश्वसनीय, वैध और पक्षपात रहित होना चाहिए’ (एंजेलो और क्रोस, 1993)
- ‘..... मूल्यांकन जिसका उपयोग अधिकतर अधिगम के बारे में निर्णय लेने के लिए किया जाता है – (ब्लैक और विलियम, 1999)
- ‘..... पूर्व की उपलब्धियों को देखता है विद्यमान कार्य में प्रक्रियाएँ अथवा परीक्षणों को जोड़ता है छात्र को केवल अंकन और प्रतिपुष्टि ग्रेड देता है अध्यापन से भिन्न है उस अंतराल में किया जाता है जब उपलब्धि का सार तैयार कर बताना होता है (हारलेन 1998)

शैक्षिक मूल्यांकन (भाग एक - क)		
रचनात्मक मूल्यांकन (नम्य समय सारिणी)		योगात्मक मूल्यांकन (लिखित - सत्र की समाप्ति पर)
उपकरण	तकनीक	
- वस्तुनिष्ठ सार - लघु उत्तर - दीर्घ उत्तर - प्रश्न - प्रेक्षण समय-सारिणी - साक्षात्कार समय-सारिणी - चेकलिस्ट (जाँच सूची) - रेटिंग स्केल (आकलन पैमाना) - उपाख्यान रिकॉर्ड - प्रलेख विश्लेषण - परीक्षण और इन्वेंटरी - पोर्टफोलियो विश्लेषण	- परीक्षण - अधिन्यास - प्रश्न-मंच (क्विज़) और प्रतियोगिताएँ - परियोजनाएँ - वाद-विवाद - व्याख्यान - सूमह चर्चा - क्लब गतिविधियाँ	- वस्तुनिष्ठ प्रकार - लघु उत्तर - दीर्घ उत्तर

अध्यापक समुदाय हेतु बाधाएँ

सामान्यतया स्कूली शिक्षा और विशेष रूप से मूल्यांकन पद्धतियों ने परिवर्तन की प्रचलित प्रक्रिया में अध्यापक की भूमिका को पुनः परिभाषित किया है। इसमें कुछ प्रमुख बाधाएँ निम्नवत हैं :

- अध्यापन पद्धतियाँ और अधिक समय तक यांत्रिक नित्यचर्या जैसी नहीं हो सकती। चूँकि रचनात्मक मूल्यांकन कक्षा अध्यापन का अभिन्न अंग है अतः अध्यापक को पाठ्यचर्या अध्यापन हेतु प्रतिपुष्टि का उपयोग करने के तरीके और साधन खोजने पड़ते हैं।
- पाठ्यपुस्तक को पढ़ाना कक्षा-पद्धतियों की मुख्य विधि नहीं होगी। अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में सभी शिक्षार्थियों को शामिल करने के लिए सहक्रियात्मक कार्यों सहयोगात्मक कार्य और परियोजनाओं के संबंध में मूल्य संवर्धन तथा नई विषय-वस्तु के एकीकरण की आवश्यकता होगी।

- चूँकि रचनात्मक मूल्यांकन में अध्यापक द्वारा पढ़ाए गए अध्याय अथवा पाठ विशेष समुचित उपकरण और पद्धतियाँ तैयार करनी होती हैं, अतः अध्यापक के लिए यह आवश्यक होगा कि वह अपने ज्ञान-कोष में निरंतर नई सामग्री और तरीकों को जोड़ता रहे। इसका अर्थ यह भी होगा कि पाठ और शिक्षार्थी की आवश्यकताओं के अनुसार पाठ-योजना उत्कृष्ट हो और इसमें निरंतर परिवर्तन होते रहें।
- अध्यापक को एक सच्चा ज्ञान का भंडार बनना होता है, स्रोतों से सहायता लेनी होती है, नई सामग्री पढ़नी पड़ती है, सहयोगियों और विशेषज्ञों के साथ पाठ्यचर्या संबंधी मुद्दों पर चर्चा करनी पड़ती है, सामग्री तैयार करनी होती है और शोध करना पड़ता है।
- अब अध्यापन छह अथवा सात घंटे की नौकरी नहीं हो सकती। यह एक व्यवसाय है और इसे अपनाने वालों को न केवल स्कूल में बल्कि स्कूल के बाहर भी रोज स्वयं को तैयार करना पड़ता है।
- अभिलेखन और प्रतिवेदन अनिवार्यतः विस्तृत हो जाएँगे क्योंकि कई बार अनदेखी किए गए अथवा जिनका कम उपयोग किया गया है, ऐसे मानदंडों को भी प्रभावी रूप से शामिल करना होगा। अध्यापकों को रचनात्मक मूल्यांकन और इसके अभिलेखन हेतु नियमित आधार पर इसके लिए पर्याप्त समय देना आवश्यक होगा। इसका अर्थ यह भी है कि अध्यापकों को जटिलता और अस्पष्टता के लिए सहिष्णुता का विकास करना होगा। संक्षेप में, कहा जाए तो सोच को बदलना है और अध्यापक-समुदाय को अधिक जिम्मेदारी लेनी होगी।

बदलते प्रतिमान

सतत और व्यापक मूल्यांकन से कक्षा में भारी परिवर्तन आया है। इस परिवर्तन का मुख्य पहलू यह है कि मूल्यांकन अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनता जा रहा है। सीसीई और रचनात्मक मूल्यांकन नई संकल्पनाएँ नहीं हैं और कई स्कूलों में काफी लंबे समय से ये विद्यमान हैं। लेकिन भिन्न-भिन्न उपकरणों और संकेतकों के उपयोग से शैक्षिक और सह-शिक्षात्मक क्षेत्रों में मूल्यांकन से मूल्यांकन प्रक्रिया को ठोस वैज्ञानिक आधार तथा विश्वसनीयता मिली है। इसी प्रकार से, यद्यपि रचनात्मक मूल्यांकन स्कूलों द्वारा अपनाई गई मूल्यांकन पद्धतियों का एक अंग रहा है तथापि अधिगम अंतरों की पहचान करने और इन्हें दूर करने हेतु इसका व्यवस्थित ढंग से उपयोग नहीं किया गया है। एक प्रकार से अध्याय परीक्षा, कार्य और परियोजनाओं की प्रणाली जिनका उपयोग अधिगम के सतत मूल्यांकन को दर्शाने के लिए किया जा रहा है, की प्रकृति अधिक योगात्मक हो गई है क्योंकि प्रतिपुष्टि का प्रयोग यदा-कदा ही अध्यापन अधिगम पद्धतियों में सुधार के लिए किया जाता है। अतः यह अनिवार्य है कि रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन की संकल्पनाओं को सही परिप्रेक्ष्य में समझा जाए ताकि हम न केवल तदनुसार उपकरण निर्मित कर सकें अपितु उस प्रयोजन हेतु उनका उपयोग भी कर सकें जिसके लिए हमने उनका निर्माण किया है।

रचनात्मक मूल्यांकन क्या है?

आइए एक कार्यक्रमलाप देखें :

विषय : सामाजिक विज्ञान (कक्षा : 8वीं)

विषय : महिलाएँ, जाति और सुधार

कार्य : नाट्यकरण

पद्धति

1. छात्रों को समूह में बांटा जाएगा। वे अपने समूह में चर्चा करेंगे और भारतीय समाज में भिन्न भिन्न काल में व्याप्त सामाजिक बुराइयों में से किसी पर एक लघु नाटिका (स्किट) तैयार करेंगे।
2. सामाजिक बुराइयों में सती प्रथा, बाल विवाह, बालिका शिशु हत्या, महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखना और लिंग असमानता इत्यादि हो सकते हैं।
3. प्रत्येक समूह एक लघु नाटिका तैयार करेगा और इसको प्रदर्शित करेगा। प्रत्येक छात्र से कुछ संवाद बोलने को कहा जाएगा।
4. प्रस्तुतीकरण के बाद, विद्यार्थी चर्चा करेंगे।

अधिगम उद्देश्य :

शिक्षार्थियों को भारत में विभिन्न कालावधियों में व्याप्त सामाजिक बुराइयों के बारे में जानकारी देना।

शिक्षार्थियों को सामाजिक बुराइयों को दर्शाने का अवसर देना और उनकी भावनाओं को मौखिक रूप देना।

कौशल

छात्रों में निम्न की क्षमता का विकास करना :

- कहानी का नाट्य रूप लिखना
- संवाद बोलना
- अभिनय करना
- समूह में कार्य करना

मूल्यांकन

समूहों के प्रदर्शन का मूल्यांकन विषय-वस्तु, संवाद बोलने और संकल्पना की स्पष्टता के आधार पर किया जाएगा।

समय

- चर्चा और स्क्रिप्ट लेखन : 2 पीरियड
- प्रस्तुतीकरण : 1 पीरियड

अनुवर्ती कार्यवाई :

प्रस्तुतीकरणों पर कक्षा द्वारा चर्चा की जा सकती है। जहाँ पर भी संकल्पना स्पष्ट नहीं है अध्यापक छात्रों को अपनी टिप्पणियाँ देने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। अध्यापक पाठ के किसी भी भाग जो छात्रों की समझ में ठीक से नहीं आया है, को दोहरा सकते हैं।

यह रचनात्मक मूल्यांकन कार्य है या योगात्मक मूल्यांकन कार्य ?**इसकी विशेषताएँ निम्नवत् हैं :**

- इसका मुख्य उद्देश्य है शिक्षार्थियों को भारत में विभिन्न कालावधियों में बालिका शिशु और महिला के विरुद्ध व्याप्त सामाजिक बुराइयों की संकल्पना को समझने में सहायता करना।
- यह कार्यकलाप महिलाएँ, जाति और सुधार विषय के अध्यापन-अधिगम का एक भाग है।
- इस कार्यकलाप में छात्र सामूहिक परिचर्चा और प्रस्तुतीकरण करते हैं।
- कार्यकलाप पूरा होने के बाद अध्यापक सुधार हेतु प्रतिपुष्टि देता है। साथ ही यदि आवश्यक हो पाठ की समीक्षा की जा सकती है।
- मूल्यांकन सु-परिभाषित मानदंड के आधार पर की जाती है।
- यह कार्यकलाप कक्षा में पाठ के भाग के रूप में किया जाता है।
- इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थी के ज्ञान का मापन करना नहीं है। इस कार्यकलाप का उद्देश्य प्रयोगात्मक अधिगम के माध्यम से संकल्पनात्मक स्पष्टता प्रदान करना है।
- यह अधिगम को और प्रोत्साहित करता है।

ये विशेषताएँ रचनात्मक मूल्यांकन का आधार हैं।**आइए अब हम परीक्षण में दिए निम्नवत् प्रश्नों को देखते हैं :**

विभिन्न कालों में भारतीय समाज में व्याप्त विभिन्न सामाजिक बुराइयाँ कौन-सी हैं? उन्होंने बालिकाओं और महिलाओं को कैसे प्रभावित किया है? अपना उत्तर दो सौ शब्दों में लिखें।

यह एक सामान्य प्रश्न है जो योगात्मक परीक्षण अथवा परीक्षा में आता है। यहाँ पर मुख्य उद्देश्य परीक्षित पाठ

में शिक्षार्थी के ज्ञान को मापना है। शिक्षार्थियों के उत्तरों के लिए मूल्य बिंदु और अंकन योजना के आधार पर अंक दिए जाएंगे अथवा ग्रेडिंग की जाएगी। अध्यापक द्वारा एकत्र जानकारी का उपयोग शिक्षार्थियों की समस्याओं का पता लगाने अथवा उपचारार्थ नहीं किया जाए क्योंकि परीक्षण सामान्यतया अध्याय अथवा पाठ समाप्त होने के बाद किया जाता है।

लेकिन, यदि पाठ के दौरान इस उद्देश्य से कि शिक्षार्थियों की और सहायता की जा सके, अधिगम में कमी का पता लगाने हेतु विषय पर लघु क्विज़ या परीक्षण का आयोजन किया जाए तो यह रचनात्मक प्रकृति का होगा। अतः, कमोबेश जिस तरह से उपकरण का उपयोग किया जाता है अर्थात् अधिगम में संवर्धन हेतु अथवा अधिगम की प्रमात्रा सुनिश्चित करने और उसका मापन करने हेतु, यह निर्णय करता है कि यह रचनात्मक प्रयोजन हेतु है अथवा योगात्मक प्रयोजन हेतु।

अपनी संकल्पना को स्पष्ट करने हेतु आइए रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन की विशेषताओं को विस्तार से देखते हैं :-

रचनात्मक मूल्यांकन

- रचनात्मक मूल्यांकन वह मूल्यांकन है जो एक पाठ्यक्रम अथवा अध्ययन कार्यक्रम के दौरान किया जाता है।
- यह अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है।
- यह अक्सर अनौपचारिक होता है अर्थात् यह अध्यापकों द्वारा अध्यापन के दौरान किया जाता है।
- यह इस बारे में अध्यापक और शिक्षार्थी दोनों को प्रतिपुष्टि देता है कि पाठ्यक्रम कैसा चल रहा है और पाठ्यक्रम के दौरान अधिगम में सुधार कैसे किया जा सकता है।
- यह अध्यापक और शिक्षार्थी को निम्न प्रश्नों के उत्तर देने में सहायता करता है :

क्या शिक्षार्थी वह कर रहे हैं जो उन्हें करना चाहिए?

क्या अध्यापक द्वारा चयनित अध्यापन और अधिगम के तरीकों में संशोधन की आवश्यकता है?

जब रसोइया सूप चखता है, यह रचनात्मक है

जब अतिथि सूप चखते हैं, यह योगात्मक है।

- रॉबर्ट स्टेक्स

योगात्मक मूल्यांकन

- योगात्मक मूल्यांकन आवधिक रूप से यह पता लगाने के लिए किया जाता है कि छात्र एक समय विशेष में क्या जानते हैं और क्या नहीं।
- सामान्यतया योगात्मक मूल्यांकन मानकीकृत परीक्षणों जैसे बोर्ड की परीक्षा, अर्ध वार्षिक और वार्षिक परीक्षा और यहाँ तक कि अध्याय परीक्षा के साथ संबद्ध होते हैं।
- कुछेक सप्ताह, महीनों अथवा वर्ष में एक बार निर्देश द्वारा इन्हें आयोजित किया जाता है।
- इस प्रकार ये कार्यक्रमों की प्रभाविता, स्कूल सुधार संबंधी लक्ष्यों, पाठ्यचर्या का संरेखण और छात्रों के स्थापन का मूल्यांकन करने में सहायता करने वाले उपकरण हैं।
- चूंकि इनका उपयोग समग्र अधिगम को जानने के लिए किया जाता है इसलिए इन्हें योगात्मक मूल्यांकन कहा जाता है।
- ये हमेशा औपचारिक प्रकृति के होते हैं।
- ये मूल्यांकन अधिगम के दौरान काफी आगे जाकर होते हैं ताकि कक्षा के स्तर पर जानकारी दी जा सके और अधिगम प्रक्रिया के दौरान निर्देशात्मक सामंजस्य स्थापित करने और हस्तक्षेप करने के लिए किए जाते हैं।

• रचनात्मक मूल्यांकन अधिगम की सहायता के लिए मूल्यांकन होता है

• योगात्मक मूल्यांकन हो चुके अधिगम का मूल्यांकन है।

• रचनात्मक मूल्यांकन अध्यापन – विधि है

• योगात्मक मूल्यांकन अनिवार्यतः मूल्यांकन है।

• रचनात्मक मूल्यांकन को 'अभ्यास' माना जा सकता है।

• योगात्मक मूल्यांकन 'अभ्यास के बाद प्रदर्शन' है।

• एक अच्छे व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन के बीच संतुलन बनाता है।

रचनात्मक मूल्यांकन क्या 'नहीं' है?

यह देखने में आया है स्कूल सतत मूल्यांकन के नाम पर कई परीक्षणों (टेस्ट) का आयोजन करते हैं। शैक्षणिक सत्र के लगभग सप्ताह के प्रत्येक दिन अथवा प्रत्येक माह में परीक्षण होते हैं। इसका तर्क यह है कि बार-बार परीक्षण आयोजित करने से ही सतत मूल्यांकन सुनिश्चित किया जा सकता है। लेकिन इन पद्धतियों को रचनात्मक मूल्यांकन नहीं कहा जा सकता क्योंकि ये अध्यापन-अधिगम प्रक्रियाओं के साथ एकीकृत नहीं हैं। न ही अध्यापकों द्वारा उक्त परीक्षणों से एकत्र जानकारी का अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में सुधार हेतु प्रभावी और व्यवस्थित ढंग से उपयोग किया जाता है।

स्थिति अध्ययन

कक्षा 9वीं के छात्रों को विज्ञान में निम्न परियोजना दी गई :

संचारी रोगों की परियोजना

- पुस्तकों और पत्रिकाओं से पढ़कर और इंटरनेट सर्फिंग द्वारा संचारी रोगों के बारे में जानकारी एकत्र करें।
- दृष्टान्तों, चित्रों और फोटोग्राफों सहित जानकारी को एक फोल्डर में प्रस्तुत करें।
- फोल्डर को मूल्यांकन हेतु 15 दिनों के भीतर प्रस्तुत करें।
- फोल्डर का मूल्यांकन निम्न मानदंडों के अनुसार किया जाएगा, विषयवस्तु और दृष्टान्तों का सुंदर प्रस्तुतीकरण

छात्र कार्यकलाप को स्वयं पूरा करें और निर्धारित तिथि तक फोल्डर प्रस्तुत करें। अध्यापक द्वारा मूल्यांकन मानदंड के अनुसार छात्रों के कार्य की ग्रेडिंग की जाए।

प्रश्न

- क्या यह एक अच्छा रचनात्मक कार्य है?
- इस कार्य को करने में छात्रों की अध्यापक और सहपाठियों ने किस प्रकार मदद की?
- परियोजना का उद्देश्य क्या है?
- छात्रों की जानकारी एकत्र करने और उसे प्रस्तुत करने की क्षमता का मूल्यांकन करना?

अथवा

- छात्रों के अधिगम को बढ़ाने में सहायता करना?

यदि इसका उद्देश्य 'शिक्षार्थी की परियोजना के विषय को समझने में सहायता करना है तो परियोजना को अलग ढंग से व्यवस्थित करना चाहिए।

- अध्यापक को शिक्षार्थियों के साथ परियोजना पर चर्चा करनी चाहिए।

- वे उन तरीकों को खोजेंगे जिनके द्वारा जानकारी एकत्र की जा सकती है; समझी जा सकती है और ग्रहण की जा सकती है।
- सामूहिक कार्य हेतु अवसर प्रदान करता है ताकि शिक्षार्थी मिल-जुलकर विषय का अध्ययन करें और एक दूसरे की सहायता और सहयोग करें।
- अध्यापक द्वारा नियमित अंतराल पर समग्र प्रक्रिया की निगरानी की जाती है तथा सुधार, संशोधन और इसे बेहतर बनाने हेतु प्रतिपुष्टि दी जाती है।
- फोल्डर प्रस्तुत करने के अलावा शिक्षार्थियों को कक्षा में प्रस्तुतीकरण देना होता है अथवा वाइवा (मौखिक परीक्षा) भी देना होता है।
- शिक्षार्थियों की सहपाठियों के मूल्यांकन में शामिल करने के द्वारा मूल्यांकन किया जाता है।
- अध्यापक और शिक्षार्थियों द्वारा एकत्र जानकारी का उपयोग अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में सुधार करने तथा इसे आगे बढ़ाने में किया जाता है।

ऐसी परियोजनाओं और कार्यों के संबंध में मुख्य बात यह है कि अध्यापक के पास यह सुनिश्चित करने का अवसर बहुत कम होता है कि ये छात्रों ने स्वयं तैयार किए हैं। अब यह सभी जानते हैं कि परियोजनाएँ और कार्य दुकान से खरीदे जा सकते हैं। अभिभावकों द्वारा परियोजनाएँ बनाने के उदाहरण भी आम हैं। यही नहीं, इंटरनेट से जानकारी लेने से ज्यादा कुछ नहीं सीखा जा सकता।

अतः परियोजनाओं और कार्यों का रचनात्मक मूल्यांकन के प्रभावी उपकरणों के रूप में उपयोग करने हेतु अध्यापक को कुछ सावधानियाँ बरतनी चाहिए -

- शिक्षार्थियों द्वारा यथासंभव स्कूल में ही अध्यापक के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण में कार्य किया जाए।
- शिक्षार्थियों के साथ परियोजना पर चर्चा करें और प्रत्येक चरण में उनकी प्रगति की निगरानी करें।
- स्वयं और सहपाठियों के मूल्यांकन के माध्यम से उन्हें मूल्यांकन प्रक्रिया में शामिल करें।
- छात्रों को अधिगम प्रक्रिया में आगे बढ़ाने के लिए निर्देशात्मक उपाय के रूप में व्याख्यात्मक प्रतिपुष्टि दें।
- छात्रों के कक्षा अधिगम के कार्यकलाप और अपने अनुभव के साथ जोड़ने में सहायता करें।
- इसकी अनुवर्ती गतिविधियों में कुछ संकल्पनाओं को दोहराने, स्पष्टीकरण इत्यादि को हासिल करें।

इस संदर्शिका में क्या है?

सीबीएसई से मान्यता प्राप्त स्कूलों में 2009-10 में कक्षा 9वीं में सीसीई को कार्यान्वित करने के पश्चात बोर्ड को लगा कि सभी हितधारकों विशेषकर अध्यापकों को सीसीई के बारे में समग्र जानकारी देना आवश्यक है। अतः, सतत और व्यापक मूल्यांकन संबंधी अध्यापक संदर्शिका - कक्षा 9वीं और 10वीं तैयार की गई। सीसीई योजना के बारे में विस्तृत

जानकारी देने के अलावा सह-शिक्षात्मक और शैक्षिक क्षेत्रों के मूल्यांकन के आधारभूत तत्त्व, स्कूल आधारित मूल्यांकन के आयाम और रचनात्मक और योगात्मक प्रयोजनों हेतु मूल्यांकन के उपकरण और तकनीक को भी संदर्शिका में शामिल किया गया है। रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकनों हेतु भारांक का आवधिक आवंटन को भी संदर्शिका में दिया गया है।

इस प्रकाशन के अनुक्रम में बोर्ड ने कक्षा 9वीं और 10वीं के लिए भाषाओं, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में रचनात्मक मूल्यांकन पर उदाहरण और व्याख्यात्मक सामग्री उपलब्ध कराने हेतु संदर्शिकाओं की एक श्रृंखला निकालने का निर्णय किया। योगात्मक मूल्यांकन हेतु विनिर्देशनों सहित विस्तृत दिशानिर्देश स्कूलों को पहले ही उपलब्ध करा दिए गए हैं। रचनात्मक मूल्यांकन को और सुदृढ़ बनाए जाने की आवश्यकता है, इसलिए ये संदर्शिका तैयार की गई हैं।

रचनात्मक मूल्यांकन संबंधी संदर्शिका के उद्देश्य

1. सीसीई की व्यापक रूपरेखा में रचनात्मक मूल्यांकन की संकल्पना को स्पष्ट करना।
2. निर्धारित सामग्री और कक्षा पद्धतियों के साथ रचनात्मक मूल्यांकनों (एफ 1, एफ 2, एफ 3 और एफ 4) को एकीकृत करना।
3. अध्यापन – अधिगम में संवर्धन हेतु रचनात्मक मूल्यांकन का उपयोग करने के लिए अध्यापकों और शिक्षार्थियों की सहायता करना।
4. कक्षा 9वीं और 10वीं हेतु भाषाओं, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में अध्यापक/ पाठ के लिए रचनात्मक मूल्यांकन के कार्यकलापों के समृद्ध स्रोत उपलब्ध कराना।
5. अध्यापकों की संदर्शिका में दिए गए रचनात्मक मूल्यांकन कार्यकलापों के उपयोग से स्वयं और कार्यकलाप तैयार करने में सहायता करना।
6. रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकनों के संबंधों में संकल्पना स्पष्ट करने में अध्यापकों की सहायता करना।
7. सामग्री और प्रविधियों को बेहतर बनाने के लिए अध्यापकों को क्षमता वृद्धि (संवर्धन) हेतु प्रेरित करना।
8. अध्यापकों की प्रभावी समय-प्रबंधन में सहायता करना।
9. रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकनों को व्यवस्थित ढंग से अभिलेखन हेतु स्कूलों को दिशानिर्देश उपलब्ध कराना।
10. मूल्यांकन, परामर्श तथा ज्ञानवर्धन के क्षेत्र में विकास हेतु अध्यापक को अवसर प्रदान करना।
11. विभिन्न हितधारकों के बीच सीसीई और इस योजना में रचनात्मक मूल्यांकन के स्थान पर स्वस्थ और सार्थक चर्चा आरंभ करना।

12. अध्यापकों और शिक्षार्थियों दोनों के लिए अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया को रुचिकर बनाना।

विषयवस्तु :

संदर्शिका में व्यापक रूप से निम्न क्षेत्र शामिल हैं।

1. रचनात्मक मूल्यांकन और योगात्मक मूल्यांकन : संकल्पना और भेद
2. वे रचनात्मक मूल्यांकन पद्धतियां कौन सी हैं जो अच्छी नहीं हैं?
3. अध्याय, समय सीमा, अवधि, प्रत्येक रचनात्मक मूल्यांकन हेतु कार्यकलापों की संख्या, भारांक की गणना और अभिलेखन, विश्लेषण और अनुवर्ती कार्यवाई में विभाजन सहित रचनात्मक मूल्यांकन की समग्र रूपरेखा।
4. कक्षा 9वीं और 10वीं हेतु भाषाओं, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में विभिन्न अध्यायों / पाठों के लिए रचनात्मक मूल्यांकन कार्यकलाप।

रचनात्मक मूल्यांकन की समग्र रूपरेखा

(1) कक्षा 9वीं और 10वीं -शैक्षिक क्षेत्र

शैक्षिक भाग 1 (क)

कक्षा 9वीं और 10वीं में शैक्षणिक विषयों का मूल्यांकन

6 मूल्यांकन प्रस्तावित हैं। ये अधिकांश स्कूलों के लिए वैध है लेकिन बोर्ड से पत्र व्यवहार कर इनकी संख्या में परिवर्तन किया जा सकता है या इन्हें अनुकूल बनाया जा सकता है।

मूल्यांकन का प्रकार	शैक्षणिक सत्र में भारांक का प्रतिशत	माह	सत्रवार भारांक
पहला सत्र			
रचनात्मक मूल्यांकन - 1	10 प्रतिशत	अप्रैल - मई	एफ 1+2=20 प्रतिशत
रचनात्मक मूल्यांकन - 2	10 प्रतिशत	जुलाई - अगस्त	
योगात्मक मूल्यांकन - 1	20 प्रतिशत	सितंबर	एस 1 = 20 प्रतिशत

द्वितीय सत्र			
रचनात्मक मूल्यांकन - 3	10 प्रतिशत	अक्तूबर - नवंबर	एफ 3+4=20 प्रतिशत
रचनात्मक मूल्यांकन - 4	10 प्रतिशत	जनवरी - फरवरी	
योगात्मक मूल्यांकन - 2	40 प्रतिशत	मार्च	एस 2 = 40 प्रतिशत

कुल रचनात्मक मूल्यांकन = एफ 1 + एफ 2 + एफ 3 + एफ 4 = 40 प्रतिशत

योगात्मक मूल्यांकन = एस1 + एस 2 = 60 प्रतिशत

अध्यापकों और छात्रों द्वारा निम्न बिंदुओं को नोट किया जाए (कक्षा 9वीं और 10वीं के लिए)

- पहले और दूसरे सत्र में दो-दो रचनात्मक मूल्यांकन हैं।
- प्रत्येक रचनात्मक मूल्यांकन लघु मूल्यांकनों में विभाजित है (कक्षा कार्य, क्विज़, परियोजनाएं, लिखित परीक्षण) जिनके अंक भिन्न-भिन्न हैं।
- प्रत्येक रचनात्मक मूल्यांकन का भारांक 10 प्रतिशत है जो कि सर्वाधिक बेहतर तीन या चार या सभी कार्यकलापों के औसत से निकाला जा सकता है।
- सभी चार रचनात्मक मूल्यांकनों का कुल वेटेज 40 प्रतिशत है।
- चारों रचनात्मक मूल्यांकनों के अनुसार पाठ्यचर्याओं की समयावधि, आवंटन और प्रत्येक रचनात्मक मूल्यांकन हेतु सुझाए गए कार्यकलापों की न्यूनतम संख्या प्रत्येक विषय के लिए वार्षिक योजना प्रलेख में दी गई है। वार्षिक योजना प्रलेख केवल सुझावात्मक है और स्कूलों द्वारा अपनी जरूरतों के अनुसार इसे अपनाया जा सकता है।

रचनात्मक मूल्यांकन और कक्षीय अध्यापन

रचनात्मक मूल्यांकन के कार्य निम्नलिखित सिद्धांतों को ध्यान में रखकर संकल्पित किए गए हैं :

- रचनात्मक मूल्यांकन कक्षीय अभ्यासों का अविभाज्य हिस्सा है। इसलिए इन्हें पढ़ाई जाने वाली पाठ्यचर्या के साथ जोड़ा गया है।
- कार्यों में आम तौर पर निम्नलिखित को निर्दिष्ट किया जाता है :

- अध्याय/पाठ
- कार्य कब आयोजित करना है
- प्रत्येक कार्य के लिए आवश्यक अनुमानित समय
- कार्य का उद्देश्य
- कार्य की विशिष्टियाँ
- कार्य आयोजित करने के लिए तैयारी सहित प्रक्रिया विधि, यदि कोई हो
- मूल्यांकन का मानदण्ड
- प्रतिपुष्टि और अनुवर्तन

यद्यपि अध्यापकों को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार कार्य के समग्र अभिकल्पन में छोटे मोटे संशोधन करने की स्वतंत्रता है।

ध्यान में रखने वाला सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि ये कार्य अध्यापन - अधिगम प्रक्रिया में समेकित करने के लिए बनाए गए हैं, अर्थात् एक अध्याय/पाठ को पढ़ाते समय (इसके बाद नहीं) इसे शामिल किया जाना चाहिए। साथ ही शंकाओं को स्पष्ट करने, सीखने वालों के सामने आने वाली समस्याओं को दूर करने और अध्यापन की विधियों में संशोधन करने और कार्यनीतियों के संदर्भ में अनुवर्तन को अत्यधिक महत्व दिया जाना चाहिए। अतः रचनात्मक मूल्यांकन कार्य अध्यापकों द्वारा विकसित अध्यापन योजनाओं में दर्शाए जाएंगे।

पाठ्यचर्या का विभाजन

सीसीई का सुचारु कार्यान्वयन करने के लिए सीबीएसई ने पाठ्यचर्या को सभी विषय अवधि वार विभाजित किया है। इस संदर्शिका में पुनः पाठ्यचर्या को उप विभाजित कर अध्यायों/पाठों के नाम तथा संख्या दर्शाए गए हैं जैसे एफए 1, एफए 2, एसए 1, एफए 3, एफए 4, और एसए 2 जबकि चारों रचनात्मक मूल्यांकनों को दिया गया भारांक 10 प्रतिशत है, फिर भी यूनियों / पाठों की संख्या इनमें से प्रत्येक के लिए बदल सकती है जो वार्षिक शैक्षिक कैलेंडर में उपलब्ध समय पर निर्भर करती है। अध्यापकों को शैक्षिक सत्र की शुरुआत में सुझाए गए वार्षिक कैलेंडर का अध्ययन करने और उन्हें अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप अनिवार्य पाए गए किसी प्रकार के छोटे संशोधनों को अपनी स्वयं की वार्षिक योजना में सहयोगात्मक रूप से अभिकल्पित करने की सलाह दी जाती है। जबकि यह अनिवार्य है कि समग्र योजना को इस प्रकार धारित किया जाए कि निरंतर और व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया सच्चे अर्थों में जारी रह सके।

योगात्मक और रचनात्मक मूल्यांकन

प्रथम सत्र में रचनात्मक मूल्यांकन (एफए 1 + एफए 2) को दिया गया भारांक (वेटेज) 20 प्रतिशत है। एफए 1 को दिया गया भारांक 20 प्रतिशत है। स्कूल को एफए 1 में प्रथम सत्र के लिए समग्र पाठ्यचर्या में छात्रों का मूल्यांकन करना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि ऐसी एक या दो इकाइयाँ हो सकती हैं जिन्हें एफए 2 के बाद पढ़ाया जाए। इन इकाइयों को एफए 1 में मूल्यांकन के लिए शामिल किया जाएगा। सीप, कारदूसरेस त्रमेश पोषप पाठ्यचर्या का मूल्यांकन एफए 2 में किया जाएगा। इसका अर्थ यह है कि शिक्षकों को उन यूनिटों / पाठों के मूल्यांकन के बारे में बिना कारण चिंतित नहीं रहना चाहिए जो एफए 4 आयोजित करने के बाद पढ़ाई गई हैं। अन्य के साथ इन यूनिटों / पाठों को 40 प्रतिशत भारांक के लिए एफए 2 द्वारा दूसरे सत्र में शामिल किया जाएगा। यह भी नोट किया जाए कि यदि कोई यूनिट / पाठ समय की कमी के कारण रचनात्मक रूप से आकलित नहीं किया गया है तो प्रत्येक सत्र के अंत में इनका योगात्मक मूल्यांकन किया जाएगा।

रचनात्मक मूल्यांकन की प्रक्रियाविधि

- पाठ्यचर्या का सुझाया गया विभाजन रचनात्मक मूल्यांकन के लिए अध्यापकों द्वारा अपनाया जाएगा।
- रचनात्मक मूल्यांकन कार्यों की न्यूनतम संख्या, जो वार्षिक योजना में सुझाई गई हैं, आयोजित की जाएगी। जबकि अध्यापक आवश्यक तथा उपलब्ध समय पर निर्भर करते हुए कार्यों की न्यूनतम संख्या से अधिक दे सकते हैं।
- प्रत्येक कार्य में छात्रों के निष्पादन का मूल्यांकन दिए गए मूल्यांकन मानदण्डों के आधार पर किया जाएगा।
- रचनात्मक कार्यों में प्रत्येक छात्र द्वारा प्राप्त कुल अंकों की गणना की जाएगी और इसे 10 अंकों से विभाजित किया जाएगा। उदाहरण के लिए यदि 5 अंक के 3 कार्य एफए 1 के लिए दिए गए हैं और छात्र को इन कार्यों में 3, 3 और 2 अंक मिलते हैं तो छात्र द्वारा प्राप्त किए गए कुल अंक 15 में से 8 होंगे। अतः 10 के लिए भारांक $(8 \div 15) \times 10 = 5.33 = 5$ ग्रेड सी (कुल अंकों को अगले पूरे अंक तक पूर्णांक में बदला जाएगा, यदि दशमलव 0.5 या इससे अधिक है। यदि इससे कम है तो इसे छोड़ दिया जाए)। इसी प्रकार एफए 2, एफए 3 और एफए 4 के लिए अंकों की गणना की जाएगी तथा कुल अंकों से पूरे शैक्षिक सत्र के लिए 40 प्रतिशत अंकों में से रचनात्मक मूल्यांकन के अंक निकाले जाएंगे।

अभिलेख रखना

यह परम आवश्यक है कि अध्यापक आयोजित रचनात्मक मूल्यांकन (एफए) का एक स्पष्ट अभिलेख रखें, क्योंकि इसे सीबीएसई द्वारा समय-समय पर सत्यापित किया जाएगा। एफए को अभिलेखित करते समय निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

- जैसा कि सीबीएसई द्वारा सुझाया गया है छात्रों के रिपोर्ट फॉर्म के अतिरिक्त इसकी भी अलग अलग रिपोर्ट पुस्तिका रखी जानी चाहिए।
- प्रत्येक छात्र के लिए निम्नलिखित को दर्शाने वाला एक अलग समेकित अंक रजिस्टर भी बनाया जाना चाहिए।
 - रचनात्मक मूल्यांकन के साधनों (प्रश्नोत्तरी, बहुविकल्पीय प्रश्न, वाद विवाद, सामूहिक चर्चा, प्रश्नात्मक लेखन, प्रस्तुतीकरण आदि) को दर्ज किया जाना चाहिए।
 - चारों में से प्रत्येक रचनात्मक मूल्यांकन के लिए 10 अंकों के लिए अधिकतम अंक, प्राप्त अंक और भारांक दर्ज किया जाना चाहिए।
 - रचनात्मक मूल्यांकन में संचयी योग की गणना और इसका अभिलेखन किया जाना चाहिए।

स्कूलों में अंक रजिस्टर बनाने का एक उपयुक्त प्रारूप संकल्पित किया जाना चाहिए। अनेक स्कूलों में मूल्यांकनों को दर्ज करने की पूरी प्रक्रिया का कम्प्यूटरीकरण किया जाता है। ऐसे एक कार्यक्रम का विकास करते समय यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सभी संगत विवरणों को कार्यक्रम में शामिल किया गया है।

- छात्र निष्पादन और अध्यापक / स्वयं / साथी द्वारा किए गए मूल्यांकन के दर्ज साक्ष्य का संकलन और अनुरक्षण इस प्रकार किया जाए कि अभिभावकों की पूछताछ का उत्तर इस साक्ष्य के आधार पर किया जा सके। इस संदर्भ में छात्र पोर्टफोलियो का महत्व बढ़ जाता है। यह सुझाया गया है कि प्रत्येक छात्र प्रत्येक विषय में अपने लिखित कार्यों में से सर्वोत्तम कार्यों का पोर्टफोलियो बनाए। इसमें प्रारूप और संपादित तथा उन्नत संस्करणों को जमा किया जाए ताकि एक काल अवधि में सीखने की प्रगति को प्रदर्शित किया जा सके। अध्यापकों के लिए शैक्षिक सत्र की शुरुआत में अलग-अलग छात्रों के पोर्टफोलियो फोल्डर खोलना, इसके महत्व पर छात्रों से चर्चा करना और पोर्टफोलियो बनाए रखने की प्रक्रिया तय करना सुविधाजनक होगा।
- यह नोट किया जाए कि मूल्यांकनों को रिपोर्ट पुस्तक में केवल ग्रेड के रूप में दर्शाया जाए। ये ग्रेड 9 अंकों के ग्रेडिंग पैमाने पर इस प्रकार होंगे

91-100	ए1	81-90	ए2
71-80	बी1	61-70	बी2
51-60	सी1	41-50	सी2
33-40	डी	21-32	ई1
00-20	ई2		

- समेकित अंक रजिस्टर में दिए गए अंकों की गणना द्वारा विभिन्न एफए तथा एसए के लिए भारांक ज्ञात किया जाएगा और समकक्ष ग्रेड रिपोर्ट पुस्तक में लिखे जाएंगे। इसका अर्थ है कि एफए में प्रत्येक कार्य का मूल्यांकन होगा और प्रत्येक एसए परीक्षा अंकों के संदर्भ में आयोजित की जाएगी, जिसे समेकित अंक रजिस्टर में दर्ज किया जाएगा। प्रत्येक सत्र में एक बार रिपोर्ट पुस्तक में लिखे गए ग्रेडों की गणना समेकित अंक रजिस्टर से की जाएगी।
- उपरोक्त रिकॉर्डों के अतिरिक्त स्कूल में प्रत्येक अनुभाग (सेक्शन) के लिए परिणाम रजिस्टर भी बनाया जाएगा, जिसे शैक्षिक सत्र के अंक में प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं के लिए समेकित किया जाएगा।

रचनात्मक मूल्यांकन के लिए उपयुक्त कार्यों के प्रकार

सीसीई पर यह अध्यापक संदर्शिका अध्यापकों के पास उपलब्ध मूल्यांकन साधनों के प्रकारों पर प्रकाश डालती है। इसमें यह भी उल्लेख किया गया है कि सभी साधन रचनात्मक मूल्यांकन के लिए उपयुक्त नहीं हैं। इस संदर्शिका में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि कौन सा मूल्यांकन रचनात्मक नहीं है। चूंकि रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकनों के प्रयोजन अलग-अलग हैं, इन साधनों को सावधानीपूर्वक चुना जाना चाहिए। जबकि एक सामान्य नियम के रूप में निम्नलिखित बिन्दुओं से इस विषय में अध्यापकों को एक निर्णय लेने में सहायता मिलेगी :

- औपचारिक कागज पैसिल की परीक्षाएं सदैव रचनात्मक मूल्यांकन के लिए उपयुक्त नहीं होती हैं, क्योंकि स्कूलों द्वारा इन्हें रचनात्मक प्रयोजनों के बजाए योगात्मक मूल्यांकन के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है।
- इसी प्रकार परियोजनाओं और कार्यों के लिए अधिकांश कार्य स्कूल और कक्षा के घण्टों के अलावा किया जाना चाहिए जो रचनात्मक मूल्यांकन के लिए आदर्श नहीं है। इसके कारण स्पष्ट हैं :
 - उचित निगरानी के बिना इन कार्यों की वैधता और साख समाप्त हो जाती है (छात्र इंटरनेट से इन्हें कॉपी या डाउनलोड कर लेते हैं। अभिभावक और अन्य लोग वास्तव में ये परियोजनाएं और कार्य पूरे करते हैं। इन दिनों ये तैयार परियोजनाएं और कार्य “शिक्षा की दुकानों से” खरीदे जा सकते हैं।)
 - रचनात्मक होने के लिए इन कार्यों में सहयोग, चर्चा, अभिव्यक्ति और सुधार होने चाहिए।

इन कारणों को देखते हुए परियोजनाओं और कार्यों को रचनात्मक मूल्यांकन के साधनों के रूप में सावधानी पूर्वक इस्तेमाल किया जाना चाहिए जबकि कल्पनाशील और साधन सम्पन्न अध्यापकों के हाथों में ये रचनात्मक मूल्यांकन के प्रभावी साधन बन सकते हैं।

- रचनात्मक मूल्यांकन के साधन के माध्यम से जिसे प्रभावी रूप से आकलित किया जा सकता है, उसे योगात्मक मूल्यांकन द्वारा आकलित नहीं किया जा सकता है। बोलने और सुनने के कौशल, प्रस्तुतीकरण के कौशल और व्यावहारिक कौशल तथा सभी सह शिक्षात्मक क्षेत्रों का मूल्यांकन रचनात्मक रूप से किया जाना चाहिए।
- रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकनों को जोड़ कर छात्र के व्यक्तित्व विकास के सभी पक्षों को व्यापक रूप से शामिल किया जा सकता है।

रखी जाने वाली कुछ सावधानियां

क) वास्तविकता के कार्य और परियोजनाएं दें। ऐसे विषय नहीं दें जैसे :

‘मुगल वास्तुकला का सर्वेक्षण’

ऐसी परियोजनाओं से ‘कट एण्ड पेस्ट’ की प्रथा को बढ़ावा मिलता है। दूसरी ओर यह छात्रों के लिए अधिक वास्तविकता के नजदीक होगा कि वे अपने आप इन्हें करने का प्रयास करें :

मुगल वास्तुकला का एक उदाहरण चुनें। उस स्मारक की जानकारी और तस्वीरें जमा करें। निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए लगभग 2 पृष्ठ की संक्षिप्त रिपोर्ट लिखें :

- स्मारक का नाम
- बनने का समय
- यह किसने बनाया
- प्रयोजन (स्मारक का इतिहास)
- मुख्य वास्तुकलात्मक विशेषताएँ
- इसका वर्तमान राज्य

ख) यह काफी नहीं है कि हम यदि इन परियोजनाओं या कार्यों को सरल या वास्तविकता के नजदीक बनाएँ। यह सुनिश्चित करने के लिए कि आगे सीखने की प्रक्रिया हो रही है और छात्र इस नए ज्ञान को कक्षा में सीखी गई बातों से जोड़ने में सक्षम है तो अध्यापक परियोजना के विषय में प्रत्येक छात्र का साक्षात्कार ले सकते हैं। यदि यह साक्षात्कार कल्पनाशील रूप से लिया जाता है तो यह बहुत संक्षिप्त हो जाता है किन्तु इसी के साथ इससे छात्र के अपने शोध और प्रस्तुतीकरण का प्रमाण भी मिल सकता है।

ग) परियोजनाओं को एक समूह की गतिविधि के रूप में बनाएँ ताकि यह कक्षा में ही किया जा सके। अध्यापक की सहायता से छात्रों के समूह तय कर सकते हैं कि वे किन परियोजनाओं पर कार्य करें, परियोजना को छोटी

इकाइयों में बांटा जा सकता है, इसकी छोटी इकाइयों को सदस्यों आदि के बीच में बाँटा जा सकता है। इसका अर्थ यह है कि परियोजना कार्य की चर्चा कक्षा में ही की जाए, जो आगे कार्य कर सके।

घ) एक समय सीमा तय करें और समूह के साथ यह देखने के लिए बातचीत करें कि वे किन विभिन्न चरणों पर हैं, वे क्या कर रहे हैं और क्या उन्हें सहायता की जरूरत है। इससे प्रयोजन की गंभीरता बढ़ेगी और छात्रों को गहरी दिलचस्पी के साथ कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

5. जैसा पहले बताया गया है, रचनात्मक और योगात्मक साधनों का निर्धारण उन प्रयोजनों द्वारा किया जाता है, जिसके लिए उन्हें उपयोग किया गया है।

क. यदि प्रयोजन को एक दिए गए समय बिन्दु पर औपचारिक रूप से सुनिश्चित किया जाना है कि छात्रों को क्या पता है और क्या नहीं पता, तब यह योगात्मक है।

ख. यदि प्रयोजन इस विषय में अनौपचारिक रूप से जानकारी लेना है कि पाठ्यक्रम कैसे आगे बढ़ रहा है, सीखने की प्रक्रिया को पाठ्यक्रम के दौरान कैसे बेहतर बनाया जा सकता है, अलग-अलग छात्रों के सामने कौन सी चुनौतियाँ हैं और उन्हें कैसे संबोधित करते हैं, तब यह रचनात्मक है।

अतः यह साधनों का प्रयोजन है जो आम तौर पर तय करता है कि यह रचनात्मक या योगात्मक मूल्यांकन है। ऐसा कह कर हम अब भी मूल्यांकन साधनों को पहचानने का प्रयास करते हैं जो योगात्मक मूल्यांकन की तुलना में रचनात्मक मूल्यांकनों के लिए अधिक उपयुक्त हैं। चूंकि योगात्मक मूल्यांकन औपचारिक है आम तौर पर इसमें कागज-पेन की परीक्षा ली जाती है इन साधनों द्वारा जो आकलित नहीं किया जा सकता वह केवल रचनात्मक मूल्यांकन साधनों द्वारा किया जा सकता है।

रचनात्मक मूल्यांकन के लिए सुझाए गए साधन

भाषा

- सुनने की अवधारणा
- पढ़ने की अवधारणा
- वाद-विवाद/भाषण/समूह चर्चा/रोल (पात्राभिनय) प्रस्तुतीकरण
- नाटकीय रूप / डायलॉग (संवाद)/चर्चा / कमेंटरी
- बहुविकल्पीय प्रश्न/प्रश्न मंच
- व्याकरण अभ्यास
- कविता, कहानी, पांडुलिपि, नाटक, डायरी प्रविष्टि लेखन आदि को पूरा करना

- वेब चार्ट, संकल्पना मानचित्रण
- दृश्यात्मक प्रस्तुतीकरण
- पत्र, ई-मेल, आंकड़ा-प्रस्तुतीकरण, लेख, आत्मवृत्त और संवाद पूर्ति

यह सुझाव दिया जाता है कि चारों कार्यों में से कम से कम एक कार्य श्रवण क्षमता या वार्तालाप की दक्षता के मूल्यांकन के लिए उपयोग किया जा सकता है।

गणित

- आंकड़ों का संयोजन और विश्लेषण
- समूह परियोजनाएँ
- समस्या सुलझाना
- गणित प्रयोगशाला गतिविधियाँ
- क्विज़ / मौखिक प्रश्न
- प्रयोग
- प्रस्तुतीकरण
- चार्ट, मॉडल बनाना
- विजुअल (दृश्यात्मक) प्रस्तुतीकरण
- सरल और रोचक कार्य
- विभिन्न प्रमेयों पर आधारित गणित की पहेलियाँ

यह सुझाव दिया जाता है कि गणित विषय के लिए इन चारों में से कम से कम एक गतिविधि का उपयोग गणित प्रयोगशाला गतिविधियों में निष्पादन मूल्यांकन हेतु किया जाना चाहिए।

विज्ञान

- प्रयोग
- सूचना जमा करना और परिणाम निकालना
- विज्ञान की संकल्पनाओं और प्रयोगों पर प्रस्तुतीकरण
- बताई गई समस्याओं के लिए खोजबीन

- बहुविकल्पीय प्रश्न तथा विज्ञान प्रश्न मंच
- सरल और रोचक कार्य
- समूह कार्य और परियोजनाएं
- मॉडल बनाना
- विज्ञान गोष्ठी / सेमिनार
- विभिन्न यौगिकों / लवणों को तैयार करना
- वैज्ञानिक सिद्धांतों का उपयोग करते हुए विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं की व्याख्या

यह सुझाव दिया जाता है कि वर्ष के दौरान विज्ञान विषय के लिए इन चारों में से कम से कम एक गतिविधि का उपयोग प्रयोगों के लिए किया जाना चाहिए।

सामाजिक विज्ञान

- लिखित कार्य, जिसमें अनुमान, व्याख्या और मूल्यांकन
- कमेंटरी
- सरल परियोजनाएं (सामूहिक और व्यक्तिगत)
- प्रस्तुतीकरण (सामूहिक और व्यक्तिगत)
- क्विज़ और बहुविकल्पीय प्रश्न
- मॉडल तथा चार्ट
- वाद विवाद
- गोष्ठी / सेमिनार
- ऐतिहासिक आंकड़ों की व्याख्या करना
- रोल प्ले (चरित्रांकन)
- ऐतिहासिक घटनाओं का नाटकीय प्रस्तुतीकरण।

यह सुझाव दिया जाता है कि वर्ष के दौरान सामाजिक विज्ञान विषय के लिए इन चारों में से कम से कम एक गतिविधि का उपयोग परियोजना के आधार पर किया जाना चाहिए।

उपरोक्त बताए गए साधनों के अतिरिक्त अध्यापक अन्य अनौपचारिक मार्गों को विकसित कर सकते हैं जिसमें रचनात्मक मूल्यांकन किया जाए। उदाहरण के लिए कक्षा में छात्रों के निष्पादन के पर्यवेक्षण को (भागीदारी, प्रश्नों के

उत्तर देना आदि) रचनात्मक मूल्यांकन के लिए प्रभावी रूप से उपयोग किया जा सकता है। लिखित परीक्षाओं को उपरोक्त सूची में शामिल नहीं किया गया है, क्योंकि ये औपचारिक हैं तथा इसलिए योगात्मक मूल्यांकन के लिए अधिक उपयुक्त हैं। इसके अलावा यदि लिखित परीक्षाओं का उपयोग रचनात्मक प्रयोजनों के लिए किया जाता है तो इन्हें आम तौर पर अधिक उपयोग करने की ओर रुझान होगा, क्योंकि इन्हें निर्मित और लागू करना अपेक्षाकृत आसान है। इससे छात्रों के तनाव के स्तर में भी वृद्धि होगी। इन्हें योगात्मक मूल्यांकन के रूप में बेहतर तरीके से इस्तेमाल किया जा सकता है। इससे अध्यापकों को एक मिनट की परीक्षा लेने, खुली पुस्तक की परीक्षा तथा एक यूनिट या पाठ को पढ़ाने के दौरान लिखित उत्तरों की अपेक्षा करते हुए संकल्पना आधारित प्रश्न तैयार करने की स्वतंत्रता है। इन उत्तरों का विश्लेषण करते हुए और सीखने की प्रक्रिया में संकल्पनात्मक स्पष्टता प्रदान की जानी चाहिए और अंतरालों को दूर करने के लिए उन पर भी चर्चा की जानी चाहिए। इस संदर्शिका में शामिल किए गए कुछ रचनात्मक मूल्यांकन कार्यों में लेखन कार्य शामिल है। जबकि इन सभी को प्रतिपुष्टि के लिए विस्तार सहित कक्षा में इस्तेमाल करने का प्रयास गया है।

इस संदर्शिका का उपयोग कैसे करें

जैसा कि पहले बताया गया है कि इस संदर्शिका में सभी मुख्य शैक्षिक विषयों में कक्षा 9वीं और 10वीं के लिए अनेक रचनात्मक मूल्यांकन कार्यों को शामिल किया गया है। शिक्षक एक योजनाबद्ध रूप में इनका उपयोग न केवल अधिगम का मूल्यांकन करने में बल्कि अपने स्वयं के अध्यापन की प्रभावशीलता को बढ़ाने में भी कर सकते हैं। रचनात्मक कार्यों के प्रभावी उपयोग हेतु कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं :

क. योजना

शैक्षिक सत्र के आरंभ में एक ही विषय के अध्यापक आपस में चर्चा कर सकते हैं और पूरे सत्र के लिए रचनात्मक मूल्यांकन की एक योजना बना सकते हैं। इस संदर्शिका में प्रत्येक विषय के लिए एक वार्षिक योजना (प्लानर) दी गई है। प्रत्येक स्कूल द्वारा बनाई गई वार्षिक योजना में निम्नलिखित विवरण शामिल होने चाहिए :

- एफए 1, एफए 2, एफए 3 और एफए 4 के लिए कितने रचनात्मक कार्यों का उपयोग किया जाएगा (कार्यों की संख्या सुझाए गए न्यूनतम कार्यों से कम नहीं होनी चाहिए)।
- संदर्शिका से अभिज्ञात कार्य (जबकि अध्यापक संदर्शिका में दिए गए कार्यों के अलावा अन्य कार्य लेने के लिए स्वतंत्र हैं)।
- कार्यों को तय करते समय / चुनते समय विविधता को बनाए रखने की सावधानी रखी जानी चाहिए ताकि ज्ञान और कौशलों को व्यापक रूप से शामिल किया जा सके और इसमें एक रसता की स्थिति न हो। उदाहरण के लिए भाषाओं में पढ़ने, लिखने, बोलने जैसे विभिन्न कौशलों तथा सुनने एवं भाषा के साहित्य तथा व्याकरण जैसे क्षेत्रों को रचनात्मक मूल्यांकन में शामिल किया जाना चाहिए। इस योजना में चार

रचनात्मक कार्यों में कार्यों को इस प्रकार बाँटा जाना चाहिए कि इन सभी पक्षों का मूल्यांकन सत्र के दौरान कम से कम दो या तीन बार किया जा सके। इसी प्रकार प्रदत्त कार्यों का चयन अन्य विषयों में भी इस प्रकार किया जाए कि मूल्यांकन के विभिन्न माध्यमों का उपयोग करते हुए विभिन्न कौशलों और दक्षताओं का मूल्यांकन किया जा सके।

ख. कक्षा संबंधी कार्य नीतियां

कार्यों को कक्षीय अनुदेशों के साथ समेकित किया जाना है, अतः अध्यापकों को इन्हें अपनी पाठ योजनाओं में शामिल करना होगा।

संदर्शिका में दी गई कार्य विशिष्टियों का उपयोग अध्यापक द्वारा निम्नलिखित रूप में किया जाए।

उद्देश्य : ये प्रत्येक कार्य के लिए अधिगम परिणामों को निर्दिष्ट करते हैं इसलिए ये ध्यान केन्द्रित करने में अध्यापकों और छात्रों की सहायता करते हैं। इन्हें मूल्यांकन के समय भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

प्रक्रिया : प्रदत्त कार्य के लिए अध्यापक की ओर से कुछ तैयारियों की जरूरत हो सकती है। इन्हें 'प्रक्रिया' के तहत शामिल किया जाना चाहिए। विभिन्न चरणों का पालन किया जाना चाहिए, सावधानियाँ रखी जानी चाहिए और इस शीर्षक के तहत सूचना जमा करने के सुझाव दिए जाते हैं।

मूल्यांकन के लिए मानदण्ड

मूल्यांकन को वस्तुनिष्ठ और व्यवस्थित बनाने के लिए विशिष्ट मानदण्ड सुझाए गए अंकों के साथ प्रत्येक कार्य के नीचे दिए गए हैं। यह अनिवार्य है कि अध्यापक इन मानदण्डों को देखें या एक कार्य आरंभ करने से पहले इन्हें कक्षा में पढ़ें। छात्रों को यह जानना चाहिए कि उनका मूल्यांकन किस आधार पर किया जाएगा। इससे उन्हें कार्य करने में स्पष्टता भी मिलेगी। प्रत्येक आयोजित कार्य में छात्रों द्वारा प्राप्त अंकों को दर्ज करना आवश्यक है। मूल्यांकन का अभिलेख रखा जाना चाहिए। जब भी एक लिखित सामग्री तैयार होती है तो यह छात्र - पोर्टफोलियो का हिस्सा बनाई जानी चाहिए।

प्रतिपुष्टि / अनुवर्तन

यह रचनात्मक मूल्यांकन का महत्वपूर्ण चरण है। छात्रों के निष्पादन से उनकी समझ, संकल्पनात्मक स्पष्टता, आने वाली समस्याएँ और सीखने के अंतरालों के बारे में मूल्यवान जानकारी मिलती है। इस सूचना के आधार पर अध्यापक (प्रतिपुष्टि) फीड बैक दे सकते हैं और सुधार तथा संवर्धन के लिए अनुवर्तन गतिविधियाँ आयोजित कर सकते हैं। इन जानकारीयों से अध्यापकों के सीखने को उन्नत व प्रभावशाली बनाने के लिए अपने अभ्यासों को संशोधित करने में भी सहायता मिलेगी।

कुछ चुनौतियाँ

अध्यापकों के सामने रचनात्मक मूल्यांकन को अपने अध्यापन में समेकित करने के दौरान कुछ चुनौतियाँ आ सकती हैं। इनके कारण इस प्रकार हैं।

- कक्षा में छात्रों की अधिक संख्या
- समय की कमी
- सामग्री की कमी से होने वाली बाधाएं
- समूह / जोड़ों में कार्य का मूल्यांकन करने की कार्यनीति

उचित योजना की सहायता से इन चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। कुछ सुझाव इस प्रकार हैं :

कक्षा में छात्रों की अधिक संख्या

- ऐसे कार्य चुनें जिसमें समूह कार्य और जोड़ों में कार्य शामिल हो।
- ऐसे कार्य जिनके लिए छात्रों से लिखित उत्तरों की आवश्यकता हो और जिन्हें उनके सहपाठी आकलित कर सकें।
- बहुविकल्पीय प्रश्न तथा अन्य वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्नों के उत्तर छात्रों द्वारा आपस में अपने (कार्य प्रपत्र) को आदान-प्रदान करते हुए अंकित किए जा सकते हैं और अध्यापक अंत में सभी को उत्तर बता सकते हैं।
- एक कालांश (पीरियड) में सभी छात्रों का मूल्यांकन करने की आवश्यकता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि कार्यों को छात्रों के समूहों के बीच बांटा जाए ताकि अध्यापक उन्हें अलग अलग कालांशों में आकलित कर सकें। इसका अर्थ यह है कि अधिक छात्रों वाली कक्षा में सभी छात्रों का मूल्यांकन सभी कार्यों के लिए करना आवश्यक नहीं है। कार्यों की सावधानीपूर्वक योजना बनाकर सभी कौशलों को छात्रों के समूहों के बीच बारी बारी से देकर उन सभी को शामिल किया जा सकता है।
- इससे पता लगता है कि एक समय पर एक कार्य में सभी छात्रों को शामिल करने की जरूरत नहीं है। अनेक उत्कृष्ट कार्यों को सिखाने के संदर्भ में अध्यापक छात्रों को अलग-अलग कार्य देकर एक लचीला रास्ता अपना सकते हैं। उदाहरण के लिए लिखित कार्य में अच्छे माने जाने वाले छात्रों को व्यावहारिक कार्य में अच्छे पाए गए छात्रों की तुलना में कुछ भिन्न कार्य दिए जा सकते हैं।
- समय तालिका बनाते समय प्रत्येक विषय के लिए दो कालांशों को मिलाया जाए। वाद विवाद, प्रस्तुतीकरण, सामूहिक चर्चा, नाटकीय प्रस्तुतीकरण, रोल प्ले (चरित्रांकन) आदि को शामिल करने वाले कार्य दो कालांशों के दौरान आयोजित किए जा सकते हैं।

समय का प्रबंधन

प्रत्येक विषय के लिए अध्यापन के कालांशों की संख्या पहले से तय है अतः अध्यापक महसूस कर सकते हैं कि आवंटित कालांशों में रचनात्मक मूल्यांकन कार्यों का आयोजन कठिन हो सकता है। जबकि यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि रचनात्मक मूल्यांकन अध्यापन - अधिगम प्रक्रिया में शामिल किया जाना है और यह केवल पाठ्यक्रम को पढ़ाने के लिए अपनाई गई विधि में एक बदलाव है। व्याख्याओं और अध्यापक केन्द्रित शिक्षण को कम करते हुए कार्यों तथा गतिविधियों के लिए पर्याप्त समय मिल सकता है। कुछ अन्य सुझाव इस प्रकार हैं:

- उचित योजना से समय का दक्ष प्रबंधन किया जा सकेगा।
- कक्षा आरंभ होने से पहले प्रत्येक कार्य की तैयारी पूरी करें ताकि इसमें समय व्यर्थ न जाए।
- स्वयं और सहपाठी द्वारा मूल्यांकन का इस्तेमाल युक्तिसंगत रूप से करें।
- सत्र के शुरूआती हिस्से में छात्रों को आपस में तथा अध्यापक के साथ सहयोग करने का प्रशिक्षण दें। आने वाले समय में वे दक्षता बनाए रखने और तेज गति से आगे बढ़ने में सक्षम होंगे।
- यह अनिवार्य है कि छात्रों के नाम के साथ अंक पत्र वार्षिक योजना के अनुसार शैक्षिक सत्र की शुरूआत में तैयार किया जाए। प्रत्येक मूल्यांकन के लिए चुने गए एफए 1, एफए 2, एफए 3, एफए 4 के लिए कार्यों के विवरण के साथ कॉलम दिए जाएँ और अधिकतम अंक लिखे जाएँ ताकि अंकों को दर्ज करने में बहुत अधिक समय न लगे।
- छात्रों को अपने पोर्टफोलियो को बनाने का प्रशिक्षण दिया जाए। प्रत्येक विषय के लिए एक फोल्डर बनाया जाए जिसमें प्रत्येक छात्र द्वारा सर्वोत्तम लिखित सामग्री रखी जाए। जब छात्रों को अभिलेख रखने का दायित्व लेने में सहायता मिलती है तो वे समय के बेहतर प्रबंधन के अलावा अध्यापक का कुछ भार भी कम कर सकते हैं।

सामग्री

कार्य प्रपत्र की फोटो कॉपी सभी स्कूलों में करना संभव नहीं है। इस समस्या से निपटने के लिए अध्यापक कुछ कार्यनीतियाँ अपना सकते हैं।

सुझाव

- केवल विस्तृत कार्य प्रपत्र और चित्रों तथा तस्वीरों वाले कार्यों की फोटोकॉपी की आवश्यकता होती है।
- जब भी संभव हो कार्य प्रपत्र को श्यामपट्ट पर लगाया जाए।
- यदि तकनीक उपलब्ध है तो कार्य प्रपत्र को एलसीडी प्रोजेक्टर की सहायता से पूरी कक्षा को दिखाया जाए।

- बहुविकल्पीय प्रश्न और वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न पढ़े जा सकते हैं और छात्रों को कागज पर केवल उत्तर लिखने का अनुदेश दिया जा सकता है।
- जोड़ों में कार्य, समूह में कार्य और पूरी कक्षा के कार्य के लिए अनुदेशों को एक या दो बार पढ़ा जाए।
- प्रधानाचार्य और स्कूल के प्रशासन को फोटोकॉपी की आवश्यकता के बारे में पहले से बताया जाए ताकि स्कूल द्वारा पर्याप्त व्यवस्था की जा सके।
- हमेशा कागज के दोनों ओर फोटोकॉपी करें। इसका अर्थ यह है कि एक कागज पर एक से अधिक कार्यों की फोटोकॉपी की जा सके। जब छात्र एक कार्य को पूरा कर लें तो इन प्रपत्रों को ले लिया जाए और अगले कार्य के लिए दोबारा बांटा जाए।
- जब कभी संभव हो कार्य प्रपत्र को दो या अधिक छात्रों के बीच बांटा जाए।
- छात्रों को कागज / कार्य प्रपत्र के उपयोग में किफायत रखने के लिए कहा जाए।

समूह / जोड़ों में कार्य का मूल्यांकन करने के लिए कार्यनीति

आरंभ में अध्यापकों के लिए समूह / जोड़ों में कार्यों का मूल्यांकन करना कुछ कठिन हो सकता है, क्योंकि इसका परिणाम एक से अधिक छात्रों को मिलता है। नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं जिनसे अध्यापकों को इस विषय में सहायता मिल सकती है :

- जब कभी संभव हो समूह और जोड़ों के कार्य का मूल्यांकन छोटे हिस्सों में बांटा जाए और समूह के प्रत्येक सदस्य को एक हिस्सा सौंपा जाए।
- यदि उपरोक्त स्थिति संभव नहीं है तो समूह कार्य के प्रत्येक छात्र के योगदान का पर्यवेक्षण और निगरानी की जाए।
- आम तौर पर समूह चर्चा के बाद प्रत्येक समूह द्वारा एक प्रस्तुतीकरण किया जाए। सभी छात्रों के बीच प्रस्तुतीकरण संचालित करने की सावधानी रखी जाए ताकि एक समय के बाद सभी को अपने समूह के विचार प्रस्तुत करने का मौका मिल सके।
- समूह कार्यों का मूल्यांकन पूरे समूह / जोड़े के लिए किया जाए। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक समूह के सदस्य एक समान अंक / ग्रेड प्राप्त कर सकते हैं। जबकि जोड़ों में कार्य करने से अलग अलग छात्र के निष्पादन का मूल्यांकन आसान होता है।
- रचनात्मक मूल्यांकन अनौपचारिक होता है, इसलिए समूह कार्यों का मूल्यांकन व्यापक मापदंडों जैसे समूह के प्रत्येक छात्र की भागीदारी, योगदान और प्रभावशीलता।
- यह अनिवार्य है कि अध्यापक समूह के कार्यों की निगरानी उचित रूप से करते हुए सुनिश्चित करें कि प्रत्येक छात्र इसमें भाग ले और कोई भी छात्र अपना प्रभुत्व न बनाए।

निष्कर्ष

इस पुस्तक में अध्यापक की तैयारी, योजना और समन्वय पर बल दिया गया है। यह सुझाव दिया गया है कि एक वार्षिक योजना बनाने के समय प्रधानाचार्य प्रत्येक विषय समिति से बातचीत करें और अध्यापक यह सुनिश्चित करते हुए एक कार्य योजना बनाएं कि मूल्यांकन को अध्यापन – अधिगम प्रक्रिया के साथ समेकित किया जाए।

यह अनिवार्य है कि प्रत्येक यूनिट / पाठ के लिए विस्तृत पाठ योजनाओं को तैयार किया जाए और प्रथम तथा द्वितीय सत्रों के लिए समग्र योजना बनाई जाए। जबकि पाठ योजना अनिवार्यतः सिखाई जाने वाली संकल्पनाओं, छात्रों की आवश्यकताओं और अन्य सामाजिक – सांस्कृतिक कारकों पर निर्भर करते हुए प्रत्येक अध्यापक द्वारा एक नवाचारी साधन विकसित किया जाए। यह उपयुक्त होगा कि पाठ योजना में निरंतर और व्यापक मूल्यांकन को समेकित करने के लिए इसमें कुछ व्यापक क्षेत्रों को शामिल किया जाए। जबकि ये व्यापक क्षेत्र पाठ योजना के प्रारूप के साथ प्रत्येक स्कूल द्वारा तय किए जा सकते हैं, निम्नलिखित घटकों को समग्र योजना सुनिश्चित करने के लिए शामिल किया जाए :

- सामग्री / विषय / पाठ
- संकल्पना / कौशल
- अनुदेशात्मक उद्देश्य
- स्तर – आगमन, प्रक्रिया, समेकन, निगमन
- विशिष्ट प्रश्नों के साथ मूल्यांकन के साधन
- सुधार

यह भी सुझाव दिया गया है कि रचनात्मक कार्यों का मूल्यांकन 10 अंकों या 10 के गुणकों में किया जाए ताकि भारांक की गणना में आसानी है। इसी प्रकार छात्रों द्वारा स्वयं मूल्यांकन को बढ़ावा देकर (आईसीटी) को समेकित किया जा सकता है और छात्रों के स्वयं मूल्यांकन-साधन विकसित किए जा सकते हैं। जबकि इससे छात्रों को स्वायत्तता का पर्याप्त विस्तार मिलेगा, इससे अध्यापकों का भार भी कम होगा। अंत में परियोजनाओं के बारे में कुछ बातें। इस पुस्तक में बताया गया है कि जहां तक संभव हो परियोजना को स्कूल में ही किया जाना चाहिए। परन्तु कुछ परियोजनाओं के लिए वृहद शोध और स्वयं कार्य करने तथा विभिन्न सामग्रियों के उपयोग की जरूरत होती है, जिसे स्कूल के समय के दौरान करना कठिन होता है। चूँकि यहाँ मुख्य चिंता छात्रों द्वारा मूल्यांकन के लिए जमा किए गए कार्यों की वास्तविकता और साख के विषय में है अतः अध्यापक को परियोजना कार्य की निगरानी में पूरी सावधानी बरतनी चाहिए, छात्रों को स्कूल से बाहर कुछ कार्य करने की अनुमति दी जानी चाहिए। इस विषय में इस संदर्शिका में सावधानियों पर विस्तृत दिशा निर्देश दिए गए हैं। परियोजनाओं को वास्तविक और सरल बनाकर अध्यापक अपने छात्रों के कार्य की प्रामाणिकता को सुनिश्चित कर सकते हैं।



हिन्दी पाठ्यक्रम 'अ'



हिन्दी पाठ्यक्रम 'अ'

कक्षा-नवीं

रचनात्मक मूल्यांकन

		क्षितिज (गद्य)	क्षितिज (पद्य)	कृतिका	व्याकरण
FA-1	रचनात्मक मूल्यांकन (अप्रैल-मई) भार विभाजन 10%	1. दो बैलों की कथा	1. साखियाँ एवं सबद 2. वाख	1. इस जल प्रलय में	शब्द निर्माण - उपसर्ग, प्रत्यय, समास
FA-2	रचनात्मक मूल्यांकन-2 (जुलाई-अगस्त) भार विभाजन-10%	1. ल्हासा की ओर 2. उपभोक्तावाद की संस्कृति	1. सवैये 2. कैदी और कोकिला	1. मेरे संग की औरतें	संज्ञा, सर्वनाम, मुहावरे
FA-3	रचनात्मक मूल्यांकन-3 (अक्टूबर से दिसंबर) भार विभाजन-10%	1. साँवले सपनों की याद 2. नाना साहब की पुत्री देवी नैना को भस्म कर दिया गया	1. ग्राम श्री 2. चंद्र गहना से लौटती बेर	1. रीढ़ की हड्डी	कारक, लिंग और वचन का विशेषण पर प्रभाव तथा परसर्ग 'ने' का क्रिया पर प्रभाव



		क्षितिज (गद्य)	क्षितिज (पद्य)	कृतिका	व्याकरण
FA-4	रचनात्मक मूल्यांकन-4 (जनवरी-फरवरी) भार विभाजन-10% दो प्रदत्त कार्य	1. प्रेमचंद के फटे जूते 2. मेरे बचपन के दिन 3. एक कुत्ता और एक मैना	1. मेघ आए 2. यमराज की दिशा 3. बच्चे काम पर जा रहे हैं	1. माटी वाली 2. किस तरह आखिरकार मैं हिन्दी में आया	विलोम शब्द, श्रुतिसमभिनार्थक व पर्यायवाची शब्द सर्वनाम

	पाठ का नाम	1	2	3	4	5
FA-1 1	दो बैलों की कथा	वाद विवाद	कहानी निर्माण	वन्य प्राणी संरक्षण	कहानी का मंचन	कार्य प्रपत्र
2	साखियाँ और सबद	दोहों का सुमधुर वाचन	ईश्वर को हम किस रूप में देखते हैं	वाद विवाद	कविता पूरी करना	शब्दों के जोड़े बनाना
3	वाख	कार्य प्रपत्र	‘ख’ वर्ण से शब्द निर्माण	कश्मीर-एक परिचय	चित्रांकन	पर्यायवाची बनाना
4	इस जल प्रलय में	आपदा प्रबंधन	पानी पर मुहावरे	वाद-विवाद	नाटकीकरण	‘जल’ पर नारे
FA-2 5	ल्हासा की ओर	यात्रा संबंधी समस्याएँ	ताप संबंधी सूचनाएँ एकत्र करना	दिए गए शब्दों से अनुच्छेद लिखना	विशेषण- रिक्त स्थान की पूर्ति	कार्य प्रपत्र
6	उपभोक्तावाद की संस्कृति	वाक्य-पूर्ति	विशेषणों से वाक्य निर्माण	जागो ग्राहक जागो	एक समूह के शब्द बनाना	विज्ञापन बनाना



	पाठ का नाम	1	2	3	4	5
7	सवैये	कृष्ण संबंधी अर्न्तकथाएँ	सुमधुर वाचन	कार्य प्रपत्र	आशु भाषण	देश भक्ति की कविताओं का सस्वर वाचन
8	कैदी और कोकिला	पर्यायवाची	जेल संबंधी शब्दों का संकलन	कार्य प्रपत्र - कोयल	क्रांतिकारियों पर जानकारी का संकलन	स्वतंत्रता सेनानियों का परिचय
9	मेरे संग की औरतें	लेखन व प्रस्तुतीकरण	लेखिकाओं की सूची	वाद विवाद	नाटकीकरण	सामूहिक चर्चा
FA-3 10	साँवले सपनों की याद	कविता चयन/वाचन	सपने का वर्णन	डायरी शैली में अनुच्छेद	वर्ग पहेली	पर्यटन स्थलों के नाम
11	नाना साहब की पुत्री देवी नैना को भस्म कर दिया गया	लेखन एवं प्रस्तुतीकरण	रोचक प्रसंगों का वाचन	कविता चयन एवं वाचन	नाटकीकरण	क्रांतिकारियों पर सामग्री
12	ग्राम श्री	नाटिका मंचन	विशेषणों का निर्माण	वाद विवाद	शब्दों का तंबोला	बहुविकल्पीय प्रश्न
13	चंद्रगहना से लौटती बेर	विवाह का दृश्य	कविता रचना	पर्व एवं त्योहार	कार्य प्रपत्र	चित्र बनाना
14	रीढ़ की हड्डी	वाद विवाद	आलेख	विचार लेखन	संवाद	नारा लेखन
FA-4 15	प्रेमचंद के फटे जूते	सचित्र फाइल	समूह चर्चा	वाद विवाद	हास्य व्यंग्य लेखन एवं वाचन	नाटकीकरण
16	मेरे बचपन के दिन	वाद विवाद	प्रार्थना संग्रह एवं प्रस्तुति	आशु भाषण	लोकगीत/ नाटक/ लोककथा	काव्य पाठ



	पाठ का नाम	1	2	3	4	5
17	एक कुत्ता और एक मैना	अनुभव लेखन	संवाद लेखन	कविता संकलन एवं वाचन	नाटकीकरण	संस्मरण लेखन
18	मेघ आए	गांव की चौपाल का मंचन	क्रियाओं की अभिनय द्वारा प्रस्तुति	अतिथि देवो भव पर समूह चर्चा	वर्षा ऋतु संबंधी जानकारी	चित्रों के आधार पर कहानी लेखन
19	यमराज की दिशा	ईश्वर से कल्पित साक्षात्कार	समाचार पत्र की कतरन	माँ के बारे में अनुभव लेखन	घर से स्कूल के मार्गदर्शन का मानचित्र	अंधविश्वास और रूढ़ि पर वार्ता
20	बच्चे काम पर जा रहे हैं	कविता वाचन	नुक्कड़ नाटक	वाक्य निर्माण	कार्य-प्रपत्र	अनुभव लेखन
21	माटी वाली	समूह चर्चा	संवाद लेखन व प्रस्तुतीकरण	मिट्टी से वस्तु निर्माण	कार्य-प्रपत्र	चित्रांकन एवं लेखन
22	किस तरह आखिरकार मैं हिन्दी में आया	कविता वाचन	संवाद	आत्मवृत्तात्मक लेखन	समूह चर्चा	सचित्र फाइल





दो बैलों की कथा

प्रेमचंद

प्रदत्त कार्य : 1. वाद-विवाद

विषय: जानवरों / पशु-पक्षियों को पालतू बनाना उचित है।

उद्देश्य:

- जानवरों / पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना
- तार्किक प्रवृत्ति का विकास करना
- सहभागिता, सहनशीलता एवं धैर्य की प्रवृत्ति विकसित करना
- वाचन कौशल का विकास करना

प्रक्रिया : समूह कार्य - (कुल चार समूहों में विभाजन होगा)

- आठ-दस विद्यार्थियों का एक समूह हो सकता है।
- दो समूह पक्ष एवं दो समूह विपक्ष में विषय तैयार करेंगे।
- प्रत्येक विपक्षी समूह एक-एक प्रश्न पूछेगा जिसका उत्तर पक्ष वालों को देना होगा।
- अध्यापक / अध्यापिका प्रत्येक विद्यार्थी को भाग लेने के लिए प्रेरित करेंगे।
- इस प्रक्रिया में 30 मिनट का समय लग सकता है।
- मूल्यांकन के आधार प्रक्रिया से पूर्व श्यामपट्ट पर लिखे जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

1. विषय से संबंधित जानकारी	1
2. तार्किक क्षमता	1
3. भाषायी दक्षता एवं सुसंबद्धता	1
4. अभिव्यक्ति / प्रस्तुतीकरण	1
5. उपयुक्त उदाहरण - तर्क की पुष्टि के लिए	1

टिप्पणी

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से अन्य उचित बिंदु को आधार बनाकर भी अंक प्रदान कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रत्येक विद्यार्थी का क्रियाशील होना वांछनीय है।
- अध्यापक इस बात का ध्यान रखें कि सभी विद्यार्थियों को बोलने का अवसर मिले।
- अच्छे वक्ताओं की सराहना की जाए।

प्रदत्त कार्य (2) 'दो बैलों की कथा' कहानी को किसी रोचक मोड़ पर रोककर आगे की कहानी अपनी कल्पना के आधार पर लिखकर कक्षा में सुनाना।

उद्देश्य

- कल्पना शक्ति का विकास करना
- श्रवण एवं लेखन शक्ति का विकास करना
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना
- रचनात्मक / सृजनात्मक प्रवृत्ति का विकास करना

प्रक्रिया : समूह कार्य (एक समूह में छह विद्यार्थी होंगे)

- शिक्षक स्वयं एक कहानी बनाकर सुनाएँगे।
- शिक्षक प्रत्येक समूह के पास जाकर काल्पनिक कहानी बनाने के लिए प्रेरित करेंगे।
- कहानी लिखने के लिए 10 मिनट का समय तथा प्रस्तुतीकरण के लिए 20 मिनट का समय दिया जा सकता है।
- शिक्षक प्रत्येक समूह के विद्यार्थी को एक-एक करके कहानी सुनाने के लिए कह सकते हैं।
- शिक्षक द्वारा मूल्यांकन के आधार बिन्दु श्यामपट्ट पर प्रक्रिया से पूर्व लिखे जाएँगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक योजना

1.	कल्पना की नवीनता	1
2.	कहानी से पूर्वापर संबंध	1
3.	पात्रानुकूल भाषा	1
4.	रोचक मोड़	1
5.	प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से उचित बिन्दु को आधार बनाकर भी अंक प्रदान कर सकते हैं।



प्रतिपुष्टि

- प्रत्येक विद्यार्थी का क्रियाशील होना वांछनीय है। अध्यापक क्रमानुसार विद्यार्थी को कहानी सुनाने के लिए प्रेरित करें।
- अच्छे कार्य की सराहना की जाए।

प्रदत्त कार्य : (3) वन्य प्राणी संरक्षण, दुधारु पशुओं का संरक्षण, पालतु पशुओं के संरक्षण तथा पक्षियों के संरक्षण के लिए क्या-क्या प्रयास किए जा सकते हैं।

उद्देश्य

- जानवरों / पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता की भावना उत्पन्न करना।
- पशु-पक्षी संरक्षण के प्रति सचेत करना
- प्राकृतिक संतुलन से अवगत कराना
- शाकाहार की ओर प्रेरित करना
- वाचन एवं लेखन कौशल का विकास

प्रक्रिया : समूह कार्य (कक्षा को चार भागों में विभाजित किया जाएगा।)

- पहले अध्यापक विषय को स्पष्ट करेंगे
- प्रत्येक समूह को एक-एक विषय लेखन एवं प्रस्तुतीकरण करने के लिए दिया जाएगा 1. वन्य प्राणी संरक्षण, 2. दुधारु पशु संरक्षण, 3. पालतु पशु संरक्षण, 4. पक्षियों का संरक्षण
- शिक्षक चारों समूहों के पास जाकर उनका मार्गदर्शन करेंगे।
- चर्चा करके लिखने के लिए 10 मिनट का समय तथा प्रस्तुतीकरण के लिए 20 मिनट का समय लग सकता है।
- शिक्षक मूल्यांकन के आधार बिन्दु गतिविधि प्रारम्भ करने से पूर्व ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

1. मानवीयता एवं संवेदनशीलता	2
2. विषय की जानकारी	2
3. प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से उचित बिन्दु को आधार बनाकर भी अंक प्रदान कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- नवीन जानकारी देने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।



- ❖ पशु-पक्षियों के विषय में अधिक जानकारी न रखने वाले छात्रों को जानकारी देना।
- ❖ वन्य प्राणी संरक्षण की योजनाओं से अवगत कराना।

प्रदत्त कार्य : (4) 'दो बैलों की कथा' कहानी के किसी रोचक हिस्से का मंचन

उद्देश्य

- ❖ अभिनय क्षमता का विकास करना
- ❖ रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास करना
- ❖ सहभागिता की प्रवृत्ति की वृद्धि करना
- ❖ वाचन क्षमता का विकास करना

प्रक्रिया

- ❖ समूह कार्य (प्रत्येक समूह में आठ से दस विद्यार्थी हो सकते हैं)
- ❖ शिक्षक कहानी प्रारम्भ होने पर ही विद्यार्थियों को कहानी के मंचन का संकेत दे देंगे ताकि बच्चे कहानी पढ़ते समय ही मंचन के लिए मानसिक तैयारी शुरू कर सकें।
- ❖ शिक्षक यह स्पष्ट कर दें कि मंचन के लिए बाहरी उपकरण की आवश्यकता नहीं है।
- ❖ इस प्रक्रिया में हर समूह को अधिकतम 5 मिनट का समय दिया जाएगा तथा पूरी प्रक्रिया के लिए बीस मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ प्रक्रिया प्रारम्भ होने से पूर्व शिक्षक श्यामपट्ट पर मूल्यांकन के आधार बिन्दु लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक योजना

1.	उपयुक्त संवाद योजना	1
2.	भाषायी प्रवाह एवं दक्षता	1
3.	पात्रों का उपयुक्त चयन	1
4.	अभिनय कौशल	1
5.	समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वतंत्र रूप से अन्य उचित बिन्दु को आधार बनाकर भी अंक प्रदान कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अध्यापक अच्छा अभिनय करने वाले छात्रों को प्रोत्साहित करेंगे तथा जो विद्यार्थी अभिनय करने में असमर्थ हैं उन्हें अभिनय करके दिखाया जा सकता है। भावानुकूल संवाद बोलकर बताए जा सकते हैं।



प्रदत्त कार्य - 5

किसी एक पशु / पक्षी की विविध विशेषताओं से संबंधित 'कार्य-प्रपत्र'

1. पशु / पक्षी का नाम -
2. रंग एवं रूप -
3. रहने का स्थान -
4. खाद्य पदार्थ -
5. व्यवहार -
6. बोली -
7. क्यों अच्छा लगता है? -
8. संसार के लिए उपयोग -
9. आपने इसे कहाँ देखा -
10. अन्य विशिष्टता -

उद्देश्य

- ❖ विभिन्न पशुओं / पक्षियों से परिचित कराना
- ❖ प्रकृति के अनिवार्य अंग से जोड़ना
- ❖ पशु/पक्षियों के प्रति आकर्षण, प्रेम भाव जागृत करना
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- ❖ लेखन क्षमता का विकास

प्रक्रिया

- ❖ शिक्षक सर्वप्रथम गतिविधि से परिचित कराएँ
- ❖ उपरोक्त 'कार्य-प्रपत्र' को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- ❖ विद्यार्थी ध्यानपूर्वक इसे पृष्ठ पर लिखें।
- ❖ अध्यापक सुनिश्चित कर लें कि सभी विद्यार्थियों ने इसे ठीक से लिखा है।
- ❖ विद्यार्थियों को रिक्त स्थानों की पूर्ति हेतु 10-15 मिनट का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

9-10 जानकारीयें देने पर

अंक विभाजन

5



7-8 जानकारीयों देने पर	4
5-6 जानकारीयों देने पर	3
3-4 जानकारीयों देने पर	2
1-2 जानकारीयों देने पर	1

टिप्पणी

- अध्यापक कार्य-प्रपत्र में अन्य कोई उपयोगी प्रश्न भी पूछ सकते हैं तथा सुविधानुसार मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सही जानकारी न देने की अवस्था में विद्यार्थियों को उचित दिशा निर्देश प्रदान करें ताकि वह कार्य को पूरा कर सकें।
- बहुत अच्छा कार्य करने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना।
- जो विद्यार्थी कार्य पूरा नहीं कर पाए उन्हें अन्य विद्यार्थियों की सहायता से पूरा कराना।



ल्हासा की ओर

राहुल सांकृत्यायन

प्रदत्त कार्य (1) यात्रा करते समय आने वाली संभावित परेशानियों के कारण एवं निवारण से परिचित करना।

उद्देश्य

- ❖ सजगता, सतर्कता के गुण उत्पन्न करना
- ❖ तर्कशीलता की प्रवृत्ति का विकास करना
- ❖ कल्पनाशीलता को बढ़ावा देना
- ❖ विपत्ति की स्थिति में प्रत्युत्पन्नमति का विकास करना
- ❖ लेखन क्षमता का विकास

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक छात्रों को विषय समझाएंगे कि रेल यात्रा के दौरान यात्रियों को विभिन्न परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है।
- ❖ सामान्य परिचय के उपरान्त कक्षा को चार समूहों में विभक्त किया जाएगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिन्दुओं को शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- ❖ प्रत्येक समूह को यात्रा के समय आने वाली संभावित परेशानियों के कारण एवं निवारण आपस में चर्चा करके लिखने को दिया जाएगा।
- ❖ इस प्रक्रिया में 10 मिनट का समय लग सकता है।
- ❖ इस प्रक्रिया के दौरान शिक्षक प्रत्येक समूह के पास जाकर निरीक्षण करेंगे कि सभी छात्र इसमें रुचि ले रहे हैं या नहीं।
- ❖ समूह चर्चा के बाद प्रत्येक समूह से दो - दो छात्र प्रस्तुतीकरण करेंगे जिनमें एक कारणों पर प्रकाश डालेगा तथा दूसरा उनके निवारण के उपाय प्रस्तुत करेगा।
- ❖ प्रत्येक समूह को प्रस्तुतीकरण के लिए 5-5 मिनट का समय दिया जायेगा। इस प्रकार समस्त प्रक्रिया 30 मिनट में पूर्ण हो जाएगी।



Unit 2

रचनात्मक मूल्यांकन - लहासा की ओर

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

प्रस्तुतीकरण	1
तार्किकता	2
आत्मविश्वास	2

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक मूल्यांकन के आधार बिंदु स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि -

- ❖ अध्यापक सही व उपयुक्त जानकारी के लिए विद्यार्थियों की सराहना करें।
- ❖ अध्यापक छात्रों को 'आत्मरक्षा' की ट्रेनिंग लेने की प्रेरणा दे सकते हैं।
- ❖ यात्रा के समय आने वाली परेशानियों के निम्न बिन्दु अध्यापक की सुविधा के लिए दिए जा रहे हैं -
 - ❖ चोरी होना, सहयात्री से परेशानी, स्थान न मिलना, आरक्षण न मिलना, बिजली चली जाना, पानी न रहना, रेल के आने/जाने के समय में देरी हो जाना, रेल दुर्घटना, आग लगना, पटरी से उतरना, टकराना, कोहरे से परेशानी, सुनसान जगह से गुजरना आदि।)

प्रदत्तक त्र्यं(2)म तैसम,प र्यावरण,प,दूषणए वंभू मण्डलीयत तपवृद्धिसेस बंधीसूचनाएँ एकत्रित करना।

उद्देश्य

- ❖ ऋतु संबंधी जानकारी की अभिवृद्धि
- ❖ पर्यावरण के प्रति जागरूकता का विकास करना
- ❖ प्रदूषण से होने वाली हानियों से परिचित कराना
- ❖ भूमण्डलीय ताप वृद्धि से होने वाले दुष्परिणामों से परिचित करवाना
- ❖ मानव समाज के प्रति उत्तरदायित्व की चेतना का विकास
- ❖ प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता का विकास
- ❖ सामान्य ज्ञान की वृद्धि

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक कक्षा में बाढ़ के प्रकोप और उसकी भयानकता पर संक्षिप्त परिचय देगा।
- ❖ बाढ़ से होने वाली जान-माल की हानि से परिचित कराएगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिन्दुओं को श्याम-पट्ट पर लिख देगा।



- अद्यापक कक्षा को चार समूहों में बाँट कर प्रत्येक समूह को एक-एक विषय आर्बिटर कर देगा।
- प्रत्येक समूह को निर्धारित विषय पर परिचर्चा के लिए 10 मिनट का समय दिया जा सकता है।
- प्रत्येक समूह के नेता को 5 मिनट का समय अपने विचार व्यक्त करने के लिए दिया जाएगा।
- अद्यापक और कक्षा के अन्य समूह व्यक्त विचारों की समीक्षा तथा मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन बिन्दु

अंक विभाजन

1. विषय का ज्ञान	2
2. विचारों की सुसंबद्धता	1
3. उपयुक्त शब्द चयन	1
4. सहभागिता	1

टिप्पणी

- अद्यापक किसी अन्य मूल्यांकन बिन्दु को मूल्यांकन आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- अद्यापक सही व उपयुक्त जानकारी देने के लिए कक्षा के सभी विद्यार्थियों की सराहना करें/प्रोत्साहित करें।
- कार्य पूरा न होने पर उस समूह को अन्य समूह के विद्यार्थियों द्वारा सहायता प्रदान की जा सकती है।
- अद्यापक की सुविधा के लिए विषय संबंधी कुछ बिन्दु दिए जा रहे हैं

मौसम	पर्यावरण	प्रदूषण	भूमण्डलीय ताप वृद्धि
1. मौसम की जानकारी	पर्यावरण से तात्पर्य	प्रदूषण के प्रकार	औद्योगीकरण
2. छः ऋतु वर्णन	पर्यावरण संरक्षण	प्रदूषण के कारण	शुद्धता/शुद्धि
3. ऋतु संबंधी तीज त्यौहार	पर्यावरण का प्राणी-जगत पर प्रभाव	प्रदूषण का प्रभाव	वैज्ञानिक परीक्षण
4. ऋतु का सांस्कृतिक महत्व	प्राकृतिक सम्पदा	प्रदूषण का निवारण	यातायात के साधन
	प्रकृति दोहन		ओजोन परत
			पूर्व ज्ञान

प्रदत्त कार्य (3) यात्रा संबंधी शब्द सूची की सहायता से विद्यार्थियों को यात्रा पर आधारित अनुच्छेद बनाने के लिए देना

उद्देश्य

- यात्रा वृत्तान्त लिखने की क्षमता का विकास करना



Unit 2

रचनात्मक मूल्यांकन - लहासा की ओर

- पर्यटन के लिए प्रेरित करना
- लेखन कला का विकास करना
- वाक्य रचना में प्रवाह व सुस्पष्टता लाना

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत रूप से कार्य करने के लिए दिया जाएगा।
- अध्यापक श्यामपट्ट पर शब्द सूची लिखेंगे।
- अपनी कल्पना शक्ति के आधार पर विद्यार्थी अपने प्रपत्र पर शब्द चयन करके यात्रा संबंधी अनुच्छेद लिखेंगे।
- मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर पहले ही लिख दिए जाएँगे।

शब्द संकेत-

बस, रेल, वायुयान, स्टेशन, बस अड्डा, हवाई अड्डा, बादल, नदी, गाँव, गुफा, किसान, खेती, बस्तियाँ, चर्च, गुरुद्वारा, मंदिर, मस्जिद, कोक, चिप्स, टिकट, किताबें, मैगजीन, सुंदर, लोग, बच्चे, औरतें, रंग-बिरंगे, सड़क, नगर, बिजली, बारिश, शोर

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

1. वर्ग से गृहीत शब्दों का प्रयोग	1
2. वाक्य रचना	1
3. आकर्षक व सरस रचना	1
4. समय पर लेखन	1
5. समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- अध्यापक अपने स्वतंत्र निर्णय के अनुसार अन्य उपयोगी बिन्दुओं को भी आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- मौलिक एवं सुंदर लिखने वाले विद्यार्थियों की सराहना करें तथा जो विद्यार्थी सफलतापूर्वक नहीं लिख पाएँ उन्हें अन्य विद्यार्थियों की सहायता से लिखने के लिए प्रेरित करें। छोटे-छोटे वाक्य बनाने के लिए प्रेरित करें।

प्रदत्त कार्य - (4) विशेषण शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करना

उद्देश्य

- व्याकरण ज्ञान की वृद्धि करना
- भाषा पर अधिकार पाने के लिए प्रयत्नशील बनाना



- प्रभावशाली भाषा प्रयोग की प्रवृत्ति विकसित करना
- निर्णय क्षमता का विकास करना

प्रक्रिया

- प्रत्येक विद्यार्थी को एक एक प्रपत्र दिया जाएगा।
- अध्यापक चाहे तो श्यामपट्ट पर भी निम्नलिखित वाक्य लिखकर काम करा सकते हैं।
- विद्यार्थी पाठ से विशेषण छँटेंगे।

◇ रास्ता	◇ पलटन	◇ मकान
◇ बर्तन	◇ जगह	◇ यात्री
◇ झोंपड़े	◇ स्थान	◇ विभाग
◇ गाँव	◇ पड़ाव	◇ चढ़ाई
◇ शिखर	◇ चोटियाँ	◇ कपड़े

- इन विशेषणों में उपयुक्त विशेषण लगाएगा

मूल्यांकन आधार - प्रत्येक 3 सही विशेषताएँ पर - 1 अंक

प्रतिपुष्टि

- अध्यापक सही कार्य करने वाले विद्यार्थियों की सराहना करके असफल विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देकर पूरा कार्य करने की प्रेरणा दें।

प्रदत्त कार्य - (5) 'तिब्बती समाज की विशेषताएँ' से संबंधित कार्य-प्रपत्र

1. तिब्बत की भौगोलिक स्थिति _____
2. जलवायु _____
3. रहन-सहन _____
4. खान-पान _____
5. बोली _____
6. प्राकृतिक सौन्दर्य _____
7. धार्मिक स्थल _____
8. आर्थिक स्थिति _____
9. खेती-बाड़ी _____
10. साहित्य _____



Unit 2

रचनात्मक मूल्यांकन - लहासा की ओर

उद्देश्य

- तिब्बती समाज से परिचित करवाना
- ज्ञान का विस्तार करना
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास करना
- लेखन क्षमता का विकास करना

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम शिक्षक गतिविधि के स्वरूप से छात्रों को परिचित करवाएँगे।
- उपरोक्त कार्य-प्रपत्र को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।
- विद्यार्थी ध्यानपूर्वक इसे पृष्ठ पर लिखें।
- जब विद्यार्थी गतिविधि में व्यस्त रहेंगे तब अध्यापक घूम-घूमकर छात्रों का निरीक्षण करेंगे।
- रिक्त स्थानों की पूर्ति हेतु 15-20 मिनट का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के लिए आधार

अंक विभाजन

9-10 जानकारीयों देने पर	5
7-8 जानकारीयों देने पर	4
5-6 जानकारीयों देने पर	3
3-4 जानकारीयों देने पर	2
1-2 जानकारीयों देने पर	1

टिप्पणी

- शिक्षक कार्य-प्रपत्र में कोई अन्य उपयोगी प्रश्न भी पूछ सकते हैं

प्रतिपुष्टि

- सही जानकारी न देने वाले विद्यार्थियों को सही दिशा निर्देश देकर उन्हें कार्य पूर्ण करने के लिए प्रेरित करें।
- अच्छा कार्य करने वाले छात्रों को प्रोत्साहित करें।
- सही जानकारी न दे सकने वाले छात्रों को दूसरे छात्रों की मदद से कार्य पूर्ण करने के लिए कहा जा सकता है।



उपभोक्तावाद की संस्कृति ✨

श्याम चरण दुबे

प्रदत्त कार्य : (1) बहुविकल्पीय विधि से सही उत्तर छाँटकर वाक्य पूर्ण कराना।

उद्देश्य

- ❖ विद्यार्थियों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास करना
- ❖ विद्यार्थियों में एकाग्रता की प्रवृत्ति का विकास करना
- ❖ विद्यार्थियों में चिंतनशीलता विकसित करना
- ❖ पाठ की विषय वस्तु से परिचित कराना
- ❖ निर्धारित समय सीमा में कार्य पूर्ण कराना

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ अध्यापक बहुविकल्पीय प्रश्नों का प्रपत्र पाठ के आधार पर तैयार करेंगे।
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी को प्रपत्र की एक-एक छाया प्रति दे दी जाए।
- ❖ सभी विद्यार्थी व्यक्तिगत रूप से सही विकल्प छाँट कर वाक्य पूर्ण करेंगे
- ❖ इस प्रक्रिया के लिए कुल 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ समयावधि पूर्ण होने पर अध्यापक प्रपत्र एकत्र करेगा और प्रपत्र अलग-अलग विद्यार्थियों में बाँट कर स्वयं सही उत्तर बता कर उनका मूल्यांकन कराएगा।
- ❖ अध्यापक सभी विद्यार्थियों को उनके प्राप्तांकों के आधार पर भारांक प्रदान कर सकता है।

बहुविकल्पीय प्रपत्र

निर्देश : सही विकल्प छाँट कर वाक्य पूर्ण करें :

1. बाजार की गिरफ्त में आए समाज की वास्तविकता को प्रकट करती है -
 - अ. पाश्चात्य संस्कृति।
 - ब. भारतीय संस्कृति।
 - स. उपभोक्तावाद की संस्कृति।
 - द. लोक संस्कृति।



2. आज हमारी निगाह गुणवत्ता पर नहीं है क्योंकि हम -
 - अ. सम्पन्न और अभिजात हैं
 - ब. बहुविज्ञापित वस्तु को खरीदना चाहते हैं।
 - स. हम विज्ञापन की चमक-दमक के कारण वस्तुओं के पीछे भागते हैं।
 - द. दिखावे की संस्कृति में विश्वास करते हैं।
3. आज स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है क्योंकि हम -
 - अ. व्यक्ति केन्द्रित हो रहे हैं।
 - ब. सच्चाई में विश्वास करते हैं।
 - स. सामाजिक प्राणी हैं।
 - द. भारतीय संस्कृति में विश्वास करते हैं।
4. उपभोक्तावादी संस्कृति हमारी नींव को हिला रही है क्योंकि हम / हमारी -
 - अ. झूठ को सच और सच को झूठ समझते हैं
 - ब. बुद्धिमान और विवेकी हैं।
 - स. परम्पराओं का अवमूल्यन हुआ है।
 - द. हम एक काल्पनिक संसार में जीते हैं।
5. हम आधुनिकता के झूठे प्रतिमान अपनाते हैं क्योंकि हम -
 - अ. अंधी प्रतिस्पर्धा की दौड़ में गिरफ्त है।
 - ब. अपनी संस्कृति की पहचान को बनाए रखना चाहते हैं।
 - स. उपभोक्ता संस्कृति का विश्व में प्रचार करना चाहते हैं।
 - द. सामान्य जन चीजों को ललचाई नजर से देखते हैं।
6. हम पश्चिम के सांस्कृतिक उपनिवेशक बन रहे हैं क्योंकि -
 - अ. पश्चिम के लोग बहुत अच्छे होते हैं।
 - ब. हम अधिक परिपक्व हुए हैं।
 - स. हम बौद्धिक दासता स्वीकार कर रहे हैं।
 - द. विश्व हमारी बुद्धिमत्ता का लोहा मानता है।



7. हम पाँच सितारा पब्लिक स्कूल में पढ़ना चाहते हैं क्योंकि -
 - अ. वहाँ पढ़ाई बहुत अच्छी होती है।
 - ब. अध्यापक अच्छे आधुनिक वस्त्र पहनते हैं
 - स. दिखावे में विश्वास करते हैं।।
 - द. हम मंद ध्वनि में निरन्तर संगीत सुनना चाहते हैं।
8. हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का हास हो रहा है क्योंकि हम -
 - अ. पीजा और बर्गर खाना चाहते हैं
 - ब. पैकेट बन्द आलू चिप्स खाना चाहते हैं।
 - स. लक्ष्य भ्रम से पीड़ित हैं।
 - द. विकास के विराट उद्देश्य से पीछे हट रहे हैं।
9. विज्ञापन और प्रसार के सूक्ष्मतंत्र हमारी मानसिकता बदल रहे हैं क्योंकि -
 - अ. उनमें आकर्षण सम्मोहन की शक्ति है, वशीकरण है।
 - ब. हम जीवन दिशा के प्रति सजग हैं।
 - स. हम अपने संसाधनों का उपयोग कर रहे हैं।
 - द. हम दिग्भ्रमित नहीं हैं।
10. हम ड्रेसिंग-टेबल पर पेरिस के परफ्यूम रख रहे हैं क्योंकि हम -
 - अ. समाज में अपनी हैसियत जताते हैं।
 - ब. सौन्दर्य में निखार लाना चाहते हैं।
 - स. इससे अपने शरीर को पवित्र रखते हैं।
 - द. हमारे देश में इसका उत्पादन नहीं होता।

मूल्यांकन बिन्दु

अंक विभाजन

पूरे सही विकल्प छाँटने पर	5
8 सही विकल्प छाँटने पर	4
6 सही विकल्प छाँटने पर	3
4 सही विकल्प छाँटने पर	2
2 सही विकल्प छाँटने पर	1



टिप्पणी :

अध्यापक अपने अनुरूप अन्य मूल्यांकन प्रविधि /आधार बनाने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अध्यापक की सुविधा के लिए सही विकल्प प्रश्न के क्रमानुसार अंकित किए जा रहे हैं
1. (स) 2 (स) 3. (अ) 4. (स) 5. (अ) 6 (स) 7. (स) 8. (द) 9.(अ) 10. (अ)
- सभी सही उत्तर देने वाले की सराहना अध्यापक द्वारा अवश्य की जाए।
- सभी छात्रों को सही उत्तर बताए जाएँ।

प्रदत्त कार्य - (2) पाठ से विशेषण छाँटकर वाक्य निर्माण।

उद्देश्य

- विशेषणों से अवगत कराना
- सृजनशीलता का विकास करना
- सामूहिकता की भावना का विकास करना
- व्याकरण की जानकारी प्राप्त कराना

प्रक्रिया

- अध्यापक छात्रों को विशेषण का व्याकरणिक परिचय देगा।
- कक्षा को पाँच समूहों में विभक्त करके पाठ के पाँच अनुच्छेदों को एक-एक समूह में अलग-अलग विभक्त किया जाएगा। (पाठ को विभक्त करने के लिए अध्यापक स्वतंत्र है।)
- प्रत्येक समूह को दिए गए अनुच्छेद से विशेषण छाँटकर वाक्य में प्रयोग करने होंगे।
- इस प्रक्रिया के लिए 5 मिनट का समय दिया जाए।
- वाक्य संरचना के पश्चात् सभी समूहों के सभी छात्र व्यक्तिगत रूप से प्रस्तुतीकरण करेंगे।
- सम्पूर्ण प्रक्रिया में एक कालांश पर्याप्त होगा।
- मूल्यांकन के आधार श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

विशेषण

2

वाक्य प्रयोग

2

प्रतिपुष्टि

- अच्छा कार्य करने वाले छात्रों को प्रोत्साहन।



- जो छात्र ठीक प्रकार से वाक्य निर्माण नहीं कर पा रहे हैं उनका दूसरे छात्रों की सहायता से कार्य पूर्ण कराया जाए।
- अधिक से अधिक वाक्य निर्माण की प्रेरणा।

प्रदत्त वाक्य : (3) 'जागो ग्राहक जागो' नामक एक नुक्कड़ नाटिका

उद्देश्य

- उपभोक्ता के अधिकारों के प्रति सजगता उत्पन्न करना
- सामाजिकता की भावना विकसित करना
- उत्तरदायित्व निश्चित करना
- अभिनय क्षमता का विकास करना
- भाषायी दक्षता की वृद्धि करना

प्रक्रिया

- अध्यापक कक्षा में 'जागो ग्राहक जागो' विषय को स्पष्ट करेगा।
- सारी कक्षा को पाँच समूहों में विभक्त करेगा।
- चार समूह नुक्कड़-नाटक कलाकारों की तर्ज पर अपनी-अपनी समस्याएँ चुटीले संवादों के द्वारा अभिव्यक्त करेंगे यथा-
 एक बालक - मैंने कल खरीदी थी कमीज, आज फट गई।
 दूसरा बालक - मेरी पैंट तो पैंट से निकर बन गई।
- एक समूह के बालक समाधान बताएंगे यथा एक बालक - क्या रो धोकर ही बैठ जाओगे यार या करोगे इसका कोई उपचार
- समय - एक कालांश

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

प्रभावशाली संवाद	1
अभिनयशीलता	1
चुटीली भाषा	1
विषय की अभिव्यक्ति	1
समग्र प्रभाव	1



Unit 3

रचनात्मक मूल्यांकन - उपभोक्ता वाद की संस्कृति

टिप्पणी

अध्यापक कक्षा के द्वारा किए गए कार्य के अनुसार स्वयं मूल्यांकन बिन्दु आधार बनाने के लिए भी स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

अध्यापक अंत में सभी विद्यार्थियों को 'उपभोक्ता संघ' व ग्राहक के अधिकारों के प्रति जागरूकता के लिए कुछ जानकारी उपलब्ध करा सकते हैं।

- अच्छे नाटक की सराहना की जाए।
- अध्यापक स्वयं अभिनय करके दिखा सकते हैं।

प्रदत्त कार्य : (4) एक शब्द से उसी समूह के अन्य शब्दों का निर्माण

उद्देश्य

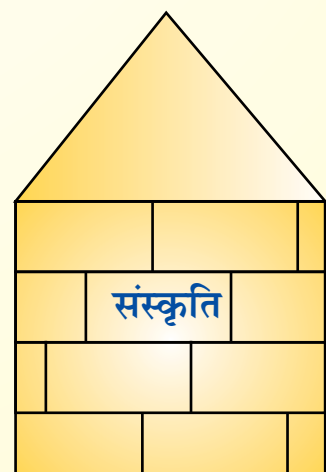
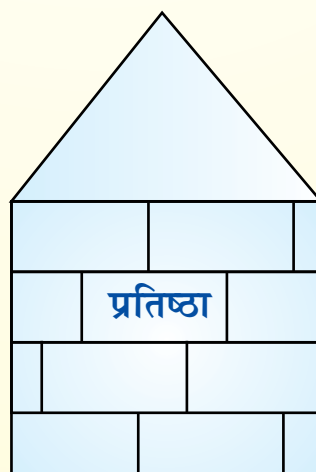
- भाषा-क्षमता का विकास करना
- रचनात्मकता का विकास करना
- शब्द भंडार की वृद्धि करना
- लेखन कौशल का विकास करना

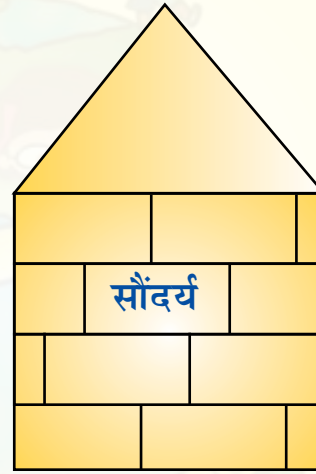
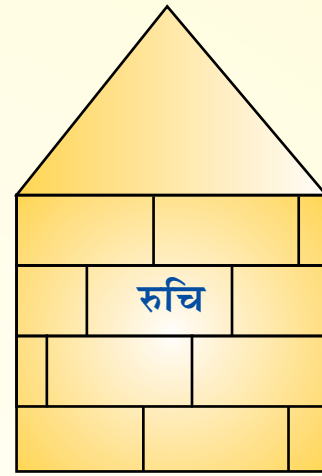
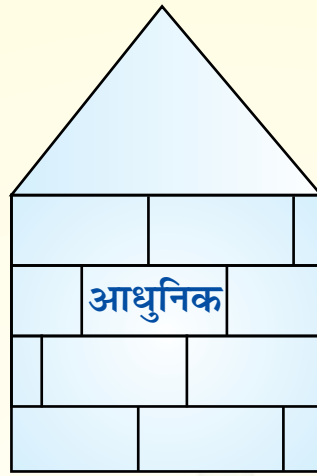
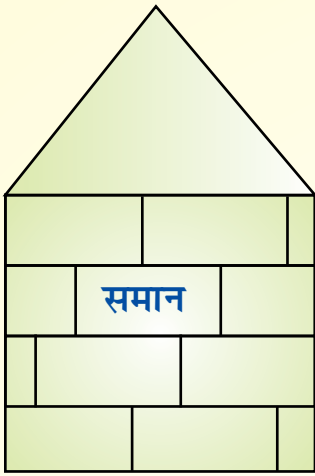
प्रक्रिया

- अध्यापक सारी कक्षा को आठ समूहों में बाँट देगा
- प्रत्येक समूह को एक शब्द दिया जाएगा।
- अध्यापक विद्यार्थियों को समझाने के लिए एक शब्द से बनने वाले शब्द-समूह को उदाहरणार्थ सबके सामने प्रस्तुत करेगा। यथा - जीवन

♦ जीवन-दर्शन	♦ जीवन शैली	♦ आजीवन
♦ नवजीवन	♦ जीवन भर	♦ जीवनी
♦ जीवन्त		

सभी विद्यार्थी श्यामपट्ट पर एक-एक घर का चित्र बनाएंगे और एक-एक शब्द का प्रयोग करके मनोरंजक तरीके से नए-नए शब्दों से परिचित हो सकते हैं।





मूल्यांकन आधार

शब्दों की संख्या (कम से कम 4)

शब्दों का चयन

विलोम शब्द उपसर्ग इत्यादि का प्रयोग

अंक विभाजन

2

2

1

टिप्पणी :

अध्यापक अपने मत से अन्य मानक स्थिर करने में स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- अध्यापक विद्यार्थियों की अशक्यता को प्रोत्साहन देकर सराहनात्मक सहायता प्रदान कर सकता है।
- नए-नए शब्द सुझा सकता है।



Unit 3

प्रदत्त कार्य - (5) किन्हीं दो उत्पादनों पर विज्ञापनों का नव निर्माण

उद्देश्य

- कल्पनाशीलता का विकास करना
- सृजनात्मकता का विकास करना
- अभिनय कौशल क्षमता का विकास करना
- तार्किकता की क्षमता का विकास करना

प्रक्रिया

- शिक्षक छात्रों को समझाएँगे कि प्रतिदिन बहुत से विज्ञापन आप देखते, सुनते तथा पढ़ते हैं। किन्हीं दो उत्पादनों के नए विज्ञापन अपनी कल्पना के आधार पर तैयार कीजिए, उन्हें अभिनय कौशल द्वारा दर्शाते हुए यह भी बताए कि ग्राहक उन्हें क्यों खरीदें?
- कक्षा को छह समूहों में विभक्त कर दिया जाए।
- मूल्यांकन के आधार बिन्दु श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँ।
- विषय तैयार करने के लिए 10 मिनट का समय दिया जा सकता है।
- समूह चर्चा तथा विषय तैयारी के दौरान शिक्षक प्रत्येक समूह का निरीक्षण करें तथा सबको प्रतिभागी बनने के लिए प्रेरित करें।

मूल्यांकन का आधार

अंक विभाजन

तुकबंदी	1
संवाद कौशल	1
अभिनय	1
समग्र प्रभाव	1
भाषा	1

टिप्पणी

अध्यापक मूल्यांकन बिन्दु स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- अच्छा प्रस्तुतीकरण करने वाले छात्रों की सराहना की जाए तथा अन्य छात्रों को अच्छा कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- अध्यापक छात्रों को विज्ञापनों द्वारा आकर्षित करने के तरीकों से परिचित करा सकते हैं कि किस प्रकार अपने उत्पादन के प्रति ग्राहक को आकर्षित किया जा सकता है।



साँवले सपनों की याद

जाबिर हुसैन

प्रदत्त कार्य (1) : प्रकृति से संबंधित शब्दों पर आधारित कविता चयन/वाचन।

उद्देश्य :

- प्रकृति से जुड़ाव अनुभव कराना
- प्रकृति संरक्षण की भावना का विकास करना
- कल्पना शीलता का विकास करना
- संवेदन शीलता को उभारना
- मौलिक चिंतन का विकास करना

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम शिक्षक छात्रों को विषय से परिचित कराएँ।
- वाचन से दो दिन पूर्व ही छात्रों को प्रकृति से संबंधित कविताओं को एकत्र करने (छात्र स्वरचित कविता भी ले सकते हैं) के लिए बता दिया जाए।
- निर्धारित समय पर छात्रों को चार-चार छात्रों के समूह में विभक्त कर दें। उन्हें कविता चयन के लिए संबंधित शब्द भी दे दें। एक समूह को एक शब्द दिया जाए। छात्र चार-चार पंक्तियों का चयन व्यक्तिगत रूप से करेंगे।
- इस कार्य के लिए 10-15 मिनट का समय दिया जाए।
- पंक्तियों के चयन के पश्चात् कक्षा में एक-एक समूह चार-चार पंक्तियों का वाचन करेगा।
- सम्पूर्ण प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

कविता का चयन	2
प्रस्तुतीकरण (लय, तुक, भाषा)	2
वाचन (आरोह, अवरोह)	1



टिप्पणी :

अध्यापक मूल्यांकन के आधार स्वतंत्र रूप से भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ भली-भाँति कविता वाचन करने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- ❖ जिन छात्रों के उच्चारण / वाचन में कमी हो उनकी कमियों को बताकर सही ढंग बताया जाए।
- ❖ प्रकृति प्रेम के प्रति छात्रों का रुझान बढ़ाने हेतु प्रकृति के महत्व को समझाया जाए।
- ❖ स्वरचित कविता वाचन करने वाले छात्रों को प्रोत्साहित किया जाए।
- ❖ अध्यापक की सुविधा के लिए प्रकृति संबंधित शब्द संकलन - वर्षा, बादल, चाँदनी रात, हरे-भरे खेत, नदी तट, पहाड़, झरने, प्रभात, संध्या, समुद्र, बर्फ, वन, पशु-पक्षी आदि।

प्रदत्त कार्य (2) अपने जीवन के सपने की अभिव्यक्ति लिखकर करना।

उद्देश्य

- ❖ विचारशीलता का विकास करना
- ❖ दृष्टि कोण की स्पष्टता विकसित करना
- ❖ पूर्व योजना बनाने की प्रवृत्ति का विकास करना
- ❖ आगे बढ़ने की प्रेरणा देना
- ❖ सृजनशीलता का विकास करना
- ❖ आत्मचिंतन की प्रवृत्ति का विकास करना

प्रक्रिया

- ❖ यह व्यक्तिगत कार्य है।
- ❖ शिक्षक सर्वप्रथम विषय को विस्तृत रूप से समझाएँगे।
- ❖ रंगीन चार्ट पेपर से कार्ड काटकर प्रत्येक छात्र को बाँट दिए जाएँ।
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी को अपने जीवन के लिए देखे गए सपने की अभिव्यक्ति कार्ड पर लिखनी है।
- ❖ इस कार्य के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ लेखन के पश्चात् प्रत्येक विद्यार्थी अपना-अपना कार्ड एक-एक करके पढ़ेंगे तथा कक्षा प्रदर्शन पट्ट पर लगा देंगे। यदि बोर्ड नहीं है तो एक के साथ एक पिन से जोड़कर टांगे जा सकते हैं।



- ❖ इस पूर्ण प्रक्रिया के लिए एक कालांश का समय पर्याप्त होगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिन्दु शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख दें।

मूल्यांकन के आधार	अंक विभाजन
विषय वस्तु	1
सुनियोजित ढंग से अभिव्यक्ति	1
स्पष्ट दृष्टिकोण	2
लिखावट	1

टिप्पणी

- ❖ मूल्यांकन के आधार अध्यापक स्वेच्छा से भी निर्धारित कर सकते हैं

प्रतिपुष्टि

- ❖ इस प्रक्रिया को रुचिकर बनाने के लिए कार्ड विभिन्न आकारों में भी कटवाए जा सकते हैं।
- ❖ अच्छा कार्य करने वाले छात्रों को प्रोत्साहित करें।
- ❖ किसी भी प्रकार का संशय या दुविधा होने पर उनका मार्ग दर्शन करें।

प्रदत्त कार्य (3) डायरी शैली में एक अनुच्छेद (किसी एक दिन का विवरण)

उद्देश्य

- ❖ सृजनात्मकता का विकास करना
- ❖ चिंतन-मनन की प्रवृत्ति का विकास करना
- ❖ आत्मविश्लेषण की प्रवृत्ति उत्पन्न करना
- ❖ सत्य निष्ठा जैसे मूल्यों का विकास करना
- ❖ लेखन कौशल का विकास करना

प्रक्रिया

- ❖ शिक्षक सर्वप्रथम विद्यार्थियों को डायरी-शैली से अवगत कराएँ।
- ❖ यह व्यक्तिगत कार्य है छात्रों को अपनी-अपनी उत्तर पुस्तिका में अपनी दिनचर्या पर एक अनुच्छेद (8-10 पंक्तियाँ) लिखने को दिया जाए।
- ❖ इस कार्य के लिए 5 से 10 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ इस दौरान अध्यापक छात्रों के बीच घूम कर इस कार्य में उनका मार्ग दर्शन करें।



- अपने अनुभव लिखने के पश्चात् छात्र एक एक करके पढ़ेंगे।
- सभी विद्यार्थी ध्यानपूर्वक एक दूसरे के अनुभव सुनेंगे।
- मूल्यांकन छात्रों से कराया जा सकता है।

मूल्यांकन के आधार	अंक विभाजन
भाषा की शुद्धता / प्रस्तुतीकरण / आत्मविश्वास	2
दिनचर्या का उल्लेख	2
सत्यता	1

टिप्पणी

- शिक्षक मूल्यांकन के आधार बिन्दु स्वतंत्र रूप से सुनिश्चित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सुनियोजित ढंग से प्रस्तुत करने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- जिन छात्रों में आत्मविश्वास की कमी हो उन्हें प्रोत्साहित किया जाए।
- डायरी लेखन की महत्ता को छात्रों को भली भाँति समझाया जाए।

प्रदत्त कार्य (4) वर्ग पहले की कार्य प्रपत्र

वर्ग में दिए गए शब्दों में कुछ पशु-पक्षियों के नाम छिपे हैं जिन्हें ढूँढकर सूची तैयार करें।

उद्देश्य

- पशु-पक्षियों का परिचय देना
- समस्या समाधान की प्रेरणा देना
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास करना
- चिंतन प्रवृत्ति का विकास करना
- लेखन कौशल का विकास करना

प्रक्रिया

- शिक्षक कार्य से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी पूर्व में ही विद्यार्थियों को समझा दें।
- कार्य-प्रपत्र के माध्यम से या श्यामपट्ट पर लिखकर इस कार्य को कराया जाए।
- पशु-पक्षियों के नाम ढूँढने के लिए विद्यार्थियों को कम से कम 10-12 मिनट का समय दिया जाएगा।
- विद्यार्थी सूची तैयार कर सकते हैं या विभिन्न रंगों का इस्तेमाल भी कर सकते हैं
- शिक्षक विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार सहायता करें।



गो	कु	ल	को	ई	श	व	र	ची	न
ब	गौ	गा	य	का	दी	प	तो	ता	प
ल	रै	प	ल	या	घो	ट	क	हं	ट
ब	या	पी	ला	नी	ड़ा	ल	भैं	स	र्ष
गु	चू	हा	थी	ल	उ	ल	लू	ब	ना
ला	शे	ख	र	मै	चि	ड़ि	या	द	म
ख	र	गो	श	ना	प	ल	क	ब	ह
ह	म	र	ब	म	ती	मो	ती	ऊँ	ट
ल	बै	या	क	बू	त	र	न	दि	न
गि	ल	ह	री	प	र	द	या	व	त

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

17 या अधिक पशु पक्षियों के नाम छाँट लेने पर	5
13-16	4
9-12	3
5-8	2
1-4	1

प्रतिपुष्टि

- अधिकतम पशु-पक्षियों के नाम छाँटने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- जो कार्य पूरा न कर पाए उनकी सहायता की जाए।
- अंत में सभी पशु-पक्षियों के नाम अध्यापक श्यामपट्ट पर लिख दें ताकि विद्यार्थी उनसे अवगत हो जाएँ।
- शिक्षक की सहायता के लिए पशु-पक्षियों की सूची नीचे दी जा रही है -

कोयल, हंस, तोता, पपीहा, मैना, कबूतर, चिड़िया, मोर, उल्लू, बया, गौरैया, गिलहरी, गाय, घोड़ा, चूहा, हाथी, बकरी, ऊँट, बैल, भैंस, याक, शेर, तीतर, चीता, सर्प, खरगोश, हिरन, बगुला



प्रदत्त कार्य (5) पर्यटन स्थलों के नामों का उल्लेख करते हुए उनकी प्रसिद्धि के आधार।

उद्देश्य

- देश के विभिन्न दर्शनीय स्थलों की जानकारी देना
- सामान्य ज्ञान की वृद्धि करना
- चिंतनशीलता की प्रवृत्ति का विकास करना
- सौन्दर्य बोध उत्पन्न करना
- देशाटन की प्रवृत्ति का विकास करना

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम अध्यापक विषय को विस्तार से छात्रों को समझाएँगे। उदाहरण के लिए एक दो स्थानों के नाम एवं उनके महत्व बता सकते हैं (जैसे आगरा - ताजमहल के लिए प्रसिद्ध है।)
- मूल्यांकन के आधार बिन्दु शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दें।
- यह व्यक्तिगत कार्य है।
- प्रत्येक विद्यार्थी किन्हीं पाँच स्थलों के नाम अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे।
- लिखने के लिए उन्हें 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- लिखने के पश्चात् विद्यार्थी कक्षा में एक-एक करके पढ़कर सुनाएंगे।
- पूर्ण प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।
- लिखने के लिए दिए गए समय के दौरान शिक्षक घूम-घूमकर छात्रों का मार्गदर्शन करेंगे।
- मूल्यांकन कक्षा की सहायता से भी संपन्न किया जा सकता है।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

5 का नामोल्लेख व प्रसिद्धि का कारण बताने पर	5
4 का नामोल्लेख व प्रसिद्धि का कारण बताने पर	4
3 का नामोल्लेख व प्रसिद्धि का कारण बताने पर	3
2 का नामोल्लेख व प्रसिद्धि का कारण बताने पर	2
1 का नामोल्लेख व प्रसिद्धि का कारण बताने पर	1

प्रतिपुष्टि

- सही जानकारी देने पर छात्रों की सराहना करें।
- पूर्ण जानकारी न देने पर अध्यापक उनका मार्गदर्शन करें।
- अधिक से अधिक स्थलों की जानकारी देने का प्रयास करें।
- विभिन्न दर्शनीय स्थलों को देखने की प्रेरणा दें।



नाना साहब की पुत्री, देवी नैना को भस्म कर दिया गया चपला देवी

प्रदत्त कार्य 1 : 1857 के क्रान्तिकारियों के बारे में जानकारी इकट्ठा कर कक्षा में प्रस्तुत करना।

उद्देश्य

- इतिहास के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
- खोज की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।
- अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना।
- संवेदनशीलता की प्रवृत्ति का विकास करना।

प्रक्रिया

- सामूहिक कार्य
- प्रत्येक समूह में पाँच विद्यार्थी होंगे।
- गतिविधि की सूचना एक सप्ताह पूर्व दी जाएगी।
- प्रत्येक समूह को प्रस्तुतीकरण के लिए 4 मिनट का समय दिया जाएगा।
- पूरी प्रक्रिया के दौरान शिक्षक स्रोत सामग्री की सूचना देगा।
- शिक्षक मूल्यांकन के आधार बिन्दु प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

चयन की नवीनता	1
मानवीयता एवम् संवेदनशीलता	1
विषय सम्बद्धता	1
भाषा की रचनात्मकता एवम् शुद्धता	1
प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- शिक्षक किन्हीं अन्य बिन्दुओं को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

रचनात्मक मूल्यांकन - नाना साहब की पुत्री, देवी नैना को भस्म कर दिया गया





प्रतिपुष्टि

- शिक्षक अच्छे प्रस्तुतीकरण को स्वतंत्रता की भावना से जोड़कर विद्यार्थियों के साथ चर्चा कर सकते हैं।
- विभिन्न क्रान्तिकारियों के विषय में जानकारी देना।

प्रदत्त कार्य 2 : 1857 की क्रान्ति से जुड़े पाठ से अलग प्रसंग/घटना का वाचन

उद्देश्य

- इतिहास के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
- खोज की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।
- वाचन कौशल का विकास करना।
- अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना।
- मानवीय संबंधों का विकास करना।

प्रक्रिया

- सामूहिक कार्य होगा।
- प्रत्येक समूह में पाँच विद्यार्थी होंगे।
- गतिविधि की सूचना 3 दिन पूर्व कक्षा को दी जाएगी।
- प्रत्येक समूह को घटना/प्रसंग सुनाने के लिए अधिकतम 3 मिनट का समय दिया जाएगा।
- पूरी प्रक्रिया के दौरान शिक्षक स्रोत सामग्री की जानकारी विद्यार्थियों को देंगे।
- शिक्षक मूल्यांकन के आधार बिन्दु प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार

अंक योजना

चयन की नवीनता	1
मानवीयता एवम् संवेदनशीलता	1
विषय सम्बद्धता	1
रोचकता	1
प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- शिक्षक किन्हीं अन्य बिन्दुओं को मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।



प्रतिपुष्टि

- शिक्षक अच्छी प्रस्तुति की सराहना करें, कुछ चुनी हुई प्रस्तुतियों को 1857 की क्रान्ति की उपलब्धियों के संदर्भ में देखते हुए कक्षा में विचार विमर्श करें। विद्यालय मंच पर प्रस्तुत कराएँ।

प्रदत्त कार्य 3 : विद्यार्थी देशभक्ति या वीर रस पर आधारित कविता चुनेंगे और कक्षा में सुनाएंगे। (चयन एवं काव्य पाठ)

उद्देश्य

- खोज की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- काव्य पाठ के प्रति रुचि पैदा करना।
- देशभक्ति की भावना को प्रबल करना।
- स्मृति क्षमता का विकास करना

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य
- गतिविधि की सूचना विद्यार्थियों को एक दिन पहले दी जाएगी।
- प्रस्तुतीकरण के लिए अधिकतम 2-3 मिनट का समय दिया जाएगा।
- शिक्षक विषय से संबंधित स्रोत सामग्री की जानकारी उपलब्ध करवाएँ।
- शिक्षक मूल्यांकन का आधार प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

चयन की गुणवत्ता	1
उचित आरोह अवरोह	1
भाव-भंगिमा	1
विषय सम्बद्धता	1
उपयुक्त उच्चारण	1

प्रतिपुष्टि

- अच्छे प्रस्तुतीकरण की सराहना की जाए। शिक्षक वीरता और साहस की सामाजिक उपयोगिता पर उदाहरण सहित चर्चा करें।



प्रदत्त कार्य 4 : पाठ की कहानी का नाट्य रूप में प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य

- अभिनय कौशल का विकास करना।
- रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास करना।
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- देश के इतिहास के प्रति जागरूक बनाना।

प्रक्रिया

- यह सामूहिक कार्य होगा।
- 8 से 10 विद्यार्थियों का समूह बनाया जाएगा।
- गतिविधि की सूचना 3 दिन पूर्व दी जाएगी तथा उस बीच अध्यापक छात्रों का मार्गदर्शन करेंगे।
- प्रस्तुतीकरण का समय 5 से 7 मिनट प्रत्येक समूह के लिए होगा।
- शिक्षक मूल्यांकन के आधार प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

• विषय सम्बद्धता	1
• उपयुक्त संवाद योजना	1
• कल्पनाशीलता	1
• पात्रों का उपयुक्त चयन	1
• अभिनय कौशल	1
• प्रस्तुतीकरण	1
• समग्र प्रभाव	1

विशेष

- प्रत्येक बिंदु के लिए एक अंक निर्धारित है। शिक्षक किन्हीं पांच बिंदुओं को मानदण्ड बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- प्रभावी प्रस्तुति की सराहना अन्य समूहों एवम् शिक्षक द्वारा की जाएगी। नाट्य रूपांतरण की तकनीक पर विद्यार्थियों के साथ चर्चा की जाएगी।
- अभिनय में कमजोर विद्यार्थियों के लिए अध्यापक स्वयं या अन्य अभिनय कुशल छात्रों की सहायता ले सकते हैं।



प्रदत्त कार्य 5 : 1857 की क्रांति से संबंधित पुस्तकों / फिल्म / पत्र-पत्रिकाओं के नामों की सूची तैयार करना।

उद्देश्य

- खोजपरक प्रवृत्ति को बढ़ावा देना
- देश के इतिहास के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।
- स्वाधीनता संग्राम का परिचय देकर स्वाधीनता के प्रति प्रेरित करना।
- देशभक्ति की भावना का विकास करना।

प्रक्रिया

- यह सामूहिक कार्य है।
- प्रत्येक समूह में पाँच सदस्य होंगे।
- गतिविधि की सूचना एक सप्ताह पूर्व दी जाएगी।
- प्रत्येक समूह को सूची प्रस्तुत करने के लिए 1-2 मिनट का समय दिया जाएगा।
- प्रक्रिया के दौरान शिक्षक भी अपनी सूची तैयार करें।
- शिक्षक मूल्यांकन के आधार प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

• स्रोत सामग्री की गुणवत्ता	1
• सूची की विविधता	1
• विषय सम्बद्धता	1
• सूची सामग्रियों की संख्या	1
• प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- शिक्षक किन्हीं अन्य बिन्दुओं को भी मानदण्ड बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- शिक्षक सभी सूचियों को मिलाकर एक समग्र सूची तैयार करें तथा कक्षा में लगाएँ। इस कार्य में विद्यार्थी 'इतिहास शिक्षक' की सहायता ले सकते हैं।



प्रेमचंद के फटे जूते

हरिशंकर परसाई

प्रदत्त कार्य 1 : प्रेमचन्द के व्यक्तिगत जीवन के बारे में जानकारी एकत्रित कर सचित्र फाइल तैयार करना।

उद्देश्य

- सौन्दर्य बोध जागृत करना
- खोजपरक प्रवृत्ति का विकास करना
- साहित्यिक अभिरुचि उत्पन्न करना
- मिल-जुल कर कार्य करने की प्रवृत्ति विकसित करना

प्रक्रिया

- शिक्षक कक्षा में प्रेमचन्द के जीवन के संबंध में चर्चा करेंगे।
- सामूहिक कार्य
- प्रत्येक समूह में पाँच विद्यार्थी होंगे।
- गतिविधि की सूचना एक सप्ताह पूर्व दे दी जाएगी।
- शिक्षक मूल्यांकन के आधार प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- प्रत्येक समूह की संकलन सामग्री का अध्यापक निरीक्षण करेंगे।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

विषय सम्बद्धता	1
स्रोत सामग्री की गुणवत्ता	1
रोचकता	1
भाषायी दक्षता	1
प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- शिक्षक किन्हीं अन्य पाँच बिन्दुओं को भी मानदण्ड बना सकते हैं।



Unit 6

प्रतिपुष्टि

- फाइल के रोचक प्रकरणों की चर्चा कक्षा में की जाएगी।
- विद्यालय के बोर्ड पर श्रेष्ठ प्रस्तुति के कुछ हिस्सों को प्रदर्शित किया जाएगा।

प्रदत्त कार्य 2 : आपके हिसाब से जूता और टोपी में कौन सी चीज अधिक महत्वपूर्ण है और क्यों? (समूह चर्चा)

उद्देश्य

- सहभागिता की भावना विकसित करना।
- तार्किक क्षमता की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।
- अभिव्यक्ति क्षमता विकसित करना।
- संवेदनशीलता के भाव को विकसित करना
- वाचन कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- यह सामूहिक कार्य होगा।
- प्रत्येक समूह में 8 से 10 विद्यार्थी होंगे।
- गतिविधि की सूचना चर्चा से 1 दिन पूर्व दे दी जाएगी।
- प्रत्येक समूह को 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- शिक्षक समूह चर्चा के दौरान प्रत्येक विद्यार्थी के क्रियाकलापों का ध्यान रखेंगे।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

उपयुक्त तर्क	1
प्रतिपक्षी को सुनने का धैर्य	1
सार्थक हस्तक्षेप	1
आत्मविश्वास	1
भाषायी दक्षता	1

टिप्पणी

- शिक्षक किन्हीं अन्य पाँच बिन्दुओं को भी मानदण्ड बना सकते हैं।



प्रतिपुष्टि

- शिक्षक समूह चर्चा के पश्चात सकारात्मक व नकारात्मक बिन्दुओं पर विद्यार्थियों से चर्चा करें।

प्रदत्त कार्य 3 : व्यक्ति की पोशाक महत्वपूर्ण है या उसकी उपलब्धि? विषय पर कक्षा में वाद-विवाद।

उद्देश्य

- तार्किक प्रवृत्ति का विकास करना।
- बढ़ती हुई उपभोक्तावादी प्रवृत्ति की पहचान करना।
- अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना।
- भाषायी दक्षता का विकास करना।

प्रक्रिया

- यह व्यक्तिगत कार्य होगा।
- प्रत्येक विद्यार्थी अपनी इच्छा से पक्ष या विपक्ष में बोलेंगे।
- गतिविधि की सूचना कक्षा को एक दिन पूर्व दी जाएगी।
- प्रत्येक प्रतिभागी को 1 मिनट का समय दिया जाएगा।
- शिक्षक ध्यानपूर्वक प्रत्येक विद्यार्थी के वक्तव्य को सुनेंगे।
- प्रत्येक विद्यार्थी की प्रतिभागिता अनिवार्य है।
- शिक्षक मूल्यांकन के आधार प्रारंभ में ही श्यामपट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
मानवीयता एवम् संवेदनशीलता का समावेश	1
भाषा व उच्चारण	1
तार्किकता व क्रमबद्धता	1
उपयुक्त उदाहरण	1

टिप्पणी

- शिक्षक मूल्यांकन के अन्य आधार बिन्दु निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र हैं।

प्रतिपुष्टि

- शिक्षक अन्य महापुरुषों की वेशभूषा पर संक्षिप्त टिप्पणी कर सकते हैं।
- अच्छे वक्ता और प्रस्तुतीकरण की सराहना शिक्षक अवश्य करें।



प्रदत्त कार्य 4 : किसी अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति की पोशाक को ध्यान में रखते हुए एक संक्षिप्त हास्य-व्यंग्य लेख लिखकर कक्षा में सुनाना।

उद्देश्य

- ❖ रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ कल्पनाशीलता को बढ़ावा देना।
- ❖ लेखन क्षमता का विकास करना।
- ❖ अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना।
- ❖ आत्मविश्वास में वृद्धि

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी को लिखने के लिए 15 मिनट और सुनाने के लिए 1-2 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ शिक्षक विद्यार्थियों की सहायता शब्दावली चुनने व हास्य-व्यंग्य को समझने में करें।
- ❖ शिक्षक अन्य हास्य-व्यंग्य लेखकों के बारे में कक्षा में चर्चा करेंगे।
- ❖ मूल्यांकन कक्षा की सहायता से किया जाएगा।
- ❖ शिक्षक मूल्यांकन के आधार प्रारंभ में ही श्यामपट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

कल्पना की नवीनता	1
रोचकता	1
मानवीयता व संवेदनशीलता का समावेश	1
प्रभावी भाषा एवम् संवाद	1
प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक किन्हीं अन्य पाँच बिन्दुओं को भी मानदण्ड बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छे हास्य-व्यंग्य लेखन की शिक्षक सराहना करेंगे।
- ❖ जो विद्यार्थी लेखन में असमर्थ रहें उन्हें प्रोत्साहित कर लेखन के लिए प्रेरित अवश्य करें।



प्रदत्त कार्य 5 : प्रेमचंद की किसी एक कहानी का नाट्यरूप में मंचन कीजिए। (नाट्य रूपांतरण एवं मंचन)

उद्देश्य

- रचनात्मक क्षमता का विकास करना।
- कल्पनाशीलता को बढ़ावा देना।
- अभिनय कौशल को बढ़ावा देना।
- सहभागिता की प्रवृत्ति विकसित करना।
- स्वाध्याय की प्रवृत्ति विकसित करना।

प्रक्रिया

- सामूहिक कार्य
- शिक्षक प्रेमचंद की कहानियों से विद्यार्थियों को अवगत कराएँगे।
- आठ से दस विद्यार्थियों का समूह बनाया जाएगा।
- गतिविधि की सूचना 3 दिन पूर्व दी जाएगी।
- प्रत्येक समूह को 5 से 7 मिनट का समय मंचन के लिए दिया जायेगा।
- इस बीच शिक्षक विद्यार्थियों के संपर्क में रहेंगे और उनका मार्ग दर्शन करेंगे।
- शिक्षक मूल्यांकन का आधार प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

विषय सम्बद्धता	1
उपयुक्त संवाद योजना	1
पात्रों का उपयुक्त चयन	1
अभिनय दक्षता	1
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- शिक्षक किन्हीं अन्य बिन्दुओं को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं

प्रतिपुष्टि

- कहानी के अच्छे नाट्य रूपांतरण के विभिन्न पक्षों पर विद्यार्थियों से चर्चा की जाएगी।
- सबसे रोचक नाट्य प्रस्तुति का पूरे विद्यार्थियों के समक्ष मंचन किया जाएगा।
- अच्छे मंचन एवं अभिनय की सराहना अध्यापक द्वारा कक्षा में अवश्य की जाए।





मेरे बचपन के दिन

महोदवी वर्मा

प्रदत्त कार्य 1 : लड़कियों के प्रति भेदभाव हमारे देश और समाज की उन्नति में बाधक है - वाद-विवाद।

उद्देश्य

- ❖ समाज के प्रति जागरूक व उत्तरदायी बनाना।
- ❖ विद्यार्थियों की वाचन क्षमता को प्रभावी बनाना।
- ❖ विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में वृद्धि करना।
- ❖ भाषा का यथासमय उचित व प्रवाहमय प्रयोग।
- ❖ तार्किक प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ लैंगिक समानता की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ एक विद्यार्थी पक्ष में व एक विद्यार्थी विपक्ष में बोलेगा।
- ❖ वाद-विवाद के लिए तर्क जुटाने हेतु विद्यार्थियों को 2 दिन पूर्व सूचना दी जाएगी।
- ❖ कक्षा में पक्ष व विपक्ष में बोलने वाले प्रत्येक प्रतिभागी को एक मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ शिक्षक मूल्यांकन का आधार प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
अभिव्यक्ति	1
भाषा व उच्चारण	1
तार्किकता व क्रमबद्धता	1
प्रस्तुतीकरण	1



टिप्पणी

- ❖ शिक्षक अन्य उचित बिन्दुओं को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ समाज में महिलाओं की स्थिति के पक्ष व विपक्ष में शिक्षक एक तथ्यपरक टिप्पणी कर सकते हैं।
- ❖ विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए अच्छे व प्रभावी वक्ता की सराहना की जाए।

प्रदत्त कार्य 2 : प्रार्थना गीतों का संग्रहण एवं प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य

- ❖ सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ सांझी संस्कृति की प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ तार्किक प्रवृत्ति व अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना।
- ❖ आस्तिकता का विकास करना।

प्रक्रिया

- ❖ सामूहिक कार्य।
- ❖ विद्यार्थी अपने आसपास के विद्यालयों के प्रार्थना गीतों का संग्रह करेंगे।
- ❖ 5 विद्यार्थियों का एक समूह बनाया जाएगा।
- ❖ चयनित प्रार्थना गीतों में से कोई एक प्रार्थना गीत समूह के विद्यार्थी (एक या एक से अधिक) कक्षा में प्रस्तुत करेंगे।
- ❖ प्रार्थना गीतों के चयन के लिए विद्यार्थियों को एक सप्ताह का समय दिया जाएगा।
- ❖ कक्षा में प्रस्तुतीकरण के लिए 2 से 3 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ शिक्षक मूल्यांकन का आधार प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

चयन का आधार व श्रेष्ठ प्रार्थना गीत के समर्थन में तर्क	1
प्रार्थना की गेयता	1
चयन की नवीनता	1
उच्चारण की शुद्धता	1
प्रस्तुतीकरण	1



टिप्पणी

- ❖ शिक्षक अन्य उचित बिन्दुओं को भी मूल्यांकन का आधार बनाने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ श्रेष्ठ प्रार्थना गीतों के चयन एवं गायन के लिए सराहना की जाए।
- ❖ कमजोर प्रस्तुतीकरण वालों से अभ्यास करने के लिए कहा जाए।

प्रदत्त कार्य 3 : 'भारतीय भाषाएँ' विषय पर भाषण।

उद्देश्य

- ❖ सांझी संस्कृति की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।
- ❖ तार्किक प्रवृत्ति एवम् अभिव्यक्ति क्षमता को प्रभावी बनाना
- ❖ वाचन कौशल का विकास करना।
- ❖ भारतीय भाषाओं का ज्ञान कराना

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ कक्षा में तैयारी के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी को भाषण के लिए 1 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ तैयारी के दौरान शिक्षक विद्यार्थियों को संकेत बिन्दु बताएँगे।
- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

विषय संबद्धता	1
प्रवाहमयता	1
तार्किक क्षमता	1
भाषायी दक्षता	1
प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक अन्य उचित बिन्दुओं को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ श्रेष्ठ प्रस्तुति के लिए विद्यार्थियों एवम् शिक्षकों के द्वारा सराहना की जाए।
- ❖ शिक्षक सांझी संस्कृति से संबंधित कुछ उदाहरण / घटनाएँ कक्षा में सुनाएँगे।



प्रदत्त कार्य 4 : अपनी मातृ भाषा में लोकगीत / लोक कथा सुनाना।

उद्देश्य

- क्षेत्रीय भाषा / बोली एवम् भाषायी विविधता के प्रति संवेदनशील बनाना।
- सांझी संस्कृति की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।
- सहभागिता की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।
- अभिव्यक्ति क्षमता एवम् रचनात्मक प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।

प्रक्रिया

- समूह कार्य
- प्रत्येक समूह में पाँच विद्यार्थी होंगे और समूह के गठन का आधार भाषायी विविधता होगा।
- प्रत्येक समूह को कम से कम दो प्रस्तुति करनी होंगी।
- समूह को गतिविधि की सूचना एक सप्ताह पूर्व दी जाएगी।
- प्रत्येक समूह को प्रस्तुतीकरण के लिए 4 से 5 मिनट का समय दिया जाएगा।
- शिक्षक मूल्यांकन के आधार प्रारंभ में ही श्यापट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

चयन की नवीनता	1
संबंधित भाषा व बोली की दक्षता	1
लोक जीवन से जुड़ाव	1
प्रस्तुतीकरण की संख्या एवम् विविधता	1
प्रस्तुतीकरण की शैली	1

टिप्पणी

- शिक्षक अन्य उचित बिन्दुओं को भी मूल्यांकन का आधार बनाने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- शिक्षक एवम् अन्य समूह अच्छी प्रस्तुति की सराहना करेंगे। शिक्षक भाषा/बोली को सम्प्रेषित करने में मदद करेंगे।
- संकोची विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करेंगे।



प्रदत्त कार्य 5 : अपने प्रिय कवि या कवयित्री की कविता का सस्वर वाचन

उद्देश्य

- ❖ वाचन कौशल का विकास करना
- ❖ काव्य के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना
- ❖ कविता वाचन की विशिष्ट शैली से परिचित करना

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य।
- ❖ गतिविधि की सूचना एक दिन पूर्व दी जाएगी।
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी एक कविता अधिकतम 2 मिनट में प्रस्तुत करेगा।
- ❖ शिक्षक मूल्यांकन के आधार प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

चयन की गुणवत्ता	1
उचित आरोह-अवरोह	1
उपयुक्त उच्चारण	1
भाव-भंगिमा	1
समग्र प्रभाव / प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- ❖ अन्य उपयुक्त बिन्दुओं को मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ शिक्षक स्वयं अथवा विद्यार्थियों के द्वारा आदर्श काव्यपाठ करवाएँगे। शिक्षक साहित्य अकादमी अथवा एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित दृश्य श्रव्य सामग्री का उपयोग भी कर सकते हैं।







एक कुत्ता और एक मैना

हजारी प्रसाद द्विवेदी

प्रदत्त कार्य 1 : कुत्तों के विषय में सूचना का संकलन एवं अनुभव लेखन

उद्देश्य

- जानवरों के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न करना
- अवलोकन एवं लेखन क्षमता का विकास करना।
- परिवेश के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य कराया जाएगा।
- प्रत्येक विद्यार्थी अपने अनुभव कक्षा में सुनाएगा।
- संकलन के लिए विद्यार्थियों को एक सप्ताह पूर्व सूचना दे दी जाएगी।
- कक्षा में प्रस्तुतीकरण के लिए प्रत्येक विद्यार्थी को एक मिनट का समय दिया जाएगा।
- शिक्षक मूल्यांकन के आधार प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

अनुभव लेखन की सुसम्बद्धता	1
अनुभव की नवीनता एवं रोचकता	1
भाषा की रचनात्मकता एवं शुद्धता	1
मानवीयता एवं संवेदनशीलता का समावेश	1
प्रस्तुतीकरण	1

प्रतिपुष्टि

- प्रभावी प्रस्तुतीकरण के लिए विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- शिक्षक जानवरों की संवेदनशीलता पर एक संक्षिप्त टिप्पणी कर सकते हैं।

प्रदत्त कार्य - 2 : किसी पशु-पक्षी से बातचीत का संवाद लेखन व प्रस्तुतीकरण**उद्देश्य**

- कल्पनाशक्ति का विकास करना।
- लेखन क्षमता का विकास करना।
- परिवेश के प्रति संवेदनशील बनाना।
- संवाद लेखन की दक्षता देना।

प्रक्रिया

- दो-दो विद्यार्थियों के समूह में कक्षा का विभाजन होगा।
- समूह का प्रत्येक सदस्य पांच-पांच संवाद लिखेगा और प्रस्तुत करेगा।
- संवाद लिखने के लिए कक्षा को 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- प्रत्येक समूह को प्रस्तुतीकरण के लिए एक मिनट का समय दिया जाएगा।
- शिक्षक मूल्यांकन के आधार प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार**अंक विभाजन**

कल्पना की नवीनता	1
मानवीयता एवम् संवेदनशीलता का समावेश	1
रोचकता	1
संवाद योजना एवम् भाषायी दक्षता	1
प्रस्तुतीकरण	1

प्रतिपुष्टि

- अच्छे प्रस्तुतीकरण को विद्यार्थियों की मदद से चिह्नित किया जाएगा।
- शिक्षक संवाद शैली के अन्य उदाहरण विद्यार्थियों को पढ़कर सुनाएँगे।

प्रदत्त कार्य 3 : पशु-पक्षियों पर कविता का संकलन एवं वाचन**उद्देश्य**

- खोज की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।
- अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना।
- पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।
- वाचन कौशल का विकास करना।



प्रक्रिया

- समूह कार्य कराया जाएगा।
- प्रत्येक समूह में पाँच सदस्य होंगे।
- गतिविधि की सूचना विद्यार्थियों को 3 दिन पूर्व दी जाएगी।
- प्रस्तुति के लिए प्रत्येक समूह को 4 से 5 मिनट का समय दिया जाएगा।
- शिक्षक स्रोत सामग्री के संदर्भ में सूचना देंगे।
- शिक्षक मूल्यांकन का आधार प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार**अंक विभाजन**

चयन की गुणवत्ता	1
मानवीयता एवम् संवेदनशीलता का समावेश	1
उचित आरोह-अवरोह	1
भाव-भंगिमा	1
उपयुक्त उच्चारण	1

टिप्पणी

- अध्यापक अन्य मूल्यांकन आधार भी बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- अच्छे प्रस्तुतीकरण की सराहना की जाए।
- स्रोत सामग्री के उपयोग की दक्षता पर चर्चा की जाए।

प्रदत्त कार्य - 4 : पशु-पक्षियों पर नाटक लेखन एवं मंचन**उद्देश्य**

- रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास करना।
- अभिनय क्षमता का विकास करना।
- सहभागिता की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।
- मानवीयता एवम् संवेदनशीलता की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।



प्रक्रिया

- ❖ शिक्षक विषय का स्पष्टीकरण करेंगे।
- ❖ समूह कार्य कराया जाएगा।
- ❖ प्रत्येक समूह में 8 से 10 विद्यार्थी होंगे।
- ❖ गतिविधि की सूचना 1 दिन पूर्व दी जाएगी।
- ❖ एक समूह को मंचन के लिए 6 से 7 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ शिक्षक मूल्यांकन का आधार प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

मानवीयता एवम् संवेदनशीलता का समावेश	1
विषय सम्बद्धता	1
उपयुक्त संवाद योजना	1
पात्रों का उपयुक्त चयन	1
अभिनय कौशल	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वतंत्र रूप से भी मूल्यांकन आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छी प्रस्तुति की सराहना कारण सहित अन्य समूहों एवम् शिक्षक द्वारा की जाए।
- ❖ मंचन के पश्चात् शिक्षक विद्यार्थियों से सुझाव व टिप्पणी की अपेक्षा करें।

दत्त कार्य - 5 : संस्मरण लेखन एवं वाचन

उद्देश्य

- ❖ मानवीय संबंधों के प्रति संवेदनशील बनाना।
- ❖ रचनात्मक अभिव्यक्ति का विकास करना।
- ❖ संस्मरणात्मक लेखन शैली का परिचय देना।
- ❖ लेखन कौशल का विकास।

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य कराया जाएगा।
- ❖ अनुभव लिखने के लिए प्रत्येक विद्यार्थी को 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ अनुभव/घटना को सुनाने के लिए 1 से 2 मिनट का समय दिया जाएगा।



- अध्यापक मूल्यांकन आधार श्याम पट्ट पर पहले ही लिख देंगे।

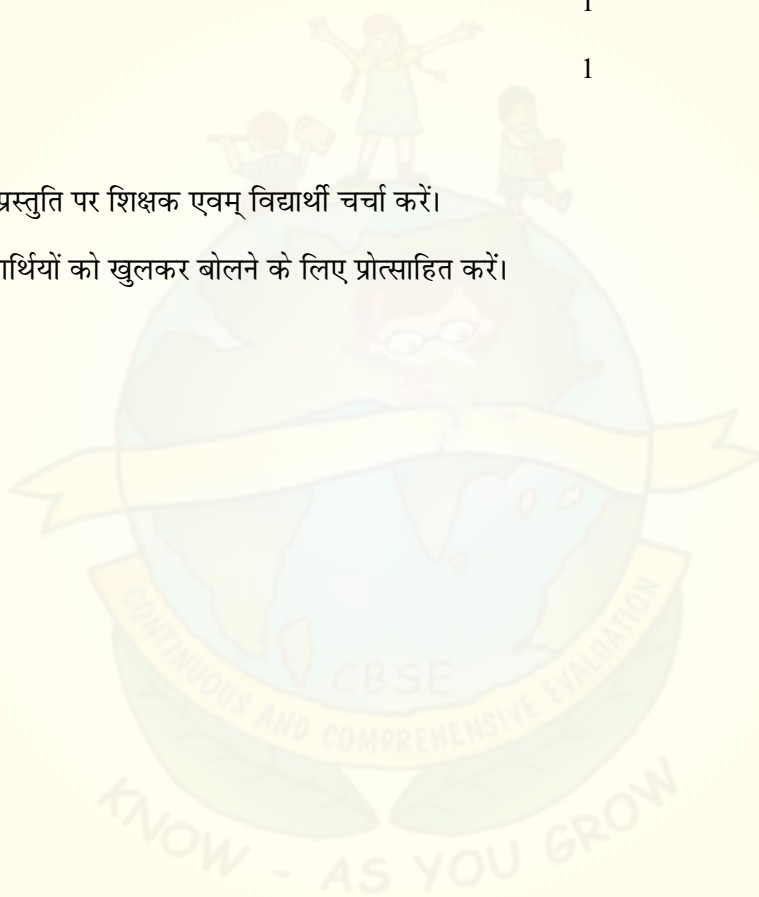
मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

मानवीयता एवम् संवेदनशीलता का समावेश	1
रोचकता	1
लेखन शैली	1
अभिव्यक्ति क्षमता	1
रचनात्मक भाषा	1

प्रतिपुष्टि

- संवेदनशील प्रस्तुति पर शिक्षक एवम् विद्यार्थी चर्चा करें।
- संकोची विद्यार्थियों को खुलकर बोलने के लिए प्रोत्साहित करें।





साखियाँ एवं सबद

कबीर

प्रदत्त कार्य 1 : दोहों का सुमधुर वाचन (पाठ के अतिरिक्त)

उद्देश्य

- ❖ कविता के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना
- ❖ स्वर के सही उतार चढ़ाव का ज्ञान कराना
- ❖ विद्यार्थी में संगीतात्मक अभिरुचि का विकास करना
- ❖ भावात्मक अभिरुचि उत्पन्न करना

प्रक्रिया

- ❖ दो-दो बच्चों के समूह में सस्वर वाचन अथवा जो बच्चे गा सकते हैं उनसे गायन/ वाचन कराया जाएगा।
- ❖ अध्यापक सभी विद्यार्थियों को गायन/सस्वर वाचन के लिए प्रेरित करें।
- ❖ इस क्रियाविधि में 30 मिनट लगेंगे क्योंकि प्रत्येक विद्यार्थी का भाग लेना वांछनीय है।
- ❖ मूल्यांकन बिंदु श्यामपट पर लिख दिए जाएँगे।

मूल्यांकन बिन्दु

अंक विभाजन

गेयता एवं संगीतात्मकता

2

आत्मविश्वास

1

उच्चारण की शुद्धता

1

भावपूर्ण वाचन

1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य बिन्दु को आधार बनाकर भी मूल्यांकन कर सकते हैं। जिस समय विद्यार्थी वाचन/गायन करते हैं तो अध्यापक द्वारा किसी प्रकार का हस्तक्षेप वांछनीय नहीं होगा।

प्रतिपुष्टि

- ❖ मधुर एवं सही वाचन/गायन करने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- ❖ अशुद्ध उच्चारण अथवा अनुतान की ओर संकेत किया जाए।
- ❖ जिनका वाचन सही नहीं था उन्हें सही मार्ग दर्शन देते हुए स्वयं वाचन करके अध्यापक प्रोत्साहित एवं प्रेरित करें।



प्रदत्त कार्य 2 : आप अपनी कल्पना से ईश्वर को किस रूप में देखते हैं? पाँच वाक्यों में लिखिए।

उद्देश्य

- विद्यार्थियों के आध्यात्मिक चिंतन को विकसित करना।
- एकाग्रता का विकास करना।
- सूक्ष्म चिंतन की ओर प्रेरित करना।
- अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करना।

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत रूप से विद्यार्थी दो मिनट ध्यान लगा कर सोचेगा व लिखेगा इस प्रक्रिया में कुल 5 मिनट का समय लगेगा। शिक्षक इसी समय की अवधि में विद्यार्थी द्वारा बनाए वाक्यों को सुनेंगे। एक कालांश में इस गतिविधि को सम्पन्न किया जा सकता है।

मूल्यांकन बिन्दु

अंक विभाजन

चिंतन की स्पष्टता, सुसंबद्धता, तार्किकता

2

कल्पना शीलता

1

भाषा दक्षता

1

व्यावहारिकता

1

टिप्पणी

- अध्यापक विद्यार्थियों के स्तर को देख समझ कर किसी अन्य बिन्दु को आधार बना कर मूल्यांकन कर सकता है। लिखते समय विद्यार्थी को टोकना वांछनीय नहीं होगा।

प्रतिपुष्टि

- सही वाक्य संरचना करने वाले विद्यार्थियों की सराहना करना।
- कलात्मक कल्पना की अभिव्यक्ति करने वाले विद्यार्थियों के वाक्यों को पुनः कक्षा में पढ़कर सुनाया जा सकता है।
- वाक्य गठन में यदि विद्यार्थियों की कुछ अशुद्धियाँ हैं तो उन्हें सही करके बता सकता है जिससे अशुद्धियों की पुनरावृत्ति न हो।

प्रदत्त कार्य 3 : वाद-विवाद

‘बाहरी आडम्बर धर्म को आकर्षक एवं ग्राह्य बनाते हैं।



उद्देश्य

- ❖ बाहरी आडम्बर के प्रति जागरुकता उत्पन्न करना।
- ❖ संकीर्णता एवं कट्टरता के दुराग्रह को समाप्त करना।
- ❖ अंध विश्वास दूर करना।
- ❖ सत्य, ईमानदारी, अहिंसा, प्रेम इत्यादि जीवन मूल्यों की स्थापना करना।

प्रक्रिया

- ❖ पूरी कक्षा को अध्यापक चार समूहों में बाँटा जा सकता है। दो समूह विषय के पक्ष में और दो समूह विषय के विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। सोचने के लिए विद्यार्थियों को पाँच मिनट का समय दिया जाएगा। प्रत्येक विद्यार्थी को अपने समूह में आधा मिनट बोलने का अवसर दिया जाएगा। अध्यापक विषय के पक्ष विपक्ष में सबसे अच्छा बोलने वाले विद्यार्थी को विषय को समग्रता के साथ प्रस्तुत करने के लिए कहेंगे।

मूल्यांकन के आधार	अंक विभाजन
विषय की तर्कपूर्ण प्रस्तुति	1
आत्मविश्वास	1
प्रवाहपूर्ण भाषा	1
मौलिकता	1
उपयुक्त उदाहरणों का प्रयोग	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक अन्य महत्वपूर्ण बिन्दुओं के आधार पर भी मूल्यांकन करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अध्यापक इस बात के प्रति सचेत रहें कि सभी विद्यार्थी वाद-विवाद में भाग लें और सभी खुलकर अपनी बात कह सकें। वाद-विवाद को साम्प्रदायिक रंग न मिले इसके प्रति अत्यंत सावधानी की आवश्यकता है।

प्रदत्त कार्य 4 : कविता की निम्नलिखित पंक्तियों को अपनी कल्पना से पूर्ण कीजिए -

धर्म सिखाता है हम को,

आपस में मिलकर रहना।

.....

.....।



उद्देश्य

- मौलिक अभिव्यक्ति का विकास एवं भाव प्रवणता।
- सृजनात्मकता शक्ति का विकास करना।
- मिल-जुल कर काम करने की प्रवृत्ति का विकास करना।

प्रक्रिया

- दो-दो विद्यार्थियों का समूह बना कर दी गई काव्य पंक्तियों को पूर्ण करवाना।
- अध्यापक बच्चों के पास जाकर उनकी सक्रिय सहभागिता एवं मिल-जुल कर काम करने की प्रवृत्ति का अवलोकन करेगा।
- विद्यार्थियों के लेखन एवं सृजनात्मकता के मूल्यांकन आधार व अंक पूर्व में ही श्याम पट्ट पर लिखकर सूचित करें।
- अच्छे विचारों व समान विचारों को अन्य विद्यार्थियों को लिखने के लिए प्रेरित करें।
- अध्यापक वाक्य-संरचना में आई कठिनाईयों को दूर करने में विद्यार्थियों को सहयोग दे सकते हैं।
- समय-अवधि - विद्यार्थी को सोचने व लिखने के लिए 10 मिनट दे सकते हैं। विद्यार्थियों द्वारा अध्यापक को सुनाने के लिए 20 मिनट निर्धारित किए जा सकते हैं।

मूल्यांकन बिन्दु

अंक विभाजन

मौलिकता	1
रचनाशीलता	1
समग्र प्रभाव	1
लय और तुक का ज्ञान	1
उपयुक्त शब्द चयन	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य बिन्दु को भी मूल्यांकन का आधार बना कर मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- कविता-पंक्तियों को सुरुचिपूर्ण एवं कलात्मक रूप से प्रस्तुत करने वाले विद्यार्थियों के प्रयास की सराहना करना। काव्य पंक्तियों को पूर्ण करने में विभिन्न शब्दों को देकर, कार्य पूर्ण करने में अध्यापक सहयोग कर सकते हैं।



प्रदत्त कार्य 5 : दिए गए शब्दों के लिए संबंधित शब्दों का उपयुक्त चयन।

मानसरोवर	हस्ती	ज्ञान	हिन्दू	मुसलमान	रहीम
काबा, चून	सुबरनकलस	देवल	क्रिया कर्म	खोजी	भ्रम
मोह	भान	प्रक्रिया			

- ❖ विद्यार्थी अपनी-अपनी पाठ्यपुस्तकों से उपर्युक्त शब्दों से संबंधित शब्दों को छाँट कर एक पृष्ठ पर लिखें। (अर्थ, विशेषण, पौराणिक संदर्भ इत्यादि से जुड़े हुए)

उद्देश्य

- ❖ शब्द-ज्ञान को समृद्ध करना।
- ❖ अन्तर्कथाओं से परिचित कराना।
- ❖ भारतीय संस्कृति में प्रयुक्त पशु-पक्षियों का परिचय देना।
- ❖ तर्कसम्मत ज्ञान का विकास।
- ❖ शब्दों के उपयुक्त प्रयोग व संदर्भों की जानकारी प्रदान करना।
- ❖ पाठ को समझने में सहायता प्रदान करना।

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक श्यामपट्ट पर उपर्युक्त शब्दों को लिखेंगे।
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी कार्य-प्रपत्र पर उन शब्दों के लिए उपयुक्त संबंधित शब्द अपनी-अपनी पाठ्य पुस्तक से छाँटेगा और लिखेगा।
- ❖ अब अध्यापक सभी विद्यार्थियों के कार्य-प्रपत्र कक्षा में एक दूसरे को वितरित कर देगा।
- ❖ तत्पश्चात् अध्यापक सही मेल वाले शब्दों का उच्चारण करेंगे। साथ-साथ विद्यार्थी अपने सामने रखे कार्य-प्रपत्रों में सही शब्दों के आधार पर मूल्यांकन कर शून्य या एक अंक लिखता जाएगा।
- ❖ अध्यापक अंत में सभी के अंक कक्षा में सुनाएँगे।
- ❖ मूल्यांकन बिंदु श्यामपट्ट पर लिखेंगे।

मूल्यांकन बिंदु

- ❖ प्रत्येक उपयुक्त मिलान के लिए एक अंक दिया जाए और अंत में भारांक निकाला जा सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ सभी सही उत्तर वाले छात्रों की विशेष रूप से सराहना की जाए।
- ❖ अधिक गलतियाँ करने वाले छात्रों को सही शब्द समझने एवं लिखने के लिए प्रेरित करें।





बाह्य

रचनात्मक मूल्यांकन -

उद्देश्य :

- ❖ वर्ण से शब्द निर्माण के कौशल को विकसित करना।
- ❖ विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को उभारना।
- ❖ मस्तिष्क को सही दिशा में संचालित करना।
- ❖ एकाग्रता को विकसित करने का अभ्यास कराना।
- ❖ विद्यार्थी को कक्षा में क्रियाशीलता में व्यस्त रखना।

प्रक्रिया

- पाठ समाप्ति पर शिक्षक श्यामपट्ट पर एक वृक्ष शाखाओं के साथ बनाएँगे।
- प्रत्येक विद्यार्थी को बताया जाएगा कि अब एक-एक विद्यार्थी श्यामपट्ट पर बने वृक्ष पर पत्ते बना कर 'ख' वर्ण से शुरू होने वाले शब्द को लिखें।



Unit 10

वाख - मूल्यांकन रचनात्मक

मूल्यांकन आधार	अंक विभाजन
शुद्ध शब्द लेखन	2
शुद्ध वर्तनी प्रयोग	1
अभिव्यक्ति की क्षमता	1
उपयुक्त शब्द चयन	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक कक्षा- विद्यार्थियों के स्तर को ध्यान में रख अन्य मूल्यांकन आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ सही और शुद्ध शब्द लिखने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- ❖ 'ख' वर्ण से अन्य शब्द अध्यापक श्यामपट्ट पर लिखकर या मौखिक रूप से बताकर विद्यार्थियों के शब्द भण्डार में वृद्धि कर सकते हैं।

प्रदत्त कार्य 2 : 'कश्मीर परिचय के झरोखे से' (कार्य प्रपत्र)

निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार व्यक्त कीजिए -

- ❖ भौगोलिक स्थिति
- ❖ लोग
- ❖ भाषा
- ❖ खान-पान
- ❖ रहन-सहन
- ❖ पशु-पक्षी
- ❖ प्राकृतिक सौन्दर्य
- ❖ व्यवसाय
- ❖ धार्मिक स्थल
- ❖ कवि/सहित्यकार

उद्देश्य

- ❖ भारत की अखंडता की ओर संकेत
- ❖ राज्य विशेष की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक जानकारी



- अनुदित कार्य के प्रति आकर्षण
- सामान्य ज्ञान का विकास करना
- प्रकृति प्रेम को बढ़ावा देना
- लेखन क्षमता का विकास

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम शिक्षक छात्रों को विषय से परिचित कराएँगे।
- कक्षा को पाँच समूहों में विभक्त किया जाएगा।
- प्रत्येक समूह को उपर्युक्त बिन्दुओं से दो-दो विषय बिन्दु चर्चा करके लिखने के लिए दिए जाएँगे।
- समूह कार्य के लिए 5-10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- प्रत्येक समूह से एक छात्र प्रतिनिधि विषय प्रस्तुत करेगा।
- मूल्यांकन के आधार बिन्दु प्रक्रिया प्रारंभ होने से पूर्व ही शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- पूर्ण प्रक्रिया में 25 से 30 मिनट का समय लग सकता है।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय की सामान्य जानकारी	2
संगृहीत सूचना का स्तर	2
प्रस्तुतीकरण (उच्चारण, स्पष्टता)	1

टिप्पणी

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से उचित बिन्दु को आधार बनाकर भी अंक विभाजन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- छात्रों को विषय की पूर्ण जानकारी न होने की अवस्था में शिक्षक द्वारा जानकारी दी जाए।
- अच्छी प्रस्तुति एवं ज्ञान के लिए छात्रों को प्रोत्साहन दिया जाए।
- विभिन्न राज्यों के प्रति जानकारी एकत्रित करने की प्रेरणा दी जाए।

प्रदत्त कार्य 3 : स्वयं की पहचान से संबंधित (कार्य प्रपत्र)

कार्य प्रपत्र

- जीवन में आप क्या बनना चाहते हैं?
- आपका रुझान क्या है?



Unit 10

वाख रचनात्मक मूल्यांकन -

- आपकी ताकत और कमजोरी?
- आपका आचार व्यवहार?
- आप का आदर्श
- क्या आप आत्मविश्वासी हैं?

उद्देश्य :

- स्वचेतना का विकास करना
- आत्मविश्वास में वृद्धि करना
- जीवन के विभिन्न आयामों से परिचित कराना
- स्वयं की कमजोरियों/क्षमताओं को जान कर उन्हें दूर/समृद्ध करने का सतत प्रयास करना।
- एक अनुपम अनूठे व्यक्तित्व का निर्माण करना

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत रूप में कार्य कराया जाएगा।
- अध्यापक पाठ समाप्ति के पश्चात प्रत्येक विद्यार्थी को एक-एक कार्य-प्रपत्र आर्बिट्र करेंगे।
- अध्यापक कार्य प्रपत्र में दिए गए कार्य/विचार बिन्दुओं पर लिखने के लिए प्रेरित करेंगे।
- अध्यापक कार्य सम्पादन में आने वाली कठिनाई को व्यक्तिगत रूप से वहीं कक्षा में दूर करने का प्रयास करेंगे।

मूल्यांकन आधार

- सही और पूर्ण जानकारी देने पर
- प्रपत्र की 4-5 जानकारीयाँ सही देने पर
- प्रपत्र की 3-4 जानकारीयाँ सही देने पर
- प्रपत्र की 2-3 जानकारीयाँ सही देने पर
- प्रपत्र की 1 जानकारीयाँ सही देने पर

अंक विभाजन

- 5
- 4
- 3
- 2
- 1

टिप्पणी

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से अन्य उचित बिन्दुओं को मूल्यांकन का आधार बना कर भी अंक प्रदान कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सही और पूर्ण जानकारी देने पर प्रसन्नता व्यक्त की जाए तथा सराहना की जाए।
- प्रत्येक विद्यार्थी को प्रपत्र को पूरा करना होगा, यदि कहीं विद्यार्थी दुविधा में है तो उसे अध्यापक सहायता प्रदान कर सकते हैं।



प्रदत्त कार्य 4 : पाठ में आए शब्दों के पर्यायवाची / समानार्थी बनवाना

उद्देश्य :

- शब्द भंडार समृद्ध करना।
- पाठ को समझने में सहायता प्रदान करना।
- शब्द चयन क्षमता का विकास करना।
- पठन-पाठन को रोचक बनाना।
- कल्पनाशक्ति का विकास करना।

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य
- अध्यापक कक्षा में सभी विद्यार्थियों के सक्रिय सहयोग के लिए इस प्रक्रिया को इस प्रकार करेंगे कि पढ़ना उनके लिए खुशी बन जाए। अतः अध्यापक श्यामपट्ट पर कुछ फूल बनाएँगे जिसकी पंखुड़ियों पर विद्यार्थी शब्द का पर्याय लिखेंगे। शब्द अध्यापक द्वारा दिए गए शब्दकोष से ही चुने जाएँगे। प्रत्येक विद्यार्थी भाग लेगा।

पाँच शब्दों के पर्याय लिखे जाएँगे

शब्द कोष- सागर, पानी, जल, नीर, नैया, नौका, तरणी, घमंड, तरी, रत्नाकर, समुद्र, वारिधि, दर, दरवाजा, कपाट, भूमि, जमीन, गर्व धरा, पुल, वसुन्धरा, पुलिन, विद्या, जानकारी, अभिमान प्रभु, भगवान, दाता, दिवस, अहनि, दिवा, सूचना, मास, महीना.

चित्र



मूल्यांकन आधार

- प्रत्येक सही पर्याय पर एक अंक दिया जाएगा।
- पत्तियों का आकार जैसा भी बनाया जाए, वह सही माना जाए।



Unit 10

वाख - रचनात्मक मूल्यांकन

प्रतिपुष्टि

- जो विद्यार्थी पर्याय न लिख पाएँ उन्हें पर्याय जानने के लिए प्रोत्साहित करें और उनकी जानकारी के लिए अन्य विद्यार्थियों से सहायता करवाएँ।
- प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की सराहना अवश्य की जाए।
- सभी विद्यार्थियों की सहभागिता अपेक्षित है।

प्रदत्त कार्य 5 : 'वाख' पाठ के प्रथम वाख का चित्रांकन कराया जाएगा।

उद्देश्य :

- विद्यार्थियों को दृश्य बिंब को समझाना आसान होगा।
- पाठ मनोरंजक बन जाएगा।
- सागर, नाव, रस्सी इत्यादि प्रतीकों को समझाना संभव हो सकेगा।
- अभिव्यक्ति क्षमता का विकास होगा।

प्रक्रिया

- कक्षा का एक समूह, जिसमें 6 विद्यार्थी होंगे पंक्तियों के आधार पर क्रमवार चित्र बनाएँगे।
- इस चित्रांकन के लिए किसी विशेष चित्रकारिता की आवश्यकता नहीं। सामान्य कलात्मकता से श्यामपट्ट पर चित्र बनाया जा सकता है।

वाख

रस्सी कच्चे धागे की, खींच रही मैं नाव।

जाने कब सुन मेरी पुकार, करें देव भवसागर पार।

पानी टपके कच्चे सकोरे, व्यर्थ प्रयास हो रहे मेरे।

जी में उठती रह-रह हूक, घर जाने की चाह है घेरे।

- पाँच बच्चे क्रमवार वर्गों में वाख की पंक्तियाँ लिखेंगे।
- शेष विद्यार्थी उनके काम पर अपने विचार व्यक्त करेंगे व मूल्यांकन करेंगे।



Unit 10

रचनात्मक मूल्यांकन - वाख



मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

समग्र प्रभाव

2

काव्य की भावाभिव्यक्ति

2

सरलता व सहजता

1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक अपने स्वतंत्र चिंतन से अन्य आधार बिन्दु बनाकर मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अगर विद्यार्थी अपनी बात चित्र द्वारा स्पष्ट नहीं कर पा रहे हैं तो अध्यापक स्वयं अथवा अन्य विद्यार्थियों की सहायता से चित्र बनवा कर स्पष्ट कर सकते हैं।





सवैये

रसस्वात

प्रदत्त कार्य 1 : कृष्ण जीवन से संबंधित अर्न्तकथाएँ

उद्देश्य :

- ❖ पौराणिक ज्ञान की वृद्धि करना
- ❖ नैतिक मूल्यों का विकास करना
- ❖ आध्यात्मिकता का उन्मेष करना
- ❖ हृदय का उदात्तीकरण करना

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक पूरी कक्षा को चार समूहों में विभाजित कर देंगे।
- ❖ प्रत्येक समूह कृष्ण से संबंधित एक अर्न्तकथा सुनाएगा।
- ❖ कहानी सुनाने से पूर्व सभी विद्यार्थी समूह में विचार विमर्श करेंगे।
- ❖ सोचने के लिए 5-10 मिनट तथा प्रस्तुति के लिए प्रत्येक समूह को 5-5 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ मूल्यांकन बिंदु श्यामपट पर लिख दिए जाएँगे।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

उच्चारण की शुद्धता

2

विषय पर पकड़

2

प्रभावशाली स्वर

1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक मूल्यांकन आधार में स्वयं भी कोई बिंदु अपनी ओर से शामिल करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छी तरह से कथा सुनाने वाले समूह की सराहना की जाए।



Unit 11

सवैये रचनात्मक मूल्यांकन -

- जो विद्यार्थी अच्छी तरह नहीं सुना पाएँ उन्हें भविष्य में बेहतर प्रस्तुति के लिए प्रेरित करें।

प्रदत्त कार्य 2 : रसखान के सवैयों का सुमधुर वाचन / गायन

उद्देश्य :

- कविता वाचन को रोचक बनाना
- भावप्रवणता और संवेदनशीलता उत्पन्न करना
- संगीत एवं कला के प्रति प्रेम जगाना
- वाचन एवं श्रवण कौशल का विकास करना

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत रूप से कार्य कराया जाएगा
- प्रत्येक विद्यार्थी सस्वर वाचन करेगा अथवा गाकर सुनाएगा।
- विद्यार्थी को प्रेरित करने के लिए शिक्षक स्वयं गाकर अथवा सस्वर वाचन आदर्श रूप में प्रस्तुत करेगा।
- विद्यार्थियों को 5 मिनट का समय तैयारी के लिए दिया जाएगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

उच्चारण की शुद्धता	1
वाचन/गायन	1
एकाग्रता एवं लगनशीलता	1
स्वर का उतार चढ़ाव	1
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- अध्यापक अपने चिंतन एवं अनुभव के आधार पर अन्य मानक बिन्दुओं को भी शामिल कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- अध्यापक प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की सराहना करें एवं कमजोर विद्यार्थियों को इस प्रकार प्रेरणा दें कि वे अपनी कमियाँ सुधार कर आगे बढ़ें।



प्रदत्त कार्य 3 : दुधारु पशुओं पर कार्य प्रपत्र भरवाना

उद्देश्य :

- ❖ दुधारु पशुओं की जानकारी देना
- ❖ दूध से संबंधित जानकारी देना
- ❖ दूध के पोषक तत्वों की जानकारी देना
- ❖ दूध से चलने वाले व्यवसायों की जानकारी देना
- ❖ पशु-प्रेम उत्पन्न करना व उनकी उपादेयता समझाना

प्रक्रिया

- ❖ शिक्षक सर्वप्रथम इस गतिविधि से विद्यार्थियों को परिचित कराएँगे।
- ❖ इस कार्य-प्रपत्र को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।
- ❖ विद्यार्थी इस कार्य-प्रपत्र को एक पृष्ठ पर लिखेंगे।
- ❖ अध्यापक ध्यान रखें कि सभी विद्यार्थी सफाई से सभी प्रविष्टियाँ भर लें।
- ❖ विद्यार्थियों को रिक्त स्थानों की पूर्ति हेतु 15-20 मिनट का समय लगेगा।

कार्य प्रपत्र

- ❖ दुधारु पशुओं के नाम
- ❖ अपनी पसंद के दुधारु पशु का नाम
- ❖ उसका प्रिय खाद्य पदार्थ
- ❖ दुधारु पशु क्यों पाले जाते हैं
- ❖ दूध में पाए जाने वाले पोषक तत्व
- ❖ दूध से चलने वाले व्यवसाय
- ❖ दूध से बनने वाले पदार्थ
- ❖ गाय के प्रति समाज की भावना
- ❖ आप 'गो पालन' के विषय में क्या सोचते हैं?.....
- ❖ क्या आधुनिक तकनीक से दूध की गुणवत्ता सुधारी जा सकती है?.....



Unit 11

मूल्यांकन के आधार

- ❖ दो बिन्दुओं के लिए एक अंक दिया जाए।

प्रतिपुष्टि

- ❖ कुछ विद्यार्थियों का विषय से संबंधित ज्ञान अल्प हो सकता है। उन्हें सभी तथ्यों से अवगत कराया जाए।
- ❖ प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थियों की सराहना अवश्य की जाए।

प्रदत्त कार्य 4 : पाठ में दिए गए शब्द संकलन पर आधारित आशुभाषण।

उद्देश्य :

- ❖ कल्पनाशीलता व सृजनात्मकता का विकास करना
- ❖ विषय से संबंधित ज्ञान का विकास करना
- ❖ आत्मविश्वास बढ़ाना
- ❖ भाषण कौशल का विकास करना

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक छात्रों की सहायता से निम्नलिखित शब्दों को पेपर की पर्चियों पर लिखकर उसे मोड़कर (जिससे लिखा दिखाई न दे पाए) किसी एक डिब्बे या पात्र में मिलाकर रख दे।
- ❖ इसके पश्चात् छात्रों को निर्देश दिया जाए कि एक-एक छात्र आकर कोई भी एक पर्ची उठाकर उसमें लिखे गए शब्द के विषय में अधिकतम 1 मिनट के समय में अपने विचार प्रकट करे।
- ❖ मूल्यांकन के आधार श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँ।
- ❖ इस प्रक्रिया में 30 से 40 मिनट का समय लग सकता है।

शब्द संकलन - कृष्ण से संबंधित शब्द मंजूषा

गोकुल गांव	ग्वाले	गोपियाँ	पशु	गाय	नंद
पहाड़	गिरि	हरि	छत्र	पुरंदर	खग
बसेरा	कालिंदी	कूल	कदंब	डार	लकुटी
कामरिया	तिहुँ पुर	आठ सिद्धि	नवनिधियाँ	सुख	चराना
आँखिन	ब्रज	बन, बाग	तड़ाग	कलधौत	धाम
करील कुंज	मोर पखा	गुंज की माला	गोधन	पीतांबर	ग्वालिन
स्वांग, मुरली	मुरलीधर	अधर	कानन	अंगुरी	धुन
मोहनी	अटारी	मुस्कान	यमुना	बांसुरी	



- छात्रों की संख्या के अनुसार शब्द घटाए या बढ़ाए जा सकते हैं।

मूल्यांकन आधार	अंक विभाजन
विषय की जानकारी	2
आत्म विश्वास	1
प्रवाहपूर्ण प्रस्तुतीकरण	2

टिप्पणी

- अध्यापक मूल्यांकन के आधार अन्य उचित बिन्दुओं को बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- अच्छे प्रस्तुतीकरण करने के लिए प्रोत्साहन।
- जो छात्र ठीक प्रकार से अभिव्यक्ति नहीं कर पाएँ उनको कमियों के प्रति सचेत करके मार्गदर्शन करना।
- जिन विषयों की जानकारी नहीं है अध्यापक उनकी जानकारी दें।

प्रदत्त कार्य 5 : मातृभूमि से प्रेम / देश प्रेम की कविताओं का सस्वर वाचन।

उद्देश्य :

- काव्य विधा के प्रति रुझान उत्पन्न करना
- कविता के माध्यम से देश भक्ति/ मातृभूमि के प्रति प्रेम भावना का संचार
- श्रवण व वाचन कौशल का विकास करना
- स्वाध्याय की प्रेरणा
- भावुकता एवं संवेदनशीलता का विकास

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम अध्यापक मातृभूमि के प्रति प्रेम भावना की कविता का आदर्श पाठ कक्षा में प्रस्तुत करें।
उदाहरणार्थ - फूल की अभिलाषा - माखन लाल चतुर्वेदी की कविता प्रस्तुत की जा सकती है।
- छात्रों को निर्देश दिया जाए कि इसी प्रकार की अन्य कविताओं का चयन कर कक्षा में सुनाएँ।
- कविता चयन हेतु दो दिन का समय छात्रों को दिया जाए।



Unit 11

सवैये - रचनात्मक मूल्यांकन

- ❖ यह कार्य 'सवैये' रसखान समाप्त होने के पश्चात् दिया जाए।
- ❖ विद्यार्थियों को कविता पाठ के लिए 1-2 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ कविता का शीर्षक तथा कवि का नाम शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दें।
- ❖ मूल्यांकन का कार्य शिक्षक एवं छात्र मिलकर करें।
- ❖ मूल्यांकन के आधार श्यामपट्ट पर लिखे जाएँ।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

विषय एवं भाव के अनुरूप कविता का चयन	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
कविता की लयात्मक प्रस्तुति	1
प्रवाहशीलता	1
आत्मविश्वास	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक आवश्यकतानुसार किसी अन्य उपयुक्त बिन्दु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ कविता के चयन एवं प्रस्तुति के लिए सभी विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- ❖ कमी होने पर विद्यार्थी को उससे परिचित कराते हुए उसे दूर करने के लिए प्रेरित किया जाए।
- ❖ उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को सामान्य रूप से शुद्ध करने का प्रयास किया जाए।
- ❖ कुछ चुनी हुई कविताओं को लिखकर एक लघु पत्रिका का निर्माण भी करवाया जा सकता है।



कैदी और कोकिला

माखनलाल चतुर्वेदी

प्रदत्त कार्य 1 : कविता में आए शब्दों के पर्यायवाची लिखना।

उद्देश्य :

- समानार्थक शब्दों का ज्ञान मिलना
- शब्द भंडार में अभिवृद्धि करना
- नए शब्द जानने की इच्छा उत्पन्न करना
- सृजनात्मकता का विकास करना
- लेखन कौशल का विकास करना

प्रक्रिया

- अध्यापक कुछ फूल पर्याय के लिए दिए गए शब्द से अभिहित कराने के लिए श्यामपट्ट पर बनाएँगे।
- विद्यार्थी उस फूल की पाँखुरी बनाकर उस पर उस शब्द का पर्याय लिख देगा। कम से कम दो पर्याय अवश्य लिखे जाएँ।
- अध्यापक मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर पहले ही लिख देंगे।
- समय - एक कालांश
- अध्यापक कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या के आधार पर कविता से शब्द चुन सकते हैं।



कैदी और कोकिला
- रचनात्मक मूल्यांकन -



Unit 12

मूल्यांकन आधार

दो शब्दों का चयन

शुद्ध वर्तनी

शीघ्रतापूर्व काम करना

अंक विभाजन

2

1

2

प्रतिपुष्टि

- अध्यापक शब्दों के सुंदर चयन व शीघ्रता पर विद्यार्थियों की सराहना करें तथा नया पर्याय न ढूँढने वाले विद्यार्थी की सहायता करें।

प्रदत्त कार्य 2 : जेल से संबंधित शब्दों का संकलन

उद्देश्य :

- स्वाधीनता संग्राम में जेलों की भूमिका के विषय में बतलाना।
- जेल जीवन के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।
- कैदियों के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न करना।
- समस्याओं के प्रति विश्लेषण क्षमता का विकास करना।
- रचनात्मकता का विकास करना।

प्रक्रिया

- पूरी कक्षा को दो पक्षों में विभाजित किया जाएगा।
- एक पक्ष का विद्यार्थी जेल संबंधी शब्द बोलेगा।
- दूसरे पक्ष का विद्यार्थी उसका वाक्य में प्रयोग करेगा।
- अध्यापक उस शब्द को श्यामपट्ट पर लिखेगा।
- इसी प्रकार एक पक्ष जेल संबंधी नया शब्द बोलेगा और दूसरा वाक्य प्रयोग क्रमवार करेगा।
- 20 मिनट तक का समय दिया जाए।
- लगभग 20-30 शब्दों का उल्लेख हो।
- अध्यापक मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर लिख देगा।

मूल्यांकन आधार

शब्द चयन

वाक्य प्रयोग

उच्चारण

अंक विभाजन

2

2

1



टिप्पणी

- अध्यापक अपनी रुचि के अनुसार मूल्यांकन के अन्य आधार भी स्थापित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- अध्यापक अच्छे शब्द चयन व वाक्य प्रयोग की सराहना अवश्य करें तथा वाक्य प्रयोग में अटकने वाले विद्यार्थियों को सरल वाक्य प्रयोग करके प्रोत्साहित करें। अध्यापक की सहायता हेतु निम्नलिखित शब्द दिए जा रहे हैं:

कैदी, कोठरी, सीखचें, तोप, जल्लाद, कैदखाना, रस्सी, सीटी, जंजीर, हथकड़ी, कारावास, बेड़ी, जेल की वर्दी, प्रवेश द्वार, जेल, जेलर, प्राचीर, काला पानी, काल कोठरी, पहरेदार, घड़ा, गिलास, डिसपाही, ताला, चक्की, पत्थर

प्रदत्त कार्य 3 : कोयल पर कार्य -प्रपत्र

- कोयल का रंग एवं रूप
- रहने का स्थान
- प्रिय खाद्य
- कौवा और कोयल में समानता
- कौवा और कोयल में अंतर
- कोयल पर हिन्दी कविता (एक)
- कोयल किस लिए प्रसिद्ध है?
- कोयल का एक गुण
- कोयल का एक अवगुण
- कोयल किस मौसम में कूकती है?

उद्देश्य :

- कोयल के विषय में जानकारी देना
- संगीता के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना
- कविता के माध्यम से भावाभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करना
- रचनात्मकता का विकास करना
- मीठी वाणी की महिमा बताकर मीठा बोलने के लिए प्रेरित करना



Unit 12

रचनात्मक मूल्यांकन - कैदी और कोकिला

प्रक्रिया

- प्रत्येक विद्यार्थी को व्यक्तिगत रूप से कार्य करना होगा।
- अध्यापक उपर्युक्त प्रपत्र को श्यामपट्ट पर लिखेंगे।
- सभी विद्यार्थियों को 5 मिनट विचार करने के लिए और 20 मिनट लिखने के लिए दिए जाएँ।
- अध्यापक इस अंतराल में सभी विद्यार्थियों को काम करते हुए देखेगा तथा लिखने के लिए प्रेरित करेंगे।
- अंत में सभी से प्रपत्र एकत्रित कर लिए जाएंगे।
- मूल्यांकन बिंदु श्यामपट्ट पर लिखे जाएँगे।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

सही सूचना	1
लेखन कौशल	1
सभी प्रविष्टियों की पूर्ति	3

टिप्पणी

- अध्यापक अपनी कक्षा के स्तर के अनुरूप मूल्यांकन के अन्य बिंदु भी निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- अधिकांश जानकारी देने वाले छात्रों की सराहना अवश्य की जाए।
- जिन विद्यार्थियों ने जानकारी पूरी नहीं दी उन्हें विषय समझने में सहायता देकर प्रोत्साहित करें।

प्रदत्त कार्य 4 : भारतीय स्वाधीनता संग्राम के क्रांतिकारियों के विषय में सूचना एकत्रित करना।

उद्देश्य :

- शहीदों के बलिदान को पहचानना
- क्रांतिकारियों के व्यक्तित्व से परिचय कराना
- भारतीय सेनाओं और उनके परिवारों के प्रति उत्तरदायित्व के भाव का विकास करना
- देश की रक्षा के लिए सचेत और जागरूक रहने के भाव का विकास करना।
- प्रस्तुतीकरण की क्षमता का विकास करना



प्रक्रिया

- ❖ समूह कार्य
- ❖ अध्यापक कक्षा को पाँच समूहों में बाँट कर, प्रत्येक समूह को दो क्रान्तिकारियों के नाम देकर उनके विषय में पूर्ण जानकारी उपलब्ध करने का निर्देश देंगे।
- ❖ इस कार्य के लिए अध्यापक एक दिन का समय देंगे।
- ❖ परिचर्चा के दिन समूह के दो विद्यार्थियों को बुलाकर प्रस्तुत करने के लिए कहेंगे।
- ❖ परिचर्चा के लिए प्रत्येक समूह को कुल चार मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ यह प्रक्रिया 20 मिनट में पूर्ण होगी।
- ❖ परिचर्चा के बाद प्रत्येक समूह को 1 मिनट का समय अतिरिक्त जानकारी के लिए दिया जाएगा।
- ❖ अध्यापक मूल्यांकन बिन्दुओं को पहले से ही श्याम पट्ट पर लिखकर विद्यार्थियों को अवगत करा देंगे।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

समग्र प्रस्तुति	2
क्रमबद्धता, रोचकता	1
विषय को अधिकार पूर्ण कहने की क्षमता	1
समूहगत सहभागिता	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक अन्य किसी उपयुक्त बिन्दु को मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अध्यापक प्रभावशाली एवं सटीक जानकारी के लिए विद्यार्थियों की सराहना करेंगे।
- ❖ यदि किसी समूह से पूर्ण जानकारी नहीं मिलती तो अध्यापक उन्हें अन्य विद्यार्थियों की सहायता से पूर्ण करने के लिए कह सकते हैं और स्वयं भी उनकी सहायता कर सकते हैं।
- ❖ अध्यापक की सुविधा के लिए क्रान्तिकारियों के नामों की सूची उपलब्ध कराई जा रही है।

❖ सुभाष चन्द्र बोस	❖ भगत सिंह	❖ यतिन्द्रनाथ
❖ सुखदेव	❖ राजगुरु	❖ चन्द्रशेखर आजाद
❖ रामप्रसाद बिस्मिल	❖ ठाकुर रोशन सिंह	❖ लाला लाजपत राय
❖ दुर्गा भाभी	❖ अशफ़ाक उल्ला खाँ	❖ सुरेन्द्रनाथ बनर्जी



Unit 12

प्रदत्त कार्य 5 : प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानियों का परिचय।

उद्देश्य :

- स्वधीनता के मूल्य को समझाना।
- शहीदों के बलिदान को समझाना।
- आत्मगौरव, स्वाभिमान से जीने के भाव को विकसित करना।
- जीवन में आने वाली कठिनाईयों का, डर का मुकाबला करना।
- साहस और वीरता का भाव जगाना।

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत रूप से (मौखिक)
- अध्यापक कक्षा में प्रश्न पूछने से पहले विभिन्न महान् स्वतंत्रता सेनानियों के नामों से परिचित कराएँगे।
- प्रत्येक विद्यार्थी सेनानियों का संक्षिप्त परिचय देगा।
- मूल्यांकन बिन्दुओं को अध्यापक पहले से ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

अभिव्यक्ति कौशल

2

सही और सटीक जानकारी

2

उच्चारण शुद्धता

1

टिप्पणी

- अध्यापक अपने चिंतन एवं अनुभव के आधार पर अन्य मानक बिन्दुओं को मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- अध्यापक सही व सटीक परिचय देने वाले विद्यार्थियों की सराहना करें।
- अध्यापक को विषय की तैयारी के लिए स्वतंत्रता सेनानियों के नाम सुझाए जाते हैं:
सरदार पटेल, महात्मा गांधी, सरोजिनी नायडू, जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल इत्यादि



ग्राम श्री

सुमित्रातंदन पंत

प्रदत्त कार्य 1 : नाटिका मंचन

विषय - 'गाँव की सैर'

उपविषय - 1. गाँव की पंचायत, 2. किसान की दिनचर्या, 3. कुएँ का एक दृश्य, 4. ग्रामीण युवा मानसिकता

उद्देश्य :

- ❖ सामान्य ज्ञान की अभिवृद्धि।
- ❖ अभिनय क्षमता का विकास करना।
- ❖ विद्यार्थियों को ग्राम्य जीवन से जोड़ना।
- ❖ प्रस्तुतीकरण कौशल का विकास करना।
- ❖ मंचन के लिए अनिवार्य तत्वों की जानकारी।
- ❖ सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास।
- ❖ गाँव के प्रदूषण रहित वातावरण से परिचित कराना।

प्रक्रिया

- ❖ समूहगत कार्य
- ❖ मंचन के तत्वों की जानकारी विद्यार्थियों को देते हुए अध्यापक संवाद लेखन की विशेषताओं और कौशल से विद्यार्थियों को परिचित कराएँगे।
- ❖ अध्यापक विषय के चारों पक्षों पर टिप्पणी करेंगे।
- ❖ अध्यापक कक्षा को चार समूहों में बाँट कर प्रत्येक समूह को एक-एक विषय आबंटित कर देंगे।
- ❖ नाटिका की तैयारी के लिए चार दिन का समय अध्यापक दे सकता है।
- ❖ अध्यापक नाटिका की तैयारी के संबंध में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करेगा।
- ❖ पाँचवे दिन नियत समय पर कक्षा में नाटिका का मंचन होगा।
- ❖ प्रत्येक समूह के मूल्यांकन में शिक्षक स्वयं तथा किसी अन्य शिक्षक की भी सहायता ले सकते हैं।



Unit 13

श्री ग्राम - रचनात्मक मूल्यांकन

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

विषय की कलात्मक अभिव्यक्ति	1
अभिनयशीलता	1
संवाद शैली	1
सटीक भाषा प्रयोग	1
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक कक्षा में सम्पन्न प्रस्तुति के आधार पर स्वयं भी मूल्यांकन के मानक बिन्दुओं का प्रयोग करने के लिए स्वतंत्र हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अध्यापक अच्छी नाटिका मंचन के लिए समूह के सभी छात्रों का उत्साह वर्धन अवश्य करें।
- ❖ आवंटित विषय पर, एक बार पुनः अध्यापक कक्षा में चर्चा कर सकते हैं।

प्रदत्त कार्य 2 : काव्य में आए विशेषणों के स्थान पर अन्य विशेषणों का प्रयोग।

उद्देश्य :

- ❖ नए-नए विशेषणों से परिचित कराना
- ❖ रचनात्मक क्षमता का विकास करना
- ❖ चिंतनशीलता का विकास करना
- ❖ काव्य रचना की प्रेरणा देना
- ❖ व्याकरण की सही जानकारी तथा उपयोग बताना

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक विद्यार्थियों को कविता में आए विभिन्न विशेषणों से परिचित कराएँगे तथा कविता में उनका महत्व समझाएँगे।
- ❖ यह प्रक्रिया कविता पढ़ने के उपरांत की जाएगी।
- ❖ कक्षा को सात समूहों में विभक्त कर दिया जायेगा।
- ❖ प्रत्येक समूह को एक-एक पद्यांश में आए विशेषणों को छँटकर उनके स्थान पर अन्य विशेषण भरने होंगे।



- ❖ इस कार्य को करने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाए। विद्यार्थी अपनी उत्तर पुस्तिका में कविता की पंक्तियाँ लिखेंगे।
- ❖ इस प्रक्रिया के दौरान अध्यापक सभी समूहों के पास जाकर उनका मार्गदर्शन करेंगे तथा सभी छात्रों को प्रतिभागी होने के लिए उत्साहित करेंगे।
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी को दो-दो विशेषण बदल कर प्रयोग करने हैं (एक पंक्ति के लिए कई विकल्प हो सकते हैं)
- ❖ लिखने के बाद प्रस्तुतीकरण के लिए प्रत्येक विद्यार्थी एक-एक करके अपनी-अपनी पंक्तियों का वाचन करेंगे।
- ❖ यह कार्य एक कालांश में पूर्ण हो जाएगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

दो सही विशेषण प्रयोग

4

उच्चारण / वाचन

1

प्रतिपुष्टि

- ❖ उपयुक्त एवं सटीक विशेषणों का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- ❖ जो विद्यार्थी कार्य को ठीक से नहीं कर पाए उनका मार्गदर्शन करके प्रोत्साहित किया जाए।
- ❖ अध्यापक विशेषण के साथ-साथ प्रविशेषणों का प्रयोग भी समझा दें।

प्रदत्त कार्य 3 : वाद-विवाद

विषय : गाँवों से शहरों की ओर पलायन सही है।

उद्देश्य :

- ❖ गाँवों से शहरों की ओर होने वाले पलायन के दुष्परिणामों से अवगत कराना।
- ❖ तर्क सहित अपने विचारों को प्रस्तुत करने की क्षमता का विकास करना।
- ❖ मौखिक अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना
- ❖ सहभागिता, सहनशीलता एवं धैर्य की प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ ग्राम्य जीवन की सरलता, सहजता, संबंधों की कोमलता से अवगत कराना।

प्रक्रिया - समूह कार्य

- ❖ अध्यापक कक्षा में वाद-विवाद विषय पर टिप्पणी करेंगे।



Unit 13

श्री ग्राम रचनात्मक मूल्यांकन

- ❖ कक्षा को चार समूह में बाँट कर अध्यापक विषय के पक्ष और विपक्ष में बोलने की तैयारी के लिए 10-15 मिनट का समय दे देंगे।
- ❖ अध्यापक कक्षा में विद्यार्थियों के पास सज कर निरीक्षणक रेंगे और प्रत्येक विद्यार्थी की क्रियात्मक/विचारात्मक सहयोग करेंगे।
- ❖ विषय तैयार होने पर प्रत्येक समूह से एक-एक विद्यार्थी पक्ष-विपक्ष में कक्षा के समक्ष आकर अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।
- ❖ विषय के पक्ष और विपक्ष पर बोलने के लिए 4 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ शिक्षक स्वयं तथा विद्यार्थियों को भी मूल्यांकन के लिए कह सकते हैं।
- ❖ अध्यापक मूल्यांकन के आधार बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखकर विद्यार्थियों को अवगत करा देंगे।

मूल्यांकन आधार	अंक विभाजन
विषय वस्तु की सटीक जानकारी	2
विपक्षी के तर्कों का खंडन	1
अपने पक्ष को मजबूती से प्रस्तुत करना	1
भाषायी दक्षता एवं सुसंबद्धता	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किन्हीं अन्य मूल्यांकन बिन्दुओं को भी मूल्यांकन का आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अध्यापक पक्ष-विपक्ष पर बोलने वाले वक्ताओं को प्रोत्साहित करेंगे।
- ❖ मुख्य बिन्दुओं को अध्यापक श्यामपट्ट पर लिख सकते हैं।
- ❖ अध्यापक वाद-विवाद पर अन्य विद्यार्थियों से भी टिप्पणी करा सकते हैं।

प्रदत्त कार्य 4 : शब्दों का तंबोला

उद्देश्य :

- ❖ प्रतिदिन व्यवहार में आने वाले फलों, फूलों, अनाजों व सब्जियों के नामों की जानकारी देना
- ❖ प्रकृति के प्रति प्रेम जागृत करना
- ❖ ग्राम्य जीवन के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना
- ❖ पढ़ने में प्रसन्नता का अनुभव करना



- ❖ सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना
- ❖ प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाना

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत रूप से यह कार्य कराया जाएगा।
- ❖ अध्यापक सभी विद्यार्थियों को तंबोला खेल के कार्ड्स की तरह कार्ड भी दे सकते हैं, अथवा विद्यार्थी अपनी नोटबुक पर भी बना सकता है।
- ❖ अध्यापक निम्नलिखित 15 शब्द विद्यार्थियों को लिखने के लिए देंगे जिनमें से विद्यार्थी कोई दस शब्द अपनी इच्छानुसार चुनकर अपने कार्ड अथवा नोटबुक पर लिख सकते हैं।
हरियाली, गेहूँ, अरहर, सरसों, मटर, मूली, गोभी, आम, पीपल, कटहल, आड़ू, अमरूद, पालक, आँवला
- ❖ अब अध्यापक इन शब्दों से संबंधित दस वाक्यों को कक्षा में सुनाएँगे।
- ❖ विद्यार्थी उस वाक्य से संबंधित शब्द को अपने कार्ड पर रेखांकित करेगा।
- ❖ जिसके सभी जोड़े अथवा उत्तर सही मिलेंगे वह बधाई का पात्र होगा।
- ❖ एक कालांश का समय लगेगा।

दस वाक्य

- ❖ हरे भरे खेत देखकर किसान झूम उठा।
- ❖ पीले रंग की दाल-चावल उत्तर भारत का प्रिय खाद्य पदार्थ है।
- ❖ सर्दियों में उस की सब्जी शाकाहारी भोजन में अपना अलग महत्व रखती है।
- ❖ इस सब्जी के फूल की सफेदी देखकर मैं दंग रह गया।
- ❖ मधुमेह के रोगी के लिए यह फल लाभदायक है।
- ❖ इसका तेल खाने और लगाने दोनों में प्रयुक्त होता है।
- ❖ यह फल हृदय रोगियों के लिए सस्ता और लाभदायक है।
- ❖ इस साग में लौह तत्व व खनिज बहुतायत में मिलते हैं।
- ❖ इसकी रोटी खाने में स्वादिष्ट लगती है।
- ❖ इस पेड़ की पूजा की जाती है।
- ❖ हो सकता है कुछ विद्यार्थियों के छोट्टे हुए शब्दों से ये वाक्य न मिलें, तंबोला खेल की यही विशेषता है।
अतः प्रत्येक विद्यार्थी का मूल्यांकन निम्न विधि से किया जा सकता है -



Unit 13

श्री ग्राम - ग्रामात्मक मूल्यांकन

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

10-9

5

8-7

4

6-5

3

4-3

2

1-2

1

टिप्पणी

- अध्यापक मूल्यांकन के लिए अपना स्वतंत्र मानदंड भी बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सभी सही उत्तर / जोड़े बनाने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए तथा सही जोड़े न बनाने वाले विद्यार्थियों का सही मार्गदर्शन कर उन्हें प्रोत्साहित किया जाए।

प्रदत्त कार्य 5 : ग्राम्य जीवन की सही जानकारी के लिए बहुविकल्पीय प्रश्न

उद्देश्य :

- गाँवों के स्वरूप का सही ज्ञान देना
- गाँवों से संबंधित भ्रमों का निराकरण
- ग्राम्य जीवन के प्रति आकर्षित करना
- गाँवों के महत्व से परिचित कराना
- विश्लेषण क्षमता का विकास करना

प्रक्रिया

- अध्यापक बहुविकल्पीय प्रश्नों का प्रपत्र तैयार करेगा।
- प्रत्येक छात्र को फोटोस्टेट किए गए प्रपत्र की एक-एक प्रति दी जाएगी।
- सभी छात्र व्यक्तिगत रूप में सही विकल्प पर निशान लगाएँगे।
- अध्यापक सभी प्रपत्र अलग-अलग छात्रों में बाँटकर स्वयं सही उत्तर बताकर उनका मूल्यांकन कराएँगे।
- सभी छात्रों को उनके प्राप्तांकों के आधार पर भारांक प्रदान किए जा सकते हैं।



प्रपत्र

सही विकल्पों पर सही का निशान लगाइए -

- भारतीय किसान अधिकतर क्या पहनते हैं?
 - ❖ लुंगी-कुर्ता
 - ❖ धोती-कुर्ता
 - ❖ कमीज और पैंट
 - ❖ लुंगी-बनियान
- ग्रामीण महिलाएँ ज्यादातर किस काम में व्यस्त रहती हैं?
 - ❖ नौकरी में
 - ❖ घरेलू कामकाज में
 - ❖ खेती में
 - ❖ कारखाने में
- गाँवों में अधिकतर किस तरह के विद्यालय पाए जाते हैं?
 - ❖ प्राथमिक
 - ❖ मिडिल
 - ❖ माध्यमिक
 - ❖ उच्चतर माध्यमिक
- गाँव में पंचायत का प्रमुख क्या कहलाता है?
 - ❖ ग्राम प्रधान
 - ❖ खंड अधिकारी
 - ❖ सरपंच
 - ❖ बैंक मैनेजर
- गाँव के लोग जहाँ इकट्ठे होकर बतियाते हैं, उसे क्या कहते हैं?
 - ❖ जगत
 - ❖ मुँडेर
 - ❖ चौपाल
 - ❖ चबूतरा
- ग्रामीणों को बीज, खाद, रसायन आदि के लिए किस संस्था की सहायता लेनी पड़ती है?
 - ❖ बीज भंडार



Unit 13

श्री ग्राम - रचनात्मक मूल्यांकन

- ❖ महाजन
- ❖ सहकारी समिति
- ❖ बैंक

7. गाँव में मनोरंजन का प्रमुख साधन क्या है?

- ❖ सिनेमा
- ❖ भजन
- ❖ दूरदर्शन
- ❖ चौपाल पर आयोजित कार्यक्रम

8. ग्रामीणों को बीमारी के इलाज के लिए क्या सुविधा दी गई है?

- ❖ जिला चिकित्सालय
- ❖ प्राइवेट नर्सिंग होम
- ❖ प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र
- ❖ हैल्थ सेंटर

9. खेती के लिए उपयोग में न आने वाले पशु

- ❖ बैल
- ❖ ऊँट
- ❖ गाय
- ❖ भैंसा

10. ग्रामीण आज भी किस संस्कृति में विश्वास करते हैं?

- ❖ बाजार संस्कृति
- ❖ पाश्चात्य संस्कृति
- ❖ आधुनिक संस्कृति
- ❖ प्राचीन भारतीय संस्कृति

मूल्यांकन आधार

दो सही उत्तरों पर एक अंक दिया जाए।

अंक विभाजन

5

प्रतिपुष्टि

- ❖ सही उत्तर देने वाले छात्रों की सराहना की जाए और जो उत्तर न दे पाएं अध्यापक उनका मार्गदर्शन कर कार्य पूरा एवं सही करने के लिए प्रोत्साहित करें।



चंद्र गहना से लौटती बेर

केदारनाथ अग्रवाल

प्रदत्त कार्य 1 : विवाह के दृश्य का वर्णन

उद्देश्य :

- भारतीय संस्कृति से परिचित कराना।
- विभिन्न धर्मों की विवाह शैली की जानकारी देना।
- दृश्य बिंब समझने में सहायता करना।
- सौन्दर्यानुभूति कराना।
- जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनाने में सहायता देना।

प्रक्रिया

- कविता के उपरान्त शिक्षक विवाह विषय पर चर्चा करते हुए कार्य प्रक्रिया के विषय में समझाएँगे।
- यह व्यक्तिगत कार्य है प्रत्येक छात्र अपने घर में हुए / पड़ोस में देखे हुए विवाह का वर्णन 10 वाक्यों में लिखेंगे।
- इस कार्य के लिए 10 मिनट का समय दिया जाए।
- मूल्यांकन के आधार बिन्दु शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दें।
- एक-एक करके सभी छात्रों से प्रस्तुत कराया जाए।
- इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

अनुभव की कलात्मक अभिव्यक्ति

2

सटीक शब्द चयन

1

विषय निरूपण

2

टिप्पणी

- अध्यापक स्वयं मूल्यांकन के आधार बिन्दु निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र हैं।

रचनात्मक मूल्यांकन - चंद्र गहना से लौटती बेर



Unit 14

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छे सार्थक वर्णन के लिए सराहना।
- ❖ जिन छात्रों ने ठीक से वर्णन नहीं किया उनका मार्गदर्शन करके प्रोत्साहित करना।
- ❖ विभिन्न धर्मों की विवाह-शैली पर विस्तार से चर्चा की जा सकती है।

प्रदत्त कार्य 2 : कविता की पंक्ति के अनुरूप स्वयं कविता की पंक्तियों की रचना करना।

उद्देश्य :

- ❖ कविता में आनंद लेने की प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ सृजनात्मकता का विकास करना।
- ❖ आत्मविश्वास की वृद्धि करना।
- ❖ सौन्दर्यानुभूति कराना।
- ❖ कल्पना शक्ति का विकास करना।
- ❖ लेखन कौशल का विकास।

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक कविता से दस पंक्तियाँ देंगे। प्रत्येक पंक्ति के बाद की पंक्ति का निर्माण विद्यार्थी स्वयं करेगा।
- ❖ अध्यापक मूल्यांकन बिंदु पहले ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- ❖ अध्यापक श्यामपट्ट पर पंक्तियाँ लिखेंगे और एक उदाहरण स्वयं पूरा करके दिखाएँगे जिससे विद्यार्थी को सही दिशा निर्देश मिल सके।
- ❖ पाँच-पाँच छात्रों के समूह में कार्य करवाया जायेगा।
- ❖ एक कालांश का समय लगेगा।

जैसे -

बीच में अलसी हठीली,

गाँव की लड़की लजीली

एक चाँदी का बड़ा सा गोल खंभा

.....



Unit 14

रचनात्मक मूल्यांकन - चंद्र गहना से लौटती बेर

हैं कई पत्थर किनारे

.....

भूमि ऊँची है जहाँ से

.....

कम ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ

.....

मीठा-मीठा रस टपकाता

.....

उठता गिरता

.....

मन होता है

.....

पर फैलाए सारस के संग

.....

सच्ची प्रेम कहानी सुन लूँ।

.....

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

सामान्य तुकबंदी

2

कल्पनाशीलता

2

पहले कथ्य से मेल

1

टिप्पणी

- ♦ अध्यापक सामान्य सी तुकबंदी या कविता लिखने पर भी उदारता से अंक दें।
- ♦ अध्यापक अपनी आवश्यकतानुरूप मानक स्थापित करने के लिए स्वतंत्र हैं।



Unit 14

प्रतिपुष्टि

- अध्यापक भावपूर्ण पंक्ति लिखने पर विद्यार्थी की सराहना अवश्य करें।
- जो विद्यार्थी स्वयं रचना नहीं कर पा रहे हैं उन्हें सामान्य तुकबंदी करने में सहायता प्रदान करें।
- अन्य कविताएँ पढ़ने के लिए कहें।

प्रदत्त कार्य 3 : पर्व एवं त्यौहारों की जानकारी

उद्देश्य :

- भारतीय संस्कृति का परिचय देना।
- भारतीयों का जीवन के प्रति जुड़ाव समझाना।
- खुशियों एवं आनंद का महत्व समझाना।
- भारत की एकता को बढ़ावा देना।
- त्योहारों से जुड़े संदर्भों की जानकारी देना।
- सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना।

प्रक्रिया

- अध्यापक विद्यार्थियों को हिन्दी महीनों के नामों के बारे में अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार बताएगा अथवा श्यामपट्ट पर लिखवा देगा।
- अध्यापक हिन्दी महीनों के अनुसार होने वाले त्यौहारों की भी जानकारी देगा।
- त्यौहारों में भारत के सभी राज्यों, धर्मों एवं जातियों के त्योहारों का उल्लेख किया जाए।
- मूल्यांकन बिंदु श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँ।
- विद्यार्थियों को यह अवश्य स्पष्ट कर दिया जाए कि तिथि और अंग्रेजी तारीख में अंतर है। हो सकता है चैत्र मास मध्य मार्च - मध्य अप्रैल दो महीने तक चले।
- 15-20 मिनट का समय

निम्नलिखित महीनों के सामने उनमें पड़ने वाले किन्हीं दस त्यौहारों के नाम लिखिए :

नोट : सही तालिका बनाएँ

हिन्दी मास (12)	अंग्रेजी मास (12)	त्यौहार
1. चैत्र	मार्च	जन्माष्टमी
2. वैशाख	अप्रैल	दीपावली



3. ज्येष्ठ	मई	ईद
4. आषाढ़	जून	गुरुपर्व
5. श्रावण	जुलाई	ओणम
6. भाद्रपद	अगस्त	रक्षाबन्धन
7. आश्विन	सितंबर	होली
8. कार्तिक	अक्तूबर	बड़ा दिन
9. पौष	नवंबर	गुडफ्राइडे
10. माघ	दिसंबर	दशहरा
11. मार्गशीर्ष	जनवरी	दुर्गापूजा
12. फाल्गुन	फरवरी	बैशाखी

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

10-9 (त्यौहारों के नाम सही बताने पर)	5
8-7	4
6-5	3
4-3	2
2-1	1

प्रतिपुष्टि

- ❖ अध्यापक छात्रों की सहायता के लिए बता दे कि घर में ऐसे कैलेंडर अवश्य देखें जिनमें हिन्दी और अंग्रेजी तिथियाँ हों।
- ❖ सही जानकारी देने वाले छात्रों की सराहना की जाए।

प्रदत्त कार्य 4 : चन्द्रगहना कविता के कथ्य पर आधारित प्रपत्र

1. चन्द्रगहना क्या है?
2. देह की पतली, कमर की है लचीली कौन ?.....
3. ब्याह मण्डप में पधारी, कौन ?.....
4. आज स्वयंवर हो रहा, किसका?
5. अनगढ़ चौड़ी पहाड़ियाँ, कहाँ की है?



Unit 14

रचनात्मक मूल्यांकन - चंद्र गहना से लौटती बेर

6. देखते ही मीन चंचल, ध्यान निद्रा त्यागता है, कौन?
7. बाँझ भूमि पर कौन से पेड़ खड़े हैं?
8. वनस्थली का हृदय चीरता, उठता, गिरता स्वर किसका है?
9. सुन पड़ता है मीठा-मीठा रस टपकाता स्वर किसका है?
10. कविता के कवि का नाम

उद्देश्य :

- ❖ विषय की गहन एवं सूक्ष्म जानकारी प्रदान कराना।
- ❖ कविता में प्रयुक्त विशेष्य-विशेषण का ज्ञान कराना।
- ❖ काव्यानुभूति कराना।
- ❖ कविता में प्रयुक्त फूल, पक्षी, परिवेश से परिचित कराना।
- ❖ तार्किक क्षमता का विकास करना।

प्रक्रिया

- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी व्यक्तिगत रूप से कार्य सम्पन्न करेगा।
- ❖ अध्यापक उपर्युक्त कार्य-प्रपत्र को श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- ❖ सभी विद्यार्थियों को पाँच मिनट का समय सोचने के लिए दिया जाएगा।
- ❖ इस के उपरान्त अध्यापक 10 मिनट या 15 मिनट का समय कार्य सम्पन्न करने के लिए देंगे।
- ❖ अध्यापक इस अंतराल में सभी विद्यार्थियों को काम करते हुए देखेंगे। विद्यार्थियों को शीघ्र लिखने के लिए प्रेरित भी करेंगे।
- ❖ अंत में सभी विद्यार्थियों से प्रपत्र लेकर एकत्रित कर लिए जाएँगे। सुविधानुसार मूल्यांकन किया जाएगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

सही उत्तर	1
लेखन कौशल	1
सही प्रविष्टियों की पूर्ति	3

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक अपनी कक्षा के स्तर के आधार पर मूल्यांकन के अन्य बिन्दु भी निर्धारित कर सकते हैं।



प्रतिपुष्टि

- ❖ सभी सही उत्तर लिखने वाले विद्यार्थियों की अध्यापक मुक्त हृदय से सराहना करें।
- ❖ जिन विद्यार्थियों ने सभी प्रश्नों के उत्तर नहीं दिए उन्हें कविता को पुनः पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें जिससे वह प्रश्नावली पूर्ण कर सके।
- ❖ शिक्षक की सुविधा के लिए प्रश्नावली के उत्तर संकलित हैं।
 1. एक गांव का नाम, 2. अलसी, 3. सरसों, 4. सरसों और चने का, 5. चित्रकूट, 6. बगुला
 7. रींवा के पेड़, 8. सारस, 9. सुग्गे का, 10. केदार नाथ अग्रवाल

प्रदत्त कार्य 5 : प्राकृतिक सौन्दर्य से संबंधित चित्रों को बना कर चार्ट पेपर पर चिपकाना।

उद्देश्य :

- ❖ कलात्मक अभिव्यक्ति का विकास
- ❖ प्रकृति सौन्दर्य के प्रति आसक्ति का विकास
- ❖ भाव और रंग की समायोजना का विकास
- ❖ भावों को मूर्त रूप देने की क्षमता का विकास करना
- ❖ अपनी संस्कृति से जोड़ना।

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य (कार्य का आवंटन समूहगत होगा)
- ❖ अध्यापक कक्षा को चार समूह में बाँट देंगे और प्रत्येक समूह के लिए एक-एक विषय निर्धारित कर देंगे। (खेत में फल, फूल, फसल का चित्रांकन, फूलों से लदी वाटिका का चित्रांकन, कालोनी के पार्क का चित्रांकन, तालाब के दृश्य का चित्रांकन)
- ❖ कार्य का संपादन व्यक्तिगत रूप से होगा।
- ❖ अध्यापक एक दिन पूर्व ही चारों विषयों को श्यामपट्ट पर लिख देंगे, पर विषय निर्धारण निश्चित दिन ही समूह को करेंगे।
- ❖ पेन, पेंसिल, रंग (सूखे-गीले) किसी का भी प्रयोग चित्र बनाने में किया जा सकता है।
- ❖ कार्य संपादन के लिए एक कालांश दिया जाएगा।
- ❖ अध्यापक एक दिन पहले ही विद्यार्थियों को चित्रकला से संबंधित सामग्री लाने के लिए कह देंगे।
- ❖ अध्यापक मूल्यांकन बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिख कर पहले से बता देंगे।



Unit 14

रचनात्मक मूल्यांकन - चंद्र गहना से लौटती बेर

मूल्यांकन आधार

विषय की सही अभिव्यक्ति

आकर्षक चित्रांकन

समग्र प्रभाव

अंक विभाजन

2

2

1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य विषय चयन और मूल्यांकन के आधार को मूल्यांकन के लिए निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- अध्यापक सही, सुन्दर, आकर्षक चित्र बनाने वाले विद्यार्थियों के कार्य की सराहना अवश्य करें।
- मूल्यांकन कार्य अध्यापक दूसरे दिन भी कर सकते हैं।
- चार्ट पेपर पर संपादित कार्य को चिपकवाने का कार्य अन्य दिन भी किया जा सकता है / विद्यार्थियों से करवाया जा सकता है।



मेघ आए

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

प्रदत्त कार्य 1 : गाँव की चौपाल के दृश्यों का मंचन

उद्देश्य :

- ग्रामीण जीवन की सही जानकारी।
- मिल-जुल कर रहने की प्रेरणा देना।
- गाँव और शहर के बीच की दूरी कम करना।
- ग्राम्य जीवन की सादगी और सरलता को अपनाने की प्रेरणा देना।
- अभिनय क्षमता का विकास करना।
- सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

प्रक्रिया

- सामूहिक कार्य
- एक कालांश का समय
- अध्यापक पूरी कक्षा को पाँच समूहों में बाँटेगा और उन्हें निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत चौपाल का दृश्य मंचित करने के लिए कहेगा।
 - ✧ पंचायत का दृश्य
 - ✧ भजनमंडली का दृश्य
 - ✧ आपस में बातचीत करते लोगों का दृश्य
 - ✧ कठपुतली का तमाशा / स्वांग करते लोगों का दृश्य
 - ✧ हुक्का पीते बड़े-बूढ़े और कुछ ग्रामीणों का दृश्य
 - ✧ अध्यापक इस दृश्य को कराने के लिए एक दिन पूर्व विद्यार्थियों को मानसिक तैयारी का समय देगा।



Unit 15

मेघ आए - रचनात्मक मूल्यांकन

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

अभिनय कौशल	2
संवाद कुशलता	1
दृश्य में प्रस्तुत बिन्दु	1
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से मूल्यांकन के आधार निश्चित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- प्रतिभा संपन्न विद्यार्थियों की सराहना एवं प्रशंसा की जाए। अन्य विद्यार्थियों को बेहतर करने के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य 2 : कविता में आई क्रियाओं की अभिनय द्वारा प्रस्तुति

उद्देश्य :

- कविता के मूलभाव को सर्वग्राह्य बनाना
- विषय का स्पष्टीकरण सरल बनाना
- अभिनय क्षमता का विकास करना
- रचनात्मकता में वृद्धि
- निरीक्षण एवं परीक्षण क्षमता का विकास
- अभिव्यक्ति के गुण का परिष्कार करना

प्रक्रिया

- एक कालांश का समय
- सामूहिक रूप से कार्य कराया जाएगा।
- अध्यापक पूरी कक्षा को तीन समूहों में विभक्त कर देगा। एक समूह प्रत्येक क्रिया का अभिनय करके दिखाएगा।
- दूसरा समूह उस क्रिया को पहचान कर उसका नाम बताएगा।
- तीसरा समूह कविता में उस क्रिया को किस पात्र ने क्रियान्वित किया - यह बताएगा।



- ❖ मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर लिखे जाएँ।
- ❖ अध्यापक यह देखें कि सभी छात्र इसमें भाग लें।

मूल्यांकन आधार (समूह के अनुसार)	अंक विभाजन
अभिनय कुशलता	5
सही पहचान	5
पाठ्य पुस्तक से मिलान	5

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वतंत्र रूप से मूल्यांकन के आधार निश्चित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छा अभिनय करने वाले, पहचानने वाले तथा किताब से मिलान करने वाले छात्रों को समान रूप से मूल्यांकित कर, सराहना करें। सभी छात्रों को इस गतिविधि में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित करें।

प्रदत्त कार्य 3 : आज के परिवेश में 'अतिथि देवो भव' की प्रासंगिकता

उद्देश्य :

- ❖ भारतीय संस्कृति से परिचित कराना।
- ❖ आदर सत्कार की भावना का विकास करना।
- ❖ सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ सहनशीलता की प्रवृत्ति विकसित करना।
- ❖ उदार दृष्टिकोण रखना।
- ❖ वाचन कौशल का विकास।

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक भारतीय संस्कृति में अतिथि सत्कार की भावना से परिचित कराएँगे। आज के संदर्भ में आने वाली परेशानियों की ओर भी संकेत करेंगे।
- ❖ कक्षा को दो समूहों में विभक्त किया जाएगा।
- ❖ एक समूह गांव के संदर्भ में तथा दूसरा शहर के संदर्भ में चर्चा करेगा।
- ❖ यह सामूहिक कार्य है प्रत्येक समूह को 5 से 10 मिनट का समय विषय तैयार करने के लिए दिया जाए।
- ❖ विषय तैयार करने के उपरांत प्रत्येक समूह अपने विचार प्रस्तुत करेगा।
- ❖ अध्यापक प्रत्येक छात्र से 2-4 वाक्य बोलने के लिए कहे।



Unit 15

मेघ आए - रचनात्मक मूल्यांकन

- ❖ यह प्रक्रिया एक कालांश में संपन्न होगी।
- ❖ अध्यापक मूल्यांकन के आधार बिन्दु श्यामपट्ट पर लिख दें।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

विषय की समझ	2
तर्कशीलता	2
भाषा प्रवाह, उच्चारण	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक मूल्यांकन के आधार निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छे प्रस्तुतीकरण के लिए छात्रों की सराहना करें।
- ❖ सकारात्मक सोच के लिए प्रेरित करें।

प्रदत्त कार्य 4 : वर्षा ऋतु संबंधी जानकारी

उद्देश्य :

- ❖ वर्षा ऋतु के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करना।
- ❖ सौन्दर्य की भावना का विकास करना।
- ❖ सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना।
- ❖ साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
- ❖ सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ अभिव्यक्ति क्षमता का विकास।

प्रक्रिया

- ❖ कविता पाठन से पूर्व शिक्षक छात्रों के साथ वर्षा ऋतु पर चर्चा करें तथा प्रदत्त कार्य के विषय में समझा दें कि यह प्रक्रिया कविता पाठन के उपरान्त कक्षा में की जाएगी।
- ❖ कक्षा को पाँच समूहों में विभक्त किया जाए।
- ❖ प्रत्येक समूह को निम्नलिखित एक-एक विषय दिया जाए।
 - ❖ वर्षा ऋतु का महत्व
 - ❖ वर्षा के दुष्प्रभाव
 - ❖ साहित्य में पावस ऋतु चित्रण
 - ❖ वर्षा ऋतु में आने वाले त्यौहार



- ❖ वर्षा ऋतु में उपजने वाले फल एवं सब्जियाँ
- ❖ विषयों पर चर्चा करके लिखने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ इस बीच अध्यापक कक्षा में घूमकर छात्रों का मार्गदर्शन करेंगे।
- ❖ समूह चर्चा एवं लिखने के पश्चात् प्रत्येक समूह से एक छात्र प्रतिनिधि अपने विषय का प्रस्तुतीकरण करेगा। (अध्यापक चाहे तो समूह के सभी प्रतिभागियों से एक-एक वाक्य प्रस्तुत करा सकते हैं)

मूल्यांकन आधार	अंक विभाजन
प्रस्तुतीकरण	1
विषय की जानकारी	2
तर्कशीलता	1
प्रवाह पूर्ण भाषा	1

टिप्पणी

- ❖ मूल्यांकन के आधार बिन्दु अध्यापक अपनी समझ के अनुसार निश्चित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

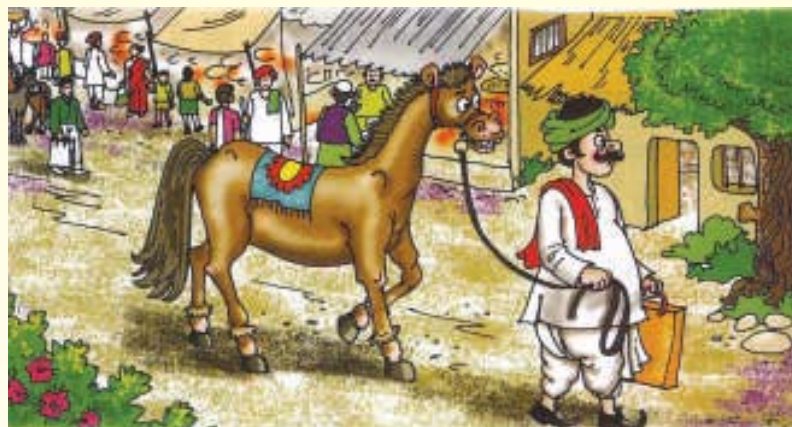
- ❖ वर्षा ऋतु से संबंधी सही जानकारी देने वाले विद्यार्थियों की सराहना।
- ❖ जिन तथ्यों को छोड़ दिया गया हो उनकी जानकारी देना।
- ❖ विभिन्न पहलुओं के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना।

प्रदत्त कार्य 5 : दिए गए चित्रों के आधार पर विद्यार्थी अपनी कल्पनाशीलता के आधार पर संक्षिप्त कहानी लिखेंगे और उचित शीर्षक भी लिखेंगे।



Unit 15

रचनात्मक मूल्यांकन - मेघ आए



उद्देश्य :

- ❖ कहानी लिखने की कला से अवगत करना।
- ❖ मौलिक लेखन की प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ चित्र देखकर, समझकर कल्पना का प्रयोग करते हुए कहानी लिखने के कौशल में प्रवीण करना।
- ❖ सृजनात्मकता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ घटनाक्रम को सुसंगठित रूप से प्रस्तुत करने की कला विकसित करना।
- ❖ अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना।



प्रक्रिया

- व्यक्तिगत रूप से कार्य सम्पन्न होगा।
- अध्यापक कक्षा में विद्यार्थियों को चित्र दिखा कर व्यक्तिगत रूप से कहानी लिखवाएगा।
- अध्यापक विद्यार्थियों को अपनी कल्पनाशीलता, बदलते परिवेश के अनुसार कहानी लिखने के लिए प्रेरित करेगा।
- चित्र देखने समझने के लिए 5-10 मिनट का समय दे देगा।
- अध्यापक विद्यार्थियों को 20 मिनट का समय कहानी लिखने के लिए प्रदान करेगा।
- समय समाप्ति के बाद विद्यार्थियों की लिखित अभिव्यक्ति को एकत्र करके बाद में मूल्यांकन करेगा।
- कहानी के गुण, सटीकता आदि पर अध्यापक टिप्पणी करेगा।
- कहानी के मूल्यांकन बिन्दुओं को अध्यापक श्यामपट्ट पर पहले से ही लिखकर विद्यार्थियों को अवगत करवा देगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

आकर्षक और मनोरंजक विषय वस्तु	2
घटनाओं की क्रमबद्धता, रोचकता	1
कल्पनाशीलता	1
प्रस्तुति	1

टिप्पणी

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से अन्य मूल्यांकन बिन्दुओं को निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- अध्यापक अच्छे कहानी लेखन की सराहना करेगा और कक्षा में पढ़कर सुनाएगा।
- कहानी लिखने में असमर्थ रहने वाले विद्यार्थियों की सहायता की जा सकती है।





यमराज की दिशा

चंद्रकांत देवताले

प्रदत्त कार्य 1 : ईश्वर से कल्पित साक्षात्कार - संवाद।

उद्देश्य :

- ❖ कल्पनाशीलता को बढ़ावा देना
- ❖ साक्षात्कार विधा से परिचय कराना
- ❖ प्रश्न निर्माण कौशल से परिचित कराना

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक सर्वप्रथम विद्यार्थियों को साक्षात्कार विधा से परिचित कराएँगे।
- ❖ यह व्यक्तिगत कार्य है। प्रत्येक विद्यार्थी कल्पना के आधार पर पाँच-पाँच संवाद लिखेंगे।
- ❖ इस कार्य के लिए 5 से 10 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ संवाद लेखन के पश्चात् प्रत्येक विद्यार्थी एक-एक करके अपने संवाद प्रस्तुत करेंगे।
- ❖ सम्पूर्ण प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिन्दु अध्यापक श्यामपट्ट पर लिख दें।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

सटीक संवाद	2
उपयुक्त भाषा	1
साक्षात्कार विधा का सही ज्ञान	2

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक मूल्यांकन बिंदु अपनी समझ से भी निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ सही एवं सुनियोजित ढंग से प्रस्तुत करने वाले विद्यार्थियों की सराहना।
- ❖ जो छात्र विषय नहीं समझ सके उनका मागदर्शन करते हुए उन्हें प्रोत्साहित किया जाए।



Unit 16

प्रदत्त कार्य 2 : समाचार पत्रों से आतंकवादी घटनाओं से संबंधित सूचनाओं का संकलन

उद्देश्य :

- ❖ सामाजिक सरोकारों के प्रति उत्तरदायित्व की भावना अनुभव करना।
- ❖ राष्ट्रीयता की भावना का विकास करना।
- ❖ राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति सतर्कता एवं जागरुकता उत्पन्न करना।
- ❖ समाचारपत्र पढ़ने की प्रेरणा देना।
- ❖ देश के लिए जान देने वाले सुरक्षाकर्मियों के प्रति सम्मानभाव विकसित करना।

प्रक्रिया

- ❖ पूरी कक्षा का एक समाचार पत्र बनेगा जिसमें सभी विद्यार्थी अपनी-अपनी कतरन चिपकाएंगे।
- ❖ व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों रूप से कार्य होगा।
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी अपनी कतरन के नीचे अपना नाम अवश्य लिखेगा तथा किस समाचार पत्र से लाया है उसका नाम तथा दिनांक भी लिखेगा।
- ❖ यह कार्य एक दिन पहले दिया जाएगा।
- ❖ मूल्यांकन बिंदु अध्यापक श्यामपट्ट पर लिख देगा।
- ❖ यह समाचारपत्र कक्षा के प्रदर्शन पट्ट पर लगाया जाएगा।
- ❖ विद्यार्थी एक कालांश में यह काम कर लेंगे

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

विषय से संबंधित कतरन का चयन

3

किस समाचारपत्र से ली गई तथा तिथि आदि का अंकन

2

प्रतिपुष्टि

- ❖ अध्यापक इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखे कि विद्यार्थी की सोच में त्याग और बलिदान की भावना आए, नकारात्मक सोच की नहीं।

प्रदत्त कार्य 3 : ऐसी है मेरी माँ - लेखन व वाचन

उद्देश्य :

- ❖ वात्सल्य रस की अनुभूति कराना।
- ❖ रिश्तों की गरिमा की समझ उत्पन्न करना।



- आदर सम्मान की भावना का विकास करना
- श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न करना।
- अपनत्व की भावना का विकास करना।

प्रक्रिया

- यह व्यक्तिगत कार्य है।
- प्रत्येक छात्र अपनी माँ के विषय में ऐसे पाँच वाक्य लिखेगा जिससे उसकी माता के चरित्र / व्यक्तित्व पर प्रकाश पड़े।
- इस कार्य के लिए 5 मिनट का समय दिया जाए।
- इस दौरान अध्यापक कक्षा का निरीक्षण करेंगे।
- मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दें।
- लेखन के पश्चात् प्रत्येक विद्यार्थी एक-एक करके अपने वाक्य पढ़ेगा।
- इस कार्य में एक कालांश का समय लगेगा।



मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

भावनात्मक संबंध

2

स्पष्ट एवं सुगठित वाक्य विन्यास

2

भावानुकूल भाषा

1

प्रतिपुष्टि

- अच्छे प्रस्तुतीकरण के लिए सराहना करना।
- मां बच्चे के रिश्ते की गहराई की विस्तार से चर्चा की जा सकती है।
- जो विद्यार्थी ठीक से काम नहीं कर पाए उनको सहायता एवं प्रोत्साहन देना।

प्रदत्त कार्य 4 : घर से विद्यालय के मार्ग का दिशा संकेत करते हुए मानचित्र बनाना।

उद्देश्य :

- दिशाओं की पहचान कराना
- मार्ग का ध्यानपूर्वक अवलोकन करना सिखाना
- भ्रम और संशय से मुक्ति दिलाना



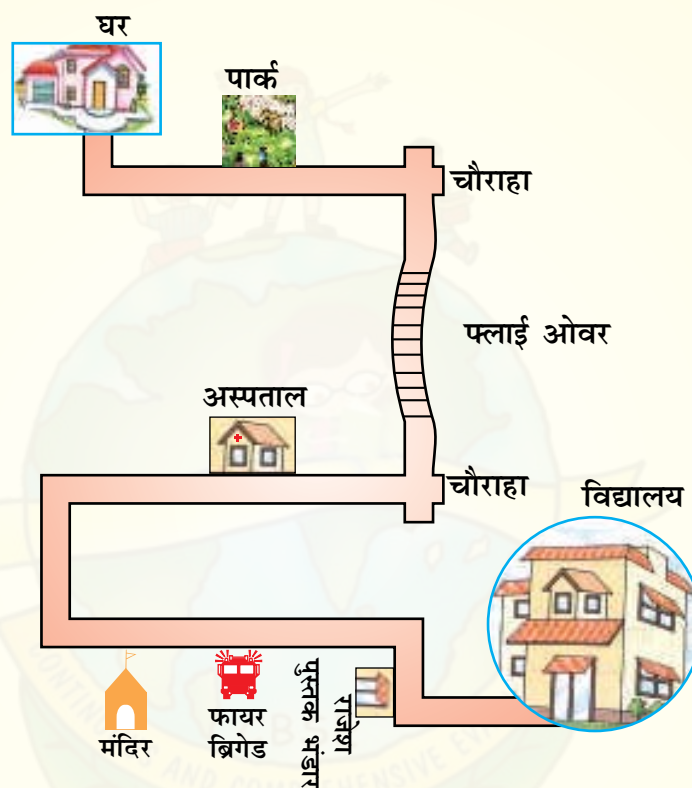
Unit 16

रचनात्मक मूल्यांकन - यमराज की दिशा

- आत्मविश्वास में वृद्धि
- सामान्य ज्ञान की वृद्धि

प्रक्रिया

- अध्यापक उपर्युक्त चित्र दिखाते हुए सभी विद्यार्थियों को अपने घर से विद्यालय तक मार्गदर्शक मानचित्र बनाने के लिए देगा।



- व्यक्तिगत रूप से कार्य करने के लिए दिया जाएगा।
- एक कालांश में कार्य संपन्न हो जाएगा।
- विद्यार्थी इस मार्ग दर्शन मानचित्र में कम से कम पाँच ऐसे संकेत देगा जिनको पहचान कर उसके घर तक जाया जा सके।

मूल्यांकन आधार

- सही मार्ग दर्शन
- स्पष्ट दिशा संकेत
- महत्वपूर्ण स्थलों की पहचान

अंक विभाजन

- 2
- 2
- 1

टिप्पणी

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से मूल्यांकन बिंदु निर्धारित कर सकता है।



प्रतिपुष्टि

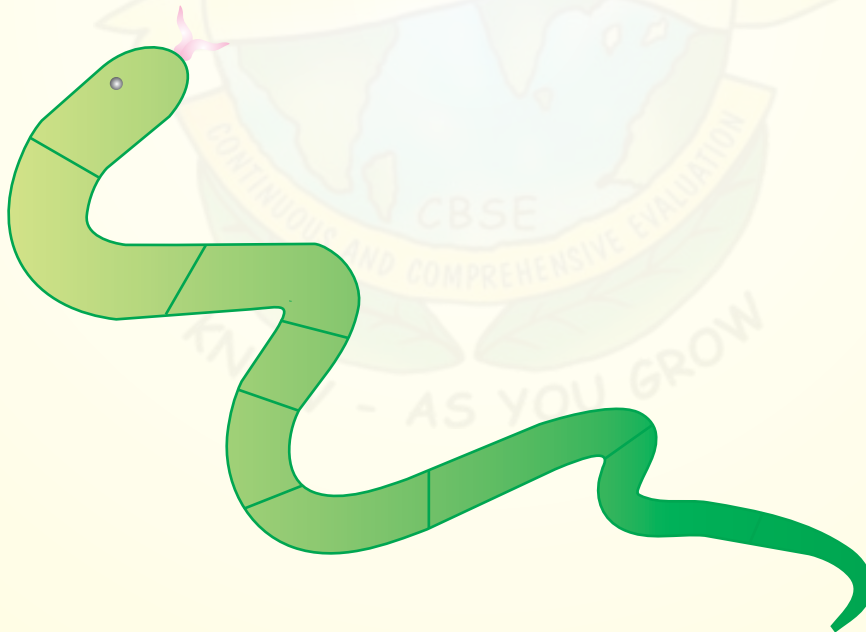
- अच्छा, स्पष्ट और सुंदर मार्गदर्शक चित्र बनाने वाले छात्रों की सराहना अवश्य की जाए। अपने को अभिव्यक्त करने में असमर्थ पाने वाले छात्रों का सही मार्गदर्शन किया जाए।

प्रदत्त कार्य 5 : समाज में फैली रूढ़ियाँ और अंधविश्वास : एक वार्ता

उद्देश्य :

- समाज में फैली कुरीतियों की जानकारी देना
- समाज सुधार की भावना उत्पन्न करना
- वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत सोच का विकास करना
- समाज के प्रति उत्तरदायित्व को अनुभव कराना।
- चिंतनशीलता का विकास करना।
- तार्किकता का विकास करना।

प्रक्रिया



- अध्यापक कक्षा में अंधविश्वासों और रूढ़ियों के बारे में बताएगा।
- व्यक्तिगत रूप से कार्य दिया जाएगा।



Unit 16

- ❖ अध्यापक श्यामपट्ट पर अजगर की बड़ी सी आकृति बना देगा जिस पर प्रत्येक विद्यार्थी लगभग तीन-चार शब्दों में एक अंधविश्वास लिख देगा और बोलकर सुनाएगा।
- ❖ (5-10) कुछ बचे हुए विद्यार्थियों द्वारा अंध विश्वासों के प्रभाव बताए जाएंगे।
- ❖ (5-10) विद्यार्थी इसके निराकरण / उपाय भी बताएंगे।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

अंध विश्वास का उल्लेख, प्रभाव व उपाय	2
भाषा	2
प्रभावशाली वाचन	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वतंत्र रूप से मूल्यांकन के अन्य आधार भी बना सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ स्वतंत्र चिंतन और बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य करने वाले विद्यार्थियों की सराहना अवश्य करें तथा संकोची एवं सुस्त विद्यार्थियों को प्रोत्साहित कर आगे लाएं। अध्यापक की सहायता के लिए कुछ संकेत -

प्रचलित अंधविश्वास व रूढ़ियाँ

1. चलते समय छींकना
2. बिल्ली द्वारा रास्ता काटना
3. मार्ग में पंडित का मिलना
4. पानी की खाली बाल्टी दिखना
5. कौवे का काँव काँव करना
7. बृहस्पतिवार को कपड़े न धोना
8. शनिवार को अशुभ मानना
9. सूर्य ग्रहण / चंद्रग्रहण को अशुभ मानना
10. नमक अथवा दूध का गिरना, काँच का टूटना अशुभ मानना आदि-आदि



बच्चे काम पर जा रहे हैं

राजेश जोशी

रचनात्मक मूल्यांकन - बच्चे काम पर जा रहे हैं

प्रदत्त कार्य 1 : बच्चे / बचपन पर आधारित स्वरचित अथवा संकलित कविता का वाचन

उद्देश्य :

- रचनात्मक क्षमता का विकास।
- काव्य विधा के प्रति रुझान उत्पन्न करना।
- गायन शैली का विकास करना।
- कलात्मक अभिरुचि उत्पन्न करना।
- समाज के उपेक्षित वर्ग की ओर संवेदना जगाना।
- वाचन कौशल में समृद्धि लाना।

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम शिक्षक बच्चे / बचपन पर आधारित कुछ कविताओं का उदाहरणार्थ कक्षा में वाचन करें।
- कविता रचना के लिए कुछ शीर्षक बताकर विद्यार्थियों को प्रेरित करें। जैसे कूड़ा बीनते बच्चे, बर्तन धोते बच्चे, पॉलिश करते बच्चे आदि।
- विद्यार्थी कम से कम 6-8 पंक्ति की कविता लिखें या संकलित करें।
- प्रक्रिया से दो दिन पूर्व ही यह कार्य दे दिया जाए।
- विद्यार्थी एक-एक करके कविता वाचन करेंगे।
- मूल्यांकन के आधार शिक्षक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख दें।
- इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

विषय वस्तु	2
लय, हाव-भाव	1
उच्चारण की शुद्धता एवं स्वर की स्पष्टता	1
आत्म विश्वास	1



Unit 17

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक अन्य किसी उपयुक्त बिन्दु के आधार पर भी मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छे वाचन के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करना व सराहना करना।
- ❖ वर्तनी तथा उच्चारण अशुद्धि के लिए उपयुक्त मार्गदर्शन करें।
- ❖ अच्छे वाचन करने वाले विद्यार्थियों से विद्यालय मंच पर भी कविता पाठ कराया जा सकता है।

प्रदत्त कार्य 2 : बाल श्रम पर नुक्कड़ नाटक

उद्देश्य :

- ❖ बाल-श्रम के प्रति जागरूकता का प्रयास करना।
- ❖ नुक्कड़ नाटक विधा की जानकारी देना।
- ❖ संवाद लेखन क्षमता का विकास करना।
- ❖ सहभागिता की प्रवृत्ति विकसित करना।
- ❖ अभिनय क्षमता का विकास करना।
- ❖ ग्रहणशीलता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ वाचन एवं श्रवण कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक 'नुक्कड़ नाटक' के विषय में कक्षा में चर्चा करेंगे। विभिन्न स्थानों पर कार्य करने वाले बाल श्रमिकों पर आधारित नुक्कड़ नाटक करने की प्रेरणा देंगे।
- ❖ यह कार्य कविता पाठन के पश्चात किया जायेगा।
- ❖ तैयारी हेतु एक सप्ताह का समय दिया जाए।
- ❖ बीच-बीच में कार्य प्रगति पर चर्चा करते हुए शिक्षक विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करेंगे।
- ❖ कक्षा को छह-सात समूहों में विभक्त किया जाए।
- ❖ प्रस्तुति के लिए एक समूह को 3-4 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ जब एक समूह प्रस्तुतीकरण देगा तो अन्य समूह मूल्यांकन करेंगे।
- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रस्तुतीकरण से पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दें।



मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
भाषा - शब्द चयन, सटीक वाक्य/संवाद	2
सहभागिता - सक्रिय योगदान	1
प्रस्तुतीकरण - हाव-भाव	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक स्वतंत्र रूप से मूल्यांकन के आधार निश्चित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अभिनय क्षमता की सराहना करना।
- ❖ सामूहिक प्रयासों के लिए प्रोत्साहित करना।
- ❖ अभिनय एवं संवाद की दृष्टि से कमी होने पर उन्हें दूर करने के लिए सुझाव दें।



प्रदत्त कार्य 3 : कविता से प्रदत्त शब्दों से वाक्य निर्माण

उद्देश्य :

- ❖ शब्द प्रयोग की गहराई समझना।
- ❖ शब्द भंडार समृद्ध होना।



Unit 17

रचनात्मक मूल्यांकन - बच्चे पर जा रहे

- भाषा ज्ञान की अभिवृद्धि होना।
- अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना।
- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत रूप से कार्य कराया जाएगा।
- एक कालांश का समय दिया जाएगा।
- अध्यापक कविता संबंधी शब्दों की एक टोकरी श्यामपट्ट पर बना देगा।

कोहरे	सड़क		
बच्चे	सुबह-सुबह		
समय	भयानक	विवरण	
पंक्ति	अंतरिक्ष	दीपक	
घर	किताबें	रंग-बिरंगी	पहाड़
	क्यों	मैदान	बगीचे
आग	भूकंप	इमारतें	दबना
मदरसा	दुनिया	खिलौने	चीजें
			छोटे-छोटे

- सभी बच्चे दो-दो शब्द अपनी पसंद के छाँट लेंगे और अपनी नोट बुक में तत्संबंधी वाक्य लिखेंगे जिसके लिए उन्हें 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- अध्यापक क्रमानुसार सभी वाक्य सुनेगा
- मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर पहले ही लिख दिए जाएंगे।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

वाक्य का स्तर	1
वाक्य रचना	1
प्रभावशाली वाचन	1
भाषा शुद्धता	1
विषयानुरूपता	1





प्रतिपुष्टि

- अच्छे वाक्य बनाने वाले बालकों की सराहना की जाए तथा औसत से कम स्तर का कार्य करने वालों का मार्ग दर्शन कर उन्हें सुंदर वाक्य रचना के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य 4 : चाय की दुकान पर काम करने वाले बाल मजदूर से भेंटवार्ता (कार्य प्रपत्र)

उद्देश्य :

- बाल मजदूरों के प्रति संवेदनशील बनाना।
- बाल मजदूरी गैर कानूनी है, यह जागरुकता उत्पन्न करना।
- गरीब बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना।
- अपने अधिकारों के प्रति सचेत करना।
- भेंटवार्ता की विधा से परिचित कराना।
- बोलने व सुनने की क्षमता का विकास विकास।
- लेखन कौशल की प्रवीणता उत्पन्न करना।

प्रक्रिया

- अध्यापक कविता पढ़ाने के बाद बच्चों को भेंटवार्ता विधा के बारे में बताएगा।
- विद्यार्थियों को भेंटवार्ता के लिए दो दिन का समय दिया जाएगा।
- विद्यार्थी उस भेंटवार्ता में निम्नलिखित कार्य प्रपत्र के अनुसार प्रश्न पूछकर प्रपत्र पर बाल मजदूर द्वारा दिए गए उत्तर लिखकर अध्यापक को देगा।
- प्रपत्र अध्यापक द्वारा जाँचकर उन्हें अंक दिए जा सकते हैं।
- अध्यापक मूल्यांकन के आधार श्यामपट्ट पर पहले ही लिख देगा।

कार्य प्रपत्र

- बच्चे का नाम
- उसकी आयु
- उसका कार्य
- उसका परिवार
- परिवार की आय

Unit 17

श्रेष्ठ
रहे
जा
पर
काम
बच्चे
मूल्यांकन -
रचनात्मक

- ❖ क्या उसे स्कूल आना अच्छा लगता है?
- ❖ वह क्या बनना चाहता है?
- ❖ क्या वह अपने वर्तमान कार्य से संतुष्ट है?
- ❖ क्या उसका मालिक उसे पीटता है?
- ❖ क्या उसे मालूम है कि बाल श्रम गैर कानूनी है?
- ❖ अपनी राय दो वाक्यों में लिखें।

मूल्यांकन आधार	अंक विभाजन
अधिकतम जानकारी	2
भाषा की शुद्धता	2
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वतंत्रतापूर्वक अन्य मूल्यांकन आधार भी बना सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ साफ और सुंदर तरीके से प्रपत्र भरने वाले छात्रों की सराहना की जाए तथा ठीक प्रकार से कार्य न करने वालों की सहायता की जाए।

प्रदत्त कार्य 5 : 'कोहरे की वह सुबह' अनुभव लेखन व वाचन।

उद्देश्य :

- ❖ कल्पना शीलता का विकास करना।
- ❖ आत्मचिंतन की प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करना।
- ❖ आत्मविश्वास में वृद्धि करना।
- ❖ बौद्धिक क्षमता का विकास करना।
- ❖ लेखन व वाचन कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों को विषय से अवगत कराएँ। घने कोहरे की किसी सुबह का कोई यादगार अनुभव लिखने के लिए प्रेरित करें। (पाँच से दस वाक्य में)



- ❖ यह व्यक्तिगत कार्य है। एक दिन पूर्व ही छात्रों को यह कार्य दिया जाए।
- ❖ प्रक्रिया के समय विद्यार्थी अपने-अपने अनुभव सुनाएंगे। प्रत्येक विद्यार्थी को 1/2 से 1 मिनट तक का समय दिया जाए।
- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दें।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

विषय वस्तु की क्रमबद्धता	2
भाषा की शुद्धता एवं स्पष्टता	1
प्रवाहमयता	1
आत्मविश्वास	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक अन्य उपयुक्त आधार पर भी मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ आत्मविश्वास के साथ प्रवाहपूर्ण प्रस्तुतीकरण के लिए सराहना।
- ❖ जो विद्यार्थी ठीक प्रकार से कार्य नहीं कर पाएँ उनका मार्गदर्शन करते हुए प्रोत्साहन।
- ❖ छात्रों को अन्य विषयों पर अपने अनुभव लिखने के लिए प्रेरित करें।

रचनात्मक मूल्यांकन - बच्चे रचे रहे जा पर काम





इस जल प्रलय में ✨

फणीश्वर नाथ रेणु

में
प्रलय
इस जल
- इस
मूल्यांकन
रचनात्मक

प्रदत्त कार्य 1 : प्राकृतिक आपदाएँ आने पर सुरक्षा के क्या-क्या प्रयास किए जा सकते हैं और उनके लिए क्या पूर्व तैयारी की जा सकती है।

प्राकृतिक आपदाएँ - बाढ़, अकाल (सूखा), आग लगना, भूकंप।

उद्देश्य :

- ❖ आपदा प्रबंधन की जानकारी देना।
- ❖ आपातकाल में भी मनोबल बनाए रखने की प्रवृत्ति
- ❖ परिस्थिति के अनुसार जूझने की प्रवृत्ति
- ❖ साहसी बनाना
- ❖ वाचन-लेखन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- ❖ शिक्षक सर्वप्रथम विषय की जानकारी देकर कक्षा को चार समूहों में विभक्त कर दें।
- ❖ प्रत्येक समूह को उपर्युक्त प्राकृतिक आपदाओं का एक-एक विषय चर्चा करके लिखने को दे दें।
- ❖ समूह में चर्चा करके लिखने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाए। इस बीच शिक्षक चारों समूहों में घूम कर छात्रों का मार्गदर्शन कर सकते हैं।
- ❖ समूह कार्य संपन्न होने पर प्रत्येक समूह का प्रस्तुतीकरण, जिसके लिए 10 से 15 मिनट का समय लग सकता है।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिन्दु शिक्षक प्रक्रिया प्रारम्भ होने से पूर्व ही श्यामपट्ट पर लिख दें।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

विषय की पूर्ण जानकारी	1
सुरक्षा के प्रयास	2
आपदा प्रबंधन की पूर्व तैयारी	2

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वतंत्र रूप से अन्य किसी उपयोगी बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बनाकर अंक दे सकते हैं।



Unit 18

प्रतिपुष्टि

- ❖ छात्रों को विषय की जानकारी न होने की स्थिति में शिक्षक उन्हें सभी महत्वपूर्ण जानकारी दे दें।
- ❖ यदि आवश्यकता समझें तो प्रदर्शन करके दिखाया जा सकता है।
- ❖ अध्यापक चाहे तो सामाजिक विज्ञान विषय के अध्यापक से भी सहायता ले सकते हैं।

में
प्रलय
जल
इस
-
मूल्यांकन
रचनात्मक

प्रदत्त कार्य 2 : पानी पर मुहावरे एकत्रित / संकलित करना

उद्देश्य :

- ❖ पाठ को समझने में आसानी होगी।
- ❖ पाठ को रोचक बनाना।
- ❖ कक्षा का वातावरण हल्का-फुल्का व आह्लादपूर्ण बनाना।
- ❖ भाषा को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करना।
- ❖ मुहावरों को समझना।

प्रक्रिया

- ❖ कक्षा को चार समूहों में विभाजित करना
- ❖ प्रत्येक समूह दो-दो मुहावरे बनाएगा और प्रत्येक विद्यार्थी मुहावरों पर एक-एक वाक्य लिखेगा / सुनाएगा।
- ❖ अध्यापक को स्वतंत्रता है कि वह लिखकर कराए अथवा मौखिक रूप में विद्यार्थियों से सुने।
- ❖ अध्यापक विद्यार्थियों के मार्ग दर्शन के लिए दो तीन मुहावरे बताएगा -
 - ❖ घाट-घाट का पानी पीना
 - ❖ आँख का पानी मरना
 - ❖ पानी भरना
- ❖ तैयारी के लिए 10 मिनट व, सुनाने में 15-20 मिनट का समय दिया जाएगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

मुहावरे ढूँढना	2
अर्थ बताना	1
वाक्य में प्रयोग	1
भाषा	1



टिप्पणी

- अध्यापक अपनी कक्षा की स्थिति के अनुरूप मूल्यांकन के आधार तय करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- अगर विद्यार्थियों द्वारा दो-तीन मुहावरे ही बताए जाते हैं तो उन्हें निम्नलिखित मुहावरे भी बताए जा सकते हैं -
 - ❖ पानी-पानी होना
 - ❖ आंख में पानी भर आना
 - ❖ पानी सिर से ऊपर जाना
 - ❖ पानी उतरना
 - ❖ पानी में रहकर मगरमच्छ से बैर
 - ❖ चुल्लू भर पानी में डूब मरना
 - ❖ पानी फेरना

प्रदत्त कार्य 3 : वाद-विवाद

विषय : मीडिया केवल सूचनाएँ देने का कार्य करता है।

उद्देश्य :

- मीडिया के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करना
- तार्किक प्रवृत्ति का विकास करना
- सहभागिता, सहनशीलता एवं धैर्य की प्रवृत्ति को विकसित करना
- भाषण कला कौशल का विकास (धाराप्रवाह अभिव्यक्ति)

प्रक्रिया - (समूह कार्य)

- अध्यापक द्वारा वाद-विवाद का स्वरूप समझाना
- विद्यार्थियों को चार भागों में विभक्त किया जाएगा।
- प्रत्येक समूह को पक्ष एवं विपक्ष में अपने विचार लिखने को दिए जाएंगे।
- विषय तैयार करने के लिए 10-15 मिनट का समय दिया जाएगा। इस बीच अध्यापक प्रत्येक समूह के पास जाकर निरीक्षण करेंगे कि प्रत्येक छात्र इसमें रुचिपूर्वक प्रतिभागी बन रहे हैं या नहीं।



Unit 18

में
प्रलय
इस जल
मूल्यांकन - इस जल
रचनात्मक मूल्यांकन

- ❖ विषय तैयार करने के पश्चात् प्रत्येक समूह से एक-एक छात्र पक्ष एवं विपक्ष पर संगृहीत विचार प्रस्तुत करेंगे।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिन्दुओं को शिक्षक प्रक्रिया पूर्व ही श्यामपट्ट पर लिख दें।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

विषय से संबंधित जानकारी	1
तार्किक क्षमता	1
भाषायी दक्षता एवं सुसंबद्धता	1
अभिव्यक्ति / प्रस्तुतीकरण	1
उपयुक्त उदाहरण - तर्क की पुष्टि के लिए	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वतंत्र रूप से आधार बिन्दु (मूल्यांकन हेतु) निश्चित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ प्रत्येक वक्ता को प्रोत्साहित करना
- ❖ मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखना
- ❖ अध्यापक इस बात का ध्यान रखे कि सभी छात्र क्रियाशील रहें।

प्रदत्त कार्य 4 : बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में सरकारी, गैर सरकारी और स्वयंसेवी संस्थाओं का योगदान - विषय पर नाटक के माध्यम से प्रस्तुति।

उद्देश्य :

- ❖ सामान्य ज्ञान की अभिवृद्धि करना
- ❖ अभिनय क्षमता का विकास करना
- ❖ संवाद-लेखन कौशल का विकास करना
- ❖ मंचन के लिए अनिवार्य तत्वों की जानकारी देना
- ❖ प्रस्तुतीकरण कौशल का विकास करना
- ❖ सहभागिता की प्रवृत्ति को विकसित करना

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक कक्षा में नाटक के मुख्य तत्वों की जानकारी विद्यार्थियों को श्यामपट्ट पर लिखकर देगा।



- मूल्यांकन के आधार बिन्दुओं को मूल्यांकन से पहले ही विद्यार्थियों को बता देगा।
- अध्यापक कक्षा को तीन समूहों में बाँटकर प्रत्येक समूह को एक-एक विषय आवंटित कर देगा।
- अध्यापक विषय के तीनों पक्षों पर कक्षा में परिचर्चा करेगा।
- नाटक की तैयारी के लिए विद्यार्थियों को एक सप्ताह का समय अग्रिम दिया जा सकता है।
- अध्यापक सप्ताह के मध्य में नाटक की प्रगति से संबंधित जानकारी कक्षा में / कक्षा से बाहर प्राप्त कर सकता है।
- नियत समय पर प्रत्येक समूह का मूल्यांकन अध्यापक स्वयं, किसी दूसरे शिक्षक की सहायता से और कक्षा के अन्य समूह करेंगे।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

सटीक भाषा प्रयोग	1
संवाद शैली	1
अभिनय शैली	1
प्रस्तुतीकरण	1
सहभागिता	1

टिप्पणी

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से अन्य उचित मूल्यांकन बिन्दुओं को आधार बनाकर मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- अध्यापक अवश्य ध्यान दे कि नाटक की प्रस्तुति में प्रत्येक विद्यार्थी की सहभागिता हो।
- अच्छे मंचन के लिए विद्यार्थियों को सराहा जाना अनिवार्य रूप से हो।
- अध्यापक की सुविधा के लिए कुछ संकेत बिन्दु -

सरकारी संस्था	गैर सरकारी संस्था	स्वयं सेवी संस्था
हैलीकाप्टर	खाद्य पदार्थ	खाद्य पदार्थ
हवाई जहाज	बर्तन	बर्तन
रेलगाड़ी	कपड़े	कपड़े
मोटर नाव	दवा	सांत्वना
अनुदान	पुनर्वास	सेवा,
सुश्रुषा	डॉक्टर	



Unit 18

में
प्रलय
जल
इस
मूल्यांकन -
रचनात्मक

दवा	आर्थिक सहायता
सेना	जीवन जीने की आशा
पुलिस	खाद्य पदार्थ
शिक्षा, संवेदना	संरक्षण

प्रदत्त कार्य 5 : जल पर नारे बनवाना

उद्देश्य :

- मौलिकता का विकास करना
- रचनात्मकता की प्रेरणा देना
- सक्रिय योगदान देना
- तुक और लय का ज्ञान होना
- पाठ को समझने में सुविधा होना
- लेखन कौशल में प्रवीणता

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम अध्यापक एक दो नारे उदाहरण के लिए बनाकर विषय स्पष्ट करेगा
- चार-चार विद्यार्थियों का एक समूह बनाया जाएगा
- सोचने और लिखने के लिए 10 मिनट दिए जाएंगे
- प्रत्येक समूह दो दो नारे तैयार करेगा
- पूर्ण प्रक्रिया में 20-25 मिनट का समय लगेगा।
- मूल्यांकन आधार श्यापमट्ट पर लिखे जाएँगे।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

प्रस्तुतीकरण	1
लय	1
तुक	1
प्रवाह	1
आकर्षक एवं संक्षिप्त	1



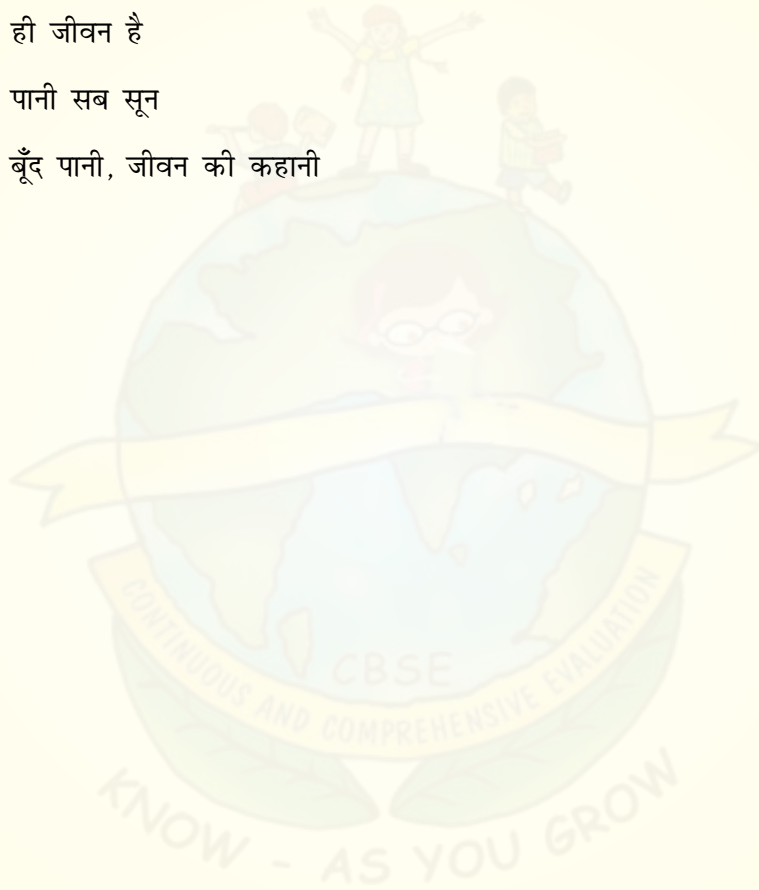
टिप्पणी

- ♦ अध्यापक स्वतंत्र रूप से किसी अन्य उपयोगी बिन्दु के आधार पर भी अंक प्रदान कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ♦ विद्यार्थियों के रचनात्मक कार्य की सराहना अवश्य की जाए।
- ♦ जो समूह नारे बनाने में सफल न हो सके उनको उदाहरणार्थ अन्य नारे भी बताये जा सकते हैं
 - ♦ जल ही जीवन है
 - ♦ बिन पानी सब सून
 - ♦ एक बूँद पानी, जीवन की कहानी

में
प्रलय
जल
इस - मूल्यांकन
रचनात्मक





मेरे संग की औरतें

मृदुला गर्ग

प्रदत्त कार्य 1 : 'नारीवाद क्या है?' लेखन एवं प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य :

- ❖ नारी लेखन के प्रति रुचि उत्पन्न करना
- ❖ लैंगिक समानता के प्रति संवेदनशील बनाना
- ❖ लेखन एवं अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना
- ❖ नारी के नित्य प्रति जीवन की सूचनाओं की जानकारी देना
- ❖ वाचन एवं लेखन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक विषय के संबंध में जानकारी देंगे।
- ❖ व्यक्तिगत रूप से कार्य।
- ❖ गतिविधि की सूचना एक दिन पूर्व ही दे दी जाए।
- ❖ विद्यार्थी 100 से 150 शब्दों में प्रस्तुतीकरण तैयार करके लाएँगे।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिन्दु शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दें।
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी को लगभग एक मिनट का समय सुनाने के लिए दिया जाएगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

विषय संबद्धता	2
उपयुक्त उदाहरण	1
भाषायी दक्षता एवं शुद्धता	1
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक अन्य उपयुक्त मूल्यांकन के आधार बिन्दु निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।



Unit 19

प्रतिपुष्टि

- शिक्षक प्रस्तुतीकरण को ध्यान में रखते हुए एक संक्षिप्त टिप्पणी करेगा।
- विद्यार्थियों से तीन अच्छे प्रस्तुतीकरण को चिह्नित करने को कहा जाए।
- अच्छे प्रस्तुतीकरण की सराहना करेंगे।

प्रदत्त कार्य 2 : महत्वपूर्ण लेखिकाओं की सूची तैयार करना

उद्देश्य :

- सामान्य ज्ञान का विकास करना
- नारी लेखन के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना
- खोजपरक प्रवृत्ति का विकास करना
- पुस्तकालय के प्रयोग के प्रति अभिरुचि विकसित करना।
- लेखन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम अध्यापक विषय की जानकारी देते हुए स्रोत सामग्री के विषय में बताएं।
- व्यक्तिगत कार्य दिया जाए।
- इस कार्य को करने के लिए तीन दिन पूर्व छात्रों को सूचना दी जाए।
- प्रक्रिया के समय छात्र एक-एक करके सूची पढ़ेंगे।
- यह कार्य एक कालांश में सम्पन्न हो जाएगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

9 से 10 नाम सही होने पर	5
7-8	4
5-6	3
3-4	2
1-2	1

प्रतिपुष्टि

- शिक्षक सभी विद्यार्थियों की सूची एकत्र करके कक्षा बोर्ड पर लगा दें।
- सभी विद्यार्थियों को समग्र सूची उत्तर पुस्तिका में लिखने के लिए कहें।



- ❖ अध्यापक की सुविधा के लिए कुछ महत्वपूर्ण लेखिकाओं की सूची दी जा रही है।
- | | | | |
|--------------|---------------|---------------|----------------------|
| कृष्णा सोबती | शिवानी | चित्रा मुद्गल | अनामिका |
| ममता कालिया | मृदुला गर्ग | महादेवी वर्मा | सुभद्रा कुमारी चौहान |
| मन्नू भंडारी | उषा प्रियंवदा | | |

प्रदत्त कार्य 3 : स्त्रियों को विवाह के पश्चात् उपनाम बदल लेना चाहिए - वाद विवाद

उद्देश्य :

- ❖ लैंगिक समानता के प्रति संवेदनशील बनाना।
- ❖ आधुनिक समय की मांग को जानना और पहचानना।
- ❖ प्रत्येक स्थिति के पक्ष और विपक्ष में सोचने की प्रवृत्ति जगाना।
- ❖ तार्किकता का विकास करना।
- ❖ अपने तर्क से सुनने वालों को विश्वस्त करना
- ❖ वाचन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक विषय के बारे में जानकारी देगा।
- ❖ सोचने के लिए 5-10 मिनट का समय देगा।
- ❖ पक्ष और विपक्ष के दो समूह कक्षा में बना दें।
- ❖ 20 मिनट का वाद विवाद होगा।
- ❖ सभी विद्यार्थियों की प्रतिभागिता अनिवार्य है।
- ❖ शिक्षक उनके तर्कों को ध्यानपूर्वक सुनेगा

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

विषय वस्तु	2
तार्किकता	1
स्पष्ट उच्चारण	1
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वतंत्ररूप से अन्य मूल्यांकन आधार भी बना सकता है।



Unit 19

प्रतिपुष्टि

- सार्थक एवं प्रभावपूर्ण तर्क देने वाले विद्यार्थियों की सराहना करें और स्वयं को अभिव्यक्ति में असमर्थ पाने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देकर उनका मार्गदर्शन करें।

प्रदत्त कार्य 4 : 'अगर हमारे समाज में लड़कियाँ न होंगी तो क्या होगा' विषय पर नाटकीकरण

उद्देश्य :

- कल्पनाशीलता का विकास
- 'वर्तमान समस्याओं का भविष्य पर क्या प्रभाव पड़ सकता है' के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना
- चिंतन एवं मनन की क्षमता का विकास
- अभिनय क्षमता का विकास
- वाचन कौशल अथवा मौखिक अभिव्यक्ति में समर्थ बनाना

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत रूप से
- सभी विद्यार्थी इसमें संवाद बोलकर, गाकर, अभिनय करके इसे नाटक के रूप में प्रस्तुत करेंगे।
- अध्यापक विषय को श्यामपट्ट पर लिख दें।
- सभी विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से अभिनय करने की स्वतंत्रता है।
- इस प्रक्रिया में सोचने के लिए 5-10 मिनट दिए जाएं।
- अभिनीत करने के लिए 20-25 मिनट का समय दिया जाए।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

अभिनय क्षमता	1
संवाद योजना	1
समग्र प्रभाव	1
विषय से संबद्धता	1
उपयुक्त पात्र चयन	1

टिप्पणी

- अध्यापक अपने मतानुसार अन्य मूल्यांकन आधार भी निर्धारित कर सकता है।



प्रतिपुष्टि

- अध्यापक प्रभावशाली अभिनय प्रस्तुति देने वाले छात्रों की सराहना करे तथा अभिनय में संकोच करने वाले विद्यार्थियों के मनोबल को बढ़ाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करे।

प्रदत्त कार्य 5 : माँ की भूमिका में पिता - समूह चर्चा

उद्देश्य :

- लैंगिक समानता के प्रति संवेदनशील बनाना
- कल्पनाशीलता की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना
- तार्किक क्षमता की प्रवृत्ति का विकास
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास
- वाचन क्षमता को समृद्ध करना

प्रक्रिया

- सामूहिक कार्य
- शिक्षक सर्वप्रथम विषय से संबंधित में जानकारी दे दे।
- प्रत्येक समूह में 8-10 विद्यार्थी होंगे
- समूह चर्चा के लिए 5-10 मिनट का समय दिया जाए।
- मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्याम पट्ट पर लिख दें।
- शिक्षक प्रक्रिया के दौरान प्रत्येक समूह में जाकर विद्यार्थियों के क्रियाकलापों का निरीक्षण करेंगे।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

उपयुक्त अवसर पर भागीदारी	1
उपयुक्त तर्क	1
प्रतिपक्षी को सुनने का धैर्य	1
सार्थक हस्तक्षेप	1
आत्मविश्वास, भाषायी दक्षता	1

टिप्पणी

- अध्यापक मूल्यांकन के आधारबिन्दु स्वतंत्र रूप से निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- शिक्षक समूह चर्चा के पश्चात् सकारात्मक व नकारात्मक बिन्दुओं पर विद्यार्थियों से चर्चा करें।





रीढ़ की हड्डी

जगदीश चन्द्र माथुर

प्रदत्त कार्य 1 : वाद विवाद - लड़कियों की उच्च शिक्षा विवाह में बाधक है।

उद्देश्य :

- ❖ उच्च शिक्षा के महत्व को समझाना।
- ❖ 'लड़कियों की उच्च शिक्षा देश और समाज में आवश्यकता' पर बल देना।
- ❖ लिंग भेद की ओर जागरूकता उत्पन्न करना।
- ❖ तार्किकता की भावना को पुष्ट करना।
- ❖ समाज में सहभागिता की भावना को विकसित करना।
- ❖ धैर्य एवं उदारता की भावना उत्पन्न करना।

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक एकांकी के कथानक से जोड़ते हुए कुछ उदाहरण देकर स्पष्ट करेगा कि कभी कभी उच्च शिक्षा बाधक बन जाती है पर सिद्धान्ततः साधक है। वाद-विवाद का स्वरूप समझाएगा।
- ❖ व्यक्तिगत रूप से कार्य कराया जाएगा।
- ❖ शिक्षक मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर लिख देगा।
- ❖ एक कालांश में कार्य कराया जाएगा।
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी पक्ष अथवा विपक्ष में अपने विचार अभिव्यक्त करेगा।
- ❖ प्रस्तुतीकरण के लिए उन्हें आधा से एक मिनट का समय दिया जाएगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

ठोस तर्क	1
विषय से संबंधित जानकारी	1
अभिव्यक्ति /प्रस्तुतीकरण	1
भाषायी दक्षता	1
उपयुक्त उदाहरण तर्क की पुष्टि के लिए	1



Unit 20

टिप्पणी

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से अन्य उचित बिन्दु के आधार बनाकर भी अंक प्रदान कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- प्रत्येक वक्ता को प्रोत्साहित करना
- अच्छे वक्ताओं व उनके द्वारा प्रस्तुत विषय की सराहना करना
- मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखना
- अध्यापक प्रत्येक छात्र को सक्रिय रखने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे।

प्रदत्त कार्य 2 : विवाह में सम्पन्न होने वाली किन्हीं पाँच रस्मों पर एक आलेख।

उद्देश्य :

- सांस्कृतिक-सामाजिक क्रियाकलापों के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना
- भारतीय संस्कृति के सौंदर्यात्मक पक्ष की ओर उन्मुख करना
- अपनी सामाजिक परम्पराओं से जुड़ाव व उनका प्राचीन महत्व समझाना
- विवाह की गंभीरता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना
- सृजनात्मक लेखन कला का विकास करना।

प्रक्रिया

- अध्यापक कुछ सामान्य रस्मों/रिवाजों का उल्लेख कर विद्यार्थियों की विचारधारा को उस ओर मोड़ेगा।
- व्यक्तिगत रूप से कार्य कराया जाएगा।
- सोचने के लिए 10 मिनट का समय।
- 20 मिनट में सभी विद्यार्थी अपनी लिखित अभिव्यक्ति को पढ़कर सुनाएँगे।
- अध्यापक कक्षा में घूमकर-घूमकर देखेंगे कि सभी विद्यार्थी सृजनात्मक लेखन कर रहे हैं।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

रस्मों के चयन और लिखित कार्य की गुणवत्ता के आधार पर अंक प्रदान किए जाएँ।

पाँचों रस्मों का उल्लेख	2
रस्मों का पूर्ण विवरण	2
भाषायी दक्षता	1



टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वतंत्र रूप से अन्य आधार बिन्दु बनाकर भी अंक दे सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अध्यापक प्रमुख बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर अवश्य लिखें।
- ❖ सभी रस्मों के मूल में छिपी भावना को स्पष्ट करना।
- ❖ अच्छे आलेख की सराहना करें।

प्रदत्त कार्य : यदि मैं उमा / शंकर होता / होती तो।

उद्देश्य :

- ❖ कल्पनाशीलता का विकास
- ❖ सृजनात्मकता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ विवाह की गंभीरता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना
- ❖ सामाजिक बुराईयों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।
- ❖ निर्णय क्षमता का विकास करना।
- ❖ लेखन एवं वाचन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- ❖ छात्र व्यक्तिगत रूप से कार्य करेंगे।
- ❖ अध्यापक विषय समझाकर स्वयं के विषय में सोचने के लिए प्रेरित करेंगे।
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी को सोचने और लिखने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख दें।
- ❖ प्रक्रिया के दौरान अध्यापक घूम-घूम कर कक्षा का निरीक्षण करेंगे तथा छात्रों का मार्गदर्शन करेंगे।
- ❖ लिखने के पश्चात् प्रत्येक विद्यार्थी बारी-बारी प्रस्तुतीकरण देगा।
- ❖ इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

अभिव्यक्ति / प्रस्तुतीकरण	1
रोचकता एवं कल्पनाशीलता	1
विषय संबद्धता	1
भाषायी दक्षता	1
तर्क क्षमता	1



Unit 20

रचनात्मक मूल्यांकन - रीढ़ की हड्डी

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक अन्य उपयुक्त मूल्यांकन आधारबिन्दु बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ शिक्षक विद्यार्थियों की निर्णय क्षमता और तर्क क्षमता की सराहना करें।
- ❖ लेखन या प्रस्तुतीकरण में कमी जाने वाले विद्यार्थियों को बेहतर लिखने के लिए प्रोत्साहित करें।

प्रदत्त कार्य 4 : नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के मूल्यों में आए बदलाव को संवाद के माध्यम से अभिव्यक्ति करना।

उद्देश्य :

- ❖ परम्पराओं के प्रति विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।
- ❖ सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ वर्तमान समाज एवं परिवेश के प्रति संवेदनशील बनाना।
- ❖ लेखन कौशल का विकास करना।
- ❖ कल्पना शीलता एवं रचनात्मकता की प्रवृत्ति का विकास

प्रक्रिया

- ❖ समूह कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक विषय से परिचित कराएंगे।
- ❖ प्रत्येक समूह में पांच विद्यार्थी होंगे।
- ❖ समूह चर्चा एवं संवाद लेखन के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधार अध्यापक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख दें।
- ❖ समूह अपनी रुचि के अनुसार नई पीढ़ी अथवा पुरानी पीढ़ी का चयन करेगा तथा संवाद लेखन के पश्चात् प्रत्येक समूह के सभी सदस्य मिलकर उसकी प्रस्तुति करेंगे।
- ❖ प्रत्येक समूह को प्रस्तुतीकरण के लिए अधिकतम 2 मिनट का समय दिया जाएगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

विषय संबद्धता	1
मानवीयता एवं संवेदनशीलता का समावेश	1
रोचकता एवं कल्पनाशीलता	1



संवाद योजना एवं भाषायी दक्षता	1
प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक मूल्यांकन के अन्य उचित आधार बिन्दु निश्चित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ रोचक एवं प्रभावी प्रस्तुतीकरण पर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों द्वारा चर्चा की जाए।
- ❖ शिक्षक नई तथा पुरानी पीढ़ी के मूल्यों पर संक्षिप्त टिप्पणी करेंगे।

प्रदत्त कार्य 5 : 'स्त्री शिक्षा' विषय पर नारा (स्लोगन) लेखन

उद्देश्य :

- ❖ सृजनात्मक क्षमता का विकास करना
- ❖ कल्पनाशीलता का विकास करना
- ❖ तुक एवं लय का ज्ञान होना
- ❖ सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना
- ❖ लेखन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत रूप से कार्य करवाया जाएगा
- ❖ पाठ को समझाने के बाद शिक्षक कुछ संबंधित नारे विद्यार्थियों को सुनाएंगे।
- ❖ गतिविधि की सूचना एक दिन पूर्व दे दी जाएगी तथा विद्यार्थियों से आवश्यक सामग्री (चार्ट, रंग, पेन्सिल, इत्यादि) लेकर आने को कहा जाएगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख दें।
- ❖ इस कार्य हेतु विद्यार्थियों को 30 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ इस प्रक्रिया के दौरान शिक्षक कक्षा में घूम-घूम कर विद्यार्थियों का अवलोकन करेंगे।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

कल्पना की नवीनता	1
तुक एवं लय का उपयोग	1
विषय संबद्धता	1



Unit 20

रचनात्मक मूल्यांकन - रीढ़ की हड्डी

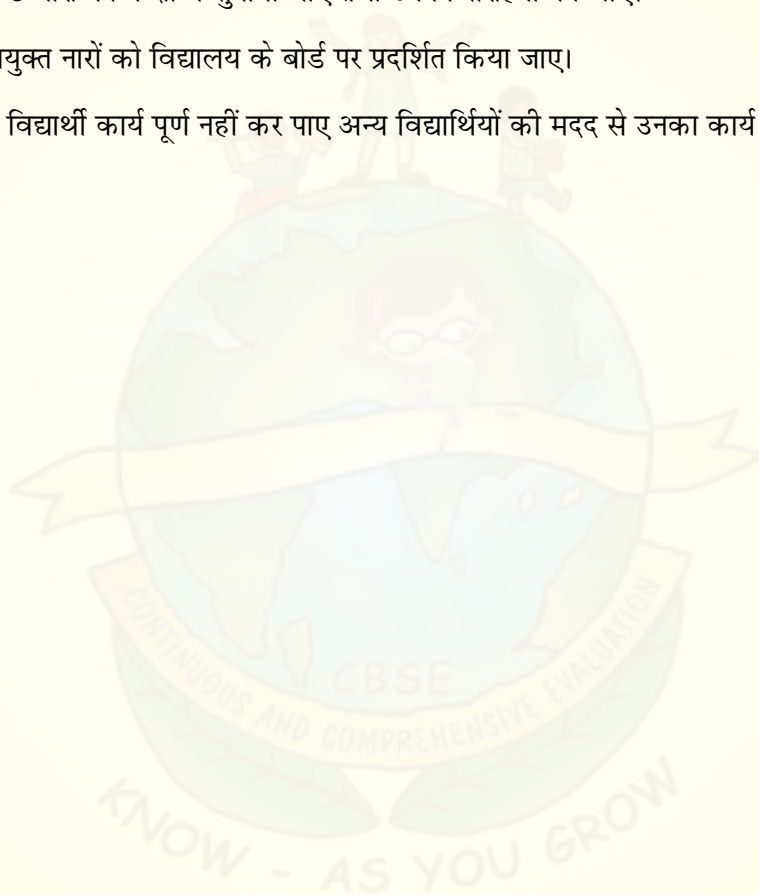
मानवीयता एवं संवेदनशीलता का समावेश	1
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक अन्य उपयोगी बिन्दुओं को भी मूल्यांकन के आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छे नारों को कक्षा में सुनाया जाए तथा उनकी सराहना की जाए।
- ❖ उपयुक्त नारों को विद्यालय के बोर्ड पर प्रदर्शित किया जाए।
- ❖ जो विद्यार्थी कार्य पूर्ण नहीं कर पाए अन्य विद्यार्थियों की मदद से उनका कार्य पूर्ण कराया जाए।



माटी वाली

विद्यासागर ठौटियाल

प्रदत्त कार्य 1 : मिट्टी से किसी एक वस्तु का निर्माण एवं प्रक्रिया का उल्लेख।

उद्देश्य :

- ❖ मिट्टी की महत्ता से परिचित कराना
- ❖ सृजनात्मक प्रवृत्ति का विकास
- ❖ श्रम के महत्व से परिचित कराना
- ❖ श्रमजीवी के प्रति संवेदनशील बनाना
- ❖ तकनीकी लेखन के प्रति रुचि उत्पन्न करना
- ❖ लेखन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- ❖ यह कार्य व्यक्तिगत रूप से होगा।
- ❖ अध्यापक गतिविधि से एक दिन पूर्व सूचना दे देंगे तथा आवश्यक सामग्री लाने का निर्देश देंगे।
- ❖ मिट्टी से बनी कुछ चीजें नमूने के रूप में दिखाई जाएँ।
- ❖ इस कार्य के लिए पूरे कालांश का समय दिया जाए।
- ❖ इस गतिविधि के दौरान शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी की गतिविधियों का अवलोकन करेंगे तथा आवश्यक मार्गदर्शन करेंगे।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिन्दु शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

उपयुक्त चयन	1
निर्मित सामग्री की गुणवत्ता	2
प्रक्रिया का उचित उल्लेख	2

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक मूल्यांकन के आधार बिन्दु स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।



Unit 21

प्रतिपुष्टि

- ❖ शिक्षक उत्कृष्ट आकृति का प्रदर्शन कर सकते हैं।
- ❖ शिक्षक श्रम के सौन्दर्य पर संक्षिप्त टिप्पणी कर सकते हैं।
- ❖ समय पर कार्य पूर्ण न कर पाने वाले विद्यार्थियों को शिक्षक एवं अन्य विद्यार्थी सहयोग दें तथा प्रेरित करें।

प्रदत्त कार्य 2 : पुनर्वास से जुड़ी समस्याओं पर समूह चर्चा

उद्देश्य :

- ❖ पुनर्वास से जूझ रहे लोगों के प्रति संवेदनशील बनाना
- ❖ सहभागिता की भावना का विकास करना
- ❖ विचार विश्लेषण क्षमता का विकास करना
- ❖ तार्किक क्षमता की प्रवृत्ति का विकास करना
- ❖ अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना
- ❖ वाचन क्षमता का विकास

प्रक्रिया

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ प्रत्येक समूह में आठ से दस विद्यार्थी होंगे।
- ❖ शिक्षक सर्वप्रथम विषय की पूर्ण जानकारी दे दें।
- ❖ समूह चर्चा के लिए 5-10 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ इस दौरान शिक्षक प्रत्येक समूह में जाकर विद्यार्थियों के क्रियाकलापों को दर्ज करेंगे।
- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख दें।
- ❖ इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय अपेक्षित है।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

उपयुक्त अवसर पर भागीदारी	1
उपयुक्त तर्क	1
प्रतिपक्षी को सुनने का धैर्य	1
सार्थक हस्तक्षेप	1
आत्मविश्वास, भाषायी दक्षता	1



टिप्पणी

- ❖ अध्यापक मूल्यांकन के आधार स्वतंत्र रूप से निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ शिक्षक पुनर्वास से जुड़ी कुछ समस्याओं का उदाहरण देते हुए समग्र रूप से समूह चर्चा पर टिप्पणी करे।

प्रदत्त कार्य 3 : गली-मोहल्ले, रेहड़ी-पटरी पर सामान बेचने वालों के संवाद लेखन एवं प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य :

- ❖ लेखन कौशल का विकास करना
- ❖ श्रमजीवी लोगों के प्रति संवेदनशीलता की प्रवृत्ति का विकास करना
- ❖ अभिनय क्षमता का विकास करना
- ❖ उच्चारण के विभिन्न तरीकों से परिचित करना

प्रक्रिया

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ प्रत्येक समूह में पाँच विद्यार्थी होंगे।
- ❖ प्रत्येक समूह को कम से कम पाँच वाक्य लिखने होंगे। प्रत्येक विद्यार्थी की सहभागिता अनिवार्य है।
- ❖ संवाद में बेचने वाले के तौर-तरीकों का समावेश होना चाहिए।
- ❖ शिक्षक मूल्यांकन के आधार प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँ।
- ❖ इस पूरी प्रक्रिया में 30-35 मिनट का समय लगेगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

विषय से संबद्धता	1
चयन की विविधता	1
उच्चारण एवं भाव भंगिमा	1
उपयुक्त भाषा / बोली	1
समग्र प्रभाव	1



Unit 21

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक स्वेच्छा से मूल्यांकन के आधार निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ सभी समूह एक दूसरे के सकारात्मक एवं नकारात्मक बिन्दुओं का उल्लेख करें।
- ❖ शिक्षक अच्छे कार्य की सराहना करें तथा भविष्य के लिए प्रोत्साहित करें।

प्रदत्त कार्य 4 : वृद्धों की स्थिति जानने के लिए कार्य प्रपत्र

उद्देश्य :

- ❖ अपनी बुजुर्ग पीढ़ी के प्रति आदर की भावना
- ❖ उनकी विवशताओं के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न करना
- ❖ सहिष्णुता एवं उदारता के गुण विकसित करना
- ❖ समस्याओं के प्रति यथार्थ दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा
- ❖ तार्किकता एवं स्पष्टता
- ❖ बौद्धिक क्षमता का विकास
- ❖ लेखन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक श्यामपट्ट पर कार्य-प्रपत्र बनाएगा जिसे विद्यार्थी अपनी पुस्तिका पर उतार लेंगे।

कार्य प्रपत्र

- ❖ वृद्ध का नाम
- ❖ वृद्ध की आयु
- ❖ वृद्ध की आय का साधन
- ❖ परिवार के सदस्य
- ❖ अगर बच्चे बाहर रहते हैं तो क्या अनुभव करते हैं?
- ❖ स्वास्थ्य कैसा है?
- ❖ किन रोगों से पीड़ित है?
- ❖ क्या स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध हैं?
- ❖ वर्तमान पीढ़ी के प्रति उनका दृष्टिकोण?
- ❖ आप बुजुर्गों के प्रति क्या सोचते हैं (पांच वाक्य)?



विद्यार्थियों को यह प्रपत्र भरने में दो दिन का समय लगेगा

विद्यार्थी यह प्रपत्र अपने दादा जी, पड़ोसी बुजुर्ग अथवा अन्य किसी वृद्ध की सहायता से भर सकते हैं।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

1-9 तक की प्रविष्टियों के लिए

2

अंतिम प्रविष्टि

2

सुस्पष्ट लेखन

1

टिप्पणी

- अध्यापक अपनी इच्छानुसार अन्य मूल्यांकन बिन्दु भी सम्मिलित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- अध्यापक सुस्पष्ट लेखन वाले विद्यार्थियों की सराहना करे तथा ठीक प्रकार प्रपत्र न भरने वालों को प्रोत्साहित करे।

प्रदत्त कार्य 5 : पानी एक रूप अनेक - चित्रांकन एवं लेखन

उद्देश्य :

- जल तत्व की महत्ता का प्रतिपादन
- जल संरक्षण की प्रेरणा देना
- निरीक्षण एवं अवलोकन क्षमता का विकास करना
- जल के रूप में परिवर्तनशीलता की ओर ध्यान दिलाना
- लेखन कौशल का विकास
- चिंतनशीलता का विकास
- बौद्धिक क्षमता का विकास

प्रक्रिया

- अध्यापक पूरी कक्षा को 5 समूहों में बांट देगा
- प्रत्येक समूह को जल के कम से कम चार रूपों का चित्रांकन करना होगा तथा प्रत्येक पर 5-5 वाक्य लिखना होगा।
- अध्यापक मार्गदर्शन के लिए विद्यार्थियों को ये चित्र दिखा सकता है।
- विद्यार्थी अपने पूर्वज्ञान द्वारा जल के अनेक रूपों से परिचित होते ही हैं।



Unit 21

रचनात्मक मूल्यांकन - माटी वाली

- अध्यापक श्यामपट्ट पर जल के रूप बर्फ, वर्षा, आँसू, नदी, कुआँ, झील, पोखर, नल इत्यादि दिखाकर उनकी कल्पना को जागृत करेगा।





- ❖ चित्रांकन में चित्रकारी पर कम उनकी अवलोकन क्षमता पर अधिक ध्यान दिया जाए।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

चित्र में जल का सही रूप

1

लेखन की स्पष्टता

1

विषय से संबंधित वर्णन

1

समग्र प्रभाव

1

कल्पनाशीलता

1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वतंत्र रूप से अन्य मूल्यांकन बिंदु भी निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ प्रतिभापूर्ण कार्य की सराहना तथा अन्य विद्यार्थियों को बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित करना।





किस तरह आखिरकार मैं हिन्दी में आया

शमशेर बहादुर सिंह

रचनात्मक मूल्यांकन - किस तरह आखिरकार मैं हिन्दी में आया

प्रदत्त कार्य 1 : 'शमशेर बहादुर सिंह की दो श्रेष्ठ कविताओं का संकलन एवं वाचन'

उद्देश्य :

- ❖ खोज की प्रवृत्ति विकसित करना
- ❖ रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास करना
- ❖ काव्य पाठ के प्रति रुचि पैदा करना
- ❖ अभिव्यक्ति क्षमता को अवसर प्रदान करना
- ❖ वाचन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक शमशेर बहादुर सिंह का साहित्यिक परिचय देंगे तथा स्रोत सामग्री के बारे में बतायेंगे।
- ❖ व्यक्तिगत रूप से कार्य करवाया जाएगा।
- ❖ गतिविधि की सूचना दो दिन पूर्व दी जाएगी
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिन्दु शिक्षक प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी को काव्य-पाठ के लिए अधिकतम 2 मिनट का समय दिया जाएगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

चयन की गुणवत्ता	1
उचित आरोह-अवरोह	1
शुद्ध उच्चारण	1
भाव-भंगिमा	1
समग्र प्रभाव / प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वतंत्र रूप से मूल्यांकन के आधार बिन्दु निश्चित कर सकते हैं।



Unit 22

रचनात्मक मूल्यांकन - किस तरह आखिरकार मैं हिन्दी में आया

प्रतिपुष्टि

- उचित पाठ के लिए विद्यार्थी एवं शिक्षक प्रोत्साहनपूर्ण चर्चा करेंगे।
- सारे काव्य पाठों को ध्यान में रखते हुए शिक्षक एक संक्षिप्त टिप्पणी करेगा तथा अच्छे काव्य पाठ के गुण भी बताएगा।

प्रदत्त कार्य 2 : पाठ में शमशेर बहादुर सिंह और बच्चन के व्यक्तित्व को ध्यान में रखते हुए दोनों की बातचीत के पाँच-पाँच संवाद लिखिए एवं कक्षा में सुनाइए।

उद्देश्य :

- कल्पनाशीलता को बढ़ावा देना
- लेखन क्षमता का विकास करना
- अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना
- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- गतिविधि दो के समूह में करवायी जाएगी।
- समूह का प्रत्येक प्रतिभागी आपस में मिलकर पाँच-पाँच संवाद लिखेगा।
- संवाद लेखन के लिए कक्षा को 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- प्रत्येक समूह को प्रस्तुतीकरण के लिए 1 मिनट का समय दिया जाएगा।
- शिक्षक मूल्यांकन के आधार बिन्दु प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

कल्पना की नवीनता	1
मानवीयता एवं संवेदनशीलता का समावेश	1
रोचकता	1
संवाद योजना एवं भाषायी दक्षता	1
प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- अध्यापक मूल्यांकन के आधार निश्चित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- रोचक एवं प्रभावी प्रस्तुतीकरण पर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों द्वारा चर्चा की जाए।
- शिक्षक बच्चन एवं शमशेर बहादुर सिंह के व्यक्तित्व की विशेषताओं पर संक्षेप में टिप्पणी करेंगे।



प्रदत्त कार्य 3 : 'आत्मवृत्त / जीवनवृत्त लेखन एवं प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य :

- ❖ रचनात्मक लेखन की प्रवृत्ति का विकास करना
- ❖ स्वयं एवं अन्य के प्रति संवेदनशील बनाना
- ❖ अभिव्यक्ति क्षमता / वाचन क्षमता का विकास
- ❖ लेखन एवं वाचन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- ❖ छात्र व्यक्तिगत रूप से कार्य करेंगे।
- ❖ शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी को पाठ से उदाहरण देते हुए व्यक्तिगत जीवन के उतार-चढ़ावों को संक्षेप में लिख कर लाने को कहेगा।
- ❖ गतिविधि की सूचना दो दिन पूर्व दे दी जाएगी।
- ❖ शिक्षक मूल्यांकन के आधार प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी को प्रस्तुतीकरण के लिए 1-2 मिनट का समय दिया जाएगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

विषय संबद्धता	1
भाषायी दक्षता	1
मानवीयता एवं संवेदनशीलता का समावेश	1
रोचकता एवं क्रमबद्धता	1
प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक किन्हीं अन्य बिन्दुओं को भी आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ शिक्षक अपने जीवनवृत्त के माध्यम से समग्र प्रस्तुतीकरण पर चर्चा करेंगे एवं मानवीय पक्षों पर टिप्पणी करेंगे।



Unit 22

**प्रदत्त कार्य 4 : “हिन्दी अंग्रेजी और उर्दू में आपको कौन सी भाषा अच्छी लगती है और क्यों?”
- समूह चर्चा कीजिए।**

उद्देश्य :

- ❖ सहभागिता की भावना विकसित करना
- ❖ तार्किक क्षमता की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना
- ❖ अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना
- ❖ भाषा के प्रति संवेदनशील बनाना
- ❖ वाचन क्षमता को समृद्ध करना

प्रक्रिया

- ❖ यह सामूहिक कार्य होगा।
- ❖ प्रत्येक समूह में 8 से 10 विद्यार्थी होंगे।
- ❖ गतिविधि की सूचना कक्षा में 10 मिनट पूर्व दी जाएगी
- ❖ प्रत्येक समूह को 10-15 मिनट का समय दिया जाएगा। प्रत्येक समूह क्रम से अपने सदस्यों के बीच चर्चा करेंगे
- ❖ शिक्षक समूह-चर्चा के दौरान ध्यानपूर्वक प्रत्येक विद्यार्थी के क्रिया-कलापों को नोट करेगा।
- ❖ शिक्षक प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर मूल्यांकन के आधार बिन्दु लिख देगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

उपयुक्त अवसर पर भागीदारी	1
उपयुक्त तर्क	1
प्रतिपक्षी को सुनने का धैर्य	1
आत्मविश्वास	1
भाषायी दक्षता	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक किन्हीं अन्य बिन्दुओं को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ समग्र चर्चा के धनात्मक एवं ऋणात्मक पक्षों को ध्यान में रखते हुए शिक्षक भाषा की लोकप्रियता के कारणों की चर्चा विद्यार्थियों के साथ कर सकते हैं।



प्रदत्त कार्य 5 : 'हिन्दी के प्रमुख कवियों / साहित्यकारों के चित्र इकट्ठा कर चित्र के नीचे उनकी विशेषताएँ बताते हुए एक-दो पंक्तियाँ लिखिए तथा सचित्र फाइल तैयार कीजिए।

उद्देश्य :

- ❖ खोज की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना
- ❖ साहित्यिक रुचि उत्पन्न करना
- ❖ लेखन क्षमता का विकास
- ❖ कवियों के प्रति सम्मान की भावना उत्पन्न करना।

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत रूप से कार्य होगा।
- ❖ गतिविधि की सूचना एक सप्ताह पूर्व दे दी जाएगी
- ❖ शिक्षक मूल्यांकन का आधार प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- ❖ शिक्षक गतिविधि की सूचना के साथ-साथ स्रोत सामग्री के बारे में भी बताएँगे।
- ❖ एक कालांश का समय दिया जायेगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

विषय सम्बद्धता

1

क्रमबद्धता

1

रोचकता

1

भाषायी दक्षता

1

प्रस्तुतीकरण

1

टिप्पणी

- ❖ किसी अन्य उचित बिन्दु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ फाइल के रोचक चित्रों एवं लेखन की चर्चा कक्षा में की जाएगी।
- ❖ विद्यालय के बोर्ड पर श्रेष्ठ प्रस्तुति के कुछ हिस्सों को प्रदर्शित किया जाएगा।





व्याकरण

उपसर्ग

प्रदत्त कार्य : उपसर्गों से शब्द निर्माण

उद्देश्य :

- शब्द भंडार में वृद्धि करना
- लेखन क्षमता का विकास करना
- मूल शब्द तथा धातु की पहचान कराना
- शब्द निर्माण की प्रक्रिया को समझाना
- वाचन व लेखन कौशल का विकास करना

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य
- अध्यापक 40 उपसर्गों की सूची श्यामपट्ट पर लिख देगा
- प्रत्येक विद्यार्थी को एक-एक उपसर्ग दिया जाएगा जिनसे विद्यार्थी 4-4 शब्दों का निर्माण करेगा।
- 5 मिनट का समय सोचने या लिखने के लिए दिया जाएगा।
- प्रत्येक विद्यार्थी अपने-अपने उपसर्ग से चार चार शब्द बनाकर सुनाएगा।
- एक कालांश में यह कार्य सम्पन्न किया जाएगा।
- देने से पहले अध्यापक स्वयं उदाहरण देकर स्पष्ट कर दें।

उपसर्ग सूची

प्र, परा, परि, प्रति, अ, आ, अप, अव, अनु, अति, अधि, अभि, उत्, उप, दुर, दुस्, नि, निर्-निस्, वि, सु, सम्, अ, अन, अध, औ, उन, कु, भर, दु, स, सु, कम, बे, ला, खुश, ना, हम, हर, सर, गैर इत्यादि

- प्रत्येक विद्यार्थी शब्द बताएगा।
- मूल शब्द भी पूछे जाने चाहिए।
- मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर लिखे जाएँ।



Unit 23

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

शब्दों का सही उच्चारण

2

शब्दों की वर्तनी

2

वर्तनी

1

टिप्पणी

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से अन्य मूल्यांकन बिन्दु भी निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- अच्छे शब्द बनाने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए एवं जिन्हें शब्द निर्माण में परेशानी आई हो उनकी सहायता की जाए।

प्रत्यय

प्रदत्त कार्य : प्रत्ययों के प्रयोग से शब्द निर्माण

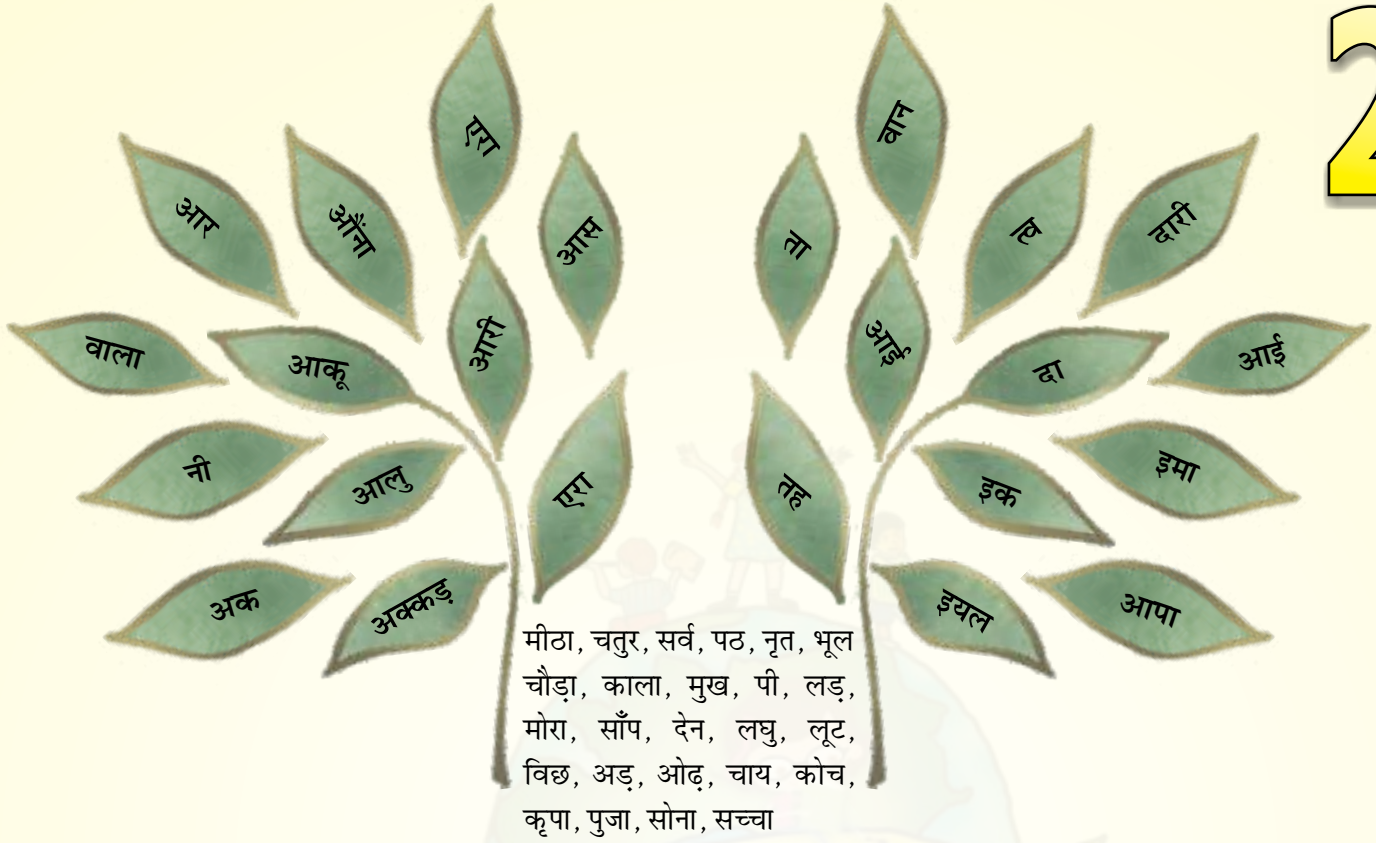
उद्देश्य :

- शब्द भंडार में वृद्धि करना
- शब्द के रूप में और अर्थ में होने वाले परिवर्तनों से परिचित कराना।
- शब्द निर्माण की प्रक्रिया को समझाना
- वाचन एवं लेखन क्षमता का विकास करना
- एकग्रता का विकास करना।

प्रक्रिया - व्यक्तिगत रूप से कार्य कराया जाए।

- अध्यापक 25 शब्द और 25 प्रत्यय श्यामपट्ट पर एक वृक्ष बनाकर लिख देगा।
- प्रत्येक विद्यार्थी शब्द और प्रत्यय के प्रयोग से पाँच-पाँच शब्द बनाएगा।
- 5 मिनट का समय विद्यार्थियों को सोचने और लिखने के लिए दिया जाएगा।
- 5 मिनट बाद अध्यापक प्रत्येक विद्यार्थी से लिखे शब्दों को सुनेगा।





- ◆ इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन आधार

पाँच सही शब्द
चार सही शब्द
तीन सही शब्द
दो सही शब्द
एक सही शब्द

अंक विभाजन

5
4
3
2
1

टिप्पणी

- ◆ अध्यापक स्वतंत्र रूप से भी मूल्यांकन बिन्दु सुनिश्चित कर सकता है।
- ◆ अध्यापक दिए गए शब्दों से अलग अन्य शब्दों / प्रत्ययों का प्रयोग भी कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ◆ सही पाँच शब्द निर्माण करने वाले विद्यार्थियों की अध्यापक सराहना अवश्य करें।
- ◆ अध्यापक की सुविधा के लिए दिए गए वृक्ष में शब्द, प्रत्यय से जुड़कर बने शब्द निम्नांकित हैं :

1. कृपालु, 2. सुनार, 3. लड़ाकू, 4. मिठास, 5. चतुरता, 6. देनदारी, 7. चौड़ाई, 8. लघुत्व, 9. कालिमा,
10. सर्वदा, 11. पाठक, 12. नर्तक, 13. मौखिक, 14. सपेरा, 15. पियक्कड़, 16. लुटेरा, 17. ओढ़नी,
18. बिछौना, 19. मोटापा, 20. गाड़ीवान, 21. छलिया, 22. सच्चाई, 23. कोचवान, 24. चायवाला,
25. अड़ियल



Unit 23

समास

प्रदत्त कार्य : समास पर बहुविकल्पीय प्रश्न

उद्देश्य :

- समास की अवधारणा को स्पष्ट करना
- व्याकरण को सरल विधि से समझाना
- विद्यार्थियों की विश्लेषण क्षमता का विकास करना
- चयन क्षमता का विकास करना
- पठन-कौशल तथा लेखन कौशल का विकास करना

प्रक्रिया

- अध्यापक श्यामपट्ट की सहायता से अथवा बहुविकल्पीय प्रपत्र विद्यार्थियों में बाँटवाकर उनसे सही उत्तर पर निशान लगवायेंगे।
- प्रपत्र इस प्रकार होगा -
 1. 'देशभक्त' शब्द में समास का नाम है -
 - क. अव्ययीभाव समास
 - ख. तत्पुरुष समास
 - ग. कर्मधारय समास
 - घ. बहुब्रीहि समास
 2. 'पीताम्बर' शब्द का विग्रह है-
 - क. पीला है वस्त्र जिसका
 - ख. पीले रंग का वस्त्र
 - ग. पीले हैं वस्त्र जो
 - घ. पीला आकाश
 3. 'यथा समय' शब्द निम्नलिखित में से किस समास का उदाहरण है
 - क. कर्मधारय समास
 - ख. बहुब्रीहि समास
 - ग. अव्ययीभाव समास
 - घ. तत्पुरुष समास



4. 'आना-जाना' में कौन-सा समास है?

- क. बहुब्रीहि समास
- ख. कर्मधारय समास
- ग. अव्ययीभाव समास
- घ. द्वंद्व समास

5. 'चौराहा' शब्द किस समास का उदाहरण है?

- क. द्विगु समास
- ख. द्वंद्व समास
- ग. कर्मधारय समास
- घ. तत्पुरुष समास

6. 'चंद्रमुखी' शब्द में समास है -

- क. कर्मधारय
- ख. बहुब्रीहि
- ग. तत्पुरुष
- घ. द्विगु

7. 'पूजा-पाठ' सामासिक पद का विग्रह है-

- क. पूजा का पाठ
- ख. पूजा और पाठ
- ग. पूजा से पाठ
- घ. पूजा में पाठ

8. 'अश्रु-गैस' समस्तपद का विग्रह है

- क. अश्रु लाने वाली गैस
- ख. अश्रु बनाने वाली गैस
- ग. अश्रु भगाने वाली गैस
- घ. अश्रु रुलाने वाली गैस



Unit 23

व्याकरण - रचनात्मक मूल्यांकन

9. 'हर घड़ी' का विग्रह है -

- क. हर की घड़ी
- ख. हरे रंग की घड़ी
- ग. हर समय
- घ. हर के लिए घड़ी

10. चतुर्भुज का विग्रह है

- क. चार भुजाओं का समूह
- ख. चार हैं भुजाएँ जिसकी
- ग. चार भुजा
- घ. चार भुजा वाली

❖ 15-20 मिनट का समय दिया जाए।

❖ बाद में अध्यापक सही उत्तर श्यामपट्ट पर लिख देगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

9-10 सही उत्तर

5

8-7 सही उत्तर

4

6-5 सही उत्तर

3

4-3 सही उत्तर

2

2-1 सही उत्तर

1

प्रतिपुष्टि

❖ सही सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों की सराहना अवश्य की जाए।

❖ अधिक अशुद्धियाँ करने वाले छात्रों को पुनः समझाकर सही उदाहरण लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

संज्ञा

प्रदत्त कार्य : संज्ञा का नाटकीकरण

उद्देश्य :

❖ व्याकरण को खेल बनाकर समझाना

❖ भाषा को समझने का गुण विकसित करना



- ❖ अभिनय क्षमता का विकास करना
- ❖ वाचन कौशल में प्रवीणता लाना
- ❖ कल्पनाशीलता एवं सृजनात्मक प्रतिभा को जाग्रत करना

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक संज्ञा की परिभाषा, भेद, उपभेद समझाने के लिए पूरी कक्षा को पात्रों में विभक्त करेगा यथा -
 - ❖ एक बालक संज्ञा बनकर अपना परिचय देगा।
 - ❖ तीन बच्चों को संज्ञा के भेद बना दिया जाएगा। व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक संज्ञा।
 - ❖ अध्यापक कक्षा में संज्ञा के भेद जानने के लिए कुछ शब्दों को पूछेगा।
 - ❖ सभी बच्चे अपने-अपने भेद के अनुरूप अपना नाम लेकर अपने भेद के समूह में आकर खड़े हो जाएँगे। यथा भाववाचक वाले भाववाचक संज्ञा के पीछे जाकर खड़ा होंगे।
 - ❖ इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।
 - ❖ श्यामपट्ट पर मुख्य बिन्दु लिख दिए जाएँ।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

उच्चारण

2

अभिनय

2

आत्मविश्वास

1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वतंत्र रूप से मूल्यांकन के आधार तय करके मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छा अभिनय और सही उच्चारण करने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- ❖ जिन विद्यार्थियों को व्यक्ति, जाति अथवा भाव वाचक संज्ञा में अंतर न समझ आए हों उन्हें अवश्य स्पष्ट किया जाए। जैसे - नदी अथवा गंगा शब्द हैं तो उन्हें समझाना होगा कि नदी जातिवाचक क्यों हैं व 'गंगा' शब्द व्यक्तिवाचक क्यों है।

सर्वनाम

प्रदत्त कार्य : 'सर्वनाम' पर नृत्य नाटिका

उद्देश्य :

- ❖ सर्वनाम की परिभाषा, भेदों और उदाहरणों को मनोरंजक रूप से बोधगम्य बनाना
- ❖ विद्यार्थियों की रचनात्मक शक्तियों को जागृत करना
- ❖ उनकी कल्पनाशीलता व सृजनात्मक क्षमता का विकास करना



Unit 23

व्याकरण - रचनात्मक मूल्यांकन

- व्याकरण का ज्ञान कराना
- वाचन क्षमता को समृद्ध करना

प्रक्रिया

- अध्यापक पूरी कक्षा को नृत्य नाटिका में सम्मिलित करेगा।
- एक विद्यार्थी सर्वनाम बनेगा और गाएगा तथा नाचेगा।
- मैं हूँ सर्वनाम, मैं हूँ सर्वनाम
संज्ञा के स्थान पर आता हूँ मैं काम।
मैं हूँ सर्वनाम, मैं हूँ सर्वनाम।
- 6 बालक सर्वनाम के 6 भेद बनाए जाएँगे जो अपनी-अपनी परिभाषा पर छोटी व सरल तुकबंदी करके गाएंगे और नाचेंगे।
- बाकी सभी विद्यार्थी इन छः सर्वनामों के उदाहरण बनेंगे और गाते गाते, नाचते नाचते अपनी टोली में शामिल होंगे।
- यह प्रक्रिया एक कालांश में संपन्न हो जाएगी।
- अध्यापक श्यामपट्ट पर सर्वनाम व उसके भेदों के नाम लिख देगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

विषय की जानकारी	2
अभिव्यक्ति	2
प्रस्तुति	1

टिप्पणी

- अध्यापक अपनी कक्षा के अनुसार मूल्यांकन बिंदु बनाने के लिए स्वतंत्र हैं।

प्रतिपुष्टि

- अध्यापक जितना रुचिपूर्वक कार्य करेगा विद्यार्थियों की प्रस्तुति उतनी ही अच्छी होगी।
- अच्छी प्रस्तुति देने वाले विद्यार्थियों की सराहना अवश्य की जाए।
- अन्य विद्यार्थियों को बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित किया जाए।



मुहावरे

प्रदत्त कार्य : मुहावरों की सहायता से कहानी का निर्माण / मुहावरेदार कहानी

उद्देश्य :

- ❖ मनोरंजक तरीके से मुहावरे सिखाना
- ❖ बालकों की कल्पनाशीलता का विकास करना
- ❖ सृजनात्मक क्षमता का विकास करना
- ❖ वाचन कौशल में प्रवीणता लाना
- ❖ मेलजोल की भावना का विकास करना

प्रक्रिया

- ❖ पूरी कक्षा को चार समूहों में बाँटा जाए।
- ❖ प्रत्येक समूह कम से कम 10 मुहावरों का प्रयोग करते हुए कहानी बनाएगा।
- ❖ 15 मिनट का समय कहानी के विषय में सोचने और बनाने के लिए दिया जायेगा।
- ❖ 15-20 मिनट में चारों समूह अपनी अपनी मुहावरेदार कहानी सुनाएँगे।
- ❖ श्यामपट्ट पर मूल्यांकन बिंदु लिखे जाएँगे।
- ❖ अध्यापक स्वयं उदाहरण के तौर पर एक मुहावरेदार कहानी विद्यार्थियों को सुनाएगा।
- ❖ अध्यापक देखें कि सभी विद्यार्थियों की उसमें पूरी सहभागिता है।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

मुहावरों की संख्या	1
मुहावरों का सही प्रयोग	1
लेखन क्षमता	1
कल्पनाशीलता	1
उच्चारण	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वतंत्र रूप से भी मूल्यांकन आधार तय करके अंक प्रदान कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छा कार्य करने वालों की सराहना की जाए।



Unit 23

रचनात्मक मूल्यांकन - व्याकरण

- ❖ जिनके कार्य में कुछ कमी रह गई, उन्हें प्रोत्साहन देकर अच्छा कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाए।
- ❖ जिन मुहावरों का सभी समूहों ने प्रयोग किया उनके अतिरिक्त नए मुहावरों को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।

कारक (व्याकरण)

प्रदत्त कार्य : कारक से संबंधित कार्य प्रपत्र

वाक्य	विभक्ति	कारक
1. अध्यापक ने पढ़ाया		
2. वृक्ष से पत्ते गिरते हैं		
3. कल्पना के द्वारा गीत गाया गया		
4. श्याम ने फल खाया		
5. खेलने के लिए गेंद लाई		
6. मेरा घर यहाँ है		
7. यह सामान राधा का है		
8. हे राम! अब नहीं सहा जाता		
9. पानी में कुछ गिर गया है		
10. तुमने नृत्य दिखाया।		

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक कारक तथा विभक्तियाँ समझाकर उपर्युक्त कार्य प्रपत्र पूरा कराएगा।
- ❖ यह व्यक्तिगत कार्य है। श्यामपट्ट अथवा पेपर पर कार्य प्रपत्र बनाकर यह कार्य कराया जा सकता है।
- ❖ दिए गए वाक्यों में विभक्ति एवं कारक बताने हैं इसे भरने के लिए 15 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ कार्य प्रक्रिया के समय अध्यापक कक्षा में घूम-घूम कर निरीक्षण करेंगे तथा छात्रों का मार्गदर्शन करेंगे।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

10 सही होने पर	5
8 सही होने पर	4
6 सही होने पर	3
4 सही होने पर	2
2 सही होने पर	1

टिप्पणी

- ❖ कार्य प्रपत्र में अन्य उपयोगी वाक्य भी दिए जा सकते हैं।



प्रतिपुष्टि

- ❖ सही जानकारी न देने पर विद्यार्थियों को उचित दिशा निर्देश देकर कार्य पूर्ण कराया जाए।
- ❖ अच्छा कार्य करने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- ❖ शिक्षक चाहे तो मूल्यांकन विद्यार्थियों की मदद से भी कराया जा सकता है।

लिंग (व्याकरण)

प्रदत्त कार्य : पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाना

उद्देश्य :

- ❖ व्याकरण का ज्ञान कराना
- ❖ लिंग बदलने के नियम समझाना
- ❖ कल्पनाशीलता एवं सृजनात्मकता का विकास करना
- ❖ लेखन कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग शब्दों का ज्ञान कराएंगे।
- ❖ नीचे पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के कुछ आधार बिन्दु उदाहरण सहित दिए गए हैं। उनके अनुसार विद्यार्थियों को तीन या चार के समूह में विभक्त किया जाएगा तथा एक समूह से एक नियम पर आधारित पुल्लिंग से स्त्रीलिंग शब्दों को बनवाया जाएगा।
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी को 5 पुल्लिंग शब्द लिखकर उनके स्त्रीलिंग बनाने होंगे।

नियम

1. अ तथा आ को ई करने से
जैसे - नर-नारी
2. अ तथा आ को इया करने से
जैसे - चूहा-चुहिया
3. सम्बन्ध, जाति तथा उपनाम वाचक शब्दों में 'आनी' जोड़ने से
जैसे - सेठ, सेठानी
4. व्यवसायवाचक, जातिवाचक तथा उपनामवाचक शब्दों में 'इन' या 'आइन' जोड़ने से -
जैसे - पंडित-पंडिताइन, पाप - पापिन
5. प्राणिवाचक और जातिवाचक संज्ञाओं में 'नी' जोड़ने से
जैसे - मोर - मोरनी



Unit 23

व्याकरण - रचनात्मक मूल्यांकन

6. तत्सम अकारान्त शब्दों के अंत में 'आ' जोड़कर
जैसे - कान्त - कान्ता
7. तत्सम संज्ञा शब्दों में 'अक' या 'इका' जोड़ने से
जैसे - गायक - गायिका
8. तत्सम शब्दों में 'ता' का त्री करने से
जैसे - दाता - दात्री
9. तत्सम शब्दों में 'मान' और 'वान' का क्रमशः 'मती' और 'वती' करने से
जैसे - भगवान - भगवती
10. 'इनी' प्रत्यय जोड़ने से
जैसे - मनोहारी - मनोहारिणी
11. पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग शब्दों में क्रमशः मादा तथा नर जोड़ने से
जैसे - कोयल - मादा कोयल
12. हिन्दी में कुछ पुल्लिङ्ग शब्दों के स्त्रीलिङ्ग में विशिष्ट रूप बन जाते हैं
जैसे - पुरुष - स्त्री
13. सर्वनाम शब्दों का लिङ्ग परिवर्तन जैसे - उसका - उसकी
14. अनेक शब्दों का प्रयोग दोनों लिङ्गों में समान रूप से होता है -
जैसे - दही

- ❖ सोचकर लिखने के लिए 5 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ इस बीच अध्यापक विद्यार्थियों को कार्य समझने में मदद करेंगे।
- ❖ पूर्ण प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।
- ❖ सभी विद्यार्थियों से श्यामपट्ट पर एक-एक करके लिखाया जाएगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

पाँचों पुल्लिङ्ग 'शब्द' तथा उनके स्त्रीलिङ्ग सही लिखने पर

5

प्रतिपुष्टि

- ❖ जो विद्यार्थी अच्छे उदाहरण तथा वर्तनी संबंधी शुद्धियों के अनुसार लिखें उनकी सराहना की जाय।



- जो विद्यार्थी ठीक प्रकार से न कर पाएँ उनको नियम समझाते हुए कार्य पूर्ण कराया जाए।

लिंग और वचन का विशेषण पर प्रभाव

प्रदत्त कार्य : निम्नलिखित वाक्यों में आए विशेषणों को लिंग और वचन के आधार पर निर्देशानुसार बदलिए।

कार्य-प्रपत्र

- यह फल मीठा है। (बहुवचन)
- वह व्यक्ति बहुत काला है। (बहुवचन)
- मैंने मोटे ग्रन्थों को पढ़ा। (एक वचन)
- यह कपड़ा सस्ता है। (बहुवचन)
- सरोवर में पीले कमल खिले हैं। (एक वचन)
- उस बेचारे लड़के ने क्या किया? (स्त्रीलिंग)
- गोरी लड़की को इधर बुलाओ। (पुल्लिंग)
- वह बहुत अच्छा गायक है। (स्त्रीलिंग)
- मैंने एक बूढ़े व्यक्ति को धूप सेकते देखा। (स्त्रीलिंग)
- वह अपने घर में सबसे बड़ी है। (पुल्लिंग)

उद्देश्य :

- लिंग तथा वचन का ज्ञान कराना
- विशेषणों के विभिन्न रूपों का ज्ञान कराना
- सृजनात्मकता का विकास करना
- लेखन कौशल का विकास करना

प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- शिक्षक सर्वप्रथम लिंग, वचन और विशेषणों को समझाएँगे तथा लिंग एवं वचन का विशेषण पर प्रभाव स्पष्ट करेंगे।
- शिक्षक श्यामपट्ट पर उपर्युक्त वाक्य लिख देंगे तथा निर्देशानुसार वाक्य परिवर्तन करने के लिए प्रेरित करेंगे।
- इस कार्य के लिए 10-15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- इस दौरान अध्यापक कक्षा में घूम घूम कर निरीक्षण करेंगे।



Unit 23

- ❖ मूल्यांकन के लिए अध्यापक विद्यार्थियों की सहायता ले सकते हैं।

मूल्यांकन आधार	अंक विभाजन
दो सही वाक्यों पर	1
चार सही वाक्यों पर	2
छः सही वाक्यों पर	3
आठ सही वाक्यों पर	4
दस सही वाक्यों पर	5

प्रतिपुष्टि

- ❖ सही वाक्य लिखने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- ❖ जो विद्यार्थी ठीक से कार्य नहीं कर पाए उन्हें समझाकर कार्य पूर्ण कराया जाए।

परसर्ग 'ने' का क्रिया पर प्रभाव

प्रदत्त कार्य : परसर्ग 'ने' संबंधित कथनों पर सही और गलत के निशान लगवाना कार्य प्रपत्र के माध्यम से
कार्य प्रपत्र - सही और गलत का निशान लगाओ

1. किसी कार्य के होने अथवा करने की प्रक्रिया को क्रिया कहते हैं। ☐
2. क्रिया के भेद सकर्मक क्रिया और द्विकर्मक क्रिया होते हैं। ☐
3. जिस वाक्य में कर्म की आवश्यकता नहीं होती, उसे सकर्मक कहते हैं। ☐
4. कर्ता कारक का परसर्ग 'ने' है। ☐
5. कर्म कारक का परसर्ग 'को' है। ☐
6. परसर्ग 'ने' लगने पर क्रिया भूतकाल की होती है। ☐
7. परसर्ग 'ने' लगने पर क्रिया कर्म के अनुसार चलती है। ☐
8. काल से क्रिया के होने के समय का बोध होता है। ☐
9. कर्ता कारक में 'ने' परसर्ग का प्रयोग हमेशा होता है। ☐
10. क्रिया के लिंग और वचन परसर्ग 'ने' लगने पर कर्ता के अनुसार चलते हैं। ☐

उद्देश्य :

- ❖ क्रिया के सही स्वरूपों की जानकारी प्राप्त होना।



- परसर्गों का महत्व समझाना
- व्याकरण की बारीकियों को हल्के-फुल्के तरीके से समझाना।
- निरीक्षण क्षमता का विकास करना।
- पठन कौशल का विकास करना।
- स्मरण चिंतन शक्तियों का विकास करना

प्रक्रिया

- अध्यापक उपर्युक्त कार्य प्रपत्र को श्यामपट्ट पर लिखेगा।
- विषय को अच्छी तरह स्पष्ट कर दिया जायेगा।
- व्यक्तिगत रूप से सभी विद्यार्थी कार्य प्रपत्र भरेंगे।
- समय 10-15 मिनट लगेंगे।
- विद्यार्थियों में एक दूसरे के प्रपत्र बाँट कर अध्यापक उसी समय सही उत्तर बताकर जाँच करवा सकता है।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

10-9 सही उत्तरों के लिए	5
8-7 सही उत्तरों के लिए	4
6-5 सही उत्तरों के लिए	3
4-3 सही उत्तरों के लिए	2
2-1 सही उत्तरों के लिए	1

प्रतिपुष्टि

- सभी सही उत्तर पाने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए और सही उत्तर न समझ पाने वाले विद्यार्थियों को विषय समझने में सहयोग दिया जाए।



Unit 23

विलोम शब्द

प्रदत्त कार्य : दिए गए शब्दों के विलोम वर्ग पहेली से छाँटकर लिखिए।

उद्देश्य :

- शब्द भंडार में वृद्धि करना
- चिंतन प्रवृत्ति का विकास करना
- समस्या समाधान की प्रेरणा देना
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास करना
- विलोम शब्दों का ज्ञान कराना

प्रक्रिया

- शिक्षक कार्य से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी पूर्व में ही विद्यार्थियों को दे दें।
- कार्य प्रपत्र अथवा श्यामपट्ट के माध्यम से यह कार्य कराया जाए।
- नीचे दिए गए शब्दों के विलोम वर्ग पहेली से छाँट कर लिखने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाए।
- प्रत्येक विद्यार्थी को अधिकतम 20 विलोम ढूँढ़ने होंगे।
- कार्य के समय शिक्षक विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार सहायता करें।

शब्द संकलन -

अम्बर, अग्रज, अनुराग, आज्ञा, आकर्षण, कटु, गुप्त, कूट, गहरा, चतुर, दुर्गति, दुर्लभ, धन्य, नीरस, निर्गम, बहुधा, मिलन, मूक, रूखा, विरल, वृद्धि, शीत, संक्षेप, सूक्ष्म, सृजन, हर्ता, आदान, उत्पत्ति, मनुज, गुरुता।

श्रुति समभिनार्थक शब्द

प्रदत्त कार्य : श्रुतिसमभिनार्थक शब्द उच्चारण तथा वाक्य निर्माण

क्ष	ति	वा	चा	क	वि	उ	ठ	ण	बा
य	प्र	क	ट	थ	रु	थ	स	र	स
वि	दा	अ	व	नी	ता	ला	म	धु	र
त	न	नु	स	हा	र	क	रु	थू	ल
द	नु	ज	सा	का	र	आ	अ	क	ल
धि	व	का	र	वि	रा	ग	वि	ना	श
क	र	ल	ए	क	दा	म	र	मू	ख
र्ता	प्रा	र्थ	ना	र्ष	चि	सु	ल	भ	र
उ	प	क्र	म	ण	क	म	धु	र	थ
ग्र	वि	र	ह	न	ना	ति	ता	ण	ल



उद्देश्य :

- व्याकरण का ज्ञान
- समरूपी शब्द-युग्म में अंतर स्पष्ट करना
- उच्चारण का ज्ञान होना
- वाचन कौशल का विकास करना
- शब्द भंडार में वृद्धि करना

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम शिक्षक श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों को समझाएंगे। एक दिन पूर्व विद्यार्थियों को घर से किसी चार्ट पेपर से 6x4 इंच का कार्ड काटकर उसे बीच से मोड़कर (पिरामिड के समान) लाने के लिए कहेंगे। (नीचे दिए गए अनुसार)
- कुछ शब्द-युग्म शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे तथा प्रत्येक विद्यार्थी को एक-एक शब्द युग्म दिया जाएगा। उदाहरण के लिए -



1. अनल - आग

अनिल - वायु

2. अपकार - बुरा

उपकार - भला

3. अधम - नीच

अधर्म - पाप

- प्रत्येक छात्र अपने-अपने पिरामिड के दोनों ओर शब्द-युग्म अलग-अलग रंग से लिखेंगे। जैसे यदि एक ओर नीले रंग से अवलम्ब लिखा है तो दूसरी ओर लाल रंग से अविलम्ब लिखेंगे।
- साथ ही दोनों शब्दों से वाक्य निर्माण इस प्रकार करेंगे कि शब्दों का अंतर स्पष्ट हो जाए।
- इस कार्य को करने के लिए 5 मिनट का समय दिया जाए।
- इस बीच शिक्षक कक्षा में घूम-घूमकर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करेंगे।



Unit 23

- इसके पश्चात् एक-एक करके विद्यार्थी अपना पेपर पिरामिड प्रदर्शित करते हुए वाक्य बोलेंगे ताकि शब्दों का अन्तर स्पष्ट हो जाए। अपने-अपने पिरामिड एक के ऊपर एक रखते जाएँगे।
- इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

वर्तनी संबंधी शुद्धि

1

उच्चारण / प्रस्तुतीकरण

2

विषय से संबद्धता

2

टिप्पणी

- मूल्यांकन के आधार बिन्दु के लिए शिक्षक अन्य उपयुक्त बिन्दुओं के आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सही अंतर स्पष्ट करने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- जो छात्र अच्छी प्रकार कार्य नहीं कर पाएँ उनको अंतर स्पष्ट करते हुए ठीक कराया जाए।

पर्यायवाची शब्द

प्रदत्त कार्य : दिए गए शब्दों के पर्यायवाची लिखना।

उद्देश्य :

- शब्द भंडार में वृद्धि।
- समान अर्थ वाले शब्दों की पहचान
- रचनात्मकता का विकास
- लेखन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य।
- शिक्षक सर्वप्रथम कुछ शब्दों की सूची श्यामपट्ट पर लिख दें।
- नीचे दिए गए चित्र के अनुसार पर्याय शब्दों की पंखुरियाँ लगाकर फूल बनाने का निर्देश दिया जाए।
- फूल बनाने के लिए चार्ट पेपर का इस्तेमाल किया जा सकता है। शिक्षक विद्यार्थियों की सहायता से चार्ट



पेपर के कार्ड काटकर विद्यार्थियों में विभक्त कर दें।



- जितने शब्द दिए जाएँ उतने ही समूह बनाकर समूह के प्रत्येक विद्यार्थी से व्यक्तिगत रूप से यह कार्य कराया जाए।
- मूल्यांकन के आधार बिन्दु प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँ।
- पर्यायवाची शब्द लिखकर फूल बनाने के लिए 5 मिनट का समय दिया जाए।
- लिखने के पश्चात् प्रत्येक विद्यार्थी अपना-अपना शब्द एवं पर्यायवाची पढ़कर कक्षा-प्रदर्शन पट्ट पर लगा देंगे।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

पाँच शब्दों के तीन पर्याय सही लिखने पर

5

पाँच शब्दों के दो पर्याय सही लिखने पर

4

पाँच शब्दों के एक पर्याय सही लिखने पर

2

प्रतिपुष्टि

- जो विद्यार्थी तीनों पर्याय सही लिखें उनकी सराहना की जाए।
- जिन विद्यार्थियों का कार्य पूर्ण न हो सके उनका मार्गदर्शन करके कार्य पूर्ण कराया जाए।





निबंध लेखन

प्रदत्त कार्य - निबंध लेखन से संबंधित महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर बहुविकल्पीय प्रश्न

उद्देश्य :

- ❖ विषय का विस्तृत ज्ञान करना
- ❖ चिंतनशीलता को विकसित करना
- ❖ रचनात्मकता को बढ़ावा देना
- ❖ क्रमबद्ध लेखन कौशल में दक्षता
- ❖ भावाभिव्यक्ति में सहायता करना
- ❖ कल्पनाशीलता का उन्मेष

प्रक्रिया -

- ❖ अध्यापक निबंध शब्द की व्याख्या करते हुए विद्यार्थियों को निबंधों की रूपरेखा से परिचित कराएगा।
- ❖ अध्यापक मूल्यांकन बिंदु श्यामपट्ट पर पहले ही लिख देगा।
- ❖ अध्यापक निबंध लेखन में कुशलता लाने के लिए उसके महत्वपूर्ण बिंदुओं पर निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्न पूछेगा -
- ❖ इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।

1. निबन्ध शब्द का अर्थ है -

- क. कहानी लेखन
- ख. संवाद लेखन
- ग. संस्मरण लेखन
- घ. क्रमबद्ध लेखन

2. निबन्ध का प्रारंभिक अंश कहलाता है -

- क. शीर्षक
- ख. प्रस्तावना
- ग. विषय वस्तु
- घ. उदाहरण



Unit 24

निबंध लेखन - रचनात्मक मूल्यांकन

3. निबंध में उदाहरणों के प्रयोग से आती है -
 - क. अस्पष्टता
 - ख. उबारूपन
 - ग. रोचकता
 - घ. शिथिलता
4. विषय प्रतिपादन से तात्पर्य है -
 - क. विषय का एकांगी वर्णन
 - ख. विषय का क्रमबद्ध वर्णन
 - ग. विषय का व्यक्तिगत वर्णन
 - घ. विषय का संक्षिप्त वर्णन
5. निबन्ध लिखते हुए उन्हें विभाजित करना चाहिए -
 - क. अनुच्छेदों में
 - ख. कविताओं में
 - ग. वाक्यों में
 - घ. वाक्यांशों में
6. त्यौहार संबंधी निबन्धों में प्रधानता होती है -
 - क. घटनाओं की
 - ख. प्रसंगों की
 - ग. संदर्भों की
 - घ. यात्राओं की
7. निबन्ध का अंत कहलाता है -
 - क. भूमिका
 - ख. मध्यक्रम
 - ग. उपसंहार
 - घ. शीर्षक



8. निबन्ध एक विधा है -
- क. गद्य की
 - ख. पद्य की
 - ग. भाषण की
 - घ. वाचन की
9. व्यंग्यात्मक निबंध का मुख्य तत्व है -
- क. वर्णन
 - ख. हास्य-व्यंग्य
 - ग. विषय प्रतिपादन
 - घ. आंकड़े
10. हिन्दी के प्रमुख निबन्ध कार हैं -
- क. महादेवी वर्मा
 - ख. सुमित्रानंदन पंत
 - ग. हजारी प्रसाद द्विवेदी
 - घ. मैथिलीशरण गुप्त

मूल्यांकन आधार -

- 9-10 सही उत्तरों के लिए 5
- 7-8 सही उत्तरों के लिए 4
- 5-6 सही उत्तरों के लिए 3
- 3-4 सही उत्तरों के लिए 2
- 1-2 सही उत्तरों के लिए 1

प्रतिपुष्टि - अध्यापक सभी उत्तरों को सही लिखने वाले विद्यार्थियों की सराहना करे तथा कम अंक पाने वालों को सही उत्तर जानने के लिए प्रेरित करे।



Unit 24

रचनात्मक मूल्यांकन - निबंध लेखन

प्रदत्त कार्य - समूह चर्चा एवं निबंध लेखन

उद्देश्य :

- ❖ चिंतनशीलता को विकसित करना
- ❖ रचनात्मकता को बढ़ावा देना
- ❖ भावाभिव्यक्ति का परिष्कार
- ❖ सहयोग एवं मिलकर काम करने की भावना का विकास
- ❖ लेखन एवं वाचन कौशल
- ❖ मौलिकता का विकास

प्रक्रिया -

- ❖ यह एक सामूहिक प्रक्रिया है
- ❖ अध्यापक कक्षा में 'मेरा भारत महान' विषय पर कक्षा में बताएगा और उसके तथ्यों पर विद्यार्थियों से चर्चा करेगा।
- ❖ पूरी कक्षा को 6 समूहों में बाँटा जाएगा। प्रत्येक समूह को निम्नलिखित उपविषयों पर आपस में चर्चा करके इस तरह लिखने के लिए कहा जाएगा कि सबके द्वारा लिखी गई सामग्री एक निबन्ध लगे।

निबंध - मेरा भारत महान

पहला समूह - भूमिका - भारत की प्राचीन संस्कृति

दूसरा समूह - विषय वस्तु - भारत के इतिहास के बारे में

तीसरा समूह - विषय वस्तु - भारत की भौगोलिक स्थिति

चौथा समूह - विषय वस्तु - भारत के महापुरुषों के विषय में

पांचवा समूह - विषय वस्तु - भारत के वर्तमान विकास के विषय में

छठा समूह - विषय वस्तु - समस्याओं का समाधान देते हुए उज्ज्वल भविष्य की ओर संकेत

- ❖ इस लिखित कार्य के लिए सभी समूहों को 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ विद्यार्थी इस तरह लेखन कार्य करें कि उनका कार्य क्रमवार लगाकर एक निबंध बनकर प्रदर्शन पट्ट पर लगा दिया जाए।
- ❖ जब विद्यार्थी चर्चा करेंगे या लिखेंगे तब अध्यापक घूम-घूमकर उनका मार्गदर्शन करेगा।
- ❖ प्रत्येक समूह से एक-एक विद्यार्थी क्रमानुसार पढ़कर सुनाएगा।



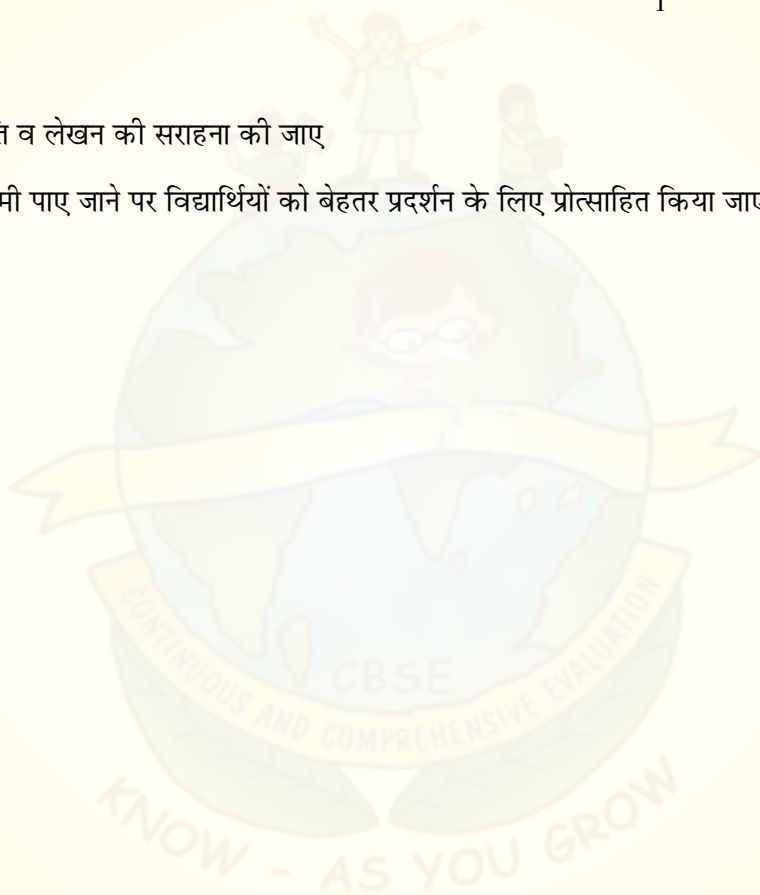
- ❖ मूल्यांकन के आधार श्यामपट्ट पर पहले ही लिखे जाएँ।

मूल्यांकन आधार-

विषय निरूपण	2
प्रस्तुतीकरण	2
भाषायी दक्षता	1

प्रतिपुष्टि-

- ❖ अच्छी प्रस्तुति व लेखन की सराहना की जाए
- ❖ प्रस्तुति में कमी पाए जाने पर विद्यार्थियों को बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित किया जाए।





पत्र लेखन

प्रदत्त कार्य - अनौपचारिक पत्रों के महत्वपूर्ण बिन्दुओं से संबंधित कार्य प्रपत्र।

कार्यप्रपत्र

1. संबोधन

1. अपने से बड़ों को संबोधन
2. अपने से छोटों को संबोधन
3. समवयस्कों को संबोधन

2. अभिवादन

1. अपने से बड़ों को अभिवादन
2. अपने से छोटों को अभिवादन
3. समवयस्कों को अभिवादन

3. समापन

1. अपने से बड़ों को लिखे पत्र का समापन
2. अपने से छोटों को लिखे पत्र का समापन
3. समवयस्कों को लिखे पत्र का समापन

4. अनौपचारिक पत्रों के तीन प्रकार लिखें

- 1.
- 2.
- 3.

5. अनौपचारिक पत्रों की तीन मुख्य विशेषताएँ

- 1.
- 2.
- 3.



6. उद्देश्य -

1. अनौपचारिक पत्रों के प्रारूप से परिचित कराना
2. अनौपचारिक पत्रों की प्रविष्टियों से परिचित कराना
3. विषयानुकूल लेखन कौशल को विकसित करना
4. मानवीय संबंधों एवं आत्मीयता के महत्व को समझाना
5. सही, संक्षिप्त एवं सार्थक लेखन की प्रवृत्ति विकसित करना।

प्रक्रिया-

1. व्यक्तिगत कार्य
2. शिक्षक कक्षा में विद्यार्थियों को पत्र के विभिन्न प्रारूपों के विषय में अवगत कराएगा।
3. अनौपचारिक पत्रों की विशेषताओं एवं रूपों से अवगत कराएगा।
4. अध्यापक कार्य प्रपत्र या तो श्यामपट्ट पर लिख देगा या प्रत्येक छात्र को कार्य प्रपत्र की छाया प्रतिलिपि उपलब्ध कराएगा।
5. इस कार्य के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. 10 मिनट बाद प्रपत्र एकत्र करके एक दूसरे विद्यार्थियों को प्रपत्र बाँट देगा।
7. इसके उपरान्त सही/उपयुक्त शब्दों को श्यामपट्ट पर लिख देगा।
8. विद्यार्थी प्रपत्रों का मूल्यांकन निर्देशानुसार करेंगे।
9. अध्यापक विद्यार्थी के नामानुसार अंक घोषित करेगा।
10. इस प्रक्रिया में एक कालांश लगेगा।

मूल्यांकन आधार

1. सभी सही प्रविष्टियों के लिए	5
2. चार सही प्रविष्टियों के लिए	4
3. तीन सही प्रविष्टियों के लिए	3
4. दो सही प्रविष्टियों के लिए	2
5. एक सही प्रविष्टि के लिए	1

टिप्पणी- अध्यापक किन्हीं अन्य मूल्यांकन बिन्दुओं को आधार बनाकर भी मूल्यांकन कर सकता है।



प्रतिपुष्टि- सभी सही प्रविष्टियाँ भरने वाले विद्यार्थियों के कार्य एवं ज्ञान की सराहना की जाए। अध्यापक की सुविधा के लिए कुछ संकेत

अनौपचारिक पत्र प्रकार-

व्यक्तिगत, बधाई पत्र, माँ के विषय में पत्र।

विशेषताएं - आत्मीयता, सरलता, स्पष्टता।

प्रदत्त कार्य - विभिन्न विषयों पर अनौपचारिक पत्र लेखन

उद्देश्य

- ❖ लेखन कौशल का विकास
- ❖ औपचारिक तथा अनौपचारिक पत्रों से अवगत कराना
- ❖ विषयानुकूल लेखन-कौशल की प्रवृत्ति विकसित करना
- ❖ सार्थकता एवं सक्षिप्तता
- ❖ पठन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- ❖ सामूहिक कार्य कराया जाएगा
- ❖ शिक्षक सर्वप्रथम विभिन्न प्रकार के औपचारिक पत्रों के प्रारूप विद्यार्थियों को समझाएंगे।
- ❖ चार-चार छात्रों के समूह बनाए जाएंगे।
- ❖ प्रत्येक समूह को निम्नलिखित विषयों पर आधारित (विषय का चयन शिक्षक स्वयं भी कर सकते हैं) एक-एक विषय पत्र लेखन के लिए दिया जाएगा।
- ❖ इस कार्य के लिए 10 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ इस दौरान शिक्षक प्रत्येक समूह में जाकर सभी विद्यार्थियों को प्रतिभागी बनने के लिए प्रेरित करे।
- ❖ लेखन के उपरान्त प्रत्येक समूह एक-एक करके अपना पत्र कक्षा में पढ़ेंगे।
- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख दें।
- ❖ इस पूरी प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।



औपचारिक तथा अनौपचारिक पत्रों के लिए कुछ महत्वपूर्ण विषय -

1. बधाई पत्र (अपने से बड़ों के लिए, अपने से छोटों के लिए, समवयस्कों के लिए)
2. अनुमति माँगने के लिए अभिवाचक को पत्र
3. किसी समस्या से संबंधित पत्र
4. मनीआर्डर मँगवाने के लिए पत्र
5. शोक संवेदना प्रकट करते हुए पत्र
6. विशेष अवसरों पर आमंत्रित करने के लिए पत्र
7. छुट्टियाँ साथ बिताने के लिए मित्र को पत्र
8. पाठ्यक्रम संबंधित किसी समस्या के निराकरण के लिए पत्र
9. यात्रा का वर्णन करते हुए पत्र
10. अनुभव अभिव्यक्त करते हुए पत्र

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

पत्र के प्रारंभ की औपचारिकताएँ	1
विषय वस्तु	2
पत्रों के अंत की औपचारिकताएँ	1
भाषायी दक्षता	1

प्रतिपुष्टि-

- अच्छे लेखन एवं वाचन के लिए विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- जिन विद्यार्थियों के लेखन में कमी है उन्हें पत्र का प्रारूप स्पष्ट किया जाए।

रचनात्मक मूल्यांकन

पत्र-लेखन

प्रदत्त कार्य - औपचारिक पत्रों से संबंधित बहुविकल्पीय प्रपत्र

बहुविकल्पीय प्रपत्र प्रारूप - सही विकल्प का चयन कीजिए।

1. औपचारिक पत्रों की विशेषता होती है -

1. रोचकता



2. वैयक्तिकता
3. औपचारिकता
4. ऐतिहासिकता

2. आवेदन पत्र होते हैं -

1. आत्मीय पत्र
2. बधाई पत्र
3. प्रार्थना पत्र
4. औपचारिक पत्र

3. छुट्टी के लिए लिखा गया पत्र

1. व्यावसायिक होता है
2. प्रार्थना पत्र होता है
3. सरकारी पत्र होता है
4. आत्मीय पत्र होता है।

4. सरकारी पत्राचार -

1. व्यक्तिगत होते हैं
2. अनौपचारिक होते हैं
3. औपचारिक होते हैं
4. शोक पत्र होते हैं

5. व्यावसायिक पत्र

1. प्रेम पत्र होते हैं
2. संवेदनात्मक पत्र होते हैं
3. औपचारिक पत्र होते हैं
4. निमंत्रण पत्र होते हैं



Unit 25

रचनात्मक मूल्यांकन - पत्र लेखन

6. औपचारिक पत्रों का प्रारूप
 1. व्यावहारिक होता है
 2. सुख-दुःख का ब्यौरा होता है
 3. तथ्यों और सूचनाओं से मुक्त होता है
 4. घटनाओं का विवरण होता है
7. औपचारिक पत्रों की भाषा की विशेषता है, उनमें
 1. रूपकों का प्रयोग होता है
 2. मुहावरों का प्रयोग होता है
 3. तथ्य स्पष्ट होते हैं
 4. उपमाओं का प्रयोग होता है
8. भारत सरकार को लिखा गया पत्र
 1. अनौपचारिक होता है
 2. व्यक्तिगत होता है
 3. औपचारिक होता है
 4. सरकारी होता है
9. औपचारिक पत्रों के समापन पर लिख जाता है -
 1. प्रिय
 2. आज्ञाकारी
 3. भवदीय
 4. शुभकामनाओं सहित
10. औपचारिक पत्रों के प्रारम्भ में - नहीं लिखा जाता
 1. श्रीमान
 2. प्रिय मित्र
 3. मान्यवर
 4. माननीय



प्रक्रिया

1. व्यक्तिगत कार्य
2. शिक्षक कक्षा में औपचारिक/अनौपचारिक पत्रों के अंतर को स्पष्ट करेगा।
3. औपचारिक पत्रों की विशेषताओं पर टिप्पणी करेगा।
4. अध्यापक बहुविकल्पीय प्रपत्र की छाया प्रतिलिपि विद्यार्थियों को उपलब्ध कराएगा।
5. इस कार्य के संपादन के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. अध्यापक कक्षा में घूम कर विद्यार्थियों को समय में ही कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा।
7. 15 मिनट के बाद बहुविकल्पीय प्रपत्र अध्यापक एकत्र कर लेगा।
8. एकत्र किए प्रपत्रों को एक-दूसरे विद्यार्थियों को बाँट देगा।
9. अध्यापक सही विकल्पों को श्यामपट्ट पर लिखकर/बोलकर बता देगा। विद्यार्थी प्रपत्रों का मूल्यांकन निर्देशानुसार करेंगे।
10. इस प्रक्रिया में एक कालांश लगेगा।

मूल्यांकन आधार-

सभी सही उत्तर के लिए	अंक विभाजन
सभी सही उत्तर के लिए	5
आठ सही उत्तर के लिए	4
छः सही उत्तर के लिए	3
चार सही उत्तर के लिए	2
दो सही उत्तर के लिए	1

प्रतिपुष्टि -

- ❖ अध्यापक सभी सही उत्तर लिखने वालों की सराहना करेगा।
- ❖ सभी सही उत्तर न देने वाले विद्यार्थियों का शिक्षक मार्गदर्शन अवश्य करें



Unit 25

रचनात्मक मूल्यांकन - पत्र लेखन

प्रदत्त कार्य - विभिन्न विषयों पर औपचारिक पत्र-लेखन

उद्देश्य

- लेखन कौशल का विकास
- औपचारिक तथा अनौपचारिक पत्रों से अवगत कराना
- विषयानुकूल लेखन कौशल की प्रवृत्ति विकसित करना
- सार्थकता एवं संक्षिप्तता
- पठन कौशल का विकास

प्रक्रिया-

- सामूहिक कार्य कराया जाएगा
- शिक्षक सर्वप्रथम विभिन्न प्रकार के औपचारिक पत्रों के प्रारूप विद्यार्थियों को समझाएँगे।
- चार-चार छात्रों के समूह बनाए जाएँ।
- प्रत्येक समूह को निम्नलिखित विषयों पर आधारित (विषय का चयन शिक्षक स्वयं भी कर सकते हैं) एक-एक विषय पत्र लेखन के लिए दिया जाए।
- इस कार्य के लिए 10 मिनट का समय दिया जाए।
- इस दौरान शिक्षक प्रत्येक समूह में घूम कर यह देखें कि सभी विद्यार्थी प्रतिभागी बनें।
- मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख दें।
- लेखन के उपरान्त प्रत्येक समूह एक-एक करके अपना पत्र कक्षा में पढ़ेंगे।
- इस पूरी प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।

पत्र-लेखन के कुछ महत्वपूर्ण विषय -

1. अवकाश के लिए प्रार्थना पत्र
2. शुल्क माफ करने के लिए प्रार्थना-पत्र
3. बस में सामान खो जाने पर परिवहन निगम को पत्र
4. बिजली, पानी आदि की समस्याओं पर आधारित पत्र
5. सड़कों की अव्यवस्था से संबंधित पत्र नगर निगम को
6. परीक्षा के दिनों में लाउडस्पीकर से होने वाले शोर के लिए शिकायती पत्र।



7. संपादक के नाम पत्र
8. पाठ्य पुस्तकों से संबंधित समस्याओं के लिए एन.सी.ई.आर.टी. को पत्र।
9. दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों से संबंधित पत्र।
10. स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र।

मूल्यांकन के आधार

अंक विभाजन

- पत्र के प्रारंभ की औपचारिकताएँ
- विषय वस्तु
- पत्र के अंत की औपचारिकताएँ

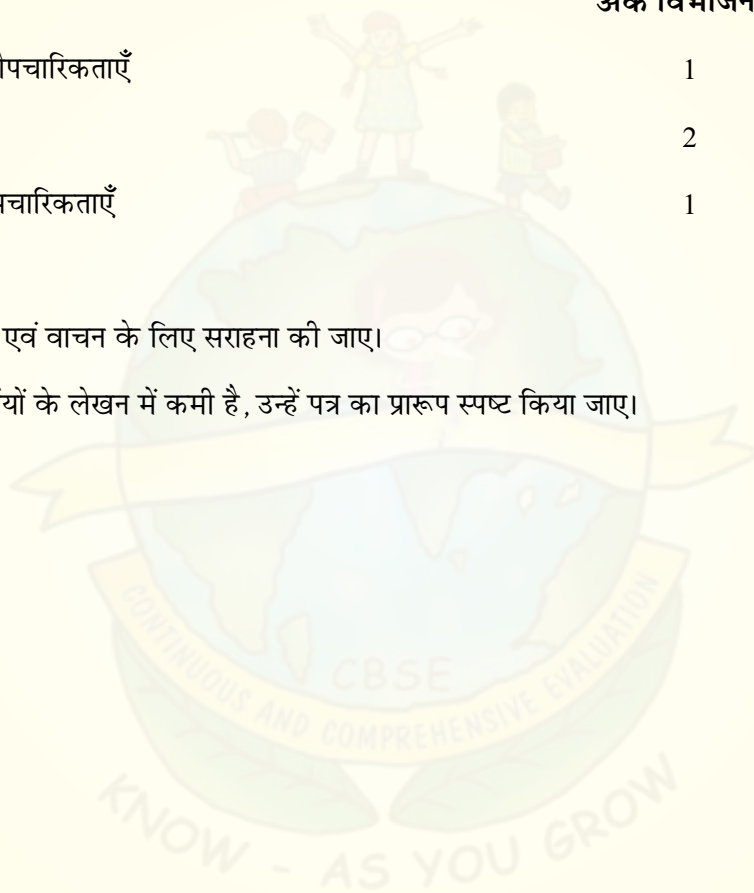
1

2

1

प्रतिपुष्टि

- अच्छे लेखन एवं वाचन के लिए सराहना की जाए।
- जिन विद्यार्थियों के लेखन में कमी है, उन्हें पत्र का प्रारूप स्पष्ट किया जाए।







हिन्दी पाठ्यक्रम 'ब'



हिन्दी पाठ्यक्रम 'ब'

कक्षा-नवीं

रचनात्मक मूल्यांकन

		स्पर्श (गद्य)	स्पर्श (पद्य)	संचयन	व्याकरण
FA-1	रचनात्मक मूल्यांकन-1 (अप्रैल-मई) भार-विभाजन-10% प्रदत्त कार्य	1. धूल	1. रैदास के पद	1. गिल्लू	वर्ण-विच्छेद 'र' के विभिन्न प्रयोग-अनुस्वार, अनुनासिक, मुहावरे, पत्रलेखन, नुक्ता
FA-2	रचनात्मक मूल्यांकन-2 (जुलाई-अगस्त) भार-विभाजन-10% प्रदत्त कार्य	2. दुख का अधिकार 3. एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा	2. रहीम के पद 3. आदमीनामा	2. स्मृति 3. कल्लू कुम्हार की उनाकोटी	पर्यायवाची, विलोम, अनेकार्थी, वाक्यांशों के लिए एक शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, अनुच्छेद लेखन
SA-1	सितम्बर भार विभाजन-20%				
FA-3	रचनात्मक मूल्यांकन-3 (अक्टूबर-दिसंबर) भार-विभाजन-10% प्रदत्त कार्य	4. तुम कब जाओगे : अतिथि 5. वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन 6. कीचड़ का काव्य	4. एक फूल की चाह 5. गीत-अगीत	4. मेरा छोटा सा निजी पुस्तकालय	विराम-चिह्न, वाक्य के अंग, पत्र लेखन



		स्पर्श (गद्य)	स्पर्श (पद्य)	संचयन	व्याकरण
FA-4	रचनात्मक मूल्यांकन-4 (जनवरी-फरवरी) भार-विभाजन-10% प्रदत्त कार्य	7. धर्म की आड़ 8. शुक्रतारे के समान	6. अग्नि पथ 7. नए इलाके में... खुशबू रचते हैं हाथ...	5. हामिद खाँ 6. दीये जल उठे	मुहावरे अनुच्छेद लेखन

कक्षा-नवमी	1	2	3	4	5
FA-1 धूल	मिट्टी की आकृति बनाना	मुहावरे	स्तोत्रगन	पाठ-पठन	पंचतत्वों से संबंधित कविता
रैदास के पद	विचार प्रस्तुतीकरण/ लेखन	प्रार्थना/ गीत-गायन	अंध विश्वासों एवं रूढ़ियों पर चर्चा	पदों का सस्वर वाचन	उपमाएँ ढूँढना एवं लिखना
गिल्लू	कहानी प्रस्तुतीकरण (लघुकथा)	पक्षी की विशेषताओं पर कार्यप्रपत्र	विचार अभिव्यक्ति: जीव जन्तु संरक्षण	वाद-विवाद	परिचर्चा- आवारा पशुओं की समस्या
FA-2 दुख का अधिकार	निजी अनुभव- पोशाक का प्रभाव	पर्यायवाची	काल्पनिकता का आधार - कहानी का अन्य रूप	साक्षात्कार	नाट्यमंचन
रहीम	परिचर्चा : गुणों की महत्ता	दोहों का सुमधुर वाचन	निजी अनुभव का प्रस्तुतीकरण	मुहावरे - 'पानी' शब्द से जुड़े	परिचर्चा : जल संरक्षण के उपाय
एवरेस्ट...	यात्रा-वर्णन (कार्य प्रपत्र)	समीक्षा-यात्रा- वृत्तांत	व्यक्तित्व का चित्रांकन	विलोम शब्द	पर्वतारोही की जीवन यात्रा की प्रस्तुति



कक्षा-नवमी	1	2	3	4	5
स्मृति	बचपन की घटना-वर्णन	शरारतों से संबंधित कहानी	वाद-विवाद	जब मैं डरा... (घटना वर्णन)	पत्र-लेखन
आदमीनामा	अनुच्छेद लेखन एवं प्रस्तुतीकरण	नज़्म गायन	अधूरी कविता पूरी करें	नुक्ते की पहचान	परिचर्चा (आपको कोई अच्छा लगता है क्यों?)
कल्लू कुम्हार...	विज्ञापन लेखन	लोक कथा सुनाना	जमीन के नीचे उगने वाली सब्जियों के नाम	विचार-विमर्श - हस्तशिल्प एवं घरेलू उद्योग	पौराणिक कथा का मंचन
FA-3 तुम कब जाओगे... अतिथि	फिल्म समीक्षा	परिचर्चा- अतिथि देवो भवः	एकांकी लेखन एवं प्रस्तुति	विराम चिह्न का प्रयोग	हास्य व्यंग्य कविता पाठ
एक फूल की चाह	कविता पाठ	चर्चा: सामाजिक असमानता	कविता के अर्थ ग्रहण पर कार्य प्रपत्र	नाट्य मंचन	स्वच्छता हेतु जागरुकता अभियान
मेरा छोटा सा...	वर्ग पहेली (पुस्तकों के नाम)	पुस्तकालय-कार्य	फिल्म एवं पुस्तकों की सूची	मनोबल बढ़ाने हेतु कार्ड/पत्र	मनपसंद रचना की अभिव्यक्ति
वैज्ञानिक चेतना...	परिचय प्रस्तुतीकरण	विचार अभिव्यक्ति	वाद-विवाद	नोबेल पुरस्कार प्राप्त व्यक्तियों की सूची	विज्ञान प्रश्नावली
गीत अगीत	स्वरचित काव्य वाचन	चित्र आधारित कविता रचना	चित्र आधारित संवाद लेखन	मूक अभिनय	लोकगीतों का गायन
कीचड़ का काव्य	मिट्टी से जुड़ाव	आकृति रचना	बीजारोपण का अनुभव	कीचड़ में उगने वाले फल/सब्जी	चित्र व शब्द के आधार पर कविता



कक्षा-नवमी	1	2	3	4	5
FA-4 धर्म की आड़	विभिन्न धर्मों के त्यौहार	वाद-विवाद	स्लोगन	एकांकी मंचन	उपसर्गों से शब्द निर्माण
अग्नि पथ	कवि/लेखक परिचय प्रस्तुतीकरण	विचाराभि- व्यक्ति	स्वरचित काव्य लेखन एवं वाचन	वीर रस की कविता-पाठ	चित्र के आधार पर संवाद-लेखन
हामिद खाँ	चित्र के आधार पर कहानी रचना	कहानी का नाट्य रूपांतरण	कार्य प्रपत्र	ऐतिहासिक स्थल संबंधी कार्य	यात्रा-वृत्तांत लेखन
शुक्रतारे के समान	गाँधी जी से संबंधित व्यक्ति का परिचय प्रस्तुतीकरण	समाचार पत्र निर्माण	सौर मंडल	वर्ग पहेली (मुहावरे)	स्वाधीनता आंदोलन से संबंधित कार्य प्रपत्र
नए इलाके... खुशबू... रचते हैं हाथ	नक्शा निर्माण	हिंदी महीनों के नाम व पर्व	नुक्कड़ नाटक (बालश्रम)	स्वरचित कविता वाचन	बदलते परिवेश का परिचय
दीये जल उठे	गाँधी जी द्वारा संचालित आंदोलन पर चर्चा	आत्मकथात्मक प्रस्तुति	देशभक्ति कविता/गीत गायन	बंधुआ मजदूरी पर विचार अभिव्यक्ति	देश की छवि संवारने में मेरा योगदान (अभिव्यक्ति)





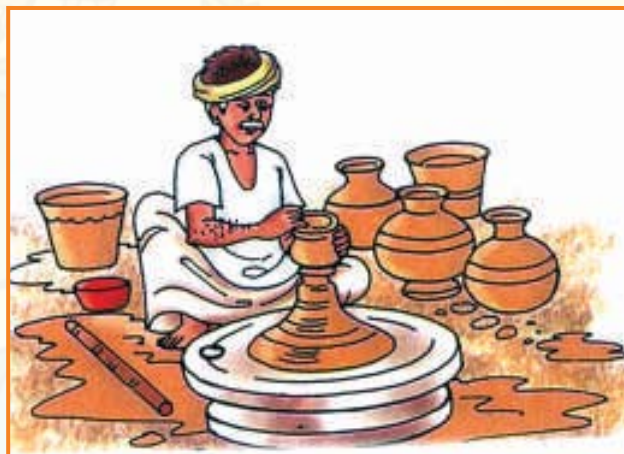
रामविलास शर्मा

प्रदत्त कार्य-1

मिट्टी से कोई एक आकृति/चीज (दीपक) बनाना , सजावट करना तथा दीपक से संबंधित कोई कविता , गीत , चार पंक्तियाँ या (दीपक) आकृति निर्माण में प्राप्त अनुभव सुनाना।

उद्देश्य

- ❖ मिट्टी के संसर्ग का अनुभव कराना
- ❖ सृजनात्मक कौशल का विकास करना
- ❖ कल्पनाशीलता का विकास करना
- ❖ वाचन कौशल का विकास करना
- ❖ मिट्टी की उपयोगिता व महत्ता से परिचय



प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ अध्यापक छात्रों को एक दिन पूर्व ही गतिविधि से परिचित करवाएँगे तथा आकृति निर्माण हेतु आवश्यक सामग्री लाने का निर्देश देंगे। मिट्टी से बनी कुछ चीजें नमूने के रूप में कक्षा में दिखाई जाएँ।
- ❖ गतिविधि आरंभ करने से पूर्व अध्यापक आकृति निर्माण तथा साज-सज्जा की विधि विद्यार्थियों को समझाएँगे। इस कार्य के लिए छात्रों को 25 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ आकृति निर्माण के पश्चात प्रत्येक छात्र इच्छानुसार कविता , गीत , या अनुभव से संबंधित चार पंक्तियाँ सुनाएँगे।
- ❖ गतिविधि के दौरान अध्यापक प्रत्येक छात्र की गतिविधि पर ध्यान रखेंगे तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करेंगे।
- ❖ इस गतिविधि के लिए दो कालांश का समय लग सकता है।
- ❖ विद्यार्थियों को पूर्व में ही मूल्यांकन के आधार व अंकों से सूचित किया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

आकृति निर्माण

रचनात्मक कौशल/सौंदर्य

अंक विभाजन

1

1



कार्य के प्रति जुड़ाव	1
आकृति से संबंधित गीत, कविता, अनुभव की अभिव्यक्ति	1
अभिव्यक्ति का स्तर तथा प्रस्तुतीकरण (आत्मविश्वास, उच्चारण की शुद्धता स्वर की स्पष्टता)	1

टिप्पणी

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से किसी अन्य उपयुक्त मूल्यांकन बिंदु को आधार बनाकर अंक विभाजन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- अध्यापक देखेंगे कि प्रत्येक विद्यार्थी रुचिपूर्वक कार्य कर रहे हैं।
- समय पर कार्य की पूर्णता, सौंदर्यबोध व कल्पनाशीलता की सराहना।
- समय पर कार्य पूर्ण न कर पाने वाले विद्यार्थियों को प्रेरणा व सहयोग।
- सर्वाधिक उत्कृष्ट कृति का प्रदर्शन किया जाए।

प्रदत्त कार्य-2

पाठ पर आधारित मुहावरे छाँटकर वाक्य में प्रयोग

उद्देश्य

- मुहावरों की पहचान
- वाक्य प्रयोग द्वारा अनुप्रयोग की क्षमता का विकास
- शब्द भंडार में वृद्धि
- स्वाध्याय की प्रेरणा

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य
- अध्यापक छात्रों से कुछ मुहावरे पूछकर श्याम पट्ट पर लिखेंगे।
- श्यामपट्ट पर लिखे गए मुहावरों का कुछ छात्र वाक्य प्रयोग करके सुनाएँ।
- अध्यापक छात्रों को पाठ में से मुहावरे छाँटकर लिखने तथा उनसे सार्थक वाक्य बनाने का निर्देश देंगे। इस कार्य के लिए छात्रों को 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- इस गतिविधि के दौरान अध्यापक विद्यार्थियों की गतिविधियों का ध्यान रखेंगे तथा आवश्यकतानुसार उनका मार्गदर्शन करेंगे।



- ❖ अध्यापक द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा छाँटे गए मुहावरे तथा वाक्य प्रयोग को सुनने के पश्चात् अंक दिए जाएँगे।
- ❖ विद्यार्थियों को पूर्व में ही मूल्यांकन के आधार व अंकों के विषय में सूचित किया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
कम से कम पाँच मुहावरे छाँटना	1
सार्थक वाक्य रचना	1
भाषा की शुद्धता-वाक्य स्तर पर, वर्तनी स्तर पर, विराम चिह्न	1
वाक्य रचना का स्तर	1
कार्य की पूर्णता	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वतंत्र रूप से किसी अन्य उपयुक्त मूल्यांकन बिंदु को आधार बनाकर अंक विभाजन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अध्यापक देखेंगे कि प्रत्येक विद्यार्थी रुचिपूर्वक कार्य कर रहे हैं।
- ❖ समय पर कार्य पूर्ण करने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाएगी।
- ❖ कार्य पूर्ण न कर पाने वाले विद्यार्थियों को प्रेरणा व सहयोग।
- ❖ वाक्य प्रयोग की दृष्टि से अशुद्धि के निदान हेतु अन्य विद्यार्थियों से सहयोग लेने की प्रेरणा दी जाएगी।

प्रदत्त कार्य-3

मिट्टी संरक्षण/महत्ता से संबंधित स्लोगन लेखन एवं वाचन

उद्देश्य

- ❖ प्रकृति के तत्वों के प्रति जागरूकता
- ❖ सृजनात्मक क्षमता का विकास
- ❖ कल्पनाशीलता का विकास
- ❖ वाचन का अभ्यास

प्रक्रिया - सामूहिक कार्य

- ❖ पाठ को समझाने के पश्चात् शिक्षक कुछ संबंधित स्लोगन विद्यार्थियों को सुनाएँगे।
- ❖ संबंधित शब्द श्यामपट्ट पर लिखे।



- ❖ दो विद्यार्थी एक स्लोगन तैयार करेंगे। इसके लिए उन्हें 5 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ शिक्षक विद्यार्थियों की सहायता हेतु सबकी गतिविधि पर ध्यान रखेंगे। कार्य से पूर्व मूल्यांकन के आधार छात्रों को बताएँ।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय-वस्तु	1
भाषा-शुद्धता (वाक्य रचना, वर्तनी, विराम चिह्न)	1
शब्दों का चयन, तुकबंदी	1
स्लोगन की प्रभावशीलता	1
प्रस्तुतीकरण (उच्चारण, हाव भाव)	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक किसी अन्य उपयोगी बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ जो विद्यार्थी स्लोगन नहीं बना पाए उनकी सहायता करना।
- ❖ अशुद्धियों को शुद्ध करके समझाना।
- ❖ प्रभावकारी स्लोगन बनाने हेतु शब्द-चयन में सहायता करना।
- ❖ वाचन संबंधी अशुद्धियों का अभ्यास कराकर ठीक करने का प्रयास करना।

प्रदत्त कार्य-4

वाचन (पाठ-पठन)

उद्देश्य

- ❖ वाचन कौशल का विकास
- ❖ उच्चारण क्षमता का विकास

प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- ❖ शिक्षक द्वारा पाठ का आदर्श वाचन करने के पश्चात् यह कार्य कराया जाए। प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम 4-5 पंक्तियाँ पढ़ेंगे।
- ❖ शिक्षक ध्यान से विद्यार्थी के उच्चारण व अभिव्यक्ति पर नजर रखें, इससे सटीक मूल्यांकन हो जाएगा एवं सुधार हेतु सुझाव देने में सुविधा होगी।
- ❖ मूल्यांकन के आधार कार्य से पूर्व ही छात्रों को बता दिए जाएँ।



मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
उच्चारण की शुद्धता	1
आत्मविश्वास	1
आरोह-अवरोह, बलाघात	1
हाव-भाव, भावानुकूल अभिव्यक्ति	1
स्वर की स्पष्टता एवं प्रभावशीलता	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयोगी बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ उच्चारण से संबंधित अशुद्धियों को शुद्ध उच्चारण के द्वारा अभ्यास कराना।
- ❖ भावानुकूल अभिव्यक्ति हेतु प्रेरित करना।
- ❖ आत्मविश्वास के साथ पठन कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करना।

प्रदत्त कार्य-5

मिट्टी/वायु/जल/अग्नि/आकाश से संबंधित कोई एक कविता कक्षा में सुनाना।

उद्देश्य

- ❖ प्रकृति के अहम् तत्वों से परिचय
- ❖ पर्यावरण के प्रति जागरुकता
- ❖ काव्य विधा के प्रति रुझान
- ❖ संवेदनशीलता एवं भावुकता का विकास
- ❖ काव्य पाठ का अभ्यास

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक पूर्व से ही कार्य से परिचित कराते हुए उदाहरण स्वरूप कुछ कविताओं की पंक्तियाँ सुनाएँ तथा विषय से संबंधित कोई एक कविता चुनने का निर्देश दे। इस कार्य के लिए विद्यार्थी को दो-तीन दिन का समय दिया जाए। चुनी हुई कविता को विद्यार्थी लिख कर लाएँ एवं इसे पढ़कर सुनाएँ। इस गतिविधि के दौरान अध्यापक तथा अन्य विद्यार्थी कविताओं को ध्यानपूर्वक सुनेंगे। कार्य से पूर्व मूल्यांकन के आधार बिंदु छात्रों को बता दिए जाएँ।



मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु-विषय एवं भाव के अनुकूल कविता का चयन	1
आत्मविश्वास	1
उच्चारण की शुद्धता व स्पष्टता	1
स्वर की स्पष्टता	1
भावानुकूल एवं प्रवाहपूर्ण अभिव्यक्ति	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक किसी अन्य उपयोगी बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ बहुत अच्छी कविताओं की सराहना की जाए। अच्छी कविताओं को सूचना पट्ट पर प्रदर्शित किया जाए। कविता-चयन एवं कविता पाठ की दृष्टि से कमी होने पर विद्यार्थी को प्रेरित कर सुधार हेतु सुझाव दें। विद्यार्थियों के मत से कुछ अच्छी कविताओं का चुनाव करें। अच्छा पाठ करने वाले विद्यार्थी का चुनाव भी विद्यार्थी स्वयं करें।



दुख का अधिकार

यशपाल

प्रदत्त कार्य-1

पोशाक का हमारी मानसिकता पर प्रभाव : विषय के संदर्भ में विद्यार्थी का निजी अनुभव (लिपिबद्ध करना तथा सुनाना)

उद्देश्य

- पोशाक किस प्रकार से व्यक्ति के विषय में धारणा को निर्धारित करती है इस समझ का विकास करना।
- व्यावहारिक अनुभवों को लिपिबद्ध करने के लिए प्रेरित करना।
- वाचन क्षमता का विकास।
- सामाजिक व आर्थिक असमानता से परिचय।
- विचारों की प्रस्तुति।
- संस्मरण विधा से परिचय।

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम अध्यापक अपने किसी व्यावहारिक अनुभव को कक्षा में सुनाएँ।
- पूर्व में ही छात्रों को गतिविधि के विषय में बताया जाए।
- व्यावहारिक अनुभव को लिपिबद्ध करने के लिए विद्यार्थियों को 10 मिनट का समय दिया जाए।
- विद्यार्थी 3-4 पंक्तियों में अपने अनुभव सुनाएगा और इस समय सभी विद्यार्थी तथा अध्यापक उसे ध्यानपूर्वक सुनेंगे।
- विद्यार्थियों को पूर्व में ही कार्य के मूल्यांकन के आधार बिंदुओं तथा अंक विभाजन से परिचित करवाया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु - विषयानुकूल व भावानुकूल	1
प्रवाहशीलता - क्रमबद्धता, धारा प्रवाह अभिव्यक्ति	1
आत्मविश्वास	1



Unit 2

उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता

1

शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना

1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- अध्यापक देखेंगे कि प्रत्येक विद्यार्थी गतिविधि में हिस्सा ले रहे हैं।
- उत्कृष्ट लेखन व वाचन की सराहना की जाए।
- विद्यार्थी को स्व-मूल्यांकन हेतु प्रेरित किया जाए।
- अन्य विद्यार्थियों से उच्चारण व वर्तनी की शुद्धियों के विषय में पूछा जाए ताकि उन्हें न अशुद्धियों का निदान करवाया जाए।

प्रदत्त कार्य-2

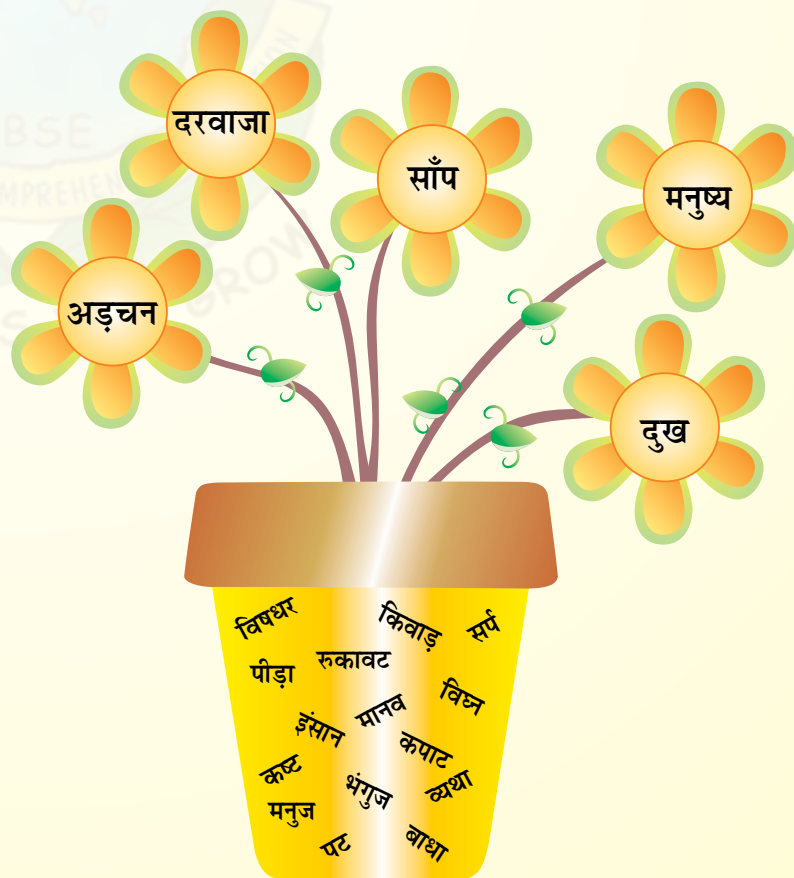
पाठ में आए कुछ शब्दों के पर्यायवाची ढूँढ़ कर लिखना।

उद्देश्य

- शब्द भंडार में वृद्धि
- समान अर्थ वाले शब्दों की पहचान
- चयन क्षमता का विकास

प्रक्रिया

- अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों को यह 'कार्य प्रपत्र' पाठ समझा लेने के पश्चात् दिया जाएगा। कार्य से संबंधित अहम् निर्देश समझाए जाएँगे। नीचे दिए शब्दों को पुष्प की पंखुड़ियों में सही पर्याय के अनुसार लिखें।



मूल्यांकन का आधार

अंक विभाजन

पाँचों पुष्पों की पंखुड़ियों में सही पर्यायवाची लिखने पर	5
चार पुष्पों की पंखुड़ियों में सही पर्यायवाची लिखने पर	4
तीन पुष्पों की पंखुड़ियों में सही पर्यायवाची लिखने पर	3
दो पुष्पों की पंखुड़ियों में सही पर्यायवाची लिखने पर	2
एक पुष्पों की पंखुड़ियों में सही पर्यायवाची लिखने पर	1

प्रतिपुष्टि

- ❖ शिक्षक सही पर्यायवाची शब्द कक्षा में बताएँ। जिन विद्यार्थियों ने अशुद्ध लिखा वे इसे ठीक करके पुनः लिखें।
- ❖ कार्य प्रपत्र एकत्रित करने के पश्चात् अध्यापक सभी पर्यायवाची शब्दों की सूची श्यामपट्ट पर लिखें।

प्रदत्त कार्य-3

‘दुख का अधिकार’ कहानी को किसी रोचक मोड़ पर रोककर आगे की कहानी अपनी कल्पना के आधार पर कक्षा में सुनाना।

उद्देश्य

- ❖ कल्पना शक्ति का विकास
- ❖ श्रवण एवं वाचन शक्ति का विकास
- ❖ सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास
- ❖ नए शब्द भंडार से परिचय

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक कहानी पढ़ाते-पढ़ाते किसी रोचक विषय पर आकर रुक जाएँगे।
- ❖ कक्षा को छः-छः छात्रों के विभिन्न समूहों में बाँटा जाएगा।
- ❖ उन्हें कहानी के अंत के लिए अपनी काल्पनिकता का प्रयोग करके नया अंत लिखने के लिए प्रेरित करना।
- ❖ छात्रों को सोचने के लिए 20 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।
- ❖ जब छात्र आपस में विचार-विमर्श करेंगे तब अध्यापक प्रत्येक समूह के पास जाकर उन्हें कल्पना शक्ति के प्रयोग के लिए प्रेरित करेंगे।
- ❖ प्रत्येक समूह कहानी बना कर अपने समूह में से किसी एक छात्र को वाचन के लिए भेजेगा।



Unit 2

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

कल्पना की नवीनता	1
कहानी से पूर्वापर संबंध	1
पात्रानुकूल भाषा प्रयोग	1
रोचक मोड़	1
प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयोगी बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- छात्रों के प्रयासों की सराहना की जाएगी।
- अच्छे प्रयासों को श्यामपट्ट पर लिखना।
- जो छात्र नियत समय पर कार्य नहीं कर पाए उन्हें अतिरिक्त समय दिया जाएगा।
- अधूरी कहानी या जो कार्य को सही रूप नहीं दे पाए अध्यापक उन्हें कुछ विचार बिंदु देकर सहायता करेंगे।

प्रदत्त कार्य-4

मजदूर/सब्जी वाला/फुटपाथ पर सामान बेचने वालों से बातचीत के मुख्य अंशों का लिखित प्रस्तुतीकरण।

उद्देश्य

- आम आदमी के अनुभवों से परिचित होना।
- समाज की विभिन्न श्रेणियों की अनुभूतियों को समझना।
- बातचीत की कला से अवगत कराना।
- साक्षात्कार विधा से परिचय कराना।
- समाज के सभी वर्गों के लिए संवेदनशील बनाना।

प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- सर्वप्रथम शिक्षक कार्य से परिचित कराएगा।
- साक्षात्कार विधा से परिचित कराते हुए उपरोक्त कार्य को करने के लिए आवश्यक निर्देश देगा।
- साक्षात्कार हेतु पूछे जाने वाले कुछ प्रश्न नमूने के रूप में विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करें।
- साक्षात्कार से संबंधित बातें छात्र कक्षा में ही लिपिबद्ध करेगा।



- ❖ इसके लिए उसे 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ साक्षात्कार के लिए उसे 5 दिन पूर्व ही निर्देश दे दिए जाएँ।
- ❖ पेज पर लिखे साक्षात्कार का शिक्षक मूल्यांकन करेंगे।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदुओं से छात्रों को पूर्व में ही परिचित करवाएँ

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	1
लेखन शैली	1
शब्द चयन एवं वाक्य-रचना	1
वर्तनी, विराम-चिह्न	1
प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन कर आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छी प्रस्तुति की सराहना। लेखन, शब्द-चयन तथा वर्तनी की दृष्टि से पाई जाने वाली कमियों पर चर्चा तथा निवारण हेतु सुझाव दें।

प्रदत्त कार्य-5

‘दुख का अधिकार’ का नाट्य मंचन

उद्देश्य

- ❖ ग्रहणशीलता की क्षमता का विकास
- ❖ अभिनय क्षमता का विकास
- ❖ शुद्ध उच्चारण कौशल का विकास
- ❖ सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास
- ❖ प्रस्तुतीकरण शैली का विकास

प्रक्रिया - सामूहिक कार्य

- ❖ समूह कार्य (प्रत्येक समूह में सात-आठ छात्र हो सकते हैं)।
- ❖ यह कार्य पूरा पाठ पढ़ाने व समझाने के पश्चात् दिया जाएगा।



Unit 2

रचनात्मक मूल्यांकन 2 - दुख का अधिकार

- अध्यापक द्वारा नाटक प्रस्तुतीकरण में मुख्य आधारों का विवरण देना।
- मूल्यांकन के आधार बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखना (प्रत्येक नाटक की प्रस्तुति का समय 5-7 मिनट)
- तैयारी के लिए एक सप्ताह का समय दिया जाएगा।
- अध्यापक सप्ताह के बीच में छात्रों से उनकी कार्य प्रगति पर बातचीत करके प्रोत्साहित करते रहेंगे।
- नियत दिन पर प्रत्येक समूह की प्रस्तुति के समय अध्यापक व कक्षा के अन्य समूह उसका मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
भाषा प्रयोग (शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना)	1
संवाद शैली	1
अभिनय शैली	1
सहभागिता व सक्रिय योगदान	1
प्रस्तुतीकरण (आत्मविश्वास व हावभाव)	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयोगी बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- छात्रों के सामूहिक प्रयासों की सराहना।
- अभिनय विशेष की सराहना।
- कमजोर अभिनय व प्रस्तुति को प्रोत्साहन।



एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा ✨

बछेंदी पाल

प्रदत्त कार्य-1

पर्वतीय स्थल के यात्रा वर्णन से संबंधित कार्य-प्रपत्र

- ❖ स्थान का नाम
- ❖ भारत में भौगोलिक स्थिति.....
- ❖ जलवायु.....
- ❖ रहन-सहन.....
- ❖ खान-पान.....
- ❖ बोली.....
- ❖ प्राकृतिक सौंदर्य.....
- ❖ खेती एवं उपज.....
- ❖ आपको क्यों अच्छा लगा.....
- ❖ अन्य विशिष्टता.....

उद्देश्य

- ❖ विभिन्न पर्वतीय स्थलों से परिचित करवाना।
- ❖ देश के विभिन्न हिस्सों से जोड़ना।
- ❖ पर्यटन के लिए प्रोत्साहित करना।
- ❖ ज्ञान का विस्तार।
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास।
- ❖ लेखन क्षमता का विकास।

प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- ❖ शिक्षक सर्वप्रथम गतिविधि के स्वरूप से छात्रों को परिचित करवाएँगे।
- ❖ उपरोक्त कार्य-प्रपत्र को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।



Unit 3

रचनात्मक मूल्यांकन - एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

- विद्यार्थी ध्यानपूर्वक इसे एक पृष्ठ पर लिखें।
- जब विद्यार्थी लिखेंगे तब अध्यापक घूम-घूम कर छात्रों का निरीक्षण करेंगे।
- विद्यार्थियों को रिक्त स्थानों की पूर्ति हेतु 10-15 मिनट का समय दिया जाए।
- कार्य से पूर्व मूल्यांकन के आधार छात्रों को बताएँ जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

9-10 जानकारीयाँ देने पर	5
7-8 जानकारीयाँ देने पर	4
5-6 जानकारीयाँ देने पर	3
3-4 जानकारीयाँ देने पर	2
1-2 जानकारीयाँ देने पर	1

टिप्पणी

- अध्यापक द्वारा कार्य-प्रपत्र में कोई अन्य उपयोगी प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सही जानकारी न देने वाले विद्यार्थियों को उचित दिशा-निर्देश प्रदान करें ताकि छात्रों का कार्य पूरा हो सके व उन्हें उचित जानकारी प्राप्त हो सके।
- बहुत अच्छा कार्य करने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाए।
- जो कार्य नहीं पूरा कर पाए उन्हें अन्य विद्यार्थियों की सहायता से पूरा करवाया जाए।

प्रदत्त कार्य-2

किसी यात्रा-वृत्तांत को पढ़कर उसकी संक्षेप में समीक्षा प्रस्तुत करें।

उद्देश्य

- स्वाध्याय के लिए प्रेरित करना
- ज्ञान का विस्तार
- यात्रा-वृत्तांत विधा से परिचित कराना
- सार प्रस्तुतीकरण का अभ्यास
- स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास
- शब्द भंडार में वृद्धि एवं उसके अनुप्रयोग की प्रेरणा
- वाचन क्षमता का विकास



प्रक्रिया

- सर्वप्रथम शिक्षक कार्य के बारे में विस्तार से विद्यार्थियों को समझाएँ।
- 'विद्यार्थी को यात्रा-वृत्तांत संबंधी अतिरिक्त अध्ययन सामग्री' इसकी जानकारी दें अथवा कुछ यात्रा-वृत्तांत उपलब्ध करवाएँ।
- मूल्यांकन के आधार बिंदु पहले से ही बता दिए जाएँ।
- यात्रा-वृत्तांत को पढ़ने एवं समीक्षा तैयार करने हेतु उन्हें एक सप्ताह का समय अवश्य दें।
- कार्य के दौरान शिक्षक कार्य का निरीक्षण करें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
प्रवाहशीलता, क्रमबद्धता, अभिव्यक्ति	1
आत्मविश्वास	1
स्वर की स्पष्टता, उच्चारण की शुद्धता	1
शब्द-चयन एवं सटीक वाक्य रचना	1

टिप्पणी

- किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- अच्छे कार्य (समीक्षा प्रस्तुतीकरण) को सराहा जाए।
- विद्यार्थियों को स्व-मूल्यांकन हेतु प्रेरित किया जाए।
- जिन विद्यार्थियों को यात्रा-वृत्तांत उपलब्ध नहीं हुआ उन्हें शिक्षक सहायता प्रदान करें (पुस्तक उपलब्ध करा कर)
- समीक्षा प्रस्तुतीकरण की त्रुटियों को दूर करने हेतु सुझाव दें।

प्रदत्त कार्य-3

“मन के हारे हार है, मन के जीते जीत” उक्ति को चरितार्थ करने वाले किसी व्यक्तित्व का वर्णन।

उद्देश्य

- सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास
- भावुकता व संवेदनशीलता का विकास



Unit 3

रचनात्मक मूल्यांकन - एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

- आत्मिक दृढ़ता की प्रेरणा
- वाचन क्षमता का विकास
- शब्द भंडार में वृद्धि तथा अनुप्रयोग की प्रेरणा

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम अध्यापक किसी ऐसे व्यक्ति का उदाहरण देंगे जो मूक/बधिर/अपाहिज/नेत्रविहीन होने के बावजूद समाज में आत्मनिर्भर होकर सम्माननीय जीवन बिता रहे हैं।
- तत्पश्चात् छात्रों को अपने अनुभवों या आस-पास के वातावरण में किसी ऐसे व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करने का निर्देश दें। इस कार्य को करने के लिए विद्यार्थी को दो दिन का समय दें।
- गतिविधि से पूर्व छात्रों को मूल्यांकन के आधार से परिचित करवाएँ।
- प्रत्येक विद्यार्थी 4-5 पंक्तियों में अपने अनुभव भावपूर्ण शैली में सुनाएगा।
- गतिविधि के दौरान प्रत्येक विद्यार्थी तथा शिक्षक ध्यानपूर्वक सुनेंगे तथा मूल्यांकन भी करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु (भावानुकूल व विषयानुकूल)	1
भाषा की प्रवाहशीलता व क्रमबद्धता	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
शब्दों का चयन व सटीक वाक्य रचना	1
आत्मविश्वास	1

टिप्पणी

- अध्यापक आवश्यकतानुसार अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

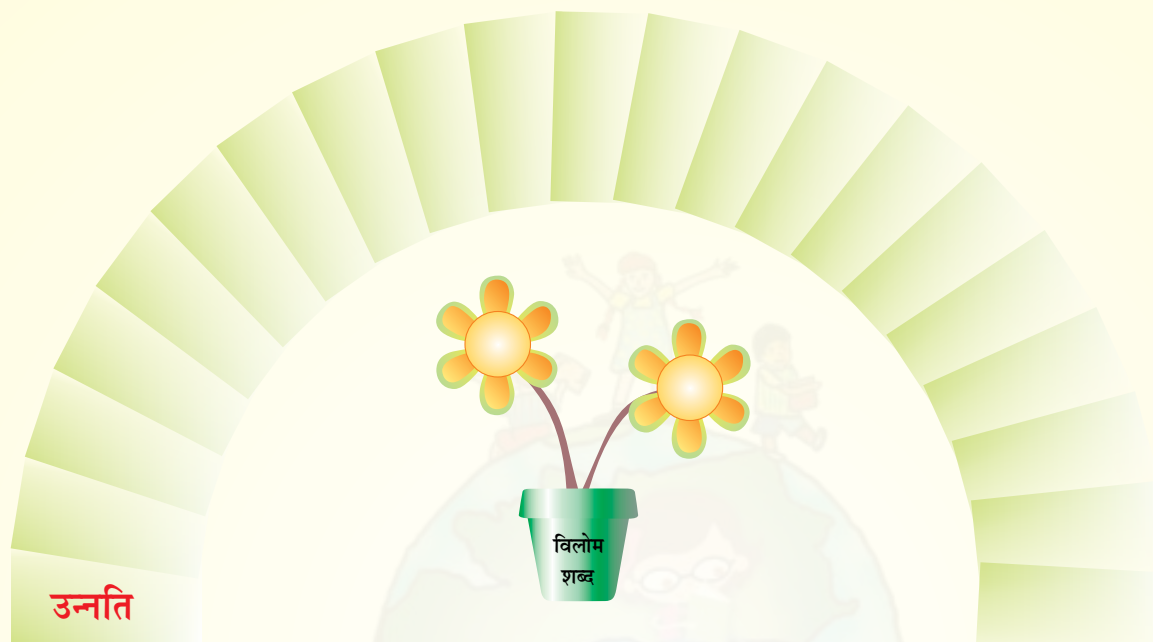
- अध्यापक विद्यार्थी को परिस्थितियों व व्यक्ति का आकलन करने के लिए प्रेरित करें।
- सर्वोत्कृष्ट प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- उच्चारण संबंधी त्रुटियों को जानकर उन्हें दूर करने के लिए विद्यार्थी को प्रेरित करें।
- विद्यार्थियों की सहायता के लिए अध्यापक उन्हें संगीतकार रवींद्र जैन, डॉ. चंद्रा, हेलेन केलर, अभिनेत्री सुधाचंद्रन का उदाहरण दें।





प्रदत्त कार्य-4

खेल-खेल में शब्द विचार-विलोम शब्द पाठ में से शब्द चुनकर उनके विलोम शब्द बताना।



उद्देश्य

- ❖ विलोम शब्द की पहचान
- ❖ स्मरण शक्ति की परख तथा विकास
- ❖ अनुप्रयोग की क्षमता का विकास
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि
- ❖ शिक्षण अधिगम को रोचक बनाना

प्रक्रिया - सामूहिक कार्य

- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक कार्य के विषय में विस्तार से छात्रों को समझाएँ।
- ❖ नमूने के रूप में स्वयं एक-दो शब्द छाँटकर उनके विलोम शब्द श्यामपट्ट पर लिखें।
- ❖ 6 विद्यार्थियों का एक समूह बनाकर पूर्ण कक्षा को समूह में विभाजित करें।
- ❖ पाठ में से शब्द छाँटने के लिए विद्यार्थियों को 10 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ तत्पश्चात् एक समूह से एक विद्यार्थी आकर श्यामपट्ट पर अंकित आकृति में एक शब्द लिखे और दूसरे समूह का एक विद्यार्थी उसका विलोम शब्द लिखे। इसी प्रकार सभी समूहों से कार्य करवाया जाए।
- ❖ अध्यापक ध्यान रखें कि इस सामूहिक कार्य में प्रत्येक विद्यार्थी सक्रिय योगदान दे।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदु तथा अंक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

समूह के प्रदर्शन के आधार पर समूह से संबंध विद्यार्थी को अंक दिए जाएँ

सभी शब्द व विलोम शब्द सही होने पर (6 शब्द)	5
5 शब्द व विलोम शब्द सही होने पर	4
4 शब्द व विलोम शब्द सही होने पर	3
3 शब्द व विलोम शब्द सही होने पर	2
1-2 शब्द व विलोम शब्द सही होने पर	1

प्रतिपुष्टि

- सामूहिक कार्य के संदर्भ में प्रत्येक विद्यार्थी के सक्रिय योगदान की सराहना की जाए।
- वर्तनीगत अशुद्धियों को विद्यार्थियों की सहायता से ढूँढकर उसका समाधान करें।
- कार्य में पीछे रह जाने वाले समूह/विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें तथा अन्य विद्यार्थियों से सहयोग लेने की प्रेरणा दें।

प्रदत्त कार्य-5

किसी अन्य पर्वतारोही का चरित्र अपनाकर उनके अनुभव/जीवन यात्रा का प्रस्तुतीकरण।

उद्देश्य

- विभिन्न पर्वतारोहियों की जानकारी
- पर्वतारोहियों की जीवन शैली व अनुभवों से परिचय
- आत्मिक बल की महत्ता से परिचित करवाना
- शब्द भंडार के अनुप्रयोग की प्रेरणा
- चिंतन-मनन/निरीक्षण एवं आत्मसात् करने की प्रवृत्ति का विकास
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास
- मंच-भय से मुक्ति

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम शिक्षक किसी एक पर्वतारोही का चरित्र स्वयं अपनाकर कक्षा में प्रस्तुत करें।
- विद्यार्थी अन्य पर्वतारोहियों के बारे में कहाँ से जानकारी प्राप्त करें इसके बारे में शिक्षक बताएँ।
- विद्यार्थियों को 5 के समूह में बाँटे जो मिलकर कार्य करें।



- ❖ विद्यार्थियों को इस कार्य के लिए एक सप्ताह का समय अवश्य दें।
- ❖ इस दौरान विद्यार्थी अगर शिक्षक से सलाह लेना चाहते हों तो उनकी सहायता करें।
- ❖ एक समूह से एक विद्यार्थी चरित्र को प्रस्तुत करे।
- ❖ मंचन के समय शिक्षक यह सुनिश्चित करें कि सभी छात्र रुचि लेकर सहयोग करें।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदु पूर्व में ही विद्यार्थियों को बताए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	1
शब्दों का चयन	1
भाषा शुद्धता (उच्चारण, वाक्य रचना)	1
अभिव्यक्ति/हावभाव/प्रस्तुतीकरण	1
आत्मविश्वास	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वतंत्र रूप से किसी अन्य उपयुक्त मूल्यांकन बिंदु को आधार बनाकर अंक विभाजन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छे कार्य को सराहा जाए।
- ❖ जो कार्य पूर्ण नहीं हुआ उसे पूरा कराने में सहायता करें।
- ❖ विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करे ताकि वे अच्छी तरह कार्य कर पाएँ।
- ❖ त्रुटियों के सुधार के लिए सुझाव दें।





तुम कब जाओगे अतिथि

शरद जोशी

प्रदत्त कार्य-1

फिल्म समीक्षा - 'तुम कब जाओगे अतिथि' पाठ के आधार पर बनी फिल्म 'अतिथि तुम कब जाओगे' की समीक्षा प्रस्तुति।

उद्देश्य

- समालोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास
- समीक्षा विधा से परिचय
- विचार-विश्लेषण की क्षमता का विकास
- चिंतन-मनन की प्रवृत्ति का विकास
- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास
- शब्द भंडार में वृद्धि एवं अनुप्रयोग

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक किसी भी फिल्म की समीक्षा बताते हुए इस विधा से विद्यार्थियों का परिचय करवाएँ।
- कार्य के विषय में विस्तार से विद्यार्थियों को समझाया जाए।
- गतिविधि से पूर्व विद्यार्थियों को उपरोक्त फिल्म देखने का निर्देश दिया जाए।
- फिल्म समीक्षा एक पृष्ठ पर 10-15 पंक्तियों में कक्षा में ही लिखवाई जाए और इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को दस मिनट का समय दिया जाए।
- कार्य के दौरान अध्यापक कक्षा में घूमकर कार्य का निरीक्षण करें तथा आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करें।
- मूल्यांकन के आधार बिंदुओं से छात्रों को गतिविधि से पूर्व परिचित अवश्य करवाया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

कथावस्तु के अनुरूप प्रस्तुति

1

समीक्षा के सभी तत्वों का समावेश

1



Unit 4

शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना, विराम चिह्न	1
वर्तनी की शुद्धता	1
प्रवाहशीलता एवं क्रमबद्धता	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक आवश्यकतानुसार किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ सर्वश्रेष्ठ समीक्षा का चयन एवं सराहना की जाए।
- ❖ समीक्षा की दृष्टि से कमी होने पर विद्यार्थी को उससे परिचित करवाते हुए सुझाव दें।
- ❖ वाक्य तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को श्यामपट्ट पर अंकित करें।
- ❖ सर्वश्रेष्ठ फिल्म समीक्षा को कक्षा के सूचनापट्ट पर प्रदर्शित करें।

प्रदत्त कार्य-2

परिचर्चा : 'अतिथि देवो भव' उक्ति का आधुनिक समय में औचित्य

उद्देश्य

- ❖ भारतीय संस्कृति में अतिथि के विषय में अवधारणा से परिचय
- ❖ विचार-विश्लेषण की क्षमता का विकास
- ❖ चिंतन-मनन की प्रवृत्ति का विकास
- ❖ स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास
- ❖ वाचन कौशल का विकास
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि एवं अनुप्रयोग

प्रक्रिया

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक भारतीय संस्कृति में अतिथि के प्रति उत्कृष्ट भावना के विषय में बताते हुए कुछ उदाहरण देंगे, जैसे - रंतिदेव की कहानी
- ❖ आधुनिक समय में जीवनयापन की कठिनाइयों से जूझते आम मनुष्य के विषय में संक्षिप्त जानकारी छात्रों को दी जाए।
- ❖ कार्य के विषय में विद्यार्थियों को विस्तार से समझाया जाए।



- कार्य की तैयारी हेतु विद्यार्थियों को 5-6 के समूह में विभाजित किया जाए।
- प्रत्येक समूह को प्रस्तुत विषय पर विचार हेतु 10 मिनट का समय दिया जाए और प्रस्तुति हेतु 2-3 मिनट का समय दिया जाए।
- इस कार्य के दौरान अध्यापक ध्यान रखें कि प्रत्येक विद्यार्थी सामूहिक कार्य में रुचिपूर्वक हिस्सा ले रहा है।
- एक समूह द्वारा विचार प्रस्तुति के दौरान अन्य विद्यार्थी तथा शिक्षक कार्य का मूल्यांकन करेंगे।
- मूल्यांकन के आधार तथा अंकों को विद्यार्थियों को पूर्व में ही बता दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय-वस्तु	1
तर्क द्वारा विचारों की पुष्टि	1
विचार-विश्लेषण का स्तर	1
प्रस्तुतीकरण - आत्मविश्वास, उच्चारण, स्वर की स्पष्टता	1
समूह कार्य के प्रति जुड़ाव, क्रमबद्धता, सम्बद्धता	1

टिप्पणी

- शिक्षक आवश्यकतानुसार किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- श्रेष्ठ अभिव्यक्ति की सराहना की जाए।
- प्रत्येक समूह द्वारा प्रस्तुत विचारों पर अन्य समूहों द्वारा प्रतिक्रिया तथा प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित किया जाए।
- उच्चारण की शुद्धता के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करें।
- मुख्य विचार बिंदुओं को श्यामपट्ट पर अंकित करें
- विचाराभिव्यक्ति में कमी होने पर अन्य विद्यार्थियों से सहयोग लेने हेतु प्रेरित करें।

प्रदत्त कार्य-3

नाट्य रूपांतरण - प्रस्तुत पाठ का एकांकी में रूपांतरण एवं प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य

- लेखन कौशल तथा ग्रहणशीलता का विकास
- अभिनय क्षमता व संवाद शैली का विकास



Unit 4

- शुद्ध उच्चारण कौशल का विकास
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास
- आत्मविश्वास का संचार

प्रक्रिया - सामूहिक कार्य

- सर्वप्रथम शिक्षक कार्य के विषय में विस्तार से विद्यार्थियों को समझाएँ।
- यह कार्य समूह में करवाया जाए। पूर्ण कक्षा को छः-सात विद्यार्थियों के समूह में विभाजित कर दिया जाए।
- प्रस्तुत पाठ में एकांकी में रूपांतरित करने का निर्देश विद्यार्थियों को दिया जाए तथा मंचन की तैयारी हेतु उन्हें सात दिन का समय दिया जाए।
- अध्यापक आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों का मार्गदर्शन व सहयोग करेंगे।
- एकांकी मंचन के लिए प्रत्येक समूह को तीन-चार मिनट का समय दिया जाए।
- गतिविधि के दौरान अध्यापक मूल्यांकन करें तथा अन्य समूहों को भी मूल्यांकन हेतु प्रेरित करें।
- कार्य से पूर्व ही मूल्यांकन के आधार तथा अंकों से विद्यार्थियों को परिचित करवा दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

कथानक व भाव के अनुरूप नाट्य रूपांतरण	1
संवाद प्रस्तुतीकरण	1
अभिनय शैली	1
सहभागिता व सक्रिय योगदान	1
आत्मविश्वास, उच्चारण, स्वर की स्पष्टता इत्यादि	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- छात्रों के सामूहिक प्रयासों की सराहना
- अभिनय विशेष की सराहना
- कमजोर अभिनय एवं प्रस्तुति को प्रोत्साहन
- छात्रों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति का चयन





प्रदत्त कार्य-4

विराम चिह्नों का प्रयोग करते हुए काल्पनिकता पर आधारित संवाद लेखन एवं प्रस्तुतीकरण।

उद्देश्य

- ❖ विराम चिह्नों का अनुप्रयोग
- ❖ पूर्वज्ञान की जाँच
- ❖ संवाद शैली का ज्ञान एवं प्रयोग
- ❖ कल्पनाशीलता का विकास
- ❖ लेखन क्षमता/कौशल का विकास
- ❖ मंच भय से मुक्ति

प्रक्रिया

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक विविध विराम चिह्नों से युक्त कुछ संवाद श्यामपट्ट पर नमूने के तौर पर लिखें।
- ❖ तत्पश्चात् कार्य के विषय में विद्यार्थियों को विस्तार से समझाते हुए संवाद लेखन का निर्देश दें।
- ❖ पाठ में जब लेखक के घर अतिथि का आगमन हुआ तो उनके मध्य संभावित संवादों को विविध विराम चिह्नों का प्रयोग करते हुए अपनी कल्पना के आधार पर लिखने का निर्देश विद्यार्थियों को दिया जाए।
- ❖ इस कार्य के लिए छात्रों को दस-बारह मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ संवाद कम-से-कम दस पंक्तियों में लिखे जाएँ।
- ❖ प्रत्येक समूह को संवाद प्रस्तुतीकरण हेतु 2-3 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ कार्य से पूर्व मूल्यांकन के आधार व अंकों से विद्यार्थियों को परिचित करवाया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय एवं भाव के अनुरूप संवाद लेखन	1
शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना, उपयुक्त विराम चिह्न	1
संवादों की प्रस्तुति, उच्चारण की शुद्धता	1
आत्मविश्वास	1
सहभागिता एवं सक्रिय योगदान	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सर्वोत्कृष्ट प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- प्रस्तुति में कमी होने पर अन्य विद्यार्थियों के सहयोग से उन्हें प्रेरित किया जाए।
- उपयुक्त विराम चिह्नों के प्रयोग के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करें
- विद्यार्थियों के सहयोग से विराम चिह्नों की सूची भी श्यामपट्ट पर बनवाई जा सकती है।

प्रदत्त कार्य-5

हास्य-व्यंग्य कविताओं का वाचन

उद्देश्य

- हास्य-व्यंग्य कविताओं से विद्यार्थियों का परिचय
- हास्य-व्यंग्य का जीवन में महत्व
- काव्य विधा की ओर रुझान
- काव्य-पाठ के माध्यम से वाचन कौशल का विकास
- स्वाध्याय की प्रेरणा
- ज्ञान का विस्तार
- मंच भय से मुक्ति

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम अध्यापक हास्य-व्यंग्य कविता से संबंधित चार या छः पंक्तियाँ सुनाकर गतिविधि से छात्रों का परिचय करवाएँ तथा आदर्श वाचन भी प्रस्तुत करें।
- गतिविधि से दो दिन पूर्व ही छात्रों को कुछ हास्य व व्यंग्य की कविता लिखने वाले कवियों के नाम बताएं, जैसे - डॉ. सरोजिनी प्रीतम, हुल्लड मुरादाबादी, काका हाथरसी, सुरेंद्र शर्मा इत्यादि। इसके साथ ही उसे कोई एक कविता चुनकर लाने के लिए निर्देश दें।
- कविता सुनाने के लिए प्रत्येक विद्यार्थी को 1-2 मिनट का समय दिया जाए।
- गतिविधि के दौरान अध्यापक तथा अन्य विद्यार्थी 'वक्ता छात्र' का मूल्यांकन करें।
- मूल्यांकन के आधार तथा अंक के विषय में गतिविधि से पूर्व छात्रों को परिचित करवाया जाए।
- प्रत्येक छात्र के द्वारा सुनाई गई कविता के कवि तथा शीर्षक को अध्यापक श्यामपट्ट पर लिखें।



मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय-वस्तु व भाव के अनुरूप कविता का चयन

1

उच्चारण की शुद्धता एवं स्वर की स्पष्टता

1

आरोह-अवरोह, हाव-भाव

1

आत्मविश्वास

1

प्रवाहशीलता

1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक आवश्यकतानुसार किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ विषय-भाव के अनुरूप कविता के चयन व सशक्त प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- ❖ विद्यार्थियों के सहयोग से सर्वश्रेष्ठ वक्ता का चयन किया जाए।
- ❖ प्रस्तुति में कमी होने पर अन्य विद्यार्थियों के सहयोग से उन्हें दूर करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाए।
- ❖ कविता को सस्वर, हाव-भाव एवं लय के साथ पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाए।





वैज्ञानिक चेतना के वाहक - चंद्रशेखर वेंकटरामन ✨ धीरंजल मालवे

प्रदत्त कार्य-1

परिचय-प्रस्तुतीकरण

“किसी भारतीय वैज्ञानिक से संबंधित परिचय प्रस्तुतीकरण”

उद्देश्य

- ❖ परिचय प्रस्तुतीकरण विधा का परिचय
- ❖ एकत्रित सूचनाओं को प्राथमिकता के आधार पर चुनने का अभ्यास
- ❖ स्वाध्याय की प्रेरणा एवं अनुप्रयोग
- ❖ शब्द भंडार का प्रयोग एवं वृद्धि
- ❖ विचार अभिव्यक्ति

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक पाठ का पाठन करेंगे व समझाएँगे।
- ❖ छात्रों को बताया जाएगा कि इसी पाठ को आधार बनाकर किसी अन्य भारतीय वैज्ञानिक से संबंधित परिचय प्रस्तुत करें।
- ❖ मूल्यांकन का आधार छात्रों को पहले ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।
- ❖ 4-5 छात्रों का एक समूह होगा व पूरी कक्षा को विभिन्न समूहों में बाँटा जाएगा।
- ❖ विद्यार्थियों को तैयारी के लिए दो दिनों का समय दिया जाएगा व प्रत्येक समूह से एक वक्ता अपनी प्रस्तुति 1-2 मिनट में पूरी करेगा।
- ❖ एक वक्ता की प्रस्तुति के समय अन्य समूह उनका मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
तथ्यों का संकलन	1
शब्द चयन का सटीक वाक्य रचना	1
भाषा एवं उच्चारण की शुद्धता	1
अभिव्यक्ति	1





टिप्पणी

- ❖ शिक्षक किसी अन्य उपयोगी बिंदु को मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति की सराहना।
- ❖ सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति की विद्यालय मंच पर प्रस्तुति।
- ❖ सामान्य अशुद्धियों का निदान।
- ❖ जो छात्र पूर्ण जानकारी एकत्र नहीं कर पाए या जिनका कार्य अधूरा रह गया उन्हें वैज्ञानिकों से संबंधित जानकारी उपलब्ध करवाने के लिए विभिन्न पुस्तकों व स्रोतों की जानकारी देना।

प्रदत्त कार्य-2

विचार अभिव्यक्ति

‘अगर धरती से तेल समाप्त हो जाए तो’

उद्देश्य

- ❖ पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता का विकास
- ❖ प्राकृतिक संसाधनों के सदुपयोग हेतु प्रेरित करना
- ❖ प्राकृतिक संसाधनों की समाप्ति पर नए विकल्पों की खोज के लिए प्रेरित करना
- ❖ चिंतन मनन की प्रवृत्ति का विकास
- ❖ कल्पनाशीलता का विकास
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि
- ❖ वाचन कौशल का विकास

प्रक्रिया - सामूहिक कार्य

- ❖ शिक्षक विद्यार्थियों के समक्ष पेड़-पौधों के समाप्त होने की स्थिति की काल्पनिक चर्चा करें एवं उनके समक्ष प्रश्न छोड़ें कि अगर धरती से तेल समाप्त हो जाए तो ऐसी स्थिति में क्या होगा?.....
- ❖ विद्यार्थियों को विचार विमर्श के लिए 4-5 के समूह में बाँट दिया जाए एवं उन्हें 10 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ एक समूह से 1 वक्ता विचार अभिव्यक्ति करेगा।
- ❖ इसके लिए उन्हें 2 से 3 मिनट का समय दिया जा सकता है।
- ❖ मूल्यांकन का आधार पूर्व में ही स्पष्ट कर दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय-वस्तु एवं कल्पनाशीलता	2
रचनात्मक कौशल	1
शब्द चयन एवं सटीक वाक्य रचना	1
प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक स्वतंत्र रूप से किसी अन्य उपर्युक्त बिंदु को आधार बनाकर मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ सशक्त कल्पनाशीलता को व्यावहारिकता के धरातल पर आँका जाए। अच्छे तथ्यों को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- ❖ स्वमूल्यांकन की प्रेरणा दी जाए।
- ❖ सर्वाधिक उत्कृष्ट प्रस्तुति का विद्यालय के मंच पर प्रदर्शन किया जाए।
- ❖ कमियों को प्रोत्साहित एवं मार्गदर्शित कर सुधार हेतु प्रयास किया जाए।

प्रदत्त कार्य-3

वाद-विवाद

‘वैज्ञानिक उपकरण विनाश के साधन’

अथवा

“वैज्ञानिक उपकरण विकास के साधन”

उद्देश्य

- ❖ तार्किक व आलोचनात्मक दृष्टि का विकास
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ मंच भय से मुक्ति
- ❖ विचार विश्लेषण की क्षमता का विकास
- ❖ मंडन एवं खंडन का अभ्यास





प्रक्रिया - सामूहिक कार्य

- शिक्षक विद्यार्थियों को वाद-विवाद कला से अवगत करवाते हुए विषय का परिचय दें।
- संपूर्ण कक्षा को दो वर्गों (एक-पक्ष) (दूसरा-विपक्ष) में बाँटा जाए।
- मूल्यांकन का आधार पहले से ही विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।
- 5-6 छात्रों का एक समूह होगा व अलग-अलग समूहों को पक्ष-विपक्ष में बाँटा जाएगा।
- प्रत्येक समूह से एक वक्ता अपना वक्तव्य प्रस्तुत करेगा (समय सीमा 1-2 मिनट)
- एक प्रस्तुति के समय अन्य विद्यार्थी उसका मूल्यांकन करेंगे।
- तैयारी के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा व उस समय शिक्षक घूम-घूमकर निरीक्षण करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
तार्किक क्षमता	1
भाषायी क्षमता	1
अभिव्यक्ति व प्रस्तुतीकरण	1
उपयुक्त उदाहरणों द्वारा तर्क की पुष्टि	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयोगी बिंदु को मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।
- प्रत्येक वक्ता को प्रोत्साहित किया जाए।
- अच्छे वक्ताओं व विषय वस्तु को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत करने का मौका दिया जाए।
- प्रस्तुति, अभिव्यक्ति एवं विषय वस्तु से संबंधित कमियों को शिक्षक अपने सुझावों द्वारा दूर करने का प्रयास किया करें।

प्रदत्त कार्य-4

भारतीय मूल के नोबेल पुरस्कार पाने वाले व्यक्तियों के नाम व कार्य क्षेत्र की सूची

उद्देश्य

- उपलब्ध सूचनाओं/जानकारी का संकलन
- ज्ञान का विस्तार

- ❖ स्वाध्याय की प्रेरणा एवं अनुप्रयोग
- ❖ विश्व पटल पर भारतीयों का योगदान
- ❖ महान व्यक्तित्व से अभिप्रेरणा

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ शिक्षक द्वारा पाठ पढ़ाने के पश्चात् यह कार्य विद्यार्थियों को दिया जाएगा।
- ❖ विद्यार्थियों को मूल्यांकन का आधार कार्य से पूर्व ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।
- ❖ विद्यार्थियों को तैयारी के लिए दो दिन का समय दिया जाएगा।
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम पाँच व ज्यादा से ज्यादा 12-15 नोबल विजेताओं की सूची व कार्यक्षेत्र की सूची तैयारी करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

15 व्यक्तियों व कार्यक्षेत्र की सूची	5
12 व्यक्तियों व कार्यक्षेत्र की सूची	4
9 व्यक्तियों व कार्यक्षेत्र की सूची	3
6 व्यक्तियों व कार्यक्षेत्र की सूची	2
3 व्यक्तियों व कार्यक्षेत्र की सूची	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वतंत्र रूप से किसी अन्य उपयुक्त मूल्यांकन बिंदु को आधार बनाकर अंक विभाजन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ सभी नोबल विजेताओं व कार्यक्षेत्र का वर्णन श्यामपट्ट पर किया जाएगा।
- ❖ अधिकतम कार्य/सर्वश्रेष्ठ कार्य की विशेष सराहना।
- ❖ सभी विद्यार्थियों को नोबल पुरस्कार विजेताओं व कार्यक्षेत्र की सूची कॉपी पर लिखने के लिए कहा जाए।
- ❖ अधूरे कार्य करने वाले छात्रों को प्रोत्साहन।



प्रदत्त कार्य-5

विज्ञान प्रश्नावली

उद्देश्य

- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- ❖ लेखन क्षमता का विकास
- ❖ विचार मंथन की प्रेरणा
- ❖ वैज्ञानिक सोच की ओर उन्मुख करना
- ❖ पूर्व ज्ञान का अनुप्रयोग

शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करने हेतु निम्नलिखित प्रपत्र दिया जाएगा।

प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- ❖ पत्तों का रंग हरा क्यों होता है?
- ❖ समुद्र का रंग नीला क्यों होता है?
- ❖ कोई भी वस्तु नीचे (धरती पर) ही क्यों गिरती है?.....
- ❖ आपके एक हाथ में एक किलोग्राम वजन की वस्तु है और दूसरे हाथ में 200 ग्राम की वस्तु है दोनों वस्तुएँ एक-हाथ की ऊँचाई से गिराने पर पहले कौन सी वस्तु गिरती है.....
- ❖ नौका भारी होने के बावजूद पानी में कैसे तैरती है?.....
- ❖ एक बहुत बड़ा वायुयान एक पक्षी के टकराने से कैसे ध्वस्त हो जाता है?.....
- ❖ सूर्य ग्रहण क्यों होता है?.....
- ❖ तारें क्यों टिमटिमाते हैं?.....
- ❖ बादल कैसे बनते हैं?.....
- ❖ इंद्रधनुष क्यों दिखाई देता है?.....
- ❖ तेल पानी पर क्यों तैरता है?.....

नोट - शिक्षक अन्य प्रश्नों के माध्यम से भी प्रपत्र तैयार कर सकते हैं।



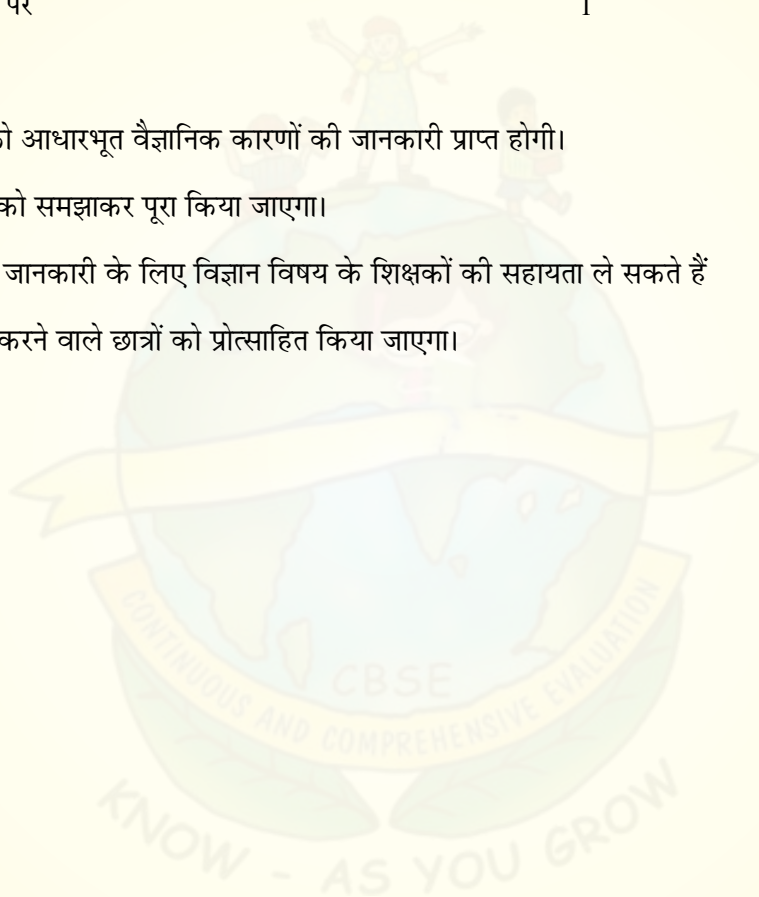
मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

9-10 सही उत्तर देने पर	5
7-8 सही उत्तर देने पर	4
5-6 सही उत्तर देने पर	3
3-4 सही उत्तर देने पर	2
1-2 सही उत्तर देने पर	1

प्रतिपुष्टि

- विद्यार्थियों को आधारभूत वैज्ञानिक कारणों की जानकारी प्राप्त होगी।
- अधूरे कार्यों को समझाकर पूरा किया जाएगा।
- छात्र अधिक जानकारी के लिए विज्ञान विषय के शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं
- अच्छा कार्य करने वाले छात्रों को प्रोत्साहित किया जाएगा।





कीचड़ का काव्य

काका कालेलकर

प्रदत्त कार्य-1

“मिट्टी के प्रति सौंदर्यबोध जगाना”

“दैनिक जीवन में इस्तेमाल की जाने वाली तथा घर की शोभा बढ़ाने वाली मिट्टी से बनी वस्तुओं के विषय में जानकर सूची बनाना व संबंधित वस्तुओं के विषय में कुछ पंक्तियाँ सुनाना।”

उद्देश्य

- ❖ मिट्टी के विविध उपयोगों से परिचय
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- ❖ कलात्मक अभिरुचि का विकास
- ❖ सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास
- ❖ श्रवण-वाचन कौशल का विकास
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि तथा अनुप्रयोग पर बल

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक बाँस से बनी कुछ वस्तुओं का उदाहरण देते हुए उनके सौंदर्य व उपयोग के संदर्भ में कुछ पंक्तियाँ सुनाते हुए विद्यार्थियों को कार्य के स्वरूप से परिचित करवाए।
- ❖ बाँस से बनी उपयोगी वस्तुओं की तरह मिट्टी से बनी उपयोगी वस्तुओं के विषय में विचार करने उनकी सूची बनाने का निर्देश छात्रों को दें। बनाई गई सूची में से किसी एक वस्तु के विषय में विचार करने के लिए भी कहा जाए। इस कार्य के लिए छात्रों को 10-12 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ उपरोक्त कार्य छात्रों से एक-एक पृष्ठ पर कराया जाए, जिसे शिक्षक विचाराभिव्यक्ति से पूर्व एकत्रित कर लें
- ❖ सूची तथा विचाराभिव्यक्ति दोनों को मूल्यांकन का आधार बनाया जाए।
- ❖ गतिविधि के दौरान शिक्षक छात्रों के कार्य पर ध्यान रखें तथा आवश्यकतानुसार उनका मार्गदर्शन करें



Unit 6

रचनात्मक मूल्यांकन 3 - कीचड़ का काव्य

- ❖ विचाराभिव्यक्ति के लिए प्रत्येक छात्र को 1 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ कार्य से पूर्व मूल्यांकन के आधार तथा अंक से छात्रों का परिचय करवाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

नाम की सूची

5 से अधिक नाम

5

4 नाम लिखने पर

4

3 नाम लिखने पर

3

2 नाम लिखने पर

2

1 नाम लिखने पर

1

5

विचाराभिव्यक्ति

1

विषय वस्तु

1

शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना

1

उच्चारण की शुद्धता, स्वर की स्पष्टता

1

आरोह-अवरोह, हाव-भाव

1

5

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक किसी अन्य किसी उपयुक्त बिंदु को आधार बनाकर विचाराभिव्यक्ति का मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अधिकतम नामों की सूची बनाने तथा उत्कृष्ट विचाराभिव्यक्ति की सराहना की जाए।
- ❖ कार्य पूर्ण न होने की स्थिति में विद्यार्थियों को अन्य छात्रों के सहयोग से कार्य पूर्ण करने के लिए प्रेरित किया जाए।
- ❖ विद्यार्थियों के सहयोग से नाम की सूची बनवाकर सूचनापट्ट पर प्रदर्शित किया जाएगा।
- ❖ विद्यार्थी की विचाराभिव्यक्ति का मूल्यांकन करने के लिए अन्य छात्रों का सहयोग भी लिया जा सकता है।





प्रदत्त कार्य-2

कागज पर मिट्टी लगे अंगूठे की छाप द्वारा चित्र/आकृति तैयार करना।

उद्देश्य

- कलात्मक अभिरूचि का विकास
- मिट्टी के प्रति सौंदर्य-बोध जगाना
- कल्पनाशीलता का विकास
- मिट्टी के संसर्ग का अनुभव
- प्रकृति से जुड़ाव व संवेदना जगाना
- आत्मसंतोष
- श्रवण-वाचन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक चॉक लगे अंगूठे की छाप से श्यामपट्ट पर कोई भी आकृति बनाते हुए कार्य के स्वरूप से विद्यार्थियों को परिचित करवाएँ।
- चॉक की ही तरह मिट्टी लगे अंगूठे की छाप से कागज पर चित्र या आकृति तैयार करने का निर्देश छात्रों को दें।
- एक दिन पूर्व ही छात्रों को आवश्यक सामग्री लाने का निर्देश दिया जाए।
- इस कार्य के लिए 10-15 मिनट का समय छात्रों को दिया जाए।
- तैयार आकृति के विषय में बोलने के लिए छात्रों को कहा जाए तथा इसके लिए उसे एक मिनट का समय दिया जाए।
- गतिविधि के दौरान शिक्षक निरीक्षण करे व आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।
- मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही विद्यार्थियों को बताए जाएँ।
- विचाराभिव्यक्ति का मूल्यांकन शिक्षक व छात्र दोनों मिलकर करें।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

कार्य की पूर्णता	1
कलात्मकता	1
विषय वस्तु (विचाराभिव्यक्ति के संदर्भ में)	1

Unit 6

शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना

1

आत्मविश्वास

1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक आवश्यकतानुसार अन्य किसी उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ कार्य की पूर्णता तथा उत्कृष्टता की सराहना की जाए।
- ❖ औसत विद्यार्थियों को प्रोत्साहन दिया जाए।
- ❖ छात्रों के सहयोग से कलात्मक दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ आकृति/चित्र का चयन कर सूचना पट्ट पर प्रदर्शित करेंगे।
- ❖ शिक्षक मिट्टी में रंग मिलवाकर भी यह कार्य करवा सकते हैं।

प्रदत्त कार्य-3

मिट्टी में बीजारोपण का अनुभव : लेखन व वाचन

उद्देश्य

- ❖ मिट्टी से संसर्ग का अनुभव
- ❖ प्रकृति के प्रति सौंदर्य बोध व संवेदनशीलता
- ❖ अनुभव का विस्तार - स्वयं कार्य करके सीखना
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- ❖ लेखन व वाचन कौशल का विकास
- ❖ आत्मसंतोष
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि व अनुप्रयोग

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक छात्रों को बीज से पौधा बनने की प्रक्रिया बताकर कार्य से परिचित करवाएँ।
- ❖ विद्यार्थियों को मिट्टी के छोटे से बर्तन में मिट्टी भरकर उसमें जौ/चना/मूंग/गेहूँ आदि के दाने बोने के लिए कहा जाए। प्रतिदिन उसे जल से सींचकर आवश्यक देखभाल का निर्देश भी दिया जाए। यह कार्य विद्यार्थी घर में करेंगे।
- ❖ बीजारोपण से अंकुर फूटने तक की प्रक्रिया का विद्यार्थी निरीक्षण करें।



- समस्त प्रक्रिया के दौरान प्राप्त अनुभव को प्रत्येक छात्र आत्मसात करें।
- अंकुर फूटने के पश्चात् विद्यार्थी मिट्टी का वह बर्तन जिसमें बीजारोपण किया गया था शिक्षक को दिखाए तथा उसे सामने रखकर कम से कम एक मिनट में अपने अनुभव कक्षा में सुनाए।
- संपूर्ण कार्य के दौरान शिक्षक प्रत्येक छात्र का मार्गदर्शन करें।
- प्रस्तुति के समय शिक्षक व छात्र ध्यानपूर्वक सुनें तथा मूल्यांकन करें।
- मूल्यांकन के आधार तथा अंक से छात्रों को गतिविधि आरंभ करवाने से पूर्व ही परिचित करवाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
कार्य की पूर्णता	2
कार्य के प्रति रुचि व जुड़ाव	1
प्रस्तुतीकरण - शब्दचयन, सटीक वाक्य रचना, हाव-भाव, उच्चारण की शुद्धता, आत्म विश्वास	2

टिप्पणी

- अध्यापक आवश्यकतानुसार अन्य किसी उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- कार्य की पूर्णता, रुचि लेने के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- प्रत्येक छात्र को कार्य पूर्ण करने के लिए प्रेरित किया जाए।
- विद्यार्थियों के सहयोग से उत्कृष्ट ढंग से कार्य संपन्न करने वाले तथा रोचक शैली में अनुभव सुनाने वाले विद्यार्थी का चयन कर उसकी प्रशंसा की जाए।
- विद्यार्थियों द्वारा किए गए कार्य को प्रदर्शन हेतु कक्ष में रखकर उनको प्रोत्साहित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-4

रेत व कीचड़ में उगने वाले फल, सब्जी, अनाज के विषय में जानकारी प्राप्त कर सूची तथा चित्र बनवाना।

उद्देश्य

- ज्ञान का विस्तार
- जिज्ञासु-प्रवृत्ति का विकास
- स्वयं कार्य करके अनुभव प्राप्ति पर बल
- लेखन कौशल का विकास
- शब्द भंडार में वृद्धि एवं अनुप्रयोग
- तथ्यों का संकलन



प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों को जमीन के भीतर उगने वाले कंद, मूल, फल के विषय में बताकर कार्य से परिचित करवाएँ।
- एक दिन पूर्व शिक्षक छात्रों को रेत व कीचड़ में उगने वाले फल, सब्जी, अनाज आदि के विषय में जानकारी प्राप्त करने का निर्देश दें।
- कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी उपरोक्त वस्तुओं की सूची बनाएँ तथा वस्तु संबंधी चित्र भी बनाएँ/चिपकाएँ।
- इस कार्य को एक पृष्ठ पर करवाया जाए तथा कार्य के स्वरूप के अनुसार उचित समय दिया जाए।
- गतिविधि के दौरान शिक्षक विद्यार्थियों के क्रिया-कलापों पर दृष्टि रखे तथा ध्यान रखे कि प्रत्येक विद्यार्थी कार्य कर रहा है।
- मूल्यांकन के आधार तथा अंक कार्य से पूर्व विद्यार्थियों को बता दिए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

कम से कम पांच शब्द व चित्र बनाने पर	5
कम से कम चार शब्द व चित्र बनाने पर	4
कम से कम तीन शब्द व चित्र बनाने पर	3
कम से कम दो शब्द व चित्र बनाने पर	2
कम से कम एक शब्द व चित्र बनाने पर	1

प्रतिपुष्टि

- सफलतापूर्वक कार्य सम्पन्न करने पर विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- विद्यार्थियों के सहयोग से उपरोक्त विषय से संबंधित नामों को जानकर उसकी सूची श्यामपट्ट पर अंकित की जाए।
- सर्वश्रेष्ठ कार्य (सूची व चित्र की दृष्टि से) का प्रदर्शन सूचनापट्ट पर किया जाए।

प्रदत्त कार्य-5

दिए गए चित्रों एवं शब्दों के आधार पर स्वरचित कविता-लेखन

उद्देश्य

- रचनात्मक लेखन का विकास
- कल्पनाशीलता का विकास
- काव्यविधा में अभिरुचि उत्पन्न करना



- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि एवं अनुप्रयोग
- ❖ भावुकता एवं संवेदनशीलता का विकास
- ❖ सौंदर्य-बोध

प्रक्रिया



- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक कुछ शब्द श्यामपट्ट पर लिखकर उनका प्रयोग करते हुए कविता की दो पंक्तियों की रचना कर छात्रों को सुनाए तथा कार्य से छात्रों का परिचय करवाएँ।
- ❖ उपरोक्त चित्र या इसी प्रकार के कोई अन्य चित्र दिखाए तथा चित्र संबंधी शब्द श्यामपट्ट पर लिखें।
- ❖ विद्यार्थियों को निर्देश दें कि चित्र व शब्दों की सहायता से स्वरचित कविता की रचना करें।
- ❖ कविता कम-से-कम दस पंक्तियों की होनी चाहिए।
- ❖ 5-6 विद्यार्थियों का एक समूह बनाकर सम्पूर्ण कक्षा को समूहों में विभाजित किया जाए।
- ❖ काव्य-लेखन के लिए विद्यार्थियों को 15-20 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ काव्य-लेखन के पश्चात् प्रत्येक समूह में से कोई एक विद्यार्थी कविता-चयन करे।



- गतिविधि के दौरान अध्यापक कक्षा में घूमकर निरीक्षण करें तथा आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करें। शिक्षक यह भी ध्यान रखे कि प्रत्येक विद्यार्थी गतिविधि में हिस्सा ले रहा है।
- मूल्यांकन का आधार तथा अंक विद्यार्थियों को पूर्व में ही बता दिए जाएँ।
- प्रस्तुतीकरण के समय शिक्षक एवं छात्र दोनों ही मूल्यांकन करें।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय व भाव के अनुरूप रचनात्मक अभिव्यक्ति	1
कल्पनाशीलता, क्रमबद्धता, सुसम्बद्धता, मौलिकता	1
शब्दचयन, सटीक वाक्य रचना	1
प्रस्तुतीकरण-आरोह-अवरोह, तुकबंदी, लय	1
आत्मविश्वास, उच्चारण की शुद्धता एवं स्वर की स्पष्टता	1

टिप्पणी

- शिक्षक आवश्यकतानुसार अन्य उपयोगी बिन्दु को मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- कलात्मकता, रचनात्मकता व स्वरचित काव्यलेखन हेतु सभी विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- विद्यार्थियों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ रचना का चयन कर उसे सूचनापट्ट पर प्रदर्शित किया जाए।
- जिस समूह के कार्य में कमी रह गई है उनका मार्गदर्शन कर उन्हें प्रोत्साहन दिया जाए।



धर्म की आड़

गणेश शंकर विद्यार्थी

प्रदत्त कार्य-1

विभिन्न धर्मों से संबंधित त्यौहारों के नाम

उद्देश्य

- सर्व-धर्म समभाव उत्पन्न करना
- विभिन्न धर्मों एवं त्यौहारों के नाम की जानकारी
- विविधता में एकता की महत्ता का परिचय
- लेखन क्षमता का विकास
- उदार विचारधारा को प्रोत्साहन
- पूर्व ज्ञान व अनुभव का प्रयोग

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम शिक्षक कार्य से संबंधित प्रत्येक बातों को विद्यार्थियों को समझाएँ।
- विभिन्न धर्मों के नाम व कुछ त्यौहारों के बारे में बताकर इस गतिविधि के लिए प्रोत्साहित करें ताकि विद्यार्थी रुचिपूर्वक कार्य करें।
- इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को 10-12 मिनट अवश्य दें।
- दो-दो का समूह विचार/चर्चा कर एक सूची तैयार करें।
- इस दौरान शिक्षक आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करें।
- शिक्षक कार्य को और रोचक बनाने के लिए चित्रों का भी प्रयोग कर सकते हैं। विद्यार्थी एक पेज पर जानकारी को लिखेंगे।

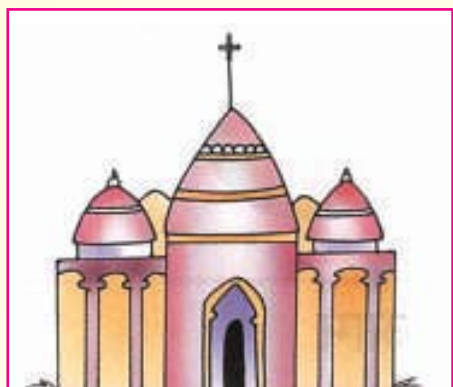


मस्जिद



मंदिर





गिरजाघर



गुरुद्वारा

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

- चारों धर्म के अधिकतम त्यौहारों के नाम लिखने पर
- चारों धर्म के कुछ (3-4) त्यौहारों के नाम लिखने पर
- चारों धर्म के (1-2) त्यौहारों के नाम लिखने पर
- तीन धर्म के त्यौहारों के नाम लिखने पर
- दो धर्म के त्यौहारों के नाम लिखने पर

अंक विभाजन

- 5
- 4
- 3
- 2
- 1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को आधार बनाकर मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ बहुत अच्छा कार्य करने वाले छात्र अच्छा न कर पाए छात्रों की सहायता कर उनका कार्य पूरा करवाएँ।
- ❖ शिक्षक श्यामपट्ट पर धर्म का नाम व संबंधित त्यौहारों के नाम की सूची लिखें ताकि अधिकतम जानकारी सबको प्राप्त हो सके।

प्रदत्त कार्य-2

वाद-विवाद

विषय - “राजनीति में धर्म का हस्तक्षेप”

उद्देश्य

- ❖ विचार विश्लेषण की क्षमता का विकास
- ❖ मंडन एवं खंडन का अभ्यास
- ❖ तार्किक व आलोचनात्मक दृष्टि का विकास



- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ साम्प्रदायिक सद्भावना का विकास
- ❖ मंच भय से मुक्ति

प्रक्रिया

- ❖ शिक्षक विद्यार्थियों को वाद-विवाद से अवगत करवाते हुए विषय का परिचय दें।
- ❖ संपूर्ण कक्षा को दो वर्गों (एक-पक्ष) (दूसरा-विपक्ष) में बाँटा जाए।
- ❖ मूल्यांकन का आधार पहले से ही विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।
- ❖ चार-चार विद्यार्थियों का एक समूह होगा व एक समूह से एक वक्ता अपने समूह का मत प्रस्तुत करें।
- ❖ तैयारी के लिए 15 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ प्रस्तुति का समय 1-2 मिनट होगा।
- ❖ तैयारी के समय में शिक्षक घूम-घूमकर विभिन्न समूहों का निरीक्षण करेंगे।
- ❖ एक समूह की प्रस्तुति के समय अन्य (समूह मूल्यांकन का कार्य करेंगे)।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
तार्किक क्षमता	1
भाषायी क्षमता	1
अभिव्यक्ति व प्रस्तुतीकरण	1
उपयुक्त उदाहरणों द्वारा तर्क की पुष्टि	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयोगी बिंदु को मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।
- ❖ प्रत्येक वक्ता को प्रोत्साहित किया जाए।
- ❖ अच्छे वक्ताओं व विषय-वस्तु को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत करने का मौका दिया जाए।
- ❖ प्रस्तुति, अभिव्यक्ति एवं विषय वस्तु से संबंधित कमियों को शिक्षक अपने सुझावों द्वारा दूर करने का प्रयास करें।



प्रदत्त कार्य-3

साम्प्रदायिक एकता को प्रोत्साहित करते हुए स्लोगन लिखना।

उद्देश्य

- साम्प्रदायिक एकता एवं सद्भावना का विकास
- सृजनात्मक क्षमता का विकास
- कल्पनाशीलता का विकास
- श्रवण व वाचन कौशल का विकास
- सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास

प्रक्रिया

- दो विद्यार्थियों द्वारा मिलकर कार्य किया जाए।
- सर्वप्रथम शिक्षक किसी अन्य विषय जैसे - वृक्षों का महत्व प्रतिपादित करते हुए स्लोगन सुनाए और कार्य के स्वरूप से परिचित कराएं।
- साम्प्रदायिक एकता को बढ़ावा देने के लिए स्लोगन लिखने और उनसे संबंधित कुछ चित्र बनाने का निर्देश छात्रों को दें।
- छात्रों की सहायता के लिए कार्य से संबंधित कुछ शब्द भी श्यामपट्ट पर लिखें।
- इस कार्य के लिए 5-10 मिनट का समय दिया जाए।
- इस कार्य को विद्यार्थी एक अलग पृष्ठ पर करें।
- गतिविधि के दौरान शिक्षक निरीक्षण करें व आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।
- स्लोगन-वाचन के लिए विद्यार्थियों को एक-एक मिनट का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय-वस्तु	1
भाषा शुद्धता (वाक्य रचना, वर्तनी, विराम चिह्न)	1
शब्दों का चयन, तुकबंदी	1
स्लोगन की प्रभावशीलता	1
प्रस्तुतीकरण (उच्चारण, हाव-भाव)	1

टिप्पणी

- शिक्षक किसी अन्य उपयोगी बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।



प्रतिपुष्टि

- उत्कृष्ट स्लोगन-लेखन के लिए सराहना की जाए।
- जो विद्यार्थी स्लोगन नहीं बना पाए उनकी सहायता करना।
- वर्तनी एवं उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को अन्य विद्यार्थियों के सहयोग से दूर करना।
- उत्कृष्ट स्लोगन को सूचना-पट्ट पर प्रदर्शित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-4

साम्प्रदायिक एकता पर आधारित एकांकी मंचन

उद्देश्य

- साम्प्रदायिक एकता एवं सद्भावना का विकास
- रचनात्मक लेखन कौशल का विकास
- कल्पनाशीलता का विकास
- एकांकी विधा के प्रति रुझान
- अभिनय के प्रति रुचि जगाना
- संवाद शैली का विकास
- मंच भय से मुक्ति

प्रक्रिया

- सामूहिक कार्य (प्रत्येक समूह में सात-आठ छात्र हो सकते हैं।)
- सर्वप्रथम शिक्षक भारत में साम्प्रदायिक एकता का उल्लेख करते हुए कार्य से विद्यार्थियों को परिचित करवाएँ।
- प्रत्येक समूह को साम्प्रदायिक एकता के आधार पर एकांकी लेखन का निर्देश दिया जाए।
- इस कार्य की तैयारी एवं मंचन हेतु प्रत्येक समूह को एक सप्ताह का समय दिया जाए।
- कार्य के दौरान शिक्षक छात्रों का मार्गदर्शन करें एवं सहयोग दें।
- मंचन के लिए प्रत्येक समूह को 5-7 मिनट का समय दिया जाएगा।
- गतिविधि की प्रस्तुति का शिक्षक एवं छात्र दोनों मूल्यांकन करेंगे।
- मूल्यांकन के आधार तथा अंक छात्रों को पूर्व में ही बता दिए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय-वस्तु (विषय व भाव के अनुरूप)

1

शब्द-चयन व संवाद शैली

1



अभिनय क्षमता, हाव-भाव	1
सहभागिता एवं सक्रिय योगदान	1
शुद्ध उच्चारण, स्वर की स्पष्टता, आत्मविश्वास	1

टिप्पणी

- अध्यापक अन्य किसी उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- छात्रों के सामूहिक प्रयासों की सराहना की जाए।
- उत्कृष्ट पटकथा-लेखन तथा सशक्त अभिनय की प्रशंसा की जाए।
- कमजोर अभिनय प्रस्तुति को प्रोत्साहन दिया जाए।
- विद्यार्थियों के सहयोग से सर्वश्रेष्ठ अभिनय करने वाले विद्यार्थी का चयन किया जाए।

प्रदत्त कार्य-5

विभिन्न उपसर्गों की सहायता से शब्द-निर्माण

उद्देश्य

- सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों को उपसर्ग का अर्थ एवं प्रयोग के बारे में विस्तार से समझाएँ।
- कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर शिक्षक गतिविधि को स्पष्ट करें।
- शब्द निर्माण के लिए प्रोत्साहित करें ताकि विद्यार्थी रुचिपूर्वक कार्य में भाग लें।
- सभी व्यक्तिगत रूप से पेज पर यह कार्य करें।
- पाठ में आए कुछ उपसर्गों का चयन किया जाए।
- शिक्षक श्यामपट्ट पर निम्न प्रकार से कार्य को करा सकते हैं।





नोट : पाठ के अन्य उपसर्ग भी इसमें शामिल कर सकते हैं। कुल दस उपसर्ग दिए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

प्रत्येक उपसर्ग से कम से कम पाँच शब्द बनाने पर

5

प्रत्येक उपसर्ग से कम से कम चार शब्द बनाने पर

4

प्रत्येक उपसर्ग से कम से कम तीन शब्द बनाने पर

3

कम से कम पाँच उपसर्ग से दो शब्द बनाने पर

2

कम से कम तीन उपसर्ग से एक शब्द बनाने पर

1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को आधार बनाकर मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ बहुत अच्छा कार्य करने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- ❖ शिक्षक श्यामपट्ट पर शब्दों को लिखें ताकि सभी विद्यार्थी अधिक से अधिक शब्दों को जान सकें एवं अपनी त्रुटियों का सुधार कर सकें।







श्रुतारे के समान

स्वामी आनंद

प्रदत्त कार्य-1

विचाराभिव्यक्ति

महात्मा गाँधी से घनिष्ठ रूप से जुड़े व्यक्तियों के विषय में जानना व किसी एक व्यक्ति के विषय में विस्तार से बताना।

उद्देश्य

- ❖ स्वाधीनता सेनानियों के प्रति आदर भाव जगाना
- ❖ देशभक्ति का विकास
- ❖ तथ्यों का संकलन
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- ❖ युवा पीढ़ी को इतिहास से जोड़ना
- ❖ स्वाध्याय की प्रेरणा
- ❖ श्रवण-वाचन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक स्वाधीनता संग्राम में महात्मा गाँधी की भूमिका को संक्षेप में बताते हुए उनके कुछ सहयोगियों के नामों से छत्रों को परिचित कराएँ, जैसे- जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, लाला लाजपत राय इत्यादि।
- ❖ दो दिन पूर्व ही छात्रों को कार्य के स्वरूप से परिचित कराते हुए संबंधित व्यक्ति के विषय में जानकारी एकत्रित करने का निर्देश दें।
- ❖ एकत्रित जानकारी के आधार पर उनके जीवन एवं कार्यों के विषय में आठ से दस पंक्तियाँ छात्र कक्षा में सुनाएँ।
- ❖ इस कार्य की प्रस्तुति के लिए 1-2 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ मूल्यांकन के आधार एवं अंकों के विषय में पूर्व में ही जानकारी दे दी जाए। मूल्यांकन का कार्य शिक्षक स्वयं करें।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय-वस्तु एवं तथ्य संकलन

2

शब्द चयन एवं सटीक वाक्य रचना

1

प्रस्तुतीकरण (आत्मविश्वास, हाव-भाव, प्रवाहशीलता, उच्चारण)

2

टिप्पणी

- ♦ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ♦ कार्य की पूर्णता व प्रस्तुति के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- ♦ उत्कृष्ट प्रस्तुति की प्रशंसा की जाए।
- ♦ कार्य में कमी होने पर विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करे तथा सुधार हेतु सुझाव दें
- ♦ प्रस्तुति के दौरान स्वतंत्रता सेनानियों के नाम की सूची श्यामपट्ट पर बनवाई जा सकती है।
- ♦ छात्रों के सहयोग से सर्वश्रेष्ठ वक्ता का चयन किया जा सकता है।
- ♦ कुछ स्वतंत्रता सेनानियों के रेखाचित्र बनवाकर सूचनापट्ट पर प्रदर्शित किए जा सकते हैं।

प्रदत्त कार्य-2

समाचार पत्र निर्माण

उद्देश्य

- ♦ समाचार पत्रों के प्रति जागरुकता
- ♦ जनसंचार माध्यम के प्रति रुझान
- ♦ रचनात्मकता का विकास
- ♦ विचार-विश्लेषण एवं तथ्यों का संकलन
- ♦ लेखन-कौशल का विकास
- ♦ शब्द भंडार में वृद्धि एवं अनुप्रयोग
- ♦ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- ♦ सामान्य ज्ञान में वृद्धि



प्रक्रिया

- सामूहिक कार्य
- 5-6 विद्यार्थियों का एक समूह बनाकर सम्पूर्ण कक्षा को समूहों में विभाजित किया जाएगा।
- सर्वप्रथम अध्यापक कुछ हिंदी समाचार पत्रों का नाम बताते हुए छात्रों को समाचार पत्र पढ़ने के लिए दें।
- कक्षा में एक समाचार पत्र दिखाकर शिक्षक छात्रों को कार्य के स्वरूप के विषय में समझाएँ।
- कार्य से पूर्व 2-3 दिन का समय छात्रों को दिया जाए।
- समाचार-पत्र निर्माण के संदर्भ में विभिन्न स्तंभों के विषय में समझाते हुए उनके नाम भी विद्यार्थियों को पूर्व में ही बता दिए जाएँ। जैसे - राष्ट्रीय समाचार, विज्ञान संबंधी समाचार, खेल जगत, विज्ञापन, देश-प्रदेश के समाचार, विदेशों से संबंधित समाचार, मनोरंजन, बाल कोना (कविता, कहानी, कार्टून), मौसम संबंधी जानकारी आदि।
- विद्यार्थी अपनी पसंद के अनुसार स्तंभ चुनकर सभी स्तंभों का विभाजन समूह में कर लें।
- चुने गए स्तंभों से संबंधित विषय सामग्री हस्तलिखित होनी चाहिए।
- समाचार पत्र का निर्माण कक्षा में ही करवाया जाए।
- इस कार्य के लिए प्रत्येक समूह को 30 मिनट का समय दिया जाए।
- मूल्यांकन के आधार एवं अंक विभाजन के विषय में विद्यार्थियों को पूर्व में ही बता दिया जाए।
- गतिविधि पूर्ण होने तक शिक्षक छात्रों के कार्य पर ध्यान रखें तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय सामग्री का चयन

2

कलात्मक प्रस्तुति

2

अधिकतम स्तंभों का समावेश

1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- कार्य की पूर्णता एवं समूह में सक्रिय योगदान हेतु विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- कार्य में कमी होने पर विद्यार्थियों को उससे परिचित करवाते हुए उसमें सुधार के लिए सुझाव दिए जाएँ।
- कक्षा में निर्मित सभी समूहों के समाचार पत्र पुस्तकालय में प्रदर्शित किए जाएँ।



प्रदत्त कार्य-3

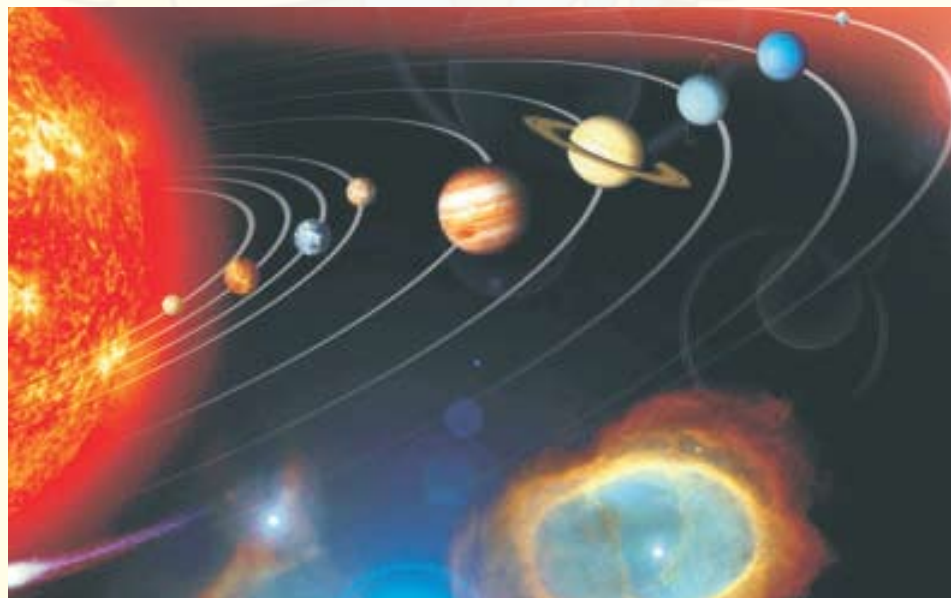
सौरमंडल को दर्शाना

उद्देश्य

- सौरमंडल की जानकारी (ज्ञान का विस्तार)
- पूर्व ज्ञान का अनुप्रयोग
- विचारमंथन एवं चिंतन
- रचनात्मक एवं कलात्मक क्षमता का विकास

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक संक्षेप में सौरमंडल के विषय में विद्यार्थियों को जानकारी दें।
- शिक्षक चाहे तो कार्य (गतिविधि) से संबंधित जानकारी एक दिन पूर्व ही दे दें ताकि विद्यार्थी तैयारी कर सकें।
- श्यामपट्ट पर निम्न चित्र को बनाएँ।



- सूर्य से दूरी के अनुसार विद्यार्थी ग्रहों के नाम लिखें।
- विद्यार्थियों को इस कार्य के लिए 10 मिनट का समय दिया जाए।
- सभी विद्यार्थी एक पेज पर चित्र को बनाकर ग्रहों के नाम लिखेंगे।
- शिक्षक इस दौरान आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों की सहायता करें।



मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
सभी ग्रहों के नाम लिखने पर	2
सभी ग्रहों के नाम सूर्य से दूरी के अनुसार लिखने पर	2
स्वच्छता (सौन्दर्य)	1

टिप्पणी

- ♦ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ♦ सुंदर व सही कार्य करने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाएँ।
- ♦ अधूरा कार्य करने वालों की सहायता की जाएँ।
- ♦ सही क्रम व ग्रहों के नाम को शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दें ताकि सभी को सही उत्तर मिल जाए।

सूर्य

बुध

शुक्र

पृथ्वी

मंगल

बृहस्पति

शनि

यूरेनस

नेपच्यून

प्रदत्त कार्य-4

वर्ग पहेली (कार्य-प्रपत्र)

वर्ग में दिए गए शब्दों में कुछ मुहावरे छिपे हैं जिन्हें ढूँढ़कर सूची तैयार करें।

उद्देश्य

- ♦ मुहावरों का ज्ञान
- ♦ समस्या समाधान की प्रेरणा
- ♦ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास



- स्मरण शक्ति का विकास
- चिंतन प्रवृत्ति का विकास
- लेखन-कौशल का विकास

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य
- शिक्षक कार्य से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी पूर्व में ही विद्यार्थियों को समझा दें।
- कार्य-प्रपत्र के माध्यम से या श्यामपट्ट पर लिखकर इस कार्य को करवाया जाए।
- मुहावरे ढूँढ़ने के लिए विद्यार्थियों को कम-से-कम 10-12 मिनट का समय दिया जाएगा।
- विद्यार्थी सूची तैयार कर सकते हैं या कार्य प्रपत्र में विभिन्न रंगों का इस्तेमाल करते हुए मुहावरों को प्रदर्शित कर सकते हैं।
- कार्य के समय शिक्षक विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार सहायता करें।

नौ	घा	व	भ	र	ना	लो	क	आ
दो	अ	चू	ला	ह	क	हे	ह	ड़े
ग	रु	क	ई	गु	में	के	र	हा
या	त	हो	क	ज़	द	च	ब	थों
र	हो	ना	र	र	म	ने	र	ले
ह	जा	च	ना	र	ख	च	सा	ना
हो	ना	कों	च	ने	च	बा	ना	क
जा	न	प	र	खे	ल	ना	ट	न
ना	क	भौ	सि	को	ड़	ना	क	क



मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

10 या अधिक मुहावरे छाँट लेने पर	5
8-9 मुहावरे छाँट लेने पर	4
6-7 मुहावरे छाँट लेने पर	3
4-5 मुहावरे छाँट लेने पर	2
2-3 मुहावरे छाँट लेने पर	1

प्रतिपुष्टि

- ❖ अधिकतम मुहावरे छाँटने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- ❖ जो कार्य पूरा न कर पाए उनकी सहायता की जाए।
- ❖ गलत मुहावरे छाँटने वाले विद्यार्थियों को सही नाम बताए जाएँ।
- ❖ अंत में सारे मुहावरों को शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दें ताकि सभी विद्यार्थी इनसे अवगत हो जाएँ।
- ❖ शिक्षक छाँटे गए मुहावरे का वाक्य प्रयोग, अनुच्छेद में प्रयोग, संवाद में प्रयोग भी करवा सकते हैं।
- ❖ शिक्षकों की सहायता के लिए मुहावरों की सूची -

❖ नाक में दम करना	❖ घाव भरना	❖ अस्त हो जाना
❖ नाकों चने चबाना	❖ लोहे के चने चबाना	❖ जान पर खेलना
❖ कहर बरसाना	❖ नौ-दौ ग्यारह हो जाना	❖ नाक-भौं सिकोड़ना
❖ आड़े हाथों लेना	❖ अचूक होना	

प्रदत्त कार्य-5

स्वाधीनता आंदोलन से जुड़े स्थान व घटनाओं पर आधारित कार्य प्रपत्र

उद्देश्य

- ❖ ऐतिहासिक जानकारी
- ❖ विचारमंथन एवं चिंतन
- ❖ स्वाधीनता आंदोलन में स्थान के महत्व की जानकारी
- ❖ पूर्व ज्ञान की परख एवं अनुप्रयोग
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- ❖ लेखन कौशल का विकास



प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- ❖ शिक्षक ऐतिहासिक महत्व के कुछ स्थान व घटनाओं की कक्षा में चर्चा कर इस गतिविधि के लिए विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करें।

कार्य-प्रपत्र

- ❖ जलियाँवाला बाग
- ❖ साबरमती
- ❖ चम्पारण
- ❖ अल्फ्रेड पार्क (इलाहाबाद)
- ❖ लाहौर
- ❖ मेरठ
- ❖ झाँसी
- ❖ काकोरी
- ❖ कलकत्ता
- ❖ मुंबई

नोट : शिक्षक अन्य प्रश्नों का भी चुना व कर सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

9-10 सही जानकारी देने पर	5
7-8 सही जानकारी देने पर	4
5-6 सही जानकारी देने पर	3
3-4 सही जानकारी देने पर	2
1-2 सही जानकारी देने पर	1

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छा कार्य करने वाले प्रत्येक विद्यार्थी की सराहना की जाए।
- ❖ जिनके कार्य अधूरे रह गए, अन्य छात्रों की सहायता से कार्य को पूर्ण करवाया जाए।
- ❖ श्यामपट्ट पर सही जानकारी लिख दी जाए (कार्य प्रपत्र एकत्रित करने के पश्चात)



रैदास के पद

प्रदत्त कार्य-1

विचार प्रस्तुतीकरण/लेखन

विषय : ईश्वर की सर्वव्यापकता के संदर्भ में छात्रों का दृष्टिकोण

उद्देश्य

- आध्यात्मिक मूल्यों का विकास
- नैतिक मूल्यों का विकास
- विचार-विश्लेषण क्षमता का विकास
- विचार लेखन व प्रस्तुति का अभ्यास
- तार्किक शैली का विकास

प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- अध्यापक द्वारा ऐसी शक्ति पर चर्चा करना जिसके माध्यम से प्रकृति, जीव संचालित होते हैं।
- छात्रों को दिए गए विषय पर सोचने के लिए कम से कम 5-7 मिनट दिए जाएँगे।
- प्रत्येक छात्र व्यक्तिगत स्तर पर विचार लिखकर कक्षा में प्रस्तुति करेगा।
- छात्रों को लेखन व प्रस्तुति के मूल्यांकन का आधार व अंक श्यामपट्ट पर लिखकर सूचित किया जाए।
- जब छात्र सोचकर लिख रहे होंगे तब अध्यापक कक्षा में घूम घूमकर छात्रों का निरीक्षण व निर्देशन करेंगे।
- अध्यापक छात्रों की भाव-अभिव्यक्ति के लिए शब्दों के चयन में सहायता करेंगे।
- जब प्रत्येक छात्र द्वारा प्रस्तुति की जाएगी तब मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा। उस समय अन्य छात्र भी उनका मूल्यांकन करके अपने विचार बिंदु लिख सकते हैं।
- अच्छे विचारों व समान विचारों को अन्य छात्रों को लिखने के लिए प्रेरित करना।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय-वस्तु

1

वैचारिक स्तर

1



भाषा शुद्धता	1
आत्मविश्वास (हाव-भाव)	1
तार्किकता का स्तर	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छे विचारों व प्रस्तुति की सराहना।
- ❖ सामान्य भाषा संबंधी अशुद्धि का शोधन करना।
- ❖ कुछ नए शब्दों के प्रयोग से छात्रों को परिचित करवाएँगे।
- ❖ प्रस्तुतीकरण की कमियों को सुधारने के लिए उपाय सुझाना।

प्रदत्त कार्य-2

किसी अन्य प्रार्थना/गीत का गायन

उद्देश्य

- ❖ भक्ति-भाव से जुड़ाव
- ❖ भावाभिव्यक्ति का विकास
- ❖ गायन/संगीतात्मक शैली का विकास
- ❖ नैतिक मूल्यों का विकास

प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- ❖ अध्यापक द्वारा छात्रों को एक दिन पूर्व बताया जाएगा कि वे कोई अन्य (पाठ्यपुस्तक से अतिरिक्त) प्रार्थना की गीत की तैयारी करके कक्षा में सुनाएँगे।
- ❖ छात्रों को मूल्यांकन के आधार पहले से ही बताया जाएगा।
- ❖ प्रत्येक छात्र द्वारा प्रार्थना-गीत का एक-एक पद सुनाया जाएगा।
- ❖ कक्षा में छात्र किसी अन्य छात्र या स्वयं संगीत उपकरण का प्रयोग भी कर सकते हैं।
- ❖ छात्रों के उच्चारण, लय स्वर के आरोह-अवरोह पर अध्यापक ध्यान रखेंगे।
- ❖ प्रत्येक छात्र को गायन के लिए 1.30 मिनट दिया जाएगा।
- ❖ प्रत्येक छात्र की प्रस्तुति के पश्चात् अन्य छात्रों से उसके मूल्यांकन संबंधी विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया जाएगा।



मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
प्रार्थना गीत का चयन	1
भावानुकूल लयात्मक प्रस्तुति	1
भाषा के उच्चारण की शुद्धता	1
आत्मविश्वास	1
स्पष्टता	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छे व नए प्रार्थना गीत की सराहना।
- ❖ सभी छात्रों को ऐसे प्रार्थना गीतों को सीखने की प्रेरणा।
- ❖ कोई विशेष प्रार्थना-गीत सबको देकर सामूहिक रूप से गायन प्रयास।

प्रदत्त कार्य-3

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात्, अंधविश्वासों एवं रूढ़ियों पर कक्षा में चर्चा।

उद्देश्य

- ❖ वर्तमान समय सामाजिक परिस्थितियों के प्रति जागरूकता।
- ❖ समाज में व्याप्त अंधविश्वासों व रूढ़िवादिता से परिचित करवाना जानकारी प्राप्त करना।
- ❖ सोचने-विचारने द्वारा बौद्धिक क्षमता का विकास।
- ❖ समाज के प्रति युवा-पीढ़ी के कर्तव्यों का बोध करवाना।

प्रक्रिया - सामूहिक कार्य

- ❖ अध्यापक द्वारा किन्हीं दो अंधविश्वासों एवं रूढ़ियों के कारण व उनको दूर करने के उपायों की चर्चा करेंगे।
- ❖ कक्षा में चार-चार छात्रों का समूह बनाया जाएगा।
- ❖ उन्हें चर्चा करने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ प्रत्येक समूह से विचार प्रस्तुतीकरण के लिए किसी एक सदस्य द्वारा अपने विचार कक्षा के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए कहना। (समय सीमा-1 मिनट)



- जब छात्र विचार-विमर्श करेंगे तब अध्यापक द्वारा कक्षा में घूम-घूमकर प्रत्येक समूह का निरीक्षण करेंगे।
- विचारों के संग्रहण व प्रस्तुतीकरण में छात्रों की सहायता करना।
- किसी एक समूह की प्रस्तुति के समय अन्य समूहों को मूल्यांकन का कार्य देना।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय-वस्तु	1
समसामयिक परिस्थितियों के ज्ञान का स्तर	1
कारण के साथ-साथ उपाय का स्तर	1
तार्किक क्षमता	1
भाषा शैली	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- प्रत्येक समूह के मुख्य (बिंदुओं) को अध्यापक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखना।
- अगर छात्र किसी संदर्भ को स्पष्ट नहीं कर पा रहे तो अध्यापक द्वारा स्पष्टीकरण करना।
- प्रत्येक समूह द्वारा प्रस्तुत उपायों पर अन्य समूहों की प्रतिक्रिया जानना।
- समाज की सामान्य कमियों व छात्रों द्वारा उन्हें दूर करने के उपायों की चर्चा करना।

प्रदत्त कार्य-4

कविता पाठ (रैदास के पदों का सस्वर वाचन/गायन)

उद्देश्य

- ब्रजभाषा, अवधी, राजस्थानी मिश्रित भाषा के शब्दों के उच्चारण से परिचय।
- कविता के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
- स्वर के उतार-चढ़ाव का ज्ञान।
- सही व शुद्ध उच्चारण के लिए प्रेरणा/प्रोत्साहन।
- संगीतात्मक अभिरुचि उत्पन्न करना।



प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- ♦ अध्यापक द्वारा छात्रों को मूल्यांकन के आधार से परिचित करवाना।
- ♦ सर्वप्रथम अध्यापक द्वारा आदर्श वाचन।
- ♦ प्रत्येक छात्र से चार-चार पंक्तियाँ पढ़वाना (समय 1.30 मिनट)
- ♦ छात्रों से पढ़वाने के बाद उनकी उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को शुद्ध करना।
- ♦ शिक्षक विद्यार्थियों के उच्चारण पर ध्यान रखेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

उच्चारण-शुद्धता	1
आत्मविश्वास	1
छंदबद्ध काव्य की लयात्मक प्रस्तुति	2
स्वर की स्पष्टता	1

टिप्पणी

- ♦ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।
- ♦ छात्रों द्वारा वाचन करते समय अध्यापक हस्तक्षेप न करें।

प्रतिपुष्टि

- ♦ सामान्य छात्रों को सामान्य गलतियों का विवरण देना व उन्हें शुद्ध करके समझाना।
- ♦ अच्छे आचरण, वाचन व गायन की सराहना करना।
- ♦ अशुद्ध वाचन करने वाले छात्रों को शुद्ध उच्चारण/गायन को प्रोत्साहित व प्रेरित करना।

प्रदत्त कार्य-5

ईश्वर व भक्त के पारस्परिक संबंधों से संबंधित अन्य उपमाएँ ढूँढ़ना व लिखना व बोलना।

उद्देश्य

- ♦ विचार-विश्लेषण क्षमता का विकास
- ♦ लेखन क्षमता का विकास
- ♦ उपमाओं की पहचान
- ♦ भाव साम्यता स्थापित करना
- ♦ प्रस्तुतीकरण की क्षमता का विकास



प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- ❖ कविता समझाने के पश्चात् छात्रों को ईश्वर व भक्त के सामंजस्य को प्रस्तुत करने वाली उपमाओं की चर्चा।
- ❖ अब छात्रों को पुस्तक के अतिरिक्त दो-तीन उपमाएँ देना जिससे ईश्वर व भक्त के पारस्परिक संबंधों पर प्रकाश पड़े जैसे-सूर्य किरण, फूल-सुगंध।
- ❖ अध्यापक द्वारा दिए गए उदाहरण रूपी उपमाओं को श्यामपट्ट पर लिखना।
- ❖ अब छात्रों को तीन मिनट का समय देकर 5 नई उपमाएँ लिखने के लिए देना।
- ❖ जब छात्र इस कार्य को कक्षा में कर रहे होंगे तब अध्यापक घूम-घूमकर छात्रों की गतिविधियों पर नजर रखेंगे व यथासंभव सहायता भी कर सकते हैं।
- ❖ तीन मिनट के पश्चात् प्रत्येक छात्र अपने द्वारा लिखी गई उपमाओं को कक्षा में बोलकर सुनाएगा।
- ❖ अध्यापक द्वारा अन्य अच्छी व समान उपमाओं को श्यामपट्ट पर लिखना।
- ❖ मूल्यांकन के आधार कार्य से पूर्व ही छात्रों को बता दिए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

पाँच सार्थक उपमाओं के लिए	5
चार सार्थक उपमाओं के लिए	4
तीन सार्थक उपमाओं के लिए	3
दो सार्थक उपमाओं के लिए	2
एक सार्थक उपमा के लिए	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वतंत्र रूप से किसी अन्य मूल्यांकन बिंदु को आधार बनाकर अंक विभाजन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ सर्वश्रेष्ठ उपमाओं की सराहना
- ❖ छात्रों के प्रयासों की सराहना
- ❖ असफल छात्रों को प्रेरणा व प्रोत्साहन
- ❖ सर्वश्रेष्ठ उपमाओं को सभी छात्रों को कॉपी में लिखने के लिए प्रेरित करना।





प्रदत्त कार्य-1

परिचर्चा : रूप व आकार की अपेक्षा गुणों की महत्ता : परिचर्चा

उद्देश्य

- आत्मिक गुणों का विकास
- विचार-विश्लेषण की क्षमता का विकास
- चिंतन-मनन की प्रवृत्ति का विकास
- वाचन क्षमता का विकास
- शब्द भंडार के अनुप्रयोग की प्रेरणा

प्रक्रिया - सामूहिक क्रिया

- सर्वप्रथम अध्यापक वर्तमान में युवा-पीढ़ी द्वारा बाहरी रूप-सौंदर्य को महत्ता देने की प्रवृत्ति पर चर्चा करें।
- कुछ उदाहरणों द्वारा गुणों की महत्ता को स्पष्ट करें (सुई, कील, इत्यादि)
- उपरोक्त कार्य के विषय में विस्तार से छात्रों को बताएं।
- पूर्ण कक्षा को 5-6 छात्रों के समूह में विभाजित किया जाए।
- प्रस्तुत विषय पर विचार हेतु विद्यार्थियों को 10 मिनट का समय दिया जाए। प्रस्तुति हेतु 2-3 मिनट का समय प्रत्येक समूह को दिया जाए।
- समूह का प्रत्येक विद्यार्थी परिचर्चा में हिस्सा लें शिक्षक इस ओर ध्यान रखेंगे।
- एक समूह द्वारा विचार प्रस्तुति के दौरान अन्य विद्यार्थी तथा शिक्षक कार्य का मूल्यांकन करेंगे।
- मूल्यांकन के आधार तथा अंकों से विद्यार्थियों को पूर्व में ही बता दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय-वस्तु

1

तर्क द्वारा विचारों की पुष्टि

1



Unit 10

रहीम - रचनात्मक मूल्यांकन

विचार-विश्लेषण का स्तर	1
प्रस्तुतीकरण-आत्म विश्वास, उच्चारण, स्वर की स्पष्टता	1
समूह कार्य के प्रति जुड़ाव, क्रमबद्धता, संबद्धता	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- प्रत्येक समूह द्वारा प्रस्तुत विचारों पर अन्य समूहों की प्रतिक्रिया पूछी जाए।
- उत्कृष्ट विचाराभिव्यक्ति के लिए सराहना की जाए।
- उच्चारण की शुद्धता के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें।
- विचाराभिव्यक्ति में कमी होने पर अन्य विद्यार्थियों से सहयोग लेने के लिए प्रेरित करें।

प्रदत्त कार्य-2

पाठ के अतिरिक्त दोहों का सुमधुर वाचन (किसी एक दोहे का)

उद्देश्य

- काव्य के प्रति आकर्षण उत्पन्न करने के लिए
- स्वर के उचित उतार-चढ़ाव का ज्ञान
- संगीतात्मक अभिरुचि का विकास
- भावात्मक अभिरुचि का विकास
- पाठ के अतिरिक्त दोहों का ज्ञान

प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- शिक्षक कम से कम दो दोहे गाकर बच्चों को गायन/सस्वर वाचन हेतु प्रेरित करें।
- शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी को गायन में सहायता करें।
- एक ही दोहा अगर कुछ विद्यार्थी मिलकर गाना चाहें तो वे स्वतंत्र रूप से ऐसा भी कर सकते हैं।
- शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी को तैयारी हेतु 5 मिनट दें।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

गेयता एवं संगीतात्मकता	2
आत्मविश्वास	1



उच्चारण की शुद्धता	1
भावपूर्ण वाचन	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ मधुर एवं सही वाचन/गायन के लिए सराहना करें।
- ❖ अशुद्ध उच्चारण का सही उच्चारण बताएँ।
- ❖ जो विद्यार्थी ठीक से कार्य पूर्ण नहीं कर पाए, शिक्षक प्रोत्साहित करें ताकि वे सभी सही गायन/वाचन कर सकें।

प्रदत्त कार्य-3

अनुभव प्रस्तुतीकरण : अपनी निजी बात दूसरों को बता देने पर।

उद्देश्य

- ❖ व्यावहारिक अनुभवों को लिपिबद्ध करने के लिए प्रेरित करना
- ❖ वाचन क्षमता का विकास
- ❖ मानवीय प्रवृत्ति की पहचान
- ❖ शब्द भंडार का अनुप्रयोग

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक अपने किसी निजी अनुभव को कक्षा में सुनाए।
- ❖ पूर्व में ही छात्रों को गतिविधि के विषय में बताएँगे।
- ❖ कार्य करने से पूर्व ही मूल्यांकन के आधार से छात्रों को परिचित करवाया जाएगा।
- ❖ निजी अनुभव को लिखने के लिए छात्रों को 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ विद्यार्थी तीन-चार पंक्तियों में अपने अनुभव सुनाएगा और उस समय अन्य छात्र व शिक्षक उसका मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय-वस्तु (विषयानुकूल व भावानुकूल)

1



Unit 10

रहीम - रचनात्मक मूल्यांकन

भाषा की प्रवाहशीलता व क्रमबद्धता	1
आत्मविश्वास	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- अध्यापक देखेंगे कि प्रत्येक विद्यार्थी रुचिपूर्वक कार्य करें।
- उत्कृष्ट प्रस्तुतीकरण की सराहना की जाए।
- विद्यार्थी को स्व-मूल्यांकन हेतु प्रेरित किया जाए।
- अन्य विद्यार्थियों से सामान्य उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को पूछा जाए तथा उनका निदान किया जाए।
- उपरोक्त विषय के संदर्भ में अंतिम निष्कर्ष के विषय में छात्रों से चर्चा की जाए।

प्रदत्त कार्य-4

‘पानी’ शब्द से जुड़े मुहावरे लिखकर वाक्य में प्रयोग करें।

उद्देश्य

- मुहावरों की पहचान
- शब्दभंडार में वृद्धि
- वाक्य प्रयोग द्वारा अनुप्रयोग की क्षमता का विकास
- स्वाध्याय की प्रेरणा
- चिंतन एवं मनन (पूर्वज्ञान के आधार पर)

प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- अन्य शब्द (आँख, नाक...) पर कुछ मुहावरे शिक्षक कक्षा में बताए।
- विद्यार्थियों को पूर्व में ही मूल्यांकन के आधार के बारे में सूचित करें।
- विद्यार्थियों को कम से कम 5 मुहावरों को चुनने एवं वाक्य में प्रयोग के लिए 15 मिनट का समय दें।
- यह कार्य दो विद्यार्थी मिलकर कर सकते हैं अथवा व्यक्तिगत रूप से भी।
- शिक्षक इस गतिविधि के दौरान विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार सहायता करें।



मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
पाँचों मुहावरों से बने वाक्य सही होने पर	5
चार मुहावरों से बने वाक्य सही होने पर	4
तीन मुहावरों से बने वाक्य सही होने पर	3
दो मुहावरों से बने वाक्य सही होने पर	2
एक मुहावरे से बने वाक्य सही होने पर	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ समय पर एवं सही कार्य करने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- ❖ कार्य पूर्ण न कर पाने वाले विद्यार्थियों को प्रेरणा व सहयोग दें।
- ❖ 'पानी' शब्द के बने मुहावरे बताएँ ताकि सभी जान सकें।

पानी पानी होना, पानी मरना, पानी उतरना, आँखों का पानी मरना, पानी सिर से ऊपर जाना, चुल्लू भर पानी में डूब मरना, पानी फेरना, आँख में पानी आना, पानी में रहकर मगर से बैर लेना।

प्रदत्त कार्य-5

'जल संरक्षण के उपाय' (परिचर्चा)

उद्देश्य

- ❖ पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना
- ❖ बौद्धिक क्षमता का विकास
- ❖ चिंतन प्रवृत्ति का विकास
- ❖ विचार लेखन व प्रस्तुति का अभ्यास
- ❖ शब्द भंडार का अनुप्रयोग

प्रक्रिया - सामूहिक कार्य

- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक छात्रों से पर्यावरण में बढ़ती गर्मी व जल की कमी से कक्षा में छात्रों से चर्चा करेंगे।
- ❖ संपूर्ण कक्षा को 4-6 समूहों में बाँटा जाएगा।
- ❖ प्रत्येक समूह में 5-6 छात्र शामिल किए जा सकते हैं।



Unit 10

रहीम - रचनात्मक मूल्यांकन

- छात्रों को 'जल संरक्षण के उपायों' से संबंधित कम से कम 5 विचार बिंदु प्रस्तुत करने के लिए कहा जाएगा।
- प्रत्येक समूह से एक वक्ता अपने विचार कक्षा के सम्मुख प्रस्तुत करेगा।
- मूल्यांकन के आधारों को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।
- जब छात्र आपस में विचार-विमर्श करेंगे तो शिक्षक घूम-घूमकर उनका निरीक्षण करेंगे व अध्यापक द्वारा छात्रों की मदद की जाएगी।
- एक समूह की प्रस्तुति के समय अन्य समूह उसका मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
10 या अधिकतम एवं सार्थक उपायों की संख्या एवं वर्णन	5
8 सार्थक उपायों एवं वर्णन पर	4
6 सार्थक उपायों एवं वर्णन पर	3
4 सार्थक उपायों एवं वर्णन पर	2
4 से कम सार्थक उपायों एवं वर्णन पर	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सार्थक एवं अच्छे उपायों की सराहना व कक्षा के सभी छात्रों से विचार विमर्श।
- अच्छी प्रस्तुति की सराहना।
- जो छात्र प्रस्तुति नहीं कर पाए अध्यापक उन्हें प्रोत्साहित/प्रेरित करना।



आदमीनामा

तज़ीर अकबरावादी

प्रदत्त कार्य-1

‘कर्म ही इंसान की पहचान’

अनुच्छेद लेखन एवं प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य

- ❖ विचार-विश्लेषण क्षमता का विकास
- ❖ नैतिक मूल्यों का विकास
- ❖ कर्तव्यनिष्ठ बनने की प्रेरणा
- ❖ सामाजिक विकास के आधार से परिचय
- ❖ बौद्धिक क्षमता का विकास
- ❖ युवा पीढ़ी के कर्तव्यों का बोध करवाना
- ❖ शब्द-भंडार में वृद्धि
- ❖ वाचन-कौशल का विकास

प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक लाल बहादुर शास्त्री का जीवन-परिचय देते हुए छात्रों को यह समझाने का प्रयास करेंगे कि पारिवारिक व आर्थिक पृष्ठभूमि से ज्यादा मनुष्य के कर्म समाज में उसका स्थान निर्धारित करते हैं।
- ❖ छात्र व्यक्तिगत रूप से यह कार्य करेंगे।
- ❖ छात्रों को विषय देकर तैयारी के लिए दो दिन का समय दिया जाएगा। मूल्यांकन का आधार श्यामपट्ट पर लिख दिया जाएगा।
- ❖ प्रत्येक छात्र 50-60 शब्दों में 1-1.30 मिनट में वाचन करेंगे।
- ❖ प्रत्येक वक्ता के प्रस्तुतीकरण के समय अन्य छात्र एवं शिक्षक वक्ता की प्रस्तुति का मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषयवस्तु	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य-रचना	1



Unit 11

तर्क द्वारा/उदाहरणों द्वारा कथन की पुष्टि	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
आत्मविश्वास	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ उत्कृष्ट विषय-वस्तु व प्रस्तुति की सराहना।
- ❖ सर्वश्रेष्ठ उदाहरणों का श्यामपट्ट पर विवरण।
- ❖ सामान्य उच्चारण व अन्य अशुद्धियों को अध्यापक द्वारा शुद्ध करना।
- ❖ कार्य पूरा न करने वाले विद्यार्थियों को अध्यापक द्वारा प्रोत्साहन और सहायता की जाए।

प्रदत्त कार्य-2

नज़्म गायन

उद्देश्य

- ❖ नज़्म की शैली से परिचय
- ❖ संगीत के प्रति रुचि उत्पन्न करना
- ❖ शुद्ध उच्चारण कौशल का विकास
- ❖ गायन के लिए प्रोत्साहित करना
- ❖ सहभागिता का विकास करना

प्रक्रिया - सामूहिक कार्य

- ❖ शिक्षक छात्रों से चर्चा करेंगे कि इस नज़्म को गाकर रोचक प्रस्तुति की जाए।
- ❖ छः-छः विद्यार्थियों का एक समूह बनाया जाएगा। पूरी कक्षा को विभिन्न समूहों में बाँट दिया जाएगा।
- ❖ छात्रों को मूल्यांकन का आधार पहले से बता दिया जाएगा।
- ❖ विद्यार्थियों को तैयारी के लिए दो दिन का समय दिया जाएगा।
- ❖ प्रत्येक समूह प्रस्तुति करते समय किसी भी वाद्य यंत्र का प्रयोग कर सकता है। (ऐच्छिक)
- ❖ प्रत्येक समूह की प्रस्तुति के समय अन्य समूह एवं शिक्षक मूल्यांकन करेंगे।



मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
उच्चारण की शुद्धता	1
लय एवम् ताल	1
सामूहिक तालमेल	1
आरोह-अवरोह	1
प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ शिक्षक ध्यान दें कि प्रत्येक छात्र इस गतिविधि में हिस्सा ले।
- ❖ अच्छे गायन एवं प्रस्तुतीकरण की सराहना
- ❖ विद्यार्थियों को स्वमूल्यांकन के लिए प्रेरित किया जाएगा।
- ❖ सामान्य अशुद्धियों को शिक्षक द्वारा दूर किया जाएगा।

प्रदत्त कार्य-3

कविता की अधूरी पंक्तियों को पूरा करना। (कम से कम चार पंक्तियों की रचना)

उद्देश्य

- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि उसके अनुप्रयोग की प्रेरणा
- ❖ कविता विधा का परिचय
- ❖ कविता लेखन को प्रोत्साहन
- ❖ कल्पनाशीलता का विकास
- ❖ वाचन क्षमता का विकास

प्रक्रिया - सामूहिक कार्य

- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक कक्षा को कविता लेखन में तुकबंदी व धारा प्रवाह के विषय में समझाकर उनके समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत करें। जैसे -



Unit 11

रचनात्मक मूल्यांकन - आदमीनामा

“जो काम दूसरों के आए

वही मानव कहलाता है

उसके कर्मों से ही

संपूर्ण विश्व निखर जाता है।”

शिक्षक द्वारा दो/तीन पंक्तियों से संबंधित अधूरे वाक्य श्यामपट्ट पर लिखे जाएंगे -

❖ इंसानियत की राह पर चलने वाला ही.....

.....

❖ भला करो सबका यही.....

.....

❖ कोई नहीं अकेला दुनिया में.....

.....

❖ छात्रों को चार-चार के समूहों में बाँटा जाएगा।

❖ प्रत्येक समूह किसी एक पद्यांश की पंक्तियाँ पूरी करेगा।

❖ मूल्यांकन का आधार श्यामपट्ट पर लिख दिया जाएगा।

❖ प्रत्येक समूह को कार्य पूरा करने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा। प्रत्येक समूह से एक वक्ता पद्य वाचन करेगा।

❖ जब छात्र अपना कार्य कर रहे होंगे तब शिक्षक घूम-घूमकर छात्रों का निरीक्षण करेंगे व आवश्यकता पड़ने पर छात्रों की सहायता भी करेंगे।

❖ एक समूह की प्रस्तुति के समय अन्य छात्रों/समूहों को वक्ता के कार्य का मूल्यांकन का मौका दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना

1

काव्य के अनुसार लयबद्धता

1

प्रवाहशीलता, अभिव्यक्ति

1

उच्चारण की शुद्धता

1

आत्मविश्वास

1



टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- अच्छे कार्य (सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतीकरण) को सराहा जाए।
- सभी छात्रों द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतीकरण अपनी कॉपी में लिखा जाए।
- सामान्य अशुद्धियों को अध्यापक द्वारा शुद्ध किया जाएगा।

प्रदत्त कार्य-4

नुक्ते की पहचान एवं प्रयोग

उद्देश्य

- भाषा-ज्ञान में वृद्धि
- शब्द-भंडार में वृद्धि
- उच्चारण क्षमता का विकास
- अर्थ भेद का ज्ञान
- भाषा-प्रयोग का अभ्यास

प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- शिक्षक पूर्व में ही कार्य से संबंधित जानकारी विद्यार्थियों को दें।
- पाठ समझ लेने के पश्चात् यह गतिविधि करवाएँ।
- श्यामपट्ट पर शिक्षक निम्न प्रकार से शब्द लिखें और उनमें नुक्ता लगाने के लिए कहें।



Unit 11

रचनात्मक मूल्यांकन - आदमीनामा

- ❖ विद्यार्थी पेज पर इसे लिखें और 5-7 मिनट में इसे पूरा करें।
- ❖ शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी से कुछ शब्द उच्चारित करवा कर ध्यानपूर्वक सुने।
- ❖ शिक्षक यह सुनिश्चित कर लें कि सभी ने इसे लिख लिया है।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

12 या अधिक शब्दों में सही नुक्ता लगाकर सही उच्चारण	5
10 या अधिक शब्दों में सही नुक्ता लगाकर सही उच्चारण	4
08 या अधिक शब्दों में सही नुक्ता लगाकर सही उच्चारण	3
06 या अधिक शब्दों में सही नुक्ता लगाकर सही उच्चारण	2
03 या अधिक शब्दों में सही नुक्ता लगाकर सही उच्चारण	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ शिक्षक अच्छे कार्य की सराहना करें।
- ❖ जिनका कार्य अपूर्ण रह गया उनकी सहायता करें।
- ❖ उच्चारण संबंधी त्रुटियों को समझाया जाए।
- ❖ अभ्यास करवाकर प्रत्येक विद्यार्थी का उच्चारण ठीक कराने का प्रयास करें।
- ❖ नुक्ता लगने पर अर्थ भेद को समझाया जाए।

प्रदत्त कार्य-5

आपको कोई अच्छा लगता है क्यों? विचाराभिव्यक्ति

उद्देश्य

- ❖ आत्मविश्लेषण की क्षमता का विकास
- ❖ व्यक्तित्व निरीक्षण की पहचान
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि
- ❖ प्रस्तुतीकरण का विकास
- ❖ आत्मविश्वास में अभिवृद्धि



प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों से विद्यालय में छात्र की पसंद के आधारों पर बातें करेंगे। जैसे - उन्हें कोई क्यों अच्छा लगता है?, या वे कौन से आधार हैं जिनके कारण लोग हमें पसंद करते हैं।
- शिक्षक द्वारा विषय की प्रस्तुति के बाद प्रत्येक छात्र को सोचने व लिखने को कहा जाए।
- विद्यार्थी 1.30-2 मिनट में आठ से दस वाक्यों में अपने विचारों की प्रस्तुति करेगा।
- मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय-वस्तु	1
शब्द चयन एवं अनुप्रयोग	1
क्रमबद्धता एवं सुसम्बद्धता	1
उच्चारण संबंधी शुद्धता	1
उदाहरणों से पुष्टि	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- शिक्षक ध्यान रखें कि छात्र नियत समय में अपना कार्य पूरा करें।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति की सराहना
- औसत प्रस्तुति वालों को प्रोत्साहन





एक फूल की चाह

सियाशमशरण गुप्त

प्रदत्त कार्य-1

कविता पाठ

उद्देश्य

- ❖ कविता के प्रति रुचि उत्पन्न करना
- ❖ स्वर के उतार चढ़ाव का ज्ञान
- ❖ सही व शुद्ध उच्चारण के लिए प्रेरणा एवं प्रोत्साहन
- ❖ संगीतात्मक अभिरुचि उत्पन्न करना
- ❖ मानवीय संवेदना से परिचित करना
- ❖ सामाजिक असमानता की वेदना का स्वर से जोड़ना
- ❖ मनोभावों का विश्लेषण
- ❖ धारा प्रवाह अभिव्यक्ति

प्रक्रिया

- ❖ शिक्षक के द्वारा एक काव्यांश का सस्वर वाचन, जिसमें वह कविता के सम्पूर्ण मनोभावों को स्वरों के उतार-चढ़ाव से स्पष्ट करेंगे।
- ❖ विद्यार्थियों को निर्देश दिया जाएगा कि वे भी इसी दिशा में कविता के किसी एक काव्यांश को इसी रूप में सुनाएँ।
- ❖ विद्यार्थियों को मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।
- ❖ यह कार्य शिक्षक द्वारा पूरी कविता पढ़ने व समझाने के बाद दिया जाए।
- ❖ विद्यार्थियों को तैयारी के लिए 5 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ जब विद्यार्थी तैयारी कर रहे हैं तब शिक्षक के द्वारा निरीक्षण के साथ-साथ मनोभावों व उच्चारण को स्पष्ट करने में सहायता की जाएगी।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

उच्चारण की शुद्धता

स्वर की स्पष्टता

अंक विभाजन

1

1

एक फूल की चाह
- रचनात्मक मूल्यांकन -



Unit 12

काव्यांश की लयात्मक-प्रस्तुति	1
प्रवाहशीलता	1
आत्मविश्वास	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- अच्छे उच्चारण, वाचन, गायन की सराहना
- अशुद्ध वाचन करने वाले विद्यार्थियों को शुद्ध उच्चारण एवं वाचन का प्रोत्साहन/प्रेरणा।
- औसत प्रस्तुतीकरण वाले विद्यार्थियों को अभ्यास करवाया जाए।

प्रदत्त कार्य-2

‘सामाजिक असमानता’ विषय पर चर्चा

उद्देश्य

- समाज की वास्तविक स्थिति से परिचय
- विचार विश्लेषण की क्षमता का विकास
- संवेदनशीलता का विकास
- समाज के सभी वर्गों के प्रति समान दृष्टिकोण की भावना का विकास
- समाज के प्रति युवा पीढ़ी के दृष्टिकोण/कर्तव्य बोध
- चिंतन शीलता का विकास

प्रक्रिया - सामूहिक क्रिया

- शिक्षक द्वारा समाज में व्याप्त सामाजिक असमानता का वर्णन ‘गोदान’ का परिचय देते हुए कक्षा में चर्चा करें।
- विद्यार्थियों को ऐसी असमानताओं के प्रति चिंतन उत्पन्न करते हुए ऐसी समस्याओं पर विचार करने की प्रेरणा दी जाएगी।
- 5-6 छात्रों का एक समूह तैयार किया जाएगा प्रत्येक समूह से एक वक्ता 1.30-2 मिनट में अपनी प्रस्तुति देगा।
- छात्रों को तैयार करने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।



- विद्यार्थियों को मूल्यांकन का आधार कार्य से पूर्व दिया जाएगा।
- जब छात्र विचार विमर्श कर रहे होंगे तब शिक्षक घूम-घूमकर निरीक्षण के साथ-साथ उन्हें प्रोत्साहित करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	1
शब्द चयन/सटीक वाक्य रचना	1
शुद्ध उच्चारण	1
वैचारिक स्तर	1
आत्मविश्वास	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सशक्त विचार प्रस्तुति की सराहना
- मुख्य विचार बिंदुओं का श्यामपट्ट पर लेखन
- सभी विचारों पर कक्षा में चर्चा
- अव्यक्त विचारों का ज्ञान देना
- विषय को निष्कर्ष तक पहुँचाने का प्रयास

प्रदत्त कार्य-3

‘कार्य-प्रपत्र’

(कविता के अर्थ-ग्रहण से संबंधित प्रश्न)

उद्देश्य

- विचार विश्लेषण क्षमता का विकास
- कविता में प्रयुक्त उपमाओं/विशेषण का ज्ञान
- अर्थग्रहण क्षमता का विकास
- बौद्धिक क्षमता का विकास



Unit 12

रचनात्मक मूल्यांकन - एक फूल की चाह

प्रक्रिया

- ❖ यह कार्य शिक्षक के द्वारा सम्पूर्ण कविता समझा लेने के पश्चात् करवाया जाए।
- ❖ कार्य से संबंधित प्रपत्र -
 - ❖ महामारी फैलने के बाद गाँव की स्थिति कैसी थी?
 - ❖ बेटी का नाम क्या था?
 - ❖ पिता को किस बात का भय था?
 - ❖ बेटी की इच्छा क्या थी?
 - ❖ झुलसी हुई आँखों की तुलना किससे की गई है?
 - ❖ मंदिर कहाँ स्थित था?
 - ❖ मंदिर पर स्थित कलश किसके समान लग रहे थे?
 - ❖ भक्त क्या गा रहे थे?
 - ❖ मंदिर में पिता को लोगों ने कहाँ पकड़ा?
 - ❖ पिता पर क्या आरोप लगाया गया?
 - ❖ पिता को क्या दंड मिला?

टिप्पणी

अन्य प्रश्न भी दिए जा सकते हैं

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
सभी प्रश्नों के उत्तर सही होने पर	5
8 प्रश्नों के उत्तर सही होने पर	4
6 प्रश्नों के उत्तर सही होने पर	3
4 प्रश्नों के उत्तर सही होने पर	2
2 प्रश्नों के उत्तर सही होने पर	1

प्रतिपुष्टि

- ❖ शिक्षक द्वारा सभी प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को दिए जाएँगे।
- ❖ सशक्त वाक्य रचना विन्यास को प्रोत्साहन
- ❖ सामान्य अशुद्धियों का निदान।



- ❖ भावानुकूल अभिव्यक्ति हेतु प्रेरित करना।
- ❖ कम अर्थग्रहण के कारण होने वाली अशुद्धियों को सुधारने के लिए कविता का भाव पुनः भी समझाया जा सकता है।

प्रदत्त कार्य-4

‘एक फूल की चाह’ कविता का नाट्य मंचन

उद्देश्य

- ❖ मंच भय से मुक्ति
- ❖ नाट्य विधा का परिचय
- ❖ संवाद प्रस्तुतीकरण का ज्ञान
- ❖ ग्रहणशीलता की क्षमता का विकास
- ❖ सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास
- ❖ शुद्ध उच्चारण कौशल का विकास
- ❖ प्रस्तुतीकरण की शैली का विकास

प्रक्रिया

- ❖ सम्पूर्ण कविता के पाठन के पश्चात् यह कार्य दिया जाएगा।
- ❖ 6-7 छात्रों को एक समूह में रखा जाएगा व पूरी कक्षा को विभिन्न समूहों में बाँटा जाएगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधारों को पहले ही विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाएगा।
- ❖ शिक्षक द्वारा नाटक प्रस्तुतीकरण के आधारों को पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।
- ❖ नाटक की तैयारी के लिए विद्यार्थियों को एक सप्ताह का समय दिया जाएगा।
- ❖ सप्ताह के दौरान शिक्षक विद्यार्थियों की कार्य प्रगति पर चर्चा करते रहेंगे।
- ❖ नियत दिन पर प्रत्येक समूह की प्रस्तुति के समय शिक्षक व विद्यार्थी सभी समूहों का मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

भाषा प्रयोग (शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना)	1
संवाद शैली	1
सहभागिता व सक्रिय योगदान	1
अभिनय शैली	1
प्रस्तुतीकरण (आत्मविश्वास व हावभाव)	1



Unit 12

चाह की फूल एक रचनात्मक मूल्यांकन -

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- छात्रों के सामूहिक प्रयासों की सराहना
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति का विद्यालय के मंच पर मंचन
- सामान्य अशुद्धियों का निवारण
- कमजोर अभिनय व प्रस्तुतियों को प्रोत्साहन

प्रदत्त कार्य-5

गंदगी/अस्वच्छता से पनपने वाले रोगों के बारे में बताते हुए व उनसे बचने के उपायों से संबंधित 5-6 विचार बिंदुओं को लेखनीबद्ध करते हुए प्रचार/जागरूकता अभियान

उद्देश्य

- सामाजिक जागरूकता
- वातावरण के प्रति सजगता
- सौन्दर्य बोध
- विचारविश्लेषण क्षमता का विकास
- कर्तव्यबोध
- लेखन क्षमता व वाचन क्षमता का विकास

प्रक्रिया - सामूहिक कार्य

- शिक्षक वर्षा ऋतु के दौरान व उसके बाद जल-जमाव के कारण उत्पन्न परेशानियों के विषय में चर्चा करें। विद्यार्थियों से विचार विमर्श करके निष्कर्ष तक पहुँचें।
- विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाए कि वे गंदगी/अस्वच्छता के कारण किसी एक रोग के कारण एवं रोकथाम संबंधित जानकारी एकत्रित करके उसे प्रचार अभियान हेतु (पैम्फ्लेट) तैयार करें।
- इसके लिए विद्यार्थियों को तीन दिन का समय तैयारी हेतु दिया जाए।
- मूल्यांकन के आधार बिंदु पूर्व में ही स्पष्ट कर दिए जाएँ।
- 4-5 छात्रों का एक समूह मिलकर एक (पैम्फ्लेट) तैयार करेंगे।
- विद्यार्थी अपने विचार केवल 5-6 विचार बिंदुओं में ही स्पष्ट करें।



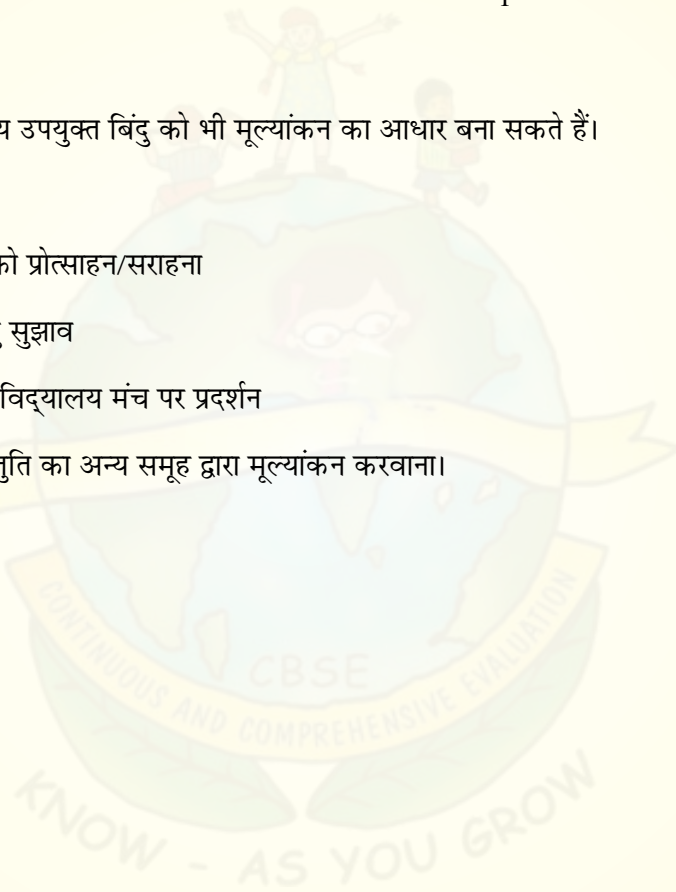
मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय-वस्तु	1
शब्द चयन एवं सटीक वाक्य रचना	1
आकर्षक प्रस्तुति	1
चित्रों का प्रयोग	1
अभिव्यक्ति	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ प्रभावशाली प्रस्तुति को प्रोत्साहन/सराहना
- ❖ कमियों के सुधार हेतु सुझाव
- ❖ अच्छी प्रस्तुतियों का विद्यालय मंच पर प्रदर्शन
- ❖ प्रत्येक समूह की प्रस्तुति का अन्य समूह द्वारा मूल्यांकन करवाना।





गीत-अगीत

रामधारीसिंह दिनकर

प्रदत्त कार्य-1 : स्वरचित काव्य वाचन

प्रथम पंक्ति - काले-काले बादल छाए, सबका ये मन हर्षाए

उद्देश्य

- रचनात्मक क्षमता व मानसिक योग्यता का विकास
- मौलिक कल्पनाशीलता का विकास
- काव्य विधा के प्रति रुझान
- शब्द भंडार में वृद्धि तथा उसके अनुप्रयोग की प्रेरणा
- कलात्मक अभिरुचि का विकास
- प्रकृति के प्रति जागरूकता

प्रक्रिया - सामूहिक कार्य

- अध्यापक यह कार्य 8-10 छात्रों के समूह में करवाएँ।
- गतिविधि आरंभ करने से पूर्व इसके विषय में विस्तार से छात्रों को समझाया जाए।
- कविता में प्रयुक्त होने वाले संभावित शब्दों की एक सूची छात्रों की सहायता से श्यामपट्ट पर बना दी जाए।
- कविता की प्रथम पंक्ति अध्यापक स्वयं सुनाए फिर समूह के सभी विद्यार्थियों को क्रमशः एक-एक पंक्ति (स्वरचित) सुनाने का निर्देश दे।
- प्रत्येक समूह को इस कार्य के लिए 10 मिनट का समय दिया जाए।
- कार्य के मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँ।
- जब विद्यार्थी कविता को पूर्ण कर रहे हो तब शिक्षक साथ-साथ प्रत्येक पंक्ति श्याम-पट्ट पर लिखता जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषयानुकूल व भावानुकूल अभिव्यक्ति

1

शब्दों का चयन तथा सटीक वाक्य रचना

1



Unit 13

मौलिक कल्पना	1
उच्चारण की शुद्धता तथा स्वर की स्पष्टता	1
प्रस्तुतीकरण - आत्मविश्वास, लय, तुक, हाव-भाव क्रमबद्धता व संबद्धता	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ मिल-जुलकर सफलतापूर्वक कार्य पूर्ण करने वाले समूह की सराहना की जाए।
- ❖ अध्यापक ध्यान रखें कि प्रत्येक विद्यार्थी समूह के कार्य में सक्रिय योगदान दें।
- ❖ वर्तनी, उच्चारण, वाक्य का विषय से भटकाव के संदर्भ में की गई गलतियों के विषय में छात्रों से पूछा जाए।
- ❖ छात्रों की सहायता से ही समाधान की प्रेरणा दी जाए।
- ❖ छात्रों को स्वयं तथा अन्य विद्यार्थियों के मूल्यांकन हेतु प्रेरित किया जाए।
- ❖ कविता को कक्षा के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-2

चित्र के आधार पर कविता रचना एवं मानवीकरण प्रस्तुति

उद्देश्य

- ❖ कविता विधा से परिचय
- ❖ कल्पनाशीलता का विकास
- ❖ शब्दभंडार में वृद्धि
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ प्राकृतिक उपादानों के लिए संवेदनशीलता
- ❖ मानवीकरण शैली की पहचान एवं प्रयोग
- ❖ श्रवण एवं वाचन कौशल का अभ्यास



प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- ❖ शिक्षक द्वारा सर्वप्रथम पेड़ का मानवीकरण कर के उदाहरण प्रस्तुत कर कविता लेखन के लिए प्रेरित करें।



कविता की चार पंक्तियाँ हैं

चाहे काट लेना तुम मुझे,

नाश कर या निर्माण कर है अधिकार तेरा,

तू चला बेशक कुल्हाड़ी,

किंतु पक्षियों को ढूँढने तो दे बसेरा, ...

नोट : (शिक्षक कोई अन्य कविता को भी सुना सकते हैं)



- ❖ शिक्षक द्वारा निम्न चित्रों में से किसी एक चित्र का मानवीकरण करके कविता रचना एवं प्रस्तुति के लिए प्रेरित करें।
- ❖ छात्रों को इस कार्य के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ जब छात्र व्यक्तिगत तौर पर कार्य करेंगे तो शिक्षक घूम-घूमकर निरीक्षण करेंगे व विद्यार्थियों की यथासंभव सहायता की जाएगी।
- ❖ मूल्यांकन का आधार विद्यार्थियों को पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।



Unit 13

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	1
शब्द चयन व वाक्य रचना	1
भाषा की शुद्धता	1
मानवीकरण प्रस्तुति	1
कल्पनाशीलता	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ सर्वश्रेष्ठ रचनाओं को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत किया जाए।
- ❖ अधूरी एवं औसत रचनाओं को शिक्षक अपनी सहायता से पूरा करवाने का प्रयास करें।
- ❖ सटीक वाक्य रचना, शुद्ध उच्चारण एवं हाव-भाव, आरोह-अवरोह व लय की कमियों को शिक्षक दूर करने का प्रयास करें।

प्रदत्त कार्य-3

चित्र के आधार पर संवाद लेखन/प्रस्तुति

उद्देश्य

- ❖ संवाद शैली से परिचय
- ❖ भावुकता एवं संवेदनशीलता का विकास
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ काल्पनिकता का विकास
- ❖ चिंतन मनन की प्रवृत्ति का विकास
- ❖ वाचन एवं श्रवण क्षमता का विकास
- ❖ विराम चिह्नों का प्रयोग

प्रक्रिया - सामूहिक कार्य

- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों को संवाद शैली का परिचय देते हुए एक उदाहरण प्रस्तुत करेंगे। जिसमें दो पौधे आपस में बात कर रहे हैं।

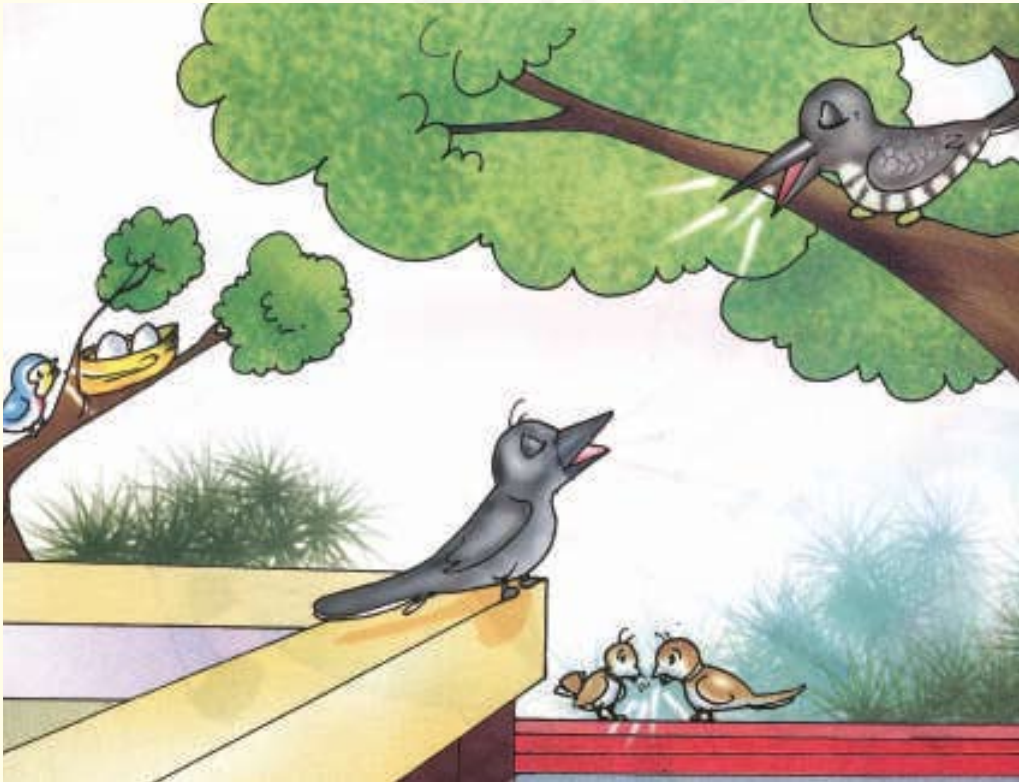
पीपल का वृक्ष - क्यों भाई! उदास क्यों हो?



आम का वृक्ष - इस साल तो मैं अकेला ही रहूँगा, ना मुझ पर फल आएगा और ना ही कोई मेरा साथी होगा।

(टिप्पणी) - शिक्षक उपरोक्त संवाद को अपनी इच्छानुसार प्रस्तुत कर सकते हैं या कोई अन्य संवाद भी ले सकते हैं

- शिक्षक निम्न चित्र के आधार पर चार-पाँच छात्रों का समूह बनाकर संवाद लेखन (10-12 पंक्तियाँ) एवं प्रस्तुतीकरण के लिए अभिप्रेरित करेंगे।
- विद्यार्थियों को इस कार्य के लिए 15 मिनट का समय दिया जाए। इस दौरान शिक्षक यह सुनिश्चित करे कि सभी विद्यार्थी रुचिपूर्वक कार्य को कर रहे हैं।
- प्रत्येक-समूह को प्रस्तुतीकरण हेतु 2-3 मिनट का समय दिया जाए।



मूल्यांकन के आधार बिन्दु

विषय वस्तु
सटीक वाक्य रचना एवं भाषा
रोचकता
हाव भाव, आरोह-अवरोह
प्रस्तुतीकरण

अंक विभाजन

1
1
1
1
1



Unit 13

गीत-अगीत - रचनात्मक मूल्यांकन

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के मंच पर अभिनीत करवाया जाए।
- ❖ सराहनीय प्रस्तुतियों को प्रेरणा का स्रोत बनाया जाए।
- ❖ औसत प्रस्तुतियों को सुझाव देकर प्रोत्साहित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-4

मूक अभिनय (प्राकृतिक उपादानों के आधार पर/मानव जीवन से जुड़े क्रियाकलाप, पशु-पक्षी जगत)

उद्देश्य

- ❖ संकेतों के माध्यम से भावाभिव्यक्ति की प्रेरणा
- ❖ प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता एवं जागरुकता
- ❖ अभिनय कौशल का विकास
- ❖ सामूहिक योगदान एवं सहभागिता
- ❖ मानसिक योग्यता का विकास
- ❖ पहचानने की क्षमता का विकास

प्रक्रिया

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक किसी प्राकृतिक उपादान को आधार बनाकर मूक अभिनय करें और छात्रों को पहचानने के लिए कहे।
- ❖ छात्रों को कार्य के विषय में विस्तार से बताएं।
- ❖ 5-6 छात्रों का एक समूह बनाकर पूर्ण कक्षा को समूहों में विभाजित करें।
- ❖ छात्रों को निर्देश दें कि वे किसी भी प्राकृतिक उपादान को आधार बनाकर मूक अभिनय करें तथा समूह विशेष के विद्यार्थी उसे पहचानें।
- ❖ प्रत्येक समूह से एक विद्यार्थी मूक अभिनय करें तथा समूह के दूसरे विद्यार्थी उसे पहचानें। अभिनय तथा पहचान दोनों के आधार पर मूल्यांकन किया जाए।
- ❖ सभी समूहों के लिए मूल्यांकन हेतु उपरोक्त प्रक्रिया को अपनाया जाए।
- ❖ इस कार्य के लिए 1-1 मिनट का समय दिया जाए।



- कार्य से पूर्व मूल्यांकन के आधार तथा अंक से छात्रों को परिचित करवाया जाएगा।
- गतिविधि का मूल्यांकन अध्यापक स्वयं करें।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय व भाव के अनुरूप अभिनय	1
सशक्त अभिनय	2
अभिनय के माध्यम से विषय की सटीक पहचान	2

टिप्पणी

- शिक्षक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- श्रेष्ठ अभिनय की सराहना करें।
- अभिनय के द्वारा विषय की पहचान की प्रशंसा करें।
- कार्य में कमी होने पर अन्य छात्रों के सहयोग से उसे दूर करने की प्रेरणा दें।
- अभिनय एवं पहचान में सामंजस्य न होने की स्थिति में शिक्षक सहयोग करें तथा छात्रों को प्रोत्साहित करें।
- शिक्षक विद्यार्थियों के मार्गदर्शन के लिए कुछ विषय उदाहरण स्वरूप बताएँ - पर्वत, नदी, मोर, घर, अध्यापक आदि।

प्रदत्त कार्य-5

लोकगीतों का गायन

उद्देश्य

- लोक संस्कृति के प्रति रूचि उत्पन्न करना।
- भारत की विविधता का लोकगीतों के माध्यम से ज्ञान।
- संगीतात्मक अभिरूचि उत्पन्न करना।
- कलात्मकता का विकास।
- सहभागिता का विकास।
- गायन शैली में कौशल उत्पन्न करना।
- प्रस्तुतीकरण शैली का विकास।



Unit 13

रचनात्मक मूल्यांकन - गीत-अंगीत

प्रक्रिया - सामूहिक कार्य

- ❖ शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों से लोकगीतों के विषय में चर्चा की जाएगी।
- ❖ प्रत्येक देश का अपना लोकगीत होता है जैसे राजस्थानी, गुजराती, मारवाड़ी, भोजपुरी... इत्यादि।
- ❖ कक्षा को दस-दस विद्यार्थियों के अलग-अलग समूहों में बाँटा जाएगा।
- ❖ प्रत्येक समूह स्वेच्छानुसार संगीत वाद्यों का प्रयोग कर सकते हैं।
- ❖ विद्यार्थियों को तैयारी के लिए 5-6 दिनों का समय दिया जाएगा।
- ❖ मूल्यांकन का आधार पहले से ही विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
लोकगीत की मौलिकता	1
स्वर (लय, आरोह-अवरोह)	1
उच्चारण की शुद्धता	1
भावाभिव्यक्ति	1
प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतियों को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत किया जाएगा।
- ❖ अच्छे गायन व वाद्य यंत्रों का प्रयोग करने वाले समूहों की सराहना।
- ❖ औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन दिया जाएगा।



अग्निपथ

हरिवंशराय बच्चन

प्रदत्त कार्य-1

किसी एक कवि/लेखक का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुतीकरण (पाठ्यपुस्तक से भिन्न लेखक/कवि)

उद्देश्य

- ❖ साहित्यकारों से परिचित करवाना (ज्ञान का विस्तार)
- ❖ हिंदी साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न करना
- ❖ विचार मंथन एवं विश्लेषण क्षमता का विकास
- ❖ परिचय प्रस्तुतीकरण का अभ्यास
- ❖ वाचन एवं श्रवण क्षमता का विकास
- ❖ स्वाध्याय के लिए प्रेरित करना।

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा एक या दो लेखक/कवि के जीवन-परिचय को संक्षेप में विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करना। जन्म स्थान, शिक्षा साहित्य में योगदान.....
- ❖ शिक्षक मूल्यांकन के आधार बिंदु पूर्व में ही छात्रों को बता देंगे।
- ❖ अन्य कवियों/लेखकों के जीवन परिचय को विद्यार्थी कहाँ से प्राप्त कर सकते हैं, इस विषय में जानकारी उपलब्ध करवाएँ।
- ❖ विद्यार्थियों को तीन दिन समय स्वाध्याय के लिए अवश्य दें।
- ❖ विद्यार्थी मुख्य बिंदुओं को लिखकर भी ला सकते हैं और उसे कक्षा में पढ़कर सुना सकते हैं।
- ❖ प्रत्येक वक्ता को 1-2 मिनट का समय दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय-वस्तु	1
मौलिकता	1
शब्द चयन एवं वाक्य रचना	1



Unit 14

सार प्रस्तुतीकरण (सर्वाधिक जानकारी)	1
प्रस्तुतीकरण (उच्चारण, हाव-भाव)	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ प्रभावशाली प्रस्तुति की सराहना।
- ❖ प्रस्तुतीकरण की कमियों को शिक्षक समझाकर प्रोत्साहित करें।
- ❖ अधूरे कार्यों को पूरा करने हेतु सहायता प्रदान करें।
- ❖ सही जानकारी उपलब्ध कराने में विद्यार्थियों की सहायता करें।

प्रदत्त कार्य-2

आधुनिक मानव की उपलब्धियाँ : संघर्ष की देन

उद्देश्य

- ❖ विचार-विश्लेषण की क्षमता का विकास
- ❖ मनुष्य की सामर्थ्य व क्षमता से परिचित कराना
- ❖ वाचन व श्रवण कौशल का विकास
- ❖ शब्द-भंडार में वृद्धि और अनुप्रयोग
- ❖ रचनात्मकता का विकास
- ❖ चिंतन-मनन की क्षमता का विकास
- ❖ जुझारु प्रवृत्ति का विकास

प्रक्रिया

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक आदि मानव के जीवन के विषय में जानकारी प्रदान करेंगे तथा कार्य के स्वरूप से परिचित कराएं।
- ❖ 4-5 विद्यार्थियों का एक समूह बनाकर संपूर्ण कक्षा को विभिन्न समूहों में विभाजित किया जाए।



- ❖ दिए गए विषय पर विचार कर लिखने के लिए प्रत्येक समूह को 10-15 मिनट का समय दिया जाए। 8-10 पंक्तियों में विद्यार्थी अपने विचार लिखें।
- ❖ प्रत्येक समूह में एक विद्यार्थी प्रतिनिधित्व करते हुए समूह की ओर से एक-दो मिनट में विचाराभिव्यक्ति करें।
- ❖ गतिविधि के दौरान शिक्षक कक्षा में घूमकर निरीक्षण करें तथा आवश्यकतानुसार छात्रों का मार्गदर्शन करें।
- ❖ कार्य का मूल्यांकन शिक्षक एवं छात्र मिलकर करें।
- ❖ मूल्यांकन के आधार एवं अंकों से छात्रों को कार्य से पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय-वस्तु	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
तर्क द्वारा / उदाहरणों द्वारा कथन की पुष्टि	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
आत्मविश्वास	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ उत्कृष्ट विषय-वस्तु व प्रस्तुति की सराहना।
- ❖ मनुष्य की उपलब्धियों की सूची श्यामपट्ट पर लिखी जाय।
- ❖ छात्रों की सहायता से सामान्य तौर पर की गई उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को जानकर उन्हें शुद्ध करवाया जाए।
- ❖ छात्रों द्वारा मूल्यांकन के आधार पर सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति का चयन किया जाए।
- ❖ औसत प्रस्तुति करने वाले समूह को प्रोत्साहित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-3

स्वरचित काव्य लेखन एवं वाचन

(जीवन पथ को अन्य कोई रूपक देते हुए काव्य रचना)



Unit 14

रचनात्मक मूल्यांकन - अग्निपथ

उद्देश्य

- काव्य विधा के प्रति रुझान
- मौलिक कल्पनाशीलता का विकास
- कलात्मक अभिरुचि का विकास
- रचनात्मक क्षमता एवं मानसिक योग्यता का विस्तार
- शब्द भंडार में वृद्धि व उसके अनुप्रयोग की प्रेरणा
- वाचन एवं श्रवण कौशल का विकास

प्रक्रिया - सामूहिक कार्य

- शिक्षक द्वारा कविता में रूपक का स्थान एवं महत्व स्पष्ट करवाया जाएगा जैसे - दीपक को रोशनी, ज्ञान, शिक्षा, आशा, उत्साह, प्रेरणा के रूपक के रूप में लिया जाता है ठीक वैसे ही विद्यार्थियों को अग्निपथ के लिए रूपक चुनने एवं कविता लेखन के लिए प्रेरित किया जाएगा।
- विद्यार्थियों के साथ चर्चा कर उन्हें इस कार्य के लिए प्रेरित किया जाएगा।
- चार-पाँच विद्यार्थियों का एक समूह बनाकर कार्य करवाया जाए।
- इस कार्य के लिए उन्हें 15 मिनट का समय दिया जाए।
- काव्य रचना के लिए प्रयोग किए जाने वाले कुछ शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- मूल्यांकन का आधार विद्यार्थियों को पहले ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।
- प्रत्येक समूह से एक वक्ता प्रस्तुति देगा।

काँटे	आग	अंगारे	कठिनाई	लोहा	पत्थर	संघर्ष	जीत
कार्यरत	प्रयास	दुख	वेदना	यातना	अश्रु	सफलता	प्रार्थना
सहायता	विजय	अपेक्षा	रेत				

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
मौलिक कल्पना	1
सटीक रूपक	1
उच्चारण की शुद्धता	1
प्रस्तुतीकरण (लय, आरोह-अवरोह)	1



टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- प्रभावशाली रचना की सराहना एवं विद्यालय के मंच पर प्रस्तुति।
- औसत प्रस्तुतियों को श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा/प्रोत्साहन।
- छात्रों द्वारा मूल्यांकन के आधार पर सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति का चयन।

प्रदत्त कार्य-4

ओज गुण/वीर रस की कविता का वाचन

उद्देश्य

- काव्य विधा के प्रति रुझान
- कविता के माध्यम से विद्यार्थी उत्साह व वीरता का संचार
- श्रवण व वाचन कौशल का विकास
- स्वाध्याय की प्रेरणा
- भावुकता व संवेदनशीलता का विकास
- मंच भय से मुक्ति

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम अध्यापक वीर रस की कविता का आदर्श पाठ कक्षा में प्रस्तुत करें। जैसे - “बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी; खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।”
- छात्रों को निर्देश दिया जाए कि इसी प्रकार की अन्य कविता का चयन कर वे कक्षा में सुनाए।
- कविता-चयन हेतु दो दिन का समय छात्रों को दिया जाए।
- मूल्यांकन के आधार तथा अंक श्यामपट्ट पर लिखे जाएँ।
- यह कार्य कविता ‘अग्निपथ’ समाप्त होने के पश्चात् दिया जाए।
- विद्यार्थियों को कविता-पाठ के लिए 1-2 मिनट का समय दिया जाए।
- कविता के शीर्षक एवं कविता का नाम शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- मूल्यांकन का कार्य शिक्षक एवं छात्र मिलकर करें।



Unit 14

अग्निपथ - रचनात्मक मूल्यांकन

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय एवं भाव के अनुरूप कविता का चयन	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
कविता की लयात्मक प्रस्तुति	1
प्रवाहशीलता	1
आत्मविश्वास	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- कविता के चयन एवं प्रस्तुति के लिए सभी विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- कमी होने पर विद्यार्थी को उससे परिचित कराते हुए उसे दूर करने के लिए प्रेरित किया जाए।
- उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को सामान्य रूप से शुद्ध करने का प्रयास किया जाए।
- छात्रों के साथ स्वमूल्यांकन के आधार पर शिक्षक श्रेष्ठ वक्ता का भी चयन कर सकते हैं।
- कुछ चुनी हुई कविताओं को लिखकर एक लघु पत्रिका का निर्माण भी करवाया जा सकता है।

प्रदत्त कार्य-5

चित्र के आधार पर संवाद लेखन के साथ जीवन के सही स्वरूप को समझने का संदेश “जीवन केवल सुखों की राह नहीं”

उद्देश्य

- स्वानुभव का विस्तार
- कल्पनाशीलता का विकास
- संवाद शैली का विकास
- विचार मंथन एवं चिंतन
- नैतिक मूल्यों से परिचय
- शब्द भंडार में वृद्धि एवं अनुप्रयोग

प्रक्रिया - सामूहिक कार्य

- शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को चित्र दिखाकर कार्य का स्पष्टीकरण।



- ❖ शिक्षक विद्यार्थियों को चित्र से स्पष्ट करेंगे कि “जीवन केवल सुखों की राह नहीं”



- ❖ विद्यार्थियों को मूल्यांकन का आधार पहले ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।
- ❖ 4-5 छात्रों को एक समूह में रखा जाएगा व कक्षा को विभिन्न समूहों में बाँट दिया जाएगा।
- ❖ प्रस्तुति के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ प्रत्येक समूह से एक वक्ता रचना की प्रस्तुति करेगा।
- ❖ प्रत्येक वक्ता को बोलने के लिए 2-3 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ जब विद्यार्थी तैयारी कर रहे होंगे तब शिक्षक घूम-घूमकर निरीक्षण करेंगे व यथासंभव सहायता करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय-वस्तु	1
भाषा प्रयोग एवं सटीक वाक्य रचना	1
नैतिक मूल्य/संदेश	1
शुद्ध उच्चारण	1
प्रस्तुति (हाव-भाव)	1



Unit 14

रचनात्मक मूल्यांकन - अग्निपथ

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति (संदेश) का विद्यालय के मंच पर मंचन।
- संवाद लेखन व प्रस्तुतीकरण संबंधी सामान्य अशुद्धियों का निदान।
- एक समूह द्वारा प्रस्तुतीकरण पर दूसरे समूहों का मूल्यांकन।
- औसत प्रस्तुतियों को प्रोत्साहन।



नए इलाके में

अरुण कमल

प्रदत्त कार्य-1

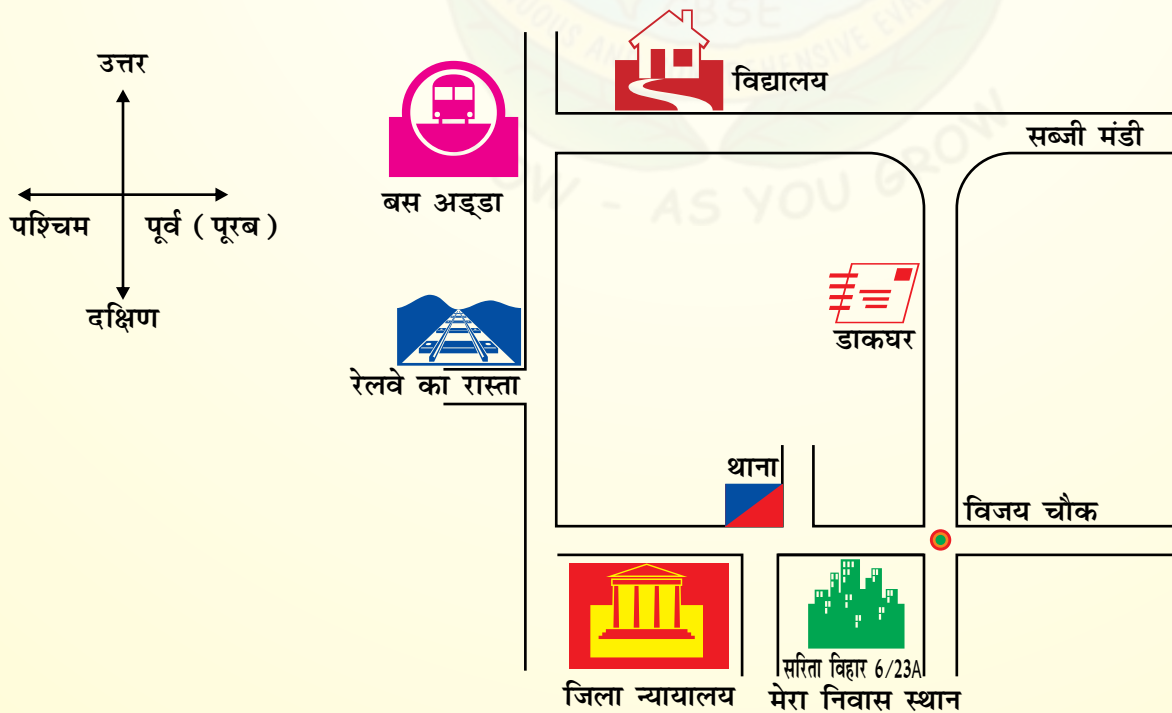
नक्शा निर्माण (विद्यालय से अपने निवास स्थान तक)

उद्देश्य

- रचनात्मक कौशल का विकास
- पूर्व ज्ञान का अनुप्रयोग
- विचार-मंथन एवं चिन्तन
- अपने परिवेश से जोड़ना
- नक्शा-निर्माण का अभ्यास

प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- सर्वप्रथम शिक्षक नक्शा-निर्माण विधि से विद्यार्थियों को परिचित कराएँ।
- उदाहरणस्वरूप एक नक्शा श्यामपट्ट पर बनाएँ ताकि विद्यार्थी पूरी प्रक्रिया समझ जाएँ।



Unit 15

में नए इलाके रचनात्मक मूल्यांकन -

- ❖ विद्यार्थियों को इस कार्य के लिए 10-15 मिनट का समय अवश्य दें।
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी अपने घर का पता इसमें दर्शाए।
- ❖ सहायता हेतु कम से कम 7 स्थान अवश्य दर्शाए।
- ❖ कार्य के दौरान शिक्षक आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों की सहायता करें।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

सटीक जानकारी	1
शुद्ध वर्तनी	1
स्वच्छता (सौन्दर्य)	1
समग्र प्रस्तुति	1
नक्शे में सहयोग के लिए दिए गए स्थानों की जानकारी की संख्या (कम से कम 7)	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ प्रभावशाली कार्य की सराहना करें।
- ❖ औसत कार्य करने वाले विद्यार्थियों के कार्य को अच्छा कार्य करने वाले विद्यार्थियों की सहायता से पूरा करें
- ❖ शिक्षक गलत जानकारी दर्शाने वालों की सहायता कर सही नक्शा तैयार करने में सहायता करें।

प्रदत्त कार्य-2

हिंदी महीनों के नाम एवं पर्व

उद्देश्य

- ❖ हिन्दी में महीनों के नाम का ज्ञान
- ❖ भारतीय संस्कृति से जुड़ाव
- ❖ विभिन्न माहों व पर्वों के समय का ज्ञान
- ❖ विभिन्न पर्वों का ज्ञान

प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों से महीनों के नाम पूछेंगे जैसे जनवरी, फरवरी दिसंबर इत्यादि.....।



- अब शिक्षक विद्यार्थियों से कहेंगे कि महीनों के नाम हिन्दी में बताएँ साथ ही उस माह के पर्वों के नाम भी बताएँ।
- विद्यार्थियों को इस बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए दो दिनों का समय दिया जाएगा।
- यह कार्य व्यक्तिगत स्तर पर किया जाएगा।
- उनके ज्ञान को परखने के लिए कक्षा में 7 मिनट का समय दिया जाएगा।
- विद्यार्थियों को निम्न प्रपत्र दिया जाएगा।

प्रपत्र

- हिन्दी महीने का नाम - पर्व

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

10-12 महीनों के नाम व ज्यादा से ज्यादा पर्वों की जानकारी	5
7-8 महीनों के नाम व ज्यादा से ज्यादा पर्वों की जानकारी	4
5-6 महीनों के नाम व ज्यादा से ज्यादा पर्वों की जानकारी	3
3-4 महीनों के नाम व ज्यादा से ज्यादा पर्वों की जानकारी	2
1-2 महीनों के नाम व ज्यादा से ज्यादा पर्वों की जानकारी	1

प्रतिपुष्टि

- शिक्षक प्रयास करें कि सभी विद्यार्थी इस कार्य को पूरी रुचि से करें।
- जो जानकारी विद्यार्थी नहीं दे पाए, उसकी जानकारी स्वयं विद्यार्थियों को दें।
- सर्वाधिक सही जानकारी देने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- औसत कार्य करने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित/प्रेरित किया जाए।
- शिक्षक की सहायता के लिए हिंदी महीनों के नाम की सूची एवं

पर्व - अध्यापक स्वयं मास व पर्वों का मिलान करें -

मास

पर्व

पौष

वसंत पंचमी

माघ

संक्रांति

फाल्गुन

होली

चैत्र (वर्ष का पहला मास)

दीपावली

बैसाख

भाई दूज



Unit 15

में
नए इलाके
रचनात्मक मूल्यांकन -

ज्येष्ठ	ईद
आषाढ़	मुहर्रम
श्रावण	गुरु नानक जयंती
भाद्रप्रद	क्रिसमस
आश्विन	पोंगल
कार्तिक	ओणम
मागशीर्ष	गुड फ्राइडे

कविता 'खुशबू रचते हैं हाथ'

प्रदत्त कार्य-3

बालश्रम पर नुक्कड़ नाटक

उद्देश्य

- समाज में व्याप्त बालश्रम के प्रति जागरुकता का प्रयास
- नुक्कड़ नाटक विधा की विशेषताओं पर प्रकाश
- संवाद लेखन क्षमता का विकास
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास
- ग्रहणशीलता की क्षमता का विकास
- अभिनय क्षमता का विकास
- प्रस्तुतीकरण शैली का विकास
- वाचन एवं श्रवण क्षमता का विकास

प्रक्रिया

- उपरोक्त कार्य कविता पाठन के पश्चात् ही दिया जाएगा।
- शिक्षक विद्यार्थियों से नुक्कड़ नाटक के विषय में बातचीत करेंगे।
- मूल्यांकन के आधार बिंदुओं को पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाए।
- कक्षा को विभिन्न समूहों में बांटा जाएगा व प्रत्येक समूह में छः-सात छात्रों को शामिल किया जा सकता है।
- विद्यार्थियों को नुक्कड़ नाटक लिखने व प्रस्तुतीकरण की तैयारी के लिए एक सप्ताह का समय दिया जाएगा।



- ❖ शिक्षक सप्ताह के बीच-बीच में छात्रों से उनके कार्य की प्रगति पर बातचीत करके प्रोत्साहित करते रहेंगे।
- ❖ नियत दिन पर प्रस्तुतीकरण हेतु प्रत्येक समूह को 3-4 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ प्रत्येक समूह की प्रस्तुति के समय अन्य समूह उसका मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय-वस्तु	1
संवाद लेखन	1
भाषा प्रयोग (शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना)	1
सहभागिता व सक्रिय योगदान	1
प्रस्तुतीकरण (आत्मविश्वास व हाव-भाव)	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ विद्यार्थियों के प्रयासों की सराहना।
- ❖ सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत किया जाएगा।
- ❖ अभिनय विशेष की सराहना।
- ❖ कमजोर अभिनय व प्रस्तुति को प्रोत्साहन।

प्रदत्त कार्य-4

स्वरचित कविता लेखन एवं वाचन

उद्देश्य

- ❖ रचनात्मक क्षमता का विकास
- ❖ मौलिक कल्पनाशीलता का विकास
- ❖ कलात्मक अभिरुचि का विकास
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि एवं अनुप्रयोग
- ❖ काव्य विधा के प्रति रुझान
- ❖ कविता-पाठ का अभ्यास
- ❖ समाज के उपेक्षित वर्ग के प्रति संवेदना



Unit 15

में
नए इलाके
रचनात्मक मूल्यांकन - नए

प्रक्रिया - सामूहिक कार्य

- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक कुछ शीर्षक बताकर विद्यार्थियों को कविता-लेखन के लिए अभिप्रेरित करें। जैसे - कूड़ा उठाते हाथ, जूठन साफ करते हाथ, कालीन बनाते हाथ, पटाखे बनाते हाथ, चूड़ियाँ बनाते हाथ, खिलौने बनाते हाथ, कढ़ाई-बुनाई करते हाथ... इत्यादि।
- ❖ विद्यार्थी कम से कम 6-8 पंक्ति की कविता लिखें। इसके लिए उन्हें 10-15 मिनट का समय अवश्य दें।
- ❖ 2-4 विद्यार्थियों का एक समूह एक कविता तैयार करे एवं उनमें से एक विद्यार्थी कविता पाठ प्रस्तुत करे।
- ❖ कविता-लेखन के समय शिक्षक आवश्यकतानुसार सभी समूहों की सहायता करें।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिन्दुओं को पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय-वस्तु	1
शब्दों का चयन व वाक्य रचना	1
मौलिक कल्पना	1
उच्चारण की शुद्धता तथा स्वर की स्पष्टता	1
आत्मविश्वास, लय, हाव-भाव	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छी कविता की विद्यालय के मंच पर प्रस्तुति।
- ❖ मिल जुल कर कार्य करने के लिए प्रोत्साहन।
- ❖ वर्तनी, उच्चारण, वाक्य रचना संबंधी सुधारात्मक सुझाव दें।
- ❖ कार्य पूरा न कर पाने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें।

पाठ-नए इलाके में (अरुण कमल)

प्रदत्त कार्य-5

पिछले कुछ वर्षों में आपके आस-पास के इलाके में हुए परिवर्तन व नवनिर्माण का विवरण।



उद्देश्य

- सूक्ष्म निरीक्षण की प्रवृत्ति का विकास
- सूक्ष्म चिंतन का विस्तार
- बदलते परिवेश को आत्मसात् करने की प्रवृत्ति
- शब्द भंडार में वृद्धि व अनुप्रयोग पर बल
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- विचार विश्लेषण की क्षमता का विकास

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक अपने अनुभवों द्वारा पिछले कुछ वर्षों में आए परिवर्तनों का विवरण दें।
- बच्चों को तैयारी के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- विद्यार्थियों को मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।
- प्रत्येक वक्ता 1 से 2 मिनट में अपनी प्रस्तुति देगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
निरीक्षण की क्षमता	1
शब्द प्रयोग व सटीक वाक्य रचना	1
क्रमबद्धता व प्रवाहशीलता	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
आत्मविश्वास	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सर्वश्रेष्ठ वर्णन की सराहना।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन/प्रेरणा।
- नवनिर्माणों का ज्यादा से ज्यादा परिचय देने वालों की भी सराहना।





प्रदत्त कार्य-1

पशु-पक्षियों से संबंधित कहानी - प्रस्तुतीकरण (लघुकथा)

उद्देश्य

- ❖ पशु-पक्षियों के प्रति आकर्षण व प्रेम भाव जगाना
- ❖ प्रकृति के अनिवार्य अंग के प्रति जागरूकता
- ❖ कहानी विधा के प्रति रुचि जगाना
- ❖ वाचन क्षमता का विकास करना
- ❖ स्वाध्याय की प्रेरणा

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ अध्यापक पहले विद्यार्थियों को कार्य से अवगत कराएँ तथा विषय से संबंधित कहानी चुन कर लाने का निर्देश दें। इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को दो दिन का समय दिया जाए।
- ❖ विद्यार्थी को कहानी ढूँढ़ने के लिए स्रोत की जानकारी अध्यापक द्वारा दी जाए।
- ❖ गतिविधि हेतु मूल्यांकन के आधार बिंदुओं तथा अंकों के विषय में विद्यार्थियों को पूर्व में ही सूचित किया जाए।
- ❖ गतिविधि के दौरान अध्यापक तथा अन्य विद्यार्थी प्रस्तुत कहानी को ध्यानपूर्वक सुनेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

कहानी का चयन	1
आत्मविश्वास	1
उच्चारण की शुद्धता व स्पष्टता	1
स्वर की स्पष्टता	1
भावानुकूल व प्रवाहपूर्ण अभिव्यक्ति	1



Unit 16

गिल्फू - रचनात्मक मूल्यांकन

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अध्यापक देखेंगे कि प्रत्येक विद्यार्थी रुचिपूर्वक कार्य कर रहे हैं।
- ❖ उत्कृष्ट ढंग से कहानी प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- ❖ सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति के विषय में विद्यार्थियों से पूछकर उन्हें भी मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित किया जाए।
- ❖ उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को अध्यापक विद्यार्थियों की सहायता से जाने तथा श्यामपट्ट पर लिखें।
- ❖ उच्चारण दोष दूर करने हेतु विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-2

किसी एक पक्षी की विविध विशेषताओं से संबंधित 'कार्य-प्रपत्र'

- ❖ पक्षी का नाम
- ❖ रंग एवं रूप
- ❖ रहने का स्थान
- ❖ प्रिय खाद्य पदार्थ
- ❖ व्यवहार
- ❖ बोली
- ❖ क्यों अच्छा लगता है?
- ❖ संसार के लिए उपयोग
- ❖ आपने इसे कहाँ देखा
- ❖ अन्य विशिष्टता

उद्देश्य

- ❖ विभिन्न पक्षियों से परिचित कराना
- ❖ प्रकृति के अनिवार्य अंग से जोड़ना
- ❖ पक्षियों के प्रति आकर्षण एवं प्रेम भाव जागृत करना
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास



- लेखन क्षमता का विकास

प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- शिक्षक सर्वप्रथम गतिविधि से विद्यार्थियों को परिचित कराए।
- उपरोक्त 'कार्य प्रपत्र' को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- विद्यार्थी ध्यानपूर्वक इसे एक पेज पर लिखें।
- अध्यापक ध्यान रखें कि सभी विद्यार्थी ठीक से इसे लिख लें।
- विद्यार्थियों को रिक्त स्थानों की पूर्ति हेतु 10-15 मिनट का समय दिया जाए।
- मूल्यांकन के आधार पूर्व में ही छात्रों को बताए जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

9-10 जानकारीयें देने पर	5
7-8 जानकारीयें देने पर	4
5-6 जानकारीयें देने पर	3
3-4 जानकारीयें देने पर	2
1-2 जानकारीयें देने पर	1

टिप्पणी

- अध्यापक कार्य-प्रपत्र में अन्य कोई उपयोगी प्रश्न पूछ सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सही जानकारी न देने वाले विद्यार्थियों को उचित दिशा-निर्देश प्रदान करें ताकि वह कार्य को पूरा कर सके।
- बहुत अच्छा कार्य करने वाले विद्यार्थियों को और प्रोत्साहित किया जाए।
- जो कार्य पूरा नहीं कर पाए उन्हें अन्य विद्यार्थियों की सहायता से पूरा करने की प्रेरणा दें।

प्रदत्त कार्य-3

जीव-जंतुओं के संरक्षण की आवश्यकता पर विचार अभिव्यक्ति

उद्देश्य

- विचार विश्लेषण की क्षमता का विकास
- प्रकृति के प्रति अनुराग उत्पन्न करना



Unit 16

गिल्लू रचनात्मक मूल्यांकन -

- ❖ विलुप्त प्रजातियों का परिचय
- ❖ प्राकृतिक धरोहर के संरक्षण की आवश्यकता पर बल
- ❖ भावुकता एवं संवेदनशीलता का विकास

प्रक्रिया - व्यक्तिगत कार्य

- ❖ अध्यापक द्वारा टी.वी. में दिखाए जाने वाले विज्ञापन (बाघ 1411) की चर्चा के साथ विलुप्त प्रजातियों के संकट पर कक्षा में चर्चा करेंगे।
- ❖ किसी अन्य एक पशु/पक्षी जो कि विलुप्त होने के कगार पर है, उसके विषय में सोचने व लिखने का कार्य दिया जाएगा। साथ ही छात्रों को प्रेरित किया जाएगा कि आखिर “जीव जंतुओं के संरक्षण की आवश्यकता क्यों है” इस पर वे विचार करें।
- ❖ छात्रों को उपरोक्त विषय पर सोचने व लिखने के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ छात्रों को लिखने के आधारों को स्पष्ट करके श्यामपट्ट पर मुख्य बिंदु लिखे जाएंगे।
- ❖ जब छात्र सोचने व लिखने का कार्य कर रहे होंगे तब अध्यापक घूम-घूमकर उनके क्रियाकलापों का निरीक्षण करेंगे व आवश्यकतानुसार सहायता करेंगे।
- ❖ प्रत्येक छात्र कम से कम 5-7- बिंदुओं में अपने विचार प्रस्तुत करेगा। इसके लिए उन्हें 1-2 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदु पूर्व में ही छात्रों को बताए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विलुप्त प्रजातियों का ज्ञान	1
विलुप्त होने के कारण	1
संरक्षण के उपाय	1
शुद्ध भाषा प्रयोग	1
प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ विलुप्त होने के सामान्य कारणों को अध्यापक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखना।
- ❖ संरक्षण के कारगर उपायों को श्यामपट्ट पर लिखना।
- ❖ अच्छे प्रयासों की सराहना करना।
- ❖ बेहतर प्रयासों के लिए प्रेरित करना।



प्रदत्त कार्य-4

वादविवाद प्रतियोगिता

“पशु-पक्षियों को पालतू बनाना उचित है”

उद्देश्य

- ज्ञान का विस्तार
- सकारात्मक व आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास
- आत्मविश्वास के साथ तार्किक क्षमता का विकास
- धारा प्रवाह अभिव्यक्ति
- पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना
- सहनशीलता एवं धैर्य की प्रवृत्ति का विकास

प्रक्रिया - सामूहिक कार्य

- अध्यापक द्वारा छात्रों को वाद-विवाद का स्वरूप समझाना।
- अध्यापक द्वारा छात्रों को विभिन्न समूहों में बाँटा जाएगा।
- चार-चार छात्रों का एक समूह होगा प्रत्येक समूह में दो छात्र पक्ष व दो छात्र विपक्ष में अपने विचार लिखेंगे।
- मूल्यांकन के आधार बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।
- छात्रों को विषय तैयार करने के लिए 10-15 मिनट का समय दिया जाएगा। अध्यापक उस समय घूम-घूम कर निरीक्षण करेंगे।
- प्रत्येक समूह से एक छात्र पक्ष व एक छात्र विपक्ष पर आकर बोलेंगे व अध्यापक द्वारा मुख्य बिंदु श्यामपट्ट पर लिखे जाएँगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय से संबंधित जानकारी	1
तार्किक क्षमता	1
भाषायी दक्षता एवं सुसम्बद्धता	1
अभिव्यक्ति/प्रस्तुतीकरण	1
उपयुक्त उदाहरण - तर्क की पुष्टि के लिए	1



Unit 16

टिप्पणी

अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- प्रत्येक वक्ता को प्रोत्साहित करना
- अच्छे वक्ताओं व उनकी विषय वस्तु की सराहना करना
- मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखना

प्रदत्त कार्य-5

“आवारा पशुओं की समस्या का निदान” विषय पर परिचर्चा

उद्देश्य

- समाज में आवारा पशुओं की वर्तमान स्थिति का ज्ञान
- पशुओं के प्रति संवेदना उत्पन्न करना।
- सामाजिक उत्तरदायित्वों का आभास करवाना
- स्वानुभव को लिपिबद्ध करके अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास
- शब्द भंडार में वृद्धि व अनुप्रयोग
- विचारों का प्रस्तुतीकरण

प्रक्रिया

- सामूहिक कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक गली में घूमने वाले आवारा पशुओं की स्थिति के बारे में चर्चा करेंगे।
- समस्या के निदान के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए तीन-तीन विद्यार्थियों के समूह बनाए जाएंगे। प्रत्येक समूह कम से कम तीन से चार विचार बिंदु प्रस्तुत करेगा। उनमें से एक वक्ता कक्षा के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत करेगा।
- मूल्यांकन के आधार छात्रों को पहले ही स्पष्ट कर दिए जाएँगे।
- विद्यार्थियों को तैयारी के लिए दस मिनट का समय दिया जाएगा।
- प्रत्येक समूह/वक्ता को विचाराभिव्यक्ति के लिए एक मिनट का समय दिया जाएगा।
- विद्यार्थियों के विचार-विमर्श के समय शिक्षक घूम-घूमकर निरीक्षण करेंगे।
- एक वक्ता की प्रस्तुति के समय अन्य छात्र उसका मूल्यांकन करेंगे।



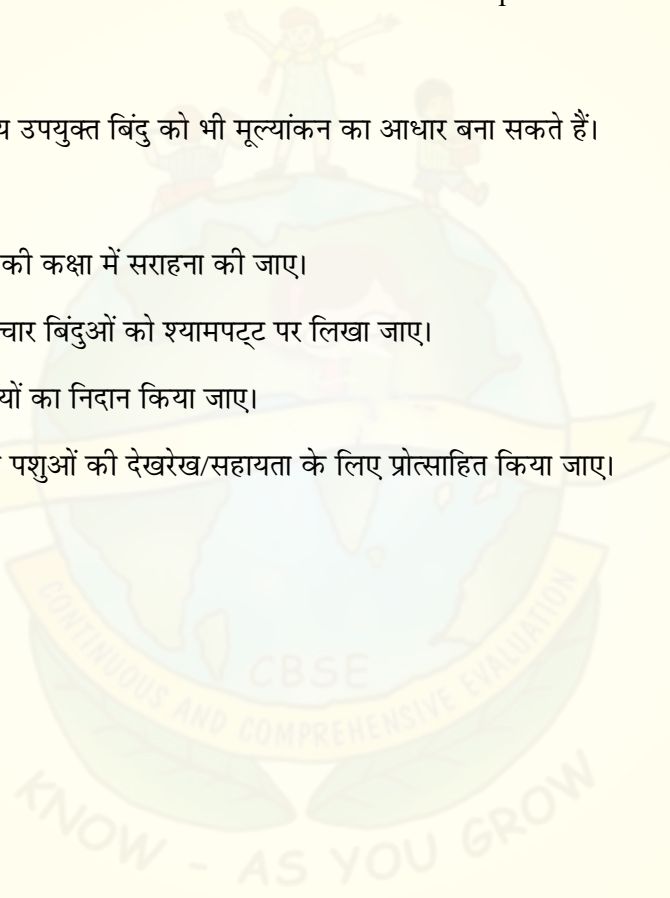
मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	1
शब्द चयन एवं वाक्य रचना	1
सहभागिता एवं सक्रिय योगदान	1
आत्मविश्वास एवं हाव भाव	1
प्रवाहशीलता एवं क्रयबद्धता	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छे निदानों/उपायों की कक्षा में सराहना की जाए।
- ❖ मुख्य एवम् अच्छे विचार बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- ❖ गलतियों एवं अशुद्धियों का निदान किया जाए।
- ❖ अपने क्षेत्र के आवारा पशुओं की देखरेख/सहायता के लिए प्रोत्साहित किया जाए।





प्रदत्त कार्य-1

बचपन की किसी अविस्मरणीय घटना का वर्णन।

उद्देश्य

- ❖ स्व-अनुभव को शब्दों में ढालकर अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास।
- ❖ स्मरण शक्ति का विकास
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि व अनुप्रयोग
- ❖ कल्पनाशीलता का विकास
- ❖ आत्मविश्वास

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक अपने जीवन की किसी अविस्मरणीय घटना विद्यार्थियों को सुनाए।
- ❖ तत्पश्चात् शिक्षक कार्य के विषय में विस्तार से समझाकर 10 मिनट का समय विद्यार्थियों को दें ताकि वे पूर्व अनुभव का स्मरण कर कुछ मुख्य बिंदु अपने पास लिख लें।
- ❖ अध्यापक ध्यान रखें कि सभी विद्यार्थी उपरोक्त कार्य को रुचिपूर्वक करें।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदुओं तथा अंक योजना से विद्यार्थियों को पूर्व में ही परिचित करवाया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय-वस्तु - भावानुकूल व विषयानुकूल	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
आत्मविश्वास	1
प्रवाहशीलता, क्रमबद्धता, सुसंबद्धता	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।



Unit 17

स्मृति - रचनात्मक मूल्यांकन

प्रतिपुष्टि

- ❖ उत्कृष्ट प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- ❖ प्रस्तुति में कमी पाने पर उसे दूर करने के लिए विद्यार्थी को सहयोग दें।
- ❖ अन्य विद्यार्थियों की सहायता से मूल्यांकन करें
- ❖ उच्चारण संबंधी त्रुटियों को विद्यार्थियों के सहयोग से दूर करने की प्रेरणा दें।

प्रदत्त कार्य-2

बाल सुलभ शरारतों से संबंधित एक कहानी रचना

उद्देश्य

- ❖ बौद्धिक क्षमता का विकास।
- ❖ कल्पना शक्ति का विकास।
- ❖ रचनात्मक/सृजनात्मक शक्ति का विकास।
- ❖ कहानी विधा के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
- ❖ शब्द भंडार के अनुप्रयोग की प्रेरणा।

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक अपने बचपन की कोई एक घटना सुनाकर छात्रों को इस कार्य से संबंधित दिशा निर्देश देंगे।
- ❖ 4-5 छात्रों को एक समूह में रखा जाएगा व पूरी कक्षा को विभिन्न समूहों में बांटा जाएगा।
- ❖ छात्रों को तैयारी के लिए 15 मिनट दिए जाएंगे व प्रत्येक समूह में से एक वक्ता अपनी कहानी की संक्षिप्त प्रस्तुति करेगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधारों को पहले से श्यामपट्ट पर लिख दिया जाएगा।
- ❖ जब छात्र आपस में विचार-विमर्श कर रहे होंगे तब शिक्षक उनका निरीक्षण व मार्गदर्शन कर सकते हैं।
- ❖ प्रत्येक वक्ता को बोलने के लिए 1-2 मिनट तक का समय दिया जाएगा।
- ❖ जब छात्र प्रस्तुति करेंगे तब अन्य समूह उनका मूल्यांकन का कार्य कर सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
आत्मविश्वास	1
उच्चारण की शुद्धता व स्पष्टता	1



भावानुकूल व प्रवाहपूर्ण अभिव्यक्ति	1
सहभागिता व सक्रिय योगदान	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ प्रत्येक छात्र का सक्रिय योगदान वांछनीय है।
- ❖ सर्वश्रेष्ठ रचनाओं की सराहना की जाए।
- ❖ उच्चारण संबंधी व लेखन संबंधी अशुद्धियों को दूर किया जाए।
- ❖ अधूरा कार्य करने वाले छात्रों को प्रेरित करके कार्य पूरा करवाया जाए।

प्रदत्त कार्य-3

वाद-विवाद प्रतियोगिता

‘दंड का प्रावधान उचित है’

उद्देश्य

- ❖ मनोभावों का विश्लेषण
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ सकारात्मक व आलोचनात्मक दृष्टिकोण
- ❖ आत्मविश्वास के साथ तार्किकता की शैली का विकास
- ❖ धारा प्रवाह अभिव्यक्ति
- ❖ मंच भय से मुक्ति

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक द्वारा छात्रों को वाद-विवाद का स्वरूप समझाना
- ❖ अध्यापक द्वारा छात्रों को विभिन्न समूहों में बाँटा जाएगा।
- ❖ प्रत्येक समूह में चार-चार छात्र होंगे तथा दो छात्र पक्ष व दो विपक्ष में होंगे।
- ❖ प्रत्येक समूह से एक-एक वक्ता पक्ष में व एक विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करेगा।
- ❖ प्रत्येक वक्ता को विचार प्रस्तुति के लिए 1.30 - 2 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।



Unit 17

स्मृति - रचनात्मक मूल्यांकन

- ❖ प्रस्तुतीकरण के समय मुख्य बिंदुओं को शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय से संबंधित जानकारी	1
तार्किक क्षमता	1
भाषायी क्षमता एवं सुसंबद्धता	1
अभिव्यक्ति/प्रस्तुतीकरण	1
उपयुक्त उदाहरण- तर्क की पुष्टि के लिए	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ प्रत्येक वक्ता को प्रोत्साहित करना
- ❖ अच्छी विषयवस्तु की सराहना करना
- ❖ मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखना
- ❖ अध्यापक इस बात का ध्यान रखे कि सभी छात्र क्रियाशील रहे

प्रदत्त कार्य-4

‘घटना-वर्णन’

जब मैं डरा....

उद्देश्य

- ❖ विचार विश्लेषण क्षमता का विकास
- ❖ विचार लेखन व प्रस्तुति का अभ्यास
- ❖ पूर्व अनुभव/संस्मरण के आधार पर लेखन के लिए प्रेरित करना
- ❖ कल्पनाशीलता का विकास
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि एवं अनुप्रयोग

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक अपने जीवन से जुड़ी कोई घटना कक्षा में सुनाएँ।



- ❖ विद्यार्थियों को 10 मिनट का समय दिया जाए ताकि वे अपने जीवन से जुड़ी किसी घटना के बारे में कुछ अहम् बिंदु लिख लें, जिससे प्रस्तुतीकरण में उसे असुविधा न हो।
- ❖ इस दौरान शिक्षक यह सुनिश्चित करें कि सभी छात्र रुचिपूर्वक कार्य करें।
- ❖ आवश्यकतानुसार शिक्षक उनकी सहायता करें।
- ❖ 10 मिनट बाद प्रत्येक विद्यार्थी अपनी बात एक-एक कर सुनाएँ।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिन्दु पूर्व में ही स्पष्ट कर दिए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	1
घटना की रोचकता	1
अभिव्यक्ति (हाव-भाव, आरोह-अवरोह)	1
प्रस्तुतीकरण	1
शब्द चयन, वाक्य रचना	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छे प्रस्तुतीकरण की सराहना
- ❖ विद्यार्थियों के प्रयासों को प्रोत्साहित करना
- ❖ प्रस्तुतीकरण/अभिव्यक्ति में होने वाली कमियों को दूर करने के लिए सुझाव देना।
- ❖ उच्चारण, वाक्य विन्यास आदि से संबंधित सुझाव देना।

प्रदत्त कार्य-5

‘पत्र-लेखन’

अपनी गलती का अनुभव होने पर क्षमा याचना करते हुए अपने बड़े भाई को पत्र लिखें।

उद्देश्य

- ❖ रचनात्मक कौशल/क्षमता का विकास
- ❖ प्रारूप की पहचान एवं प्रयोग
- ❖ स्मरण शक्ति का विकास



Unit 17

स्मृति - रचनात्मक मूल्यांकन

- ❖ आत्मविश्लेषण की प्रेरणा
- ❖ शब्द भंडार के अनुप्रयोग की प्रेरणा

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक अपना कोई अनुभव विद्यार्थियों को बताए जब उन्होंने अपनी गलती के लिए क्षमायाचना की।
- ❖ विद्यार्थियों को संपूर्ण गतिविधि से परिचित कराते हुए उन्हें निर्देश दिया जाए कि वर्ग में दिए गए प्रारूप को व्यवस्थित करते हुए पत्र लिखें।
- ❖ अध्यापक उपरोक्त वर्ग तथा उसमें दिए गए प्रारूप को श्यामपट्ट पर अंकित करें।
- ❖ इस कार्य के लिए विद्यार्थी को 10-15 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ मूल्यांकन के आधार तथा अंक से विद्यार्थियों को पूर्व में ही परिचित करवाया जाए।
- ❖ गतिविधि के दौरान अध्यापक विद्यार्थियों के कार्य पर ध्यान रखें तथा आवश्यकतानुसार सहयोग करें।
- ❖ यह कार्य एक पृष्ठ पर करवाकर अध्यापक उन्हें मूल्यांकन हेतु एकत्रित करें।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

प्रारूप को सुव्यवस्थित करना	1
विषय वस्तु - विषयानुकूल, भावानुकूल	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
वर्तनी की शुद्धता, विराम चिह्न	1
सुंदर लेख	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ कार्य की पूर्णता तथा सुंदर लेख की सराहना की जाए।
- ❖ वर्तनीगत व वाक्यगत अशुद्धियों से विद्यार्थियों को परिचित कराएं तथा सुधार करने का निर्देश दें।
- ❖ सर्वश्रेष्ठ पत्र को कक्षा में सुनाया जाए।





कल्लू कुम्हार की उनाकोटी

विक्रम सिंह

प्रदत्त कार्य-1

विज्ञापन लेखन : किसी राज्य के पर्यटन विभाग की ओर से राज्य-पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए

उद्देश्य

- ❖ विज्ञापन लेखन की विधा से परिचय
- ❖ देश भ्रमण की महत्ता व प्रेरणा
- ❖ देश के आर्थिक विकास में पर्यटकों के योगदान से परिचय
- ❖ लेखन कौशल का विकास
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि व अनुप्रयोग

प्रक्रिया

- ❖ छात्रों को किसी एक राज्य का मानचित्र दिखाकर उस राज्य की विभिन्न विशेषताओं से परिचित करवाते हुए उसके लिए एक विज्ञापन तैयार किया जाएगा जैसे -
 “रंग-रंगीला, लोककलाओं से परिपूर्ण
 उत्सवों का प्रदेश, ऐतिहासिक धरोहर का भंडार
 विभिन्न व्यंजनों के जायके का खजाना
 रेगिस्तान का राजा राजस्थान”
- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ छात्रों को निर्देश दिया जाएगा कि वे कोई एक राज्य चुनकर उसकी विभिन्न विशेषताओं को उजागर करने वाला, पर्यटन को बढ़ावा देने वाला विज्ञापन तैयार करें।
- ❖ छात्रों को तैयारी के लिए दो दिनों का समय दिया जाएगा।
- ❖ प्रत्येक समूह में 4-5 छात्र होंगे व एक समूह किसी एक राज्य पर विज्ञापन तैयार करेगा। पूरे समूह से एक वक्ता उसकी प्रस्तुति करेगा।
- ❖ अन्य समूह वक्ता का मूल्यांकन करेंगे। वक्ता अपनी प्रस्तुति के लिए राज्य विशेष के चित्रों की सहायता भी ले सकते हैं।
- ❖ मूल्यांकन के आधार छात्रों को पूर्व में ही बताए जाएँ।

Unit 18

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक योजना
विषय वस्तु	1
अधिकतम जानकारी	1
लयात्मक प्रस्तुति	1
आत्मविश्वास	1
उच्चारण व स्वर की स्पष्टता	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- अध्यापक देखेंगे कि प्रत्येक विद्यार्थी राज्यों के बारे में ज्यादा-से-ज्यादा जानकारी प्रदान करें।
- उत्कृष्ट प्रस्तुति की सराहना की जाएगी।
- उत्कृष्ट विज्ञापन को श्यामपट्ट पर लिखकर अन्य छात्रों को प्रेरित किया जाएगा।
- सामान्य अशुद्धियों का निदान किया जाएगा।
- विद्यार्थियों को स्वमूल्यांकन के लिए भी प्रेरित किया जाएगा।

प्रदत्त कार्य-2

लोककथा/दंत कथा/किंवदंतियों को कक्षा में सुनाना

उद्देश्य

- लोककथाओं से परिचय
- अंचल विशेष से जुड़ी विभिन्न जानकारियां देना
- श्रवण व वाचन क्षमता का विकास
- स्वाध्याय की प्रेरणा
- शब्द भंडार में वृद्धि व अनुप्रयोग

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम अध्यापक लोककथाओं/दंत कथाओं/किंवदंतियों के विषय में छात्रों को सामान्य जानकारी दें।
- शिक्षक कोई एक लघुकथा (लोककथा) छात्रों को सुनाएँ।



- दो दिन पूर्व ही कार्य के विषय में छात्रों को अवगत कराते हुए उपरोक्त में से कोई एक कथा चुन कर लाने के लिए कहे। इस कार्य के लिए विद्यार्थियों का मार्गदर्शन भी करें तथा स्रोत की जानकारी भी दें।
- प्रत्येक छात्र को लोककथा/दंतकथा/किंवदंतियों को सुनाने के लिए दो से तीन मिनट का समय दिया जाए।
- गतिविधि के दौरान अध्यापक ध्यान दें कि प्रत्येक छात्र कार्य में रुचि ले रहे हैं।
- कार्य से पूर्व ही मूल्यांकन के आधार व अंक योजना के विषय में छात्रों को बताएँ।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय-वस्तु की रोचकता	2
अभिव्यक्ति-आरोह-अवरोह, हाव-भाव	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
आत्मविश्वास	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति की सराहना की जाए
- उच्चारण की शुद्धता व भावपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए छात्रों को प्रेरित किया जाए।
- अन्य विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति व श्रवण क्षमता को परखने के लिए कार्य पूर्ण होने के पश्चात् प्रस्तुत की गई कथाओं के विषय में प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

प्रदत्त कार्य-3

जमीन के नीचे/अंदर उगने वाली सब्जियों के नाम की सूची बनाना (कम से कम 10 नाम)

उद्देश्य

- ज्ञान का विस्तार
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- पूर्व ज्ञान को विषय से जोड़ना
- शब्द भंडार में वृद्धि एवं अनुप्रयोग
- लेखन क्षमता का विकास



Unit 18

रचनात्मक मूल्यांकन - कल्लू कुम्हार की उनाकोटी

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ शिक्षक ज़मीन के ऊपर एवं भीतर उगने वाली सब्जियों के बारे में बताएंगे।
- ❖ गतिविधि के विषय में विस्तार से बताएँ।
- ❖ विद्यार्थियों को इस कार्य के लिए 10 मिनट का समय दिया जाए। इसे विद्यार्थी एक पेज पर करें।
- ❖ शिक्षक इस दौरान प्रत्येक विद्यार्थी के कार्यों पर दृष्टि रखें एवं आवश्यकतानुसार सहायता करें
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदु एवं अंक पूर्व में ही बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

9-10 सही नाम लिखने पर	05
7-8 सही नाम लिखने पर	04
5-6 सही नाम लिखने पर	03
3-4 सही नाम लिखने पर	02
1-2 सही नाम लिखने पर	01

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छा कार्य करने वाले विद्यार्थियों के कार्य को सराहा जाएगा।
- ❖ जिनका कार्य अपूर्ण था या त्रुटिपूर्ण था, उन्हें उसे ठीक से पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।
- ❖ सब्जियों के नाम श्यामपट्ट पर शिक्षक लिख दें ताकि प्रत्येक छात्र अधिक से अधिक नामों से परिचित हो जाए। इस कार्य में विद्यार्थियों का सहयोग भी लिया जा सकता है।

प्रदत्त कार्य-4

‘हस्तशिल्प व घरेलू उद्योग’ पर विचार-विमर्श

उद्देश्य

- ❖ चिंतन-मनन की शैली का विकास
- ❖ हस्तकला और घरेलू उद्योग-धंधों की उपयोगिता और महत्ता से परिचय
- ❖ कुटीर उद्योगों की जानकारी
- ❖ सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास



- ❖ बौद्धिक क्षमता का विकास
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि
- ❖ वाचन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ शिक्षक त्रिपुरा के घरेलू उद्योग (बांस की वस्तुओं का निर्माण) के विषय में जानकारी देते हुए छात्रों के मन में अन्य कुटीर उद्योगों के प्रति जागरुकता उत्पन्न करने का प्रयास करेंगे।
- ❖ भारत के विभिन्न कुटीर उद्योगों से परिचित करवाने के लिए चार-चार छात्रों के विभिन्न समूह बनाएँगे व प्रत्येक समूह को किसी एक क्षेत्र से संबंधित किसी एक कुटीर उद्योग व उसकी उपयोगिता से संबंधित जानकारी एकत्र करके कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए कहेंगे।
- ❖ तैयारी के लिए दो दिन का समय दिया जाएगा व प्रत्येक समूह में से एक वक्ता एक से डेढ़ मिनट में वह जानकारी प्रस्तुत करेगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधारों को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय-वस्तु (राज्य व कुटीर उद्योग)	1
परम्परागत तरीकों के वर्णन का विस्तार	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
प्रभावशीलता, क्रमबद्धता, सुसम्बद्धता	1
उच्चारण की शुद्धता व प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ विशिष्ट जानकारी की सराहना की जाएगी।
- ❖ स्वमूल्यांकन के लिए प्रेरणा दी जाएगी।
- ❖ स्वावलम्बन एवं स्वरोजगार की ओर उन्मुख।
- ❖ सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को श्यामपट्ट पर लिखना व अन्य छात्रों को लिखने के लिए प्रोत्साहित करना।
- ❖ असफल प्रयासों एवम् अधूरे कार्यों को प्रोत्साहित करना।



Unit 18

प्रदत्त कार्य-5

पौराणिक कथा का मंचन

उद्देश्य

- ❖ पौराणिक कथाओं से परिचय
- ❖ भारतीय संस्कृति/विचारधारा/दर्शन से जोड़ना
- ❖ स्वाध्याय की प्रेरणा
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- ❖ अभिनय कला एवं संवाद शैली का विकास
- ❖ मंच भय से मुक्ति
- ❖ मिल जुलकर कार्य करने की प्रवृत्ति का विकास
- ❖ श्रवण एवं वाचन क्षमता का विकास

प्रक्रिया

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ कुछ कथाओं को सुनाकर शिक्षक गतिविधि से विद्यार्थियों को अवगत कराए।
- ❖ 6-7 छात्रों का समूह मिलकर यह कार्य करे।
- ❖ मंचन से पूर्व विद्यार्थियों को तैयारी हेतु एक सप्ताह का समय दिया जाए। मंचन हेतु प्रत्येक समूह को 8-10 मिनट का समय दें।
- ❖ इस समयावधि में विद्यार्थी किसी एक पौराणिक कथा के मंचन की तैयारी करेंगे।
- ❖ इस कार्य में शिक्षक उनको आवश्यकतानुसार सहायता प्रदान करें।
- ❖ मूल्यांकन के आधार पूर्व में ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

नाट्य रूपान्तरण का स्तर	1
भाषा प्रयोग (संवाद शैली, शब्द चयन)	1
अभिनय	1
सहभागिता व सक्रिय योगदान	1
आत्मविश्वास/प्रस्तुतीकरण	1



टिप्पणी

- ♦ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ♦ अभिनय विशेष की सराहना।
- ♦ सामूहिक प्रयासों के लिए प्रोत्साहित करना।
- ♦ अभिनय एवं संवाद की दृष्टि से कमी होने पर उन्हें दूर करने के लिए सुझाव दें।
- ♦ विद्यार्थी स्वयं सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति का चयन करें।





मेरा छोटा-सा निजी पुस्तकालय ✨

धर्मवीर भारती

पुस्तकालय
मेरा छोटा-सा निजी
मूल्यांकन - रचनात्मक

प्रदत्त कार्य-1

वर्ग पहेली (कार्य-प्रपत्र)

वर्ग में दिए गए शब्दों में पाठ में उल्लेखित पुस्तकों एवं बाल-पत्रिकाओं के नाम छिपे हैं जिन्हें ढूँढ़ कर सूची तैयार करें।

उद्देश्य

- ❖ चिंतन प्रवृत्ति का विकास
- ❖ समस्या समाधान की प्रेरणा
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ शिक्षक कार्य से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी पूर्व में विद्यार्थियों को समझा दें।
- ❖ कार्य प्रपत्र के माध्यम से या श्यामपट्ट पर लिखकर इस कार्य को करवाया जाए।
- ❖ नाम ढूँढ़ने के लिए विद्यार्थियों को कम से कम 10-12 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ विद्यार्थी सूची तैयार कर सकते हैं या कार्य प्रपत्र में विभिन्न रंगों का इस्तेमाल करते हुए नामों को प्रदर्शित कर सकते हैं।
- ❖ कार्य के समय शिक्षक विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार सहायता करें।



Unit 19

भू	रा	वे	बा	ल	स	खा	खी	टू
त	ग	दो	च	ल	र	मो	गृ	रु
आ	नं	द	म	ठ	या	शी	हि	टी
यं	का	म	च	क	र्थ	ह	णी	द
मि	दं	द	म	ठ	प्र	स	या	र
त्र	बि	र	त	क	का	ल	मा	ग
चं	नी	ल	दु	गें	श	नं	दि	नी
प	स	र	स	व	ती	द	शा	न
क	पा	ल	कुं	ड	ला	न	त	ब

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

- 10 या अधिक नाम छाँट लेने पर
- 8-9 नाम छाँट लेने पर
- 6-7 नाम छाँट लेने पर
- 4-5 नाम छाँट लेने पर
- 2-3 नाम छाँट लेने पर

अंक विभाजन

- 5
- 4
- 3
- 2
- 1

टिप्पणी

प्रतिपुष्टि

- अधिकतम नाम छाँटने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- जो कार्य पूरा न कर पाए उनकी सहायता की जाए।
- गलत नाम छांटने वाले विद्यार्थियों को सही नाम बताए जाएं।
- कार्य -प्रपत्र एकत्रित करने के बाद अंत में सारे नामों को शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दें ताकि सभी विद्यार्थी इनसे अवगत हो जाएँ।

प्रदत्त कार्य-2

पुस्तकालय संबंधी कार्य - चुने हुए कवियों/लेखकों की कृतियों की सूची बनवाना।

उद्देश्य

- पुस्तकों के संदर्भ में ज्ञान का विस्तार



- स्वाध्याय की प्रेरणा
- स्वयं कार्य करके सीखने की प्रेरणा
- समूह में मिल-जुलकर कार्य करने की भावना का विकास
- पुस्तकों को सूचीबद्ध करने की क्षमता का विकास
- स्मरण शक्ति का विकास
- लेखन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- सामूहिक कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक किसी एक कवि या लेखक की कृतियों की सूची श्यामपट्ट पर बनाए।
- पुस्तकों की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए पुस्तकालयों की अनिवार्यता के विषय में बताकर छात्रों को उपरोक्त कार्य से परिचित करवाया जाए।
- 5-6 विद्यार्थियों का एक समूह बनाकर पूर्ण कक्षा को समूहों में विभाजित किया जाए।
- प्रत्येक समूह को चुने हुए लेखकों/कवियों में से एक-एक नाम दे दिया जाए जिनकी कृतियों की सूची समूहों को बनानी है - उदाहरण स्वरूप - प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, शरतचंद्र चट्टोपाध्याय, अमृता प्रीतम, महादेवी वर्मा, शिवानी, सुभद्रा कुमारी चौहान, मोहन राकेश आदि।
- कार्य से पूर्व शिक्षक यह सुनिश्चित कर लें कि जिन कवियों/लेखकों के नाम विद्यार्थियों को दिए जा रहे हैं, उनकी कृतियाँ पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
- गतिविधि के दौरान शिक्षक विद्यार्थियों के कार्य पर दृष्टि रखेंगे तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करेंगे।
- मूल्यांकन के आधार पूर्व में ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

पांच से अधिक कृतियों का उल्लेख	5
चार कृतियों का उल्लेख	4
तीन कृतियों का उल्लेख	3
दो कृतियों का उल्लेख	2
एक कृति का उल्लेख	1

प्रतिपुष्टि

- सामूहिक रूप से सफलतापूर्वक कार्य सम्पन्न करने के लिए विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- जिस समूह के कार्य में कमी रह गई हो उसे प्रोत्साहित किया जाए।



Unit 19

- समूह के द्वारा बनाई गई सूचियों को मूल्यांकन के पश्चात् कक्षा के सूचनापट्ट पर प्रदर्शित किया जाए।
- विद्यार्थियों को निजी पुस्तकालय बनाने के लिए तथा पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-3

प्रसिद्ध पुस्तकों पर आधारित फिल्मों के नाम की सूची तैयार करना

उद्देश्य

- साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न करना
- साहित्य का समाज पर प्रभाव स्पष्ट करना
- साहित्य एवं फिल्मों के संबंध पर प्रकाश
- बौद्धिक क्षमता का विकास
- ज्ञान का विस्तार

प्रक्रिया

- शिक्षक चर्चित फिल्म 'देवदास' के माध्यम से अन्य उपन्यासों/कृतियों के फिल्मांकन के उद्देश्य व प्रभाव के बारे में विद्यार्थियों से चर्चा करें।
- विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाए कि वे ऐसी अन्य कम से कम 10 फिल्मों की सूची बनाए जो किसी न किसी साहित्यिक रचना पर आधारित हैं।
- विद्यार्थियों को इस कार्य के लिए कम से कम 2 दिन का समय दिया है।
- छात्रों से अपेक्षित है कि वे फिल्म का नाम, उपन्यास का नाम एवं रचनाकार का नाम सहित जानकारी दें
- मूल्यांकन के आधारों को पूर्व में ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

9-10 नामों की पूर्ण सूची/जानकारी	5
7-8 नामों की पूर्ण सूची/जानकारी	4
5-6 नामों की पूर्ण सूची/जानकारी	3
3-4 नामों की पूर्ण सूची/जानकारी	2
1-2 नामों की पूर्ण सूची/जानकारी	1

प्रतिपुष्टि

- अच्छे कार्य की सराहना।



- ❖ अधिकतम जानकारी एकत्रित करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- ❖ नामों की सूची/जानकारी श्यामपट्ट पर लिखी जाए।

प्रदत्त कार्य-4

अस्वस्थता के कारण कई दिनों से अनुपस्थित मित्र का मनोबल बढ़ाने हेतु एक कार्ड तैयार करवाना।

उद्देश्य

- ❖ भावुकता व संवेदनशीलता का विकास
- ❖ सहयोग की प्रवृत्ति का विकास
- ❖ कलात्मक अभिरुचि का विकास
- ❖ लेखन कौशल का विकास
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि तथा अनुप्रयोग

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों से चर्चा करें कि किसी बीमार व्यक्ति का मनोबल बढ़ाने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है।
- ❖ चर्चा के दौरान विद्यार्थी जो कुछ भी बताएँ, शिक्षक उसे श्यामपट्ट पर लिखें।
- ❖ शिक्षक मनोबल बढ़ाने के संदर्भ में कार्ड की महत्ता और उसका बीमार व्यक्ति पर प्रभाव के विषय में बताएँ।
- ❖ कार्ड बनाने हेतु आवश्यक सामग्री लाने का निर्देश एक दिन पूर्व में ही विद्यार्थियों को दिया जाए।
- ❖ कार्ड बनाने, सजावट करने तथा संदेश लिखने के लिए विद्यार्थियों को 20-25 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ कार्य के दौरान शिक्षक विद्यार्थियों के क्रियाकलापों का ध्यान रखेंगे तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करेंगे।
- ❖ मूल्यांकन के आधार तथा अंकों से विद्यार्थियों को पूर्व में ही परिचित करवाया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय के अनुरूप संदेश	1
कलात्मकता	1
शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना	1



Unit 19

शुद्ध वर्तनी व विराम चिह्नों का प्रयोग

1

भावानुकूलता

1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- कलात्मक कार्ड व भावानुकूल संदेश की सराहना की जाए।
- प्रस्तुति में किसी भी दृष्टि से कमी होने पर उसे दूर करने के लिए विद्यार्थी को प्रोत्साहित किया जाए।
- विद्यार्थियों की सहायता से सुंदर कार्डों का चयन कर कक्षा के सूचनापट्ट पर प्रदर्शित किया जाए।
- विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाए कि इस प्रकार की स्थिति जीवन में आने पर वे कार्ड के माध्यम से अपनी संवेदना व्यक्त करें तथा दूसरों का मनोबल बढ़ाएँ।

प्रदत्त कार्य-5

बाल पत्रिकाओं/हिंदी के समाचार पत्रों में दिए बाल स्तम्भों में से मनपसंद रचना पढ़कर अपने शब्दों में छात्राभिव्यक्ति

उद्देश्य

- स्वाध्याय की प्रेरणा
- पठन-पाठन की प्रेरणा
- सार लेखन की क्षमता का विकास
- वाचन/श्रवण कौशल का विकास
- शब्द भंडार में वृद्धि और अनुप्रयोग
- मंच भय से मुक्ति

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक अपनी किसी मनपसंद रचना को अपने शब्दों में सुनाकर गतिविधि से छात्रों को परिचित करवाएँ।
- शिक्षक विद्यार्थियों को पत्र-पत्रिकाएँ पढ़कर मनपसंद रचना का सार प्रस्तुत करने का निर्देश देगा।
- गतिविधि से पूर्व 4-5 दिन का समय दिया जाए।
- सार प्रस्तुतीकरण के लिए 1-2 मिनट का समय दिया जाए।



- गतिविधि के दौरान अध्यापक एवं अन्य विद्यार्थी मूल्यांकन करेंगे।
- मूल्यांकन का आधार विद्यार्थियों को पहले ही बता दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
आरोह-अवरोह, हाव-भाव	1
प्रवाहशीलता, क्रमबद्धता, सुसम्बद्धता	1
आत्मविश्वास	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति की सराहना की जाए।
- उच्चारण की शुद्धता एवं स्वर की स्पष्टता पर बल दिया जाए।
- उच्चारणसंबंधी शुद्धियों को विद्यार्थियों की सहायता से जितना संभव हो सके सुधार करवाया जाए।
- औसत प्रस्तुतियों को सुधार लाने हेतु प्रोत्साहित किया जाए।





हामिद खाँ

एस.के. पोर्टेकाट

प्रदत्त कार्य-1

चित्रों के आधार पर कहानी-लेखन व वाचन

उद्देश्य

- कहानी विधा के प्रति रुझान
- रचनात्मक लेखन कौशल का विकास
- चिंतन-मनन क्षमता का विकास
- कल्पनाशीलता का विकास
- श्रवण व वाचन कौशल का विकास
- शब्द भंडार में वृद्धि एवं अनुप्रयोग

प्रक्रिया

- सामूहिक कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक कोई अन्य चित्र दिखाकर उसके आधार पर एक लघुकथा सुनाएँ।
- कार्य के स्वरूप से परिचित करवाते हुए दिए हुए चित्रों के आधार पर कहानी लिखने का निर्देश दें।
- कार्य आरंभ करवाने से पूर्व 5-6 छात्रों का एक समूह बनाकर पूर्ण कक्षा को समूहों में विभाजित करें।
- इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को 15-20 मिनट का समय दिया जाए।
- कहानी लेखन के पश्चात् समूह से एक विद्यार्थी कहानी सुनाए।
- गतिविधि के दौरान शिक्षक निरीक्षण करें और आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।
- मूल्यांकन के आधार श्यामपट्ट पर लिखे जाएँ।
- कहानी प्रस्तुति का मूल्यांकन शिक्षक एवं छात्रों द्वारा किया जाएगा।
- चित्रों के क्रम के अनुसार कहानी लिखने का निर्देश दें।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय व भाव के अनुरूप (कथानक)



Unit 20

रचनात्मक मूल्यांकन - हामिद खाँ



शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
उच्चारण की शुद्धता एवं स्वर की स्पष्टता	1
प्रवाहशीलता व क्रमबद्धता	1
हाव-भाव, आरोह-अवरोह व आत्मविश्वास	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सफलतापूर्वक कार्य सम्पन्न करने पर प्रत्येक समूह की सराहना की जाए।
- कथावस्तु में कमी होने पर छात्रों को इसके विषय में अवगत कराया जाए।
- उच्चारण संबंधी त्रुटियों को सामान्य रूप से बताते हुए उन्हें दूर करने की प्रेरणा दी जाए।
- छात्रों के सहयोग से सर्वश्रेष्ठ कहानी का चयन कर समूह की प्रशंसा की जाए।
- कहानी रचना के लिए उपयुक्त शब्द देकर छात्रों की सहायता भी की जा सकती है।
- कहानी रचना के लिए अन्य चित्र भी दिखाए जा सकते हैं।

प्रदत्त कार्य-2

हामिद खाँ कहानी का नाट्य रूपांतरण

उद्देश्य

- नाट्य विधा का परिचय
- संवाद लेखन शैली का विकास
- ग्रहणशीलता का विकास
- अभिनय क्षमता का विकास
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विस्तार
- आत्मविश्वास का संचार

प्रक्रिया

- सामूहिक कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक पाठ का पाठन करवाकर उसमें निहित संदेश को विद्यार्थियों को स्पष्ट करेंगे।
- शिक्षक द्वारा कहानी को नाटक के रूप में प्रस्तुत करने की प्रेरणा।



Unit 20

रचनात्मक मूल्यांकन - हामिद खाँ

- 3-4 विद्यार्थियों का एक समूह होगा व कक्षा को विभिन्न समूहों में बांट दिया जाएगा।
- विद्यार्थियों को तैयारी के लिए सात दिनों का समय दिया जाए।
- शिक्षक आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों की सहायता करेंगे।
- मूल्यांकन का आधार छात्रों को पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।
- प्रत्येक प्रस्तुति के लिए 3-4 मिनट का समय दिया जाएगा।
- एक समूह की प्रस्तुति के समय अन्य समूह मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

कथानक व भाव के अनुरूप नाट्य रूपांतरण	1
संवाद प्रस्तुतीकरण	1
अभिनय शैली	1
सहभागिता व सक्रिय योगदान	1
उच्चारण, स्वर की स्पष्टता व आत्मविश्वास	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सामूहिक प्रयासों की सराहना
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति का विद्यालय के मंच पर मंचन
- छात्रों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति के लिए मूल्यांकन
- कमजोर अभिनय एवं प्रस्तुति को प्रोत्साहन
- नाटक मंचन, संवाद लेखन एवं भाषा संबंधी सामान्य अशुद्धियों का निदान

प्रदत्त कार्य-3

“यात्रा के दौरान हामिद खाँ जैसे किसी व्यक्ति से मुलाकात” - विषय के संदर्भ में कल्पना के आधार पर कार्य-प्रपत्र पूर्ण करना।

- प्रथम मुलाकात कब हुई?
- मुलाकात कहाँ हुई?
- किन परिस्थितियों में मुलाकात हुई?



- ❖ व्यक्ति की वेशभूषा
- ❖ व्यक्ति की कद-काठी व मुखाकृति
- ❖ व्यक्ति का आपके प्रति व्यवहार
- ❖ व्यक्ति की आर्थिक स्थिति
- ❖ व्यक्ति का व्यवसाय
- ❖ आपके विषय में व्यक्ति की धारणा
- ❖ व्यक्ति से प्रभावित होने का कारण

उद्देश्य

- ❖ रेखा चित्र विधा से परिचय
- ❖ सहृदयता एवं एकता की भावना का विकास
- ❖ कल्पनाशीलता का विकास
- ❖ पूर्वज्ञान का अनुप्रयोग
- ❖ लेखन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक किसी अजनबी से प्रथम मुलाकात के स्वानुभव का वर्णन करते हुए कार्य के विषय में छात्रों को बताएं।
- ❖ उपरोक्त 'कार्य-प्रपत्र' को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- ❖ विद्यार्थी ध्यानपूर्वक इसे एक पेज पर लिखें।
- ❖ अध्यापक ध्यान रखें कि सभी विद्यार्थी ठीक से इसे लिख लें।
- ❖ विद्यार्थियों को रिक्त स्थानों की पूर्ति हेतु 10 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ छात्रों द्वारा दी जाने वाली जानकारी 'हामिद खाँ' कहानी से अलग होनी चाहिए।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदुओं तथा अंकों से विद्यार्थियों को कार्य से पूर्व ही अवगत करवाया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

9-10 प्रश्नों का उत्तर देने पर
7-8 प्रश्नों का उत्तर देने पर
5-6 प्रश्नों का उत्तर देने पर

05
04
03



3-4 प्रश्नों का उत्तर देने पर

02

1-2 प्रश्नों का उत्तर देने पर

01

प्रतिपुष्टि

- ❖ कार्यपूर्ण करने पर विद्यार्थियों की प्रशंसा की जाए।
- ❖ कार्य पूरा न कर पाने की स्थिति में छात्र को प्रोत्साहित करें तथा कार्य पूर्ण करवाएँ।
- ❖ वर्तनी के शुद्ध प्रयोग के लिए प्रेरित करें
- ❖ कार्य-प्रपत्र को प्रभावशाली ढंग से पूर्ण करने पर छात्र की सराहना करें तथा कक्षा में सभी को पढ़कर सुनाया जाए।

प्रदत्त कार्य-4

ऐतिहासिक स्थल संबंधी प्रपत्र

उद्देश्य

- ❖ भारत के विशिष्ट ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी
- ❖ भारतीय इतिहास का परिचय
- ❖ चिंतन मनन की प्रवृत्ति का विकास
- ❖ पूर्व ज्ञान का अनुप्रयोग

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों से विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों के विषय में बातचीत करेंगे व उनकी जानकारी को जाँचने के लिए एक प्रपत्र देंगे
- ❖ प्रपत्र पूरा करने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ यह कार्य व्यक्तिगत स्तर पर सभी विद्यार्थी करेंगे।

ऐतिहासिक स्थल

राज्य

(i) स्वर्ण मंदिर	
(ii) जामा मस्जिद	
(iii) फतेहपुर सीकरी	
(iv) सूर्य मंदिर	
(v) हवा महल	



(vi) गेट वे ऑफ इंडिया	
(vii) चार मीनार	
(viii) विक्टोरिया महल	
(ix) पटना साहिब	
(x) सेंट जेवियर चर्च	

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
9-10 सही उत्तरों/जानकारी पर	5
7-8 सही उत्तरों/जानकारी पर	4
5-6 सही उत्तरों/जानकारी पर	3
3-4 सही उत्तरों/जानकारी पर	2
1-2 सही उत्तरों/जानकारी पर	1

प्रतिपुष्टि

- सर्वाधिक जानकारी देने वालों की सराहना।
- 5-6 जानकारी व उससे कम जानकारी देने वाले छात्रों को प्रोत्साहन।
- अंत में शिक्षक द्वारा सही उत्तर श्यामपट्ट पर लिखे जाएँगे।

प्रदत्त कार्य-5

यात्रा-वृत्तांत (दिए गए शब्दों के आधार पर) लेखन-कार्य

उद्देश्य

- यात्रा वृत्तांत लिखने की क्षमता का विकास
- पर्यटन के लिए प्रेरित करना
- लेखन कौशल का विकास
- स्थान विशेष के संबंध में जानकारी
- कल्पनाशीलता का विकास

प्रक्रिया

- शिक्षक कार्य से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी पूर्व में ही विद्यार्थियों को बता दें
- शिक्षक कुछ शब्दों (यात्रा से जुड़े) की सूची श्यामपट्ट पर लिखें।



Unit 20

रचनात्मक मूल्यांकन - हमिद खाँ

- ❖ शब्दों का चयन विद्यार्थियों की सहायता से करना अधिक उपयुक्त होगा।
- ❖ अपनी कल्पनाशीलता के आधार पर विद्यार्थी अपने प्रपत्र पर शब्द चयन करके यात्रा-वृत्तांत लिखेंगे।
- ❖ इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को 15-20 मिनट का समय अवश्य दें।
- ❖ दो विद्यार्थी मिलकर भी इस कार्य को कर सकते हैं।

वर्षा	पानी	वायुयान	गुफा	पर्वत
बादल	हरियाली	झरना	सड़क	मस्जिद
सुंदर	शोर	बस्तियाँ	खाना	बस अड्डा
मंदिर	लोग	गाँव	किसान	मैगज़ीन
बस	रेल	कार	सामान	टिकट
चिप्स	स्टेशन	नदी		

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

दिए गए शब्दों का अनुच्छेद में प्रयोग के आधार पर	1
वाक्य रचना	1
आकर्षक एवं सरस रचना	1
क्रमबद्ध एवं प्रभावशाली अभिव्यक्ति	1
लेख प्रस्तुति	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ मौलिक एवं सुंदर लेख की सराहना।
- ❖ जो विद्यार्थी सफलतापूर्वक कार्य पूरा नहीं कर पाए उनका अन्य विद्यार्थियों की सहायता से कार्य पूरा करवाना।
- ❖ शिक्षक सुंदर लेखन के लिए प्रोत्साहित करें।



दिए जल उठे

मधुकर उपाध्याय

प्रदत्त कार्य-1

महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए आंदोलनों के विषय में जानकारी एकत्र करना एवं कक्षा में सुनाना

उद्देश्य

- ज्ञान में अभिवृद्धि
- लेखन, श्रवण एवं वाचन कौशल का विकास
- स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास
- अहिंसा की शक्ति से परिचय
- देश-प्रेम की भावना का विकास

प्रक्रिया

- सामूहिक कार्य
- अध्यापक पाठ पढ़ाने के उपरान्त छात्रों को कार्य के विषय में जानकारी देंगे।
- 4-5 विद्यार्थियों का एक समूह बनाया जाएगा और सम्पूर्ण कक्षा को समूहों में विभाजित किया जाएगा।
- प्रत्येक समूह को गाँधी जी द्वारा चलाए गए 4-5 आंदोलनों की जानकारी एकत्र करने का कार्य दिया जाए।
- कार्य करने के लिए दो-तीन दिन का समय दिया जाएगा।
- सामग्री संकलन के पश्चात् प्रत्येक समूह से एक छात्र प्रतिनिधि द्वारा आंदोलन संबंधी जानकारी प्रस्तुत की जाए।
- शिक्षक एवं अन्य विद्यार्थियों द्वारा मूल्यांकन किया जाए।
- मूल्यांकन के आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिखे जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु, तथ्य संकलन	2
शब्द चयन, वाक्य रचना, सुसम्बद्धता	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
आत्मविश्वास	1



Unit 21

उठे
जल
दिए
-
रचनात्मक मूल्यांकन

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- ❖ जिस कार्य में कमी रह गई हो उसके सुधार के लिए प्रयास किया जाए।
- ❖ यदि संभव हो तो शिक्षक महात्मा गांधी जी के अन्य आंदोलनों के विषय में जानकारी दे सकते हैं।
- ❖ उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को छात्रों की सहायता से दूर करने का प्रयास किया जाए।
- ❖ सभी छात्र समूहों द्वारा लिखित सामग्री को कक्षा के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित किया जाए।
- ❖ महात्मा गांधी से संबंधित स्थलों को दिखाने के लिए भी ले जाया जा सकता है जैसे - गांधी संग्रहालय, खादी भवन, राजघाट आदि।

प्रदत्त कार्य-2

‘आत्मकथात्मक प्रस्तुति’ - चरित्रांकन

स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले किसी स्वतंत्रता सेनानी के रूप में उनके जीवन व कार्यों पर प्रकाश डालना।

उद्देश्य

- ❖ आत्मकथा विधा से छात्रों का परिचय
- ❖ स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति आदर व गौरव भाव उत्पन्न करना
- ❖ देशभक्ति की भावना का संचार
- ❖ युवा पीढ़ी को इतिहास से जोड़ना
- ❖ श्रवण-वाचन कौशल का विकास
- ❖ स्वाध्याय की प्रेरणा
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक स्वयं किसी स्वतंत्रता सेनानी के रूप में उनके जीवन व कार्यों पर प्रकाश डालें। जैसे - शहीद भगत सिंह, सुभाषचंद्र बोस, सरदार पटेल आदि।
- ❖ कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित कराते हुए दो दिन पूर्व ही उन्हें आवश्यक जानकारी एकत्रित करने



का निर्देश दिया जाए। इसके लिए पुस्तकालय, सामाजिक ज्ञान के शिक्षक आदि का भी सहयोग लिया जा सकता है।

- कार्य से पूर्व शिक्षक छात्रों से चर्चा कर उनका मार्गदर्शन करें।
- स्वतंत्रता सेनानी के विषय में एकत्रित जानकारी को आत्मकथा शैली में प्रस्तुति के लिए प्रत्येक छात्र को 2-3 मिनट का समय दिया जाए। 8-10 पंक्तियों में छात्र विषय को प्रस्तुत करें।
- कार्य के दौरान शिक्षक व छात्र दोनों मिलकर प्रस्तुतकर्ता का मूल्यांकन करें
- कार्य से पूर्व मूल्यांकन के आधार तथा अंक श्यामपट्ट पर लिखें।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषयवस्तु (जीवन व कार्य के विषय में जानकारी)	1
शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
हाव-भाव, आरोह-अवरोह, प्रवाहशीलता	1
आत्मविश्वास	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- कार्य की पूर्णता व प्रस्तुति के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- उत्कृष्ट प्रस्तुति की प्रशंसा की जाए।
- कार्य में कमी होने पर विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें तथा सुधार हेतु सुझाव दें
- प्रस्तुति के दौरान स्वतंत्रता सेनानियों के नाम की सूची श्यामपट्ट पर बनवाई जा सकती है।
- छात्रों के सहयोग से सर्वश्रेष्ठ वक्ता का चयन किया जा सकता है
- कुछ स्वतंत्रता सेनानियों के रेखाचित्र बनवाकर सूचनापट्ट पर प्रदर्शित किए जा सकते हैं।

प्रदत्त कार्य-3

देशभक्ति की कविता/गीत गायन

उद्देश्य

- देशभक्ति की भावना का विकास
- रचनात्मक क्षमता व मानसिक योग्यता का विस्तार
- काव्य विधा के प्रति रुझान



Unit 21

उठे जल दिए - रचनात्मक मूल्यांकन

- गायन शैली का विकास
- कलात्मक अभिरुचि का विकास
- सहभागिता का विकास

प्रक्रिया

- सामूहिक कार्य
- देशभक्ति की भावना के संचार के लिए विद्यार्थियों को देशभक्ति के गीत गाने के लिए प्रेरित किया जाए।
- 5-6 विद्यार्थियों को एक समूह में रखा जाएगा व पूरी कक्षा को विभिन्न समूहों में बांटा जाएगा।
- मूल्यांकन का आधार पहले से ही विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।
- विद्यार्थियों को तैयारी के लिए एक सप्ताह का समय दिया जाएगा, विद्यार्थी चाहे तो वाद्य यंत्रों का प्रयोग कर सकते हैं।
- गायन के लिए डेढ़ से 2 मिनट का समय दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय एवं भाव अनुरूप कविता का चयन	1
उच्चारण की शुद्धता व स्पष्टता	1
कविता/गीत की लयात्मक प्रस्तुति	1
प्रवाहशीलता	1
आत्मविश्वास	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- कविता/गीत के चयन एवं प्रस्तुति के लिए सभी विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को सामान्य रूप से शुद्ध करने का प्रयास किया जाएगा।
- विद्यार्थियों के तथा स्वमूल्यांकन के आधार पर शिक्षक श्रेष्ठ प्रस्तुति का भी चयन कर सकते हैं।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत किया जा सकता है।
- चुने हुए गीतों/कविताओं को लिखकर एक लघु पत्रिका का निर्माण भी करवाया जा सकता है।
- औसत प्रस्तुति वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाएगा।





प्रदत्त कार्य-4

- ❖ “कालीन बनाने के कारखाने में 15-20 बच्चों को बंदी बनाकर उनसे बंधुआ मजदूरी करवाने के विषय में ज्ञात होने पर उन्हें मुक्त कराने के लिए विद्यार्थी द्वारा संभावित प्रयास” – पर विचाराभिव्यक्ति।
- ❖ पिंजरे में बंद पंछी बेचने वालों के चंगुल से पंछियों को मुक्त करवाने के लिए विद्यार्थी क्या करेंगे तथा क्यों? विषय पर अभिव्यक्ति।

उद्देश्य

- ❖ स्वाधीनता के महत्व का प्रतिपादन
- ❖ मानवीय भावना व संवेदना का विकास
- ❖ अन्याय व अत्याचार के विरुद्ध कार्य करने की प्रेरणा
- ❖ वैचारिक मंथन की ओर अग्रसर करना
- ❖ श्रवण व वाचन क्षमता का विकास
- ❖ कल्पनाशीलता का विकास

प्रक्रिया

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ ‘स्वाधीनता प्रत्येक प्राणी का अधिकार है’ विषय पर कुछ पंक्तियों के माध्यम से स्वाधीनता के महत्व को शिक्षक स्पष्ट करें।
- ❖ 5-6 छात्रों का एक समूह बनाकर पूर्ण कक्षा को कुछ समूहों में विभाजित किया जाए।
- ❖ कार्य के स्वरूप के विषय में छात्रों को बताएं तथा समूह चर्चा द्वारा दिए गए विषय को तैयार करने का निर्देश दें।
- ❖ प्रत्येक समूह में विषय का विभाजन पंक्तियों के माध्यम से करें।
- ❖ गतिविधि के दौरान शिक्षक कार्य का निरीक्षण करें तथा आवश्यकतानुसार छात्रों का मार्गदर्शन करें।
- ❖ चर्चा समाप्ति के पश्चात् प्रत्येक समूह से एक विद्यार्थी विचाराभिव्यक्ति करे। इस कार्य के लिए प्रत्येक समूह को 1-2 मिनट का समय दें
- ❖ विचाराभिव्यक्ति का मूल्यांकन छात्र तथा शिक्षक दोनों मिलकर करें।
- ❖ मूल्यांकन के आधार तथा अंक कार्य से पूर्व श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय व भावानुरूप विचार

1

मौलिकता व कल्पनाशीलता

1

Unit 21

उठे
जल
दिए -
रचनात्मक मूल्यांकन

शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
सहभागिता व सक्रिय योगदान	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ सामूहिक चर्चा व विचार प्रस्तुति के संदर्भ में छात्रों की सराहना की जाए।
- ❖ प्रयासों के संदर्भ में छात्रों द्वारा दिए गए सुझावों को श्यामपट्ट पर लिखें
- ❖ उच्चारण संबंधी त्रुटियों को छात्रों की सहायता से दूर करने के लिए प्रेरित करें।
- ❖ स्वमूल्यांकन तथा छात्रों के मूल्यांकन के आधार पर सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति का चयन कर कक्षा में सुनाने के लिए प्रेरित करें।

प्रदत्त कार्य-5

विचार अभिव्यक्ति

विषय - 'देश की छवि संवारने में मेरा योगदान'

उद्देश्य

- ❖ देश के प्रति सौंदर्य बोध जगाना
- ❖ देशभक्ति की भावना का विकास
- ❖ कल्पनाशीलता का विकास
- ❖ लेखन एवं वाचन कौशल का विकास
- ❖ चिंतन-मनन की क्षमता का विकास
- ❖ स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक उन कार्यों के विषय में छात्रों को बताएं जिनसे देश की छवि खराब होती है। जैसे - अनुशासनहीनता, सार्वजनिक स्थलों पर गंदगी, ऐतिहासिक स्मारकों को क्षति पहुंचाना, पर्यटन स्थलों के सौंदर्य को क्षति पहुंचाना आदि।
- ❖ विद्यार्थियों से यह चर्चा की जाएगी कि देश की छवि सुधारने के लिए क्या-क्या कार्य किए जाने चाहिए।



- प्रत्येक विद्यार्थी को लिखने व तैयारी के लिए 20 मिनट का समय दिया जाएगा।
- प्रत्येक वक्ता को बोलने के लिए डेढ़ से दो मिनट तक का समय दिया जाएगा।
- मूल्यांकन का आधार विद्यार्थियों को पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
सटीक वाक्य रचना व क्रमबद्धता	1
आत्मविश्वास	1
उदाहरणों का प्रयोग	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सशक्त प्रस्तुतीकरण की सराहना व विद्यालय के मंच पर प्रस्तुति।
- छात्रों को अपने देश को खूबसूरत बनाने की प्रेरणा।
- कमजोर/औसत प्रस्तुतीकरण को प्रोत्साहन।





व्याकरण

वर्ण विच्छेद

प्रदत्त कार्य-1 सही क्रम में वर्णों को लगाकर सार्थक शब्द निर्माण (कार्य-प्रपत्र)

उद्देश्य

- विचार मंथन व चिंतन
- वर्ण-विच्छेद परिचय एवं प्रयोग
- शब्द भंडार
- पूर्व ज्ञान का अनुप्रयोग

क	ष	इ	आ	अ	द	अ	क	ष	इ	ण	आ	दक्षिण

आ	अ	इ	भू									
क	ज	ज										
अ	ल											

आ	ई	उ	म्	श								
त	र											

इ	त	त	व	ऋ								
स	अ											



Unit 22

व्याकरण
-
रचनात्मक मूल्यांकन

ल् ष्
भ् ज् क्
ज् आ अ

व् आ
इ आ क्
ष् अ र्

ज् त्
आ ज् प्
इ इ अ

अ क् न्
अ त् र्
अ ष्

ऐ आ
ज् व् ज्
न् अ क् इ

ण् स्
प् आ अ
अ घ् द्

ए ऋ
त न् अ
त व्



प्रक्रिया

- ❖ शिक्षक इस कार्य प्रपत्र को विद्यार्थियों को वर्ण-विच्छेद समझाने के पश्चात् ही दें।
- ❖ इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को 10-15 मिनट का समय ही दिया जाए।
- ❖ आवश्यकतानुसार शिक्षक विद्यार्थियों की बीच-बीच में सहायता करें।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

9-10 सही उत्तर पर	05
7-8 सही उत्तर पर	04
5-6 सही उत्तर पर	03
3-4 सही उत्तर पर	02
1-2 सही उत्तर पर	01

प्रतिपुष्टि

- ❖ सम्पूर्ण कार्य सही करने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- ❖ अधूरा काम करने वालों को थोड़ा और समय दें।
- ❖ सही उत्तर को शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दें।



Unit 22

व्याकरण ('र' के विभिन्न प्रयोग)

प्रदत्त कार्य-2

'र' के विभिन्न रूपों को सही स्थान पर लगाकर सार्थक शब्द निर्माण

उद्देश्य

- 'र' के विभिन्न रूपों का ज्ञान
- उचित प्रयोग का विकास
- शब्द भंडार में वृद्धि
- पूर्व ज्ञान का अनुप्रयोग
- विचार मंथन एवं चिंतन

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक 'र' के विभिन्न रूपों को उदाहरण देकर समझाएँ। जैसे - क्रम, कर्म, ट्रक इत्यादि
- शिक्षक इसे श्यामपट्ट पर भी तैयार कर सकते हैं। 'र' के विभिन्न रूपों का प्रयोग

कार्य प्रपत्र

- विद्यार्थियों को इस कार्य के लिए 10 मिनट का समय दिया जाए।
- शिक्षक इस दौरान कार्य का निरीक्षण एवं आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।

वणन	चक	पाथना
दव्य	डामा	कायकम
आशीवाद	मूति	वाषिक
कमशः	कीति	माग
डम	धम	कार्यालय
पस्तुति	उत्तीण	राष्ट्र
विद्यार्थी	गाम	कतव्य
टस्ट		
पक्रिया	पसाधन	
	शौय	

निर्मित शब्द

1		14	
2		15	
3		16	
4		17	
5		18	
6		19	
7		20	
8		21	
9		22	
10		23	
11		24	
12		25	
13			



- ❖ मूल्यांकन के आधार पूर्व में ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
21-25	5
16-20	4
11-15	3
6-10	2
1-5	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक इच्छानुसार अन्य शब्द भी दे सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ सभी शब्दों में 'र' के उचित प्रयोग करने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- ❖ कार्य अधूरा रहने पर उसे पूर्ण करने में सहायता की जाए।
- ❖ कार्य प्रपत्र एकत्रित करने के पश्चात् छात्रों की सहायता हेतु सही उत्तर श्याम-पट्ट पर लिख दिए जाएँ।

प्रदत्त कार्य-3

अनुस्वार एवं अनुनासिक की पहचान एवं प्रयोग

उद्देश्य

- ❖ व्याकरण ज्ञान में अभिवृद्धि
- ❖ अनुस्वार एवं अनुनासिक में अंतर बोध
- ❖ अनुस्वार एवं अनुनासिक के प्रयोगों के स्थल का ज्ञान

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ शिक्षक विद्यार्थियों को उच्चारण के माध्यम से अनुस्वार एवं अनुनासिक के प्रयोग का अंतर स्पष्ट करेंगे।
- ❖ नासिक्य व्यंजनों के स्थान पर बिंदु के प्रयोग के विषय में बताएँगे।
- ❖ श्यामपट्ट पर उदाहरण देते हुए विषय को स्पष्ट करेंगे।
जैसे - संवाद = स् + अं (अ+म्) + व् + आ + द् + अ
- ❖ ऐसे ही सन्यासी, जंगल, संशोधन, हंस..... इत्यादि शब्दों में अनुस्वार के प्रयोग को स्पष्ट किया जाएगा।



Unit 22

रचनात्मक मूल्यांकन - व्याकरण

- हँस, खूँटा, माँ, घूँघट इत्यादि के द्वारा अनुनासिक चिह्नों के प्रयोग का वर्णन किया जाएगा।
- मूल्यांकन का आधार कार्य से पूर्व स्पष्ट कर दिया जाएगा।
- कार्य-प्रपत्र पूरा करने के लिए दस मिनट का समय दिया जाएगा।

कार्य प्रपत्र

निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर बिंदु या चंद्रबिंदु लगाकर शब्द फिर से लिखिए -

1. बद	2. अधेरा
3. आतक	4. चाद
5. आगन	6. शशाक
7. गदगी	8. आख
9. गाव	10. कघा

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

9-10 सही उत्तरों के लिए	5
7-8 सही उत्तरों के लिए	4
5-6 सही उत्तरों के लिए	3
3-4 सही उत्तरों के लिए	2
1-2 सही उत्तरों के लिए	1

प्रतिपुष्टि

- शिक्षक ध्यान रखें कि सभी विद्यार्थी समय सीमा में अपना कार्य पूर्ण करें।
- सर्वप्रथम एवं पूर्ण सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों की सराहना।
- शिक्षक के द्वारा सभी सही उत्तर श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

वाक्यांश के लिए शब्द

प्रदत्त कार्य-4

खाली गोले एक शब्द से भरें

उद्देश्य

- वाक्य संक्षेपीकरण का अभ्यास



- भाषा को अधिक ग्राह्य व अर्थवान बनाने का प्रयास
- शब्द भंडार की वृद्धि
- कम शब्दों में अभिव्यक्ति का अभ्यास

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य
- शिक्षक द्वारा संक्षेपीकरण का प्रयोग व उपयोग समझाते हुए कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाएँ।
- मूल्यांकन के आधार पर एवं गतिविधि की प्रक्रिया को पूर्व में ही समझा दिया जाए।
- कार्य प्रपत्र देकर कार्य को कराया जा सकता है या श्यामपट्ट का भी प्रयोग किया जाता है।
- कार्य प्रपत्र पूरा करने हेतु 10 मिनट का समय दिया जाए।
- कार्य प्रपत्र निम्न प्रकार का हो सकता है।

उच्च कुल
में
उत्पन्न

अभिजात

जहाँ
पहुँचना
कठिन
हो

पर्वत पर
चढ़ने
वाला

जिसके आने
की तिथि
निश्चित
न हो

गर्म (दिल)
को छूने
वाला

किसी बात
को बढ़ा
चढ़ाकर
कहना

जो केवल
शाक-सब्जी
खाता हो

घृणा
करने
योग्य

जानने
की
इच्छा

जो ईश्वर
पर
विश्वास
नहीं करता

सत्य के
लिए
आग्रह

मशक से
पानी देने
वाला
व्यक्ति

मन को
हरने
वाला

जो
मुश्किल
से प्राप्त
हो

जिसमें
संदेह
हो

कर्म के
प्रति
निष्ठा



Unit 22

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

14-15 सही उत्तर लिखने वाले

12-13 सही उत्तर लिखने वाले

10-11 सही उत्तर लिखने वाले

7-9 सही उत्तर लिखने वाले

कम से कम 6 उत्तर लिखने वाले

अंक विभाजन

5

4

3

2

1

प्रतिपुष्टि

- सभी सही उत्तर लिखने वाले विद्यार्थियों की सराहना।
- शिक्षक सही उत्तर श्यामपट्ट पर लिख दें ताकि अशुद्ध उत्तर लिखने वाले एवं अधूरा कार्य करने वाले छात्र भी सही उत्तर जान सकें।

दुर्गम

पर्वतारोही

अतिथि

मार्मिक

अतिशयोक्ति

शाकाहारी

घृणास्पद

जिज्ञासा

नास्तिक

सत्याग्रह

भिश्ती

मनोहारी

दुर्लभ

संदिग्ध

कर्मठता

व्याकरण (अनेकार्थी शब्द)

प्रदत्त कार्य-5

अनेकार्थी शब्दों की पहचान

उद्देश्य

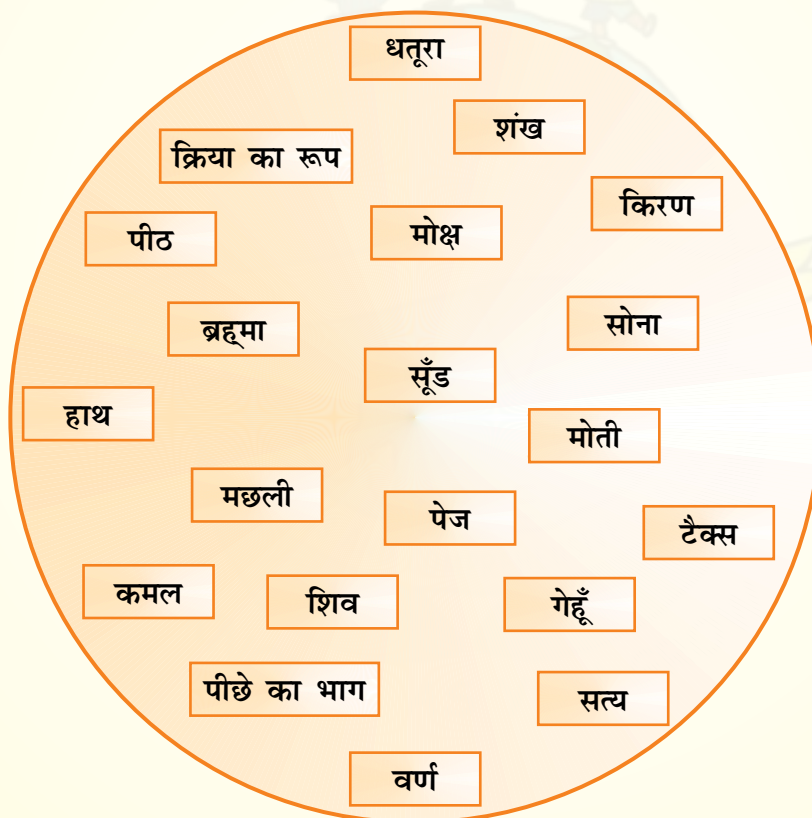
- अनेकार्थी शब्दों की पहचान
- शब्द भंडार में वृद्धि
- विचारमंथन एवं चिंतन
- पूर्व ज्ञान का अनुप्रयोग



प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य
- शिक्षक अनेकार्थी शब्दों के उदाहरण द्वारा छात्रों को कार्य से परिचित कराएँ।
- मूल्यांकन के आधार व गतिविधि की प्रक्रिया को पूर्व में ही समझा दिया जाएँ।
- कार्य प्रपत्र देकर अथवा श्यामपट्ट पर लिखकर कार्य करवाएँ।
- कार्य प्रपत्र पूरा करने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाए।
- निर्देश - वर्ग में दिए गए शब्दों के अनेकार्थी शब्द चक्र में से छाँट कर लिखें।

कर	जलज	अक्षर	पृष्ठ	कनक



मूल्यांकन के आधार बिन्दु

- 5 शब्दों के कम से कम तीन अनेकार्थी शब्द लिखने पर
- 4 शब्दों के कम से कम तीन अनेकार्थी शब्द लिखने पर
- 3 शब्दों के कम से कम तीन अनेकार्थी शब्द लिखने पर
- 2 शब्दों के कम से कम तीन अनेकार्थी शब्द लिखने पर
- 1 शब्दों के कम से कम तीन अनेकार्थी शब्द लिखने पर

अंक विभाजन

- 5
- 4
- 3
- 2
- 1



Unit 22

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक इच्छानुसार अन्य शब्द भी दे सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ सभी शब्द छांटने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- ❖ काम अधूरा रहने पर उसे पूर्ण करने में सहायता की जाए।
- ❖ कार्य प्रपत्र एकत्रित करने के पश्चात् छात्रों की सहायता हेतु सही उत्तर श्याम पट्ट पर लिख दिए जाएं।

प्रदत्त कार्य-6

प्रत्ययों की पहचान एवं प्रत्यय छांटने संबंधी प्रपत्र।

उद्देश्य

- ❖ व्याकरण ज्ञान का विस्तार
- ❖ प्रत्यय से परिचय
- ❖ शब्द में प्रत्यय के स्थान की पहचान
- ❖ विभिन्न प्रकार के प्रत्ययों का ज्ञान

प्रक्रिया

- ❖ शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को प्रत्यय का रूप स्पष्ट करते हुए शब्द में प्रत्यय के प्रयोग का स्थान बताया जाएगा।
- ❖ विषय की स्पष्टता के लिए विद्यार्थियों को विभिन्न उदाहरण दिए जाएंगे ; जैसे - गुड़गुड़ाहट

मूलशब्द + प्रत्यय = नवीन शब्द

सभ्य + ता = सभ्यता

वंच + इत = वंचित

प्रचलन + इत = प्रचलित

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

पूर्ण 9-10 सही उत्तरों के लिए

5

7-8 सही उत्तरों के लिए

4

5-6 सही उत्तरों के लिए

3

3-4 सही उत्तरों के लिए

2

1-2 सही उत्तरों के लिए

1



कार्य-प्रपत्र

शब्द	मूल शब्द	+	प्रत्यय
1. द्रवित			
2. निचली			
3. चितित			
4. शारीरिक			
5. हिचकिचाहट			
6. साहसिक			
7. मँहगाई			
8. सृजित			
9. मलिन			
10. देनदार			

टिप्पणी

- ❖ इसी प्रकार शिक्षक सुविधानुसार अन्य उदाहरण दे सकते हैं।
- ❖ मूल्यांकन का आधार विद्यार्थियों को कार्य से पूर्व स्पष्ट कर दिया जाएगा। (समय सीमा-10 मिनट)

प्रतिपुष्टि

- ❖ विद्यार्थी से अपेक्षा की जाती है कि वे समय सीमा में कार्य करें
- ❖ सबसे पहले एवं पूर्ण सही कार्य की सराहना, सामान्य अशुद्धियों का निवारण किया जाए।
- ❖ सभी सही उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।

विराम-चिह्न

प्रदत्त कार्य-7

मिलान करें (विराम-चिह्न)

उद्देश्य

- ❖ विराम-चिह्नों की पहचान
- ❖ भाषा-ज्ञान (हिंदी)
- ❖ विचारमंथन व चिंतन



Unit 22

रचनात्मक मूल्यांकन - व्याकरण

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ विराम चिह्नों का प्रयोग व उपयोगिता समझाने के पश्चात् यह गतिविधि करवाई जाए।
- ❖ यह कार्य प्रपत्र के रूप में या श्यामपट्ट पर लिखकर भी दिया जा सकता है।
- ❖ इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को 10 मिनट का समय दिया जाए।

- विस्मयबोधक
- , प्रश्नवाचक
- 1 अर्द्ध-विराम
- ? पूर्ण विराम
- ; योजक/विभाजक
- | निर्देशक
- “ ” त्रुटिपूरक/हंसपद
- :- लाघव/संक्षेप-सूचक
- . उद्धरण चिह्न
- ! विवरण चिह्न

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

10-11 सही मिलान करने पर	05
8-9 सही मिलान करने पर	04
6-7 सही मिलान करने पर	03
4-5 सही मिलान करने पर	02
2-3 सही मिलान करने पर	01

प्रतिपुष्टि

- ❖ सभी सही मिलान करने वालों की सराहना की जाए।
- ❖ सही उत्तर बताकर शिक्षक सबका कार्य पूरा एवं सही करवाने में सहायता करें।



प्रदत्त कार्य-8

वाक्य पढ़कर उद्देश्य एवं विधेय छाँटकर तालिका भरना

उद्देश्य

- ❖ वाक्य के सही स्वरूप की पहचान
- ❖ वाक्य के अंगों का परिचय
- ❖ वाक्य के अंगों की पहचान
- ❖ व्याकरण ज्ञान एवं प्रयोग में अभिवृद्धि

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों को वाक्य का अर्थ एवं स्वरूप स्पष्ट करेंगे।
- ❖ वाक्य के अंगों का परिचय देते हुए विस्तार से उनका वर्णन करेंगे।
- ❖ उदाहरणों द्वारा छात्रों को विषय का पूर्ण परिचय दिया जाएगा, जैसे - लता मंगेशकर/उद्देश्य - बहुत मधुर गाती है/विधेय।

कार्यप्रपत्र

- ❖ कबीरदास भारत के प्रसिद्ध संत थे।
- ❖ लेखक के आँगन में अनेक पक्षियों के घोंसले थे।
- ❖ सदा सत्य बोलने वाले अब कहाँ मिलते हैं।
- ❖ पत्तों से बनी कुटिया में सीता रहती थीं।
- ❖ मैं कल मुम्बई जाऊँगा।
- ❖ श्वेता बाजार जा रही है।
- ❖ अंशुमन बेहद शरारती बच्चा है।
- ❖ महात्मा गांधी हमारे प्रिय नेता थे।
- ❖ व्याकरण में छात्रों को सबसे पहले संज्ञा का परिचय दिया जाता है।
- ❖ नीलम की साड़ी बहुत सुंदर है।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

10 सही दस वाक्यों के लिए	5
7-8 वाक्यों के लिए	4
5-6 वाक्यों के लिए	3



Unit 22

व्याकरण - रचनात्मक मूल्यांकन

3-4 वाक्यों के लिए

2

1-2 वाक्यों के लिए

1

टिप्पणी

- शिक्षक विभिन्न उदाहरणों की सहायता ले सकते हैं।
- इस विषय को समझाने के लिए निम्न कार्यप्रपत्र का प्रयोग किया जा सकता है।
- मूल्यांकन का आधार विद्यार्थियों को पहले ही बता दिया जाएगा।

क्र. संख्या	उद्देश्य	विधेय
1.		
2.		
3.		
4.		
5.		
6.		
7.		
8.		
9.		
10.		

प्रतिपुष्टि

- शिक्षक द्वारा एक-एक छात्र को बुलाकर सभी वाक्यों के सही उत्तर पूछे जायेंगे।
- इस प्रकार सभी उत्तर सभी छात्रों को पता लग पायेंगे।
- उपरोक्त प्रपत्र से छात्रों को विषय का पूर्ण ज्ञान होगा।

प्रदत्त कार्य - 9

सरल वाक्य छांटिए

उद्देश्य

- वाक्य रचना की दृष्टि से सरल वाक्य का ज्ञान
- सरल वाक्यों की पहचान
- व्याकरण ज्ञान एवं प्रयोग में अभिवृद्धि



प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक विद्यार्थियों को वाक्य रचना के तीनों रूपों का परिचय देंगे एवं उनका अंतर स्पष्ट करेंगे।
- ❖ समय सीमा 10 मिनट
- ❖ सरल वाक्य रचना में नियमों का ज्ञान देंगे।
- ❖ सरल वाक्य निर्माण की प्रक्रिया को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करेंगे जैसे
 - ❖ मोहन पतंग उड़ा रहा था, मोहन गिर गया।
 - ❖ सरल वाक्य - मोहन पतंग उड़ाते हुए गिर गया।
 - ❖ 'राहुल' शिमला में रहता है, उसका एक मित्र है, उसने अपने मित्र को एक पुस्तक दी।
 - ❖ सरल वाक्य - शिमला में रहने वाले राहुल ने अपने मित्र को एक पुस्तक दी।

प्रश्न - निम्नलिखित वाक्यों में से पाँच सरल वाक्य छांटिए -

- ❖ जैसे ही मेरी घड़ी टूटी मैंने उसे ठीक करवा लिया।
- ❖ उसके आने से महफिल में रंग जम गया।
- ❖ मेरा एक मित्र है और उसने मुझे पुस्तक उपहार स्वरूप दी है
- ❖ उसे अपनी परीक्षा के परिणाम की चिंता है
- ❖ करण का भाई महेश सुंदर चित्र बनाता है.....
- ❖ दीपक पड़ोस में रहता है और वह बहुत शरारत करता है
- ❖ प्रधानमंत्री ने लालकिले पर झंडा फहराया।
- ❖ तुम जब भी आते हो कुछ-न-कुछ तोड़ देते हो ।.....
- ❖ आँधी आने से कई पेड़ गिर गए।
- ❖ रावण वध के दिन अनेक लोगों ने रामलीला देखी और बहुत प्रसन्न हुए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

5 सरल वाक्य छांटने पर	5
4 सरल वाक्य छांटने पर	4
3 सरल वाक्य छांटने पर	3



Unit 22

रचनात्मक मूल्यांकन - व्याकरण

2 सरल वाक्य छांटने पर

2

1 सरल वाक्य छांटने पर

1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक आवश्यकतानुसार प्रपत्र में दिए प्रश्नों की संख्या बढ़ा सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ संभव है कि सभी विद्यार्थी यथासमय अपना कार्य पूरा कर सकेंगे।
- ❖ शिक्षक द्वारा सभी वाक्यों के विचार स्वरूप पर चर्चा की जाएगी।
- ❖ सबसे पहले और सही कार्य करने वालों की सराहना की जाएगी।

